विनोबा साहित्य

20

द्वितीय भाग

शेषामृतम्

2001

परंधाम प्रकाशन, पवनार, वर्धा

बाबा – असर हो, न हो। अशुद्ध चित्त ही असर डालने की सोचता है। सूक्ष्म कर्मयोग सब साधकों के लिए नहीं है। पूर्वजन्म में साधना की हो, वही वह कर सकता है। *

प्रश्न – थोड़ा अहंकार है। धीरे-धीरे कम होगा ऐसा विश्वास है।

बाबा – जब लगता है थोड़ा है, तब है ज्यादा। खुदको कम लगता है। नदी खतरे की सीमा से एक इंच भी ज्यादा हो, तो सावधान होना चाहिए। नहीं है, माने थोड़ा है। थोड़ा है माने ज्यादा है। अंदर तो है ही। जब दीख पड़े, तो ज्यादा है, ऊपर आ गया है। *

प्रश्न – एकांतवास से आध्यात्मिक भूख पूरी होगी? पर उसमें तल्लीनता बढ़ने से समाज में शायद लौटना न हो सके।

बाबा – एकांतवास के लिए कहीं बाहर नहीं जाना है। निद्रा ही पर्याप्त है। रात को नौ बजे सोना। रात को एक से दो बजे लेटकर या बैठकर ध्यान। चित्त रहेगा और आप रहेंगे, तीसरा नहीं रहेगा। सोने के बाद बोलना नहीं। यह कोरा भास है कि कहीं बाहर जाने से आध्यात्मिक भूख पूरी होगी। पेट में भूख नहीं रहे, शरीर गिर जाने की सुध नहीं रहे, तो बात अलग है। भगवान ने भूख दी यह अच्छा किया, समाज में लौटना पड़ेगा। खाना है, तो सेवा भी करनी है, खेती आदि। *

प्रश्न – आश्रम में विदेशियों को धूम्रपान और अनफर्टाइल अंडे लेने की छूट दे सकते हैं?

बाबा – चाय-काफी ले सकते हैं। धूम्रपान नहीं। इन दिनों सिगरेट की हर डिब्बी पर ''जीवन के लिए खतरनाक'' लिखा जाता है। आप प्राणायाम-ध्यान करेंगे तो उसका धुंआ सीधे आपके फेफड़ों में जायेगा। धूम्रपान में शराब से अधिक दोष है। थोड़ी शराब दवा की तरह उतना नुकसान नहीं करती, जितना बीड़ी-सिगरेट। अनफर्टाइल अंडे में हिंसा तो नहीं है, पर शतगुणी कामवासना भरी पड़ी है। *

प्रश्न – मन कैसे मौन हो?

बाबा – वाणी के मौन से मन का मौन प्रायः नहीं सधता। उपवास करते समय जितना संयम चाहिए, उससे अधिक उपवास छोड़ने के बाद चाहिए। दुगुना खाने की इच्छा होती है। उसी प्रकार मौन काल के बाद

प्रश्न – वाल्मीकि जैसे महाकवि को उर्मिला का इतना विस्मरण क्यों हुआ?

बाबा – इस प्रश्न की चर्चा शायद बंगाल से शुरू हुई है। 'विस्मृता-उर्मिला' नाम का एक लेख गुरुदेव ने लिखा था। लक्ष्मण मां के पास गये, परंतु उर्मिला से वे नहीं मिले। यह ठीक है कि वे संयमी थे, लेकिन उर्मिला का विस्मरण नहीं होना चाहिए था। शायद ऐसे भाव उस लेख के थे।

इसके बाद कुछ कवियों ने उस प्रसंग का वर्णन भी किया है। अगर उस वर्णन में अश्लीलता नहीं है, तो मैं उसमें दोष नहीं देखता। लेकिन वाल्मीकि जैसे कवि, जिनकी बराबरी का कवि और नहीं, इस प्रसंग का जरा भी जिक्र नहीं करते, तो क्या सचमुच वह प्रसंग हुआ ही नहीं? ऐसा नहीं है। लक्ष्मण उर्मिला से जरूर मिले होंगे, लेकिन कवि ने उर्मिला की मुलाकात को महत्त्व देने के बजाय लक्ष्मण की अनासक्ति और उसकी भक्ति तथा निष्ठा को महत्त्व देना उचित समझा। लक्ष्मण का वैराग्य बताने की दृष्टि से ही शायद कवि ने उर्मिला के साथ की भेंट का वर्णन नहीं किया। लक्ष्मण माता के पास भी गया, तो वहां से भी वह मानों छूटकर आया है। अगर माता उसे रोकती भी तो वह नहीं रुकता। वह तो राम का भक्त था। लेकिन मातृप्रेम कितना अद्‌भुत था, यह बताने के लिए कवि ने उस प्रसंग का वर्णन किया है।

मेरा मानना है कि उर्मिला-लक्ष्मण मुलाकात के प्रसंग का वर्णन न करके भी वाल्मीकि ने उसका वर्णन कर दिया है। उस अभाव में भी वाल्मीकि की बहुत भारी कला प्रकट होती है। *

प्रश्न – मुक्त पुरुष और अवतार में क्या फर्क है?

बाबा – (अ) वासना है तब तक मुक्ति नहीं, तब तक जन्म रहेगा। (आ) वासना खत्म होने के बाद मुक्ति होगी, फिर जन्म नहीं। (इ) मुक्त पुरुष भी, ईश्वरी आदेश से विश्वोद्धारार्थ आ सकेगा, उसको उसका 'अवतरण' कहेंगे। (ई) साधुपरित्राणादि उद्देश्य से ईश्वर स्वयमेव साकार होगा; यह 'अवतार' की कल्पना है। इसमें वह जगद्‌व्यापार में हिस्सा लेगा, ऐसी अपेक्षा है।

(इ)वाला जगद्‌व्यापार में हिस्सा लेगा नहीं। अलावा –

(उ) जिस साधक की आरोहणक्रम से यह आखिरी देह होगी, उसके

(ऊ) निरहंकारी सामान्य साधक के भी जीवन में, थोडे समय के लिए, ईश्वर अपना संकल्प जोड़ सकता है। ऐसे मनुष्य को 'प्रेषित' कह सकेंगे।*

प्रश्न – परस्पर दिल खोलने की चाभी कौन-सी?

बाबा – 1. कुछ सिखाना 2. कुछ सीखना 3. सेवा करना 4. सेवा लेना 5. सहचर्चा। *

प्रश्न – सांसारिक कर्तव्य अदा करते हुए, प्रतिकूल वातावरण में आत्मोन्नति कैसे करें?

बाबा – सांसारिक कर्तव्य नाम का कोई भी कर्तव्य नहीं, ऐसा अपने मन में पक्का निश्चय करना होगा। परमेश्वर-दर्शन के लिए नित्य प्रयत्न ही कर्तव्य है। उसके लिए साधनरूप शरीर को खिलाना पड़ता है तो उस कर्जे को चुकाने के लिए समाज की थोड़ी सेवा करें। भगवान की भक्ति, आत्मसाक्षात्कार, अहंकार मिटाने की कोशिश करना ही फर्ज है, बाकी सांसारिक फर्ज कोई नहीं। *

प्रश्न – आत्मसमर्पण का पहला कदम कौन-सा?

बाबा – भगवान इतने भोले हैं कि पत्र-पुष्प से भी संतुष्ट हो जाते हैं। लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से उत्तर देना हो तो, पहले इंद्रियां भगवान को दें, मन चाहे भटकता हो। जो भी देखें वहां भगवान को देखें, जो भी सुनें वहां भगवान को सुनें। पहले इंद्रियां देना, फिर मन-बुद्धि आयेंगे। फिर उत्तरोत्तर अंतर में जाते-जाते समर्पण करना। *

प्रश्न – गरीबी हटाने के लिए विदेश से पैसा लें?

बाबा – गरीबी हटाने के लिए पैसा नहीं, श्रम चाहिए। *

प्रश्न – आपका घर कहां है?

बाबा – इस सामने बहनेवाली नदी का घर कहां है? *

प्रश्न – गुरुकृपा और ईश्वरकृपा का फर्क?

बाबा – परमात्मा पापी का उद्धार करता है। पापी गुरुकृपापात्र नहीं होता। गुरुकृपापात्र तो वह होता है जो स्वच्छ, निर्मल हो। *

प्रश्न – पारतंत्र्य को कैसे हटाया जाये?

बाबा – लोग 'पर' कायम रखते हैं और 'तंत्र' हटाने की कोशिश करते हैं, तो पारतंत्र्य कायम रहता है। 'पर' को खत्म करो तो पारतंत्र्य खत्म ही

प्रश्न – आप इतने दुबले क्यों?

बाबा – अपने शरीर की मिट्टी कम किये बगैर मुझे मिट्टी (भूदान) कैसे मिलेगी? *

प्रश्न – जीवित समाधि लेना क्या आत्महत्या नहीं?

बाबा – जीवित समाधि के समय अगर चित्त शांत है तो वह आत्महत्या नहीं। *

प्रश्न – भारत की उन्नति के लिए मिलिटरी क्या करे? (– एक सिक्ख अफसर)।

बाबा – **निरभउ निरवैरु** – सबको निर्भय और निर्वैर बनाना मिलिटरी का काम है। *

प्रश्न – अच्छाई अदृश्य क्यों होती है?

बाबा – बुराई दृश्य होती है इसलिए। *

प्रश्न – आप क्षेत्र-संन्यास लेकर पवनार में बैठ गये तो अब यात्रा नहीं चलेगी?

बाबा – मेरी यात्रा भूलोक से ब्रह्मलोक तक चलती ही रहती है। *

प्रश्न – संतकार्य में कालसापेक्ष भाग कितना होता है और कालनिरपेक्ष कितना होता है?

बाबा – संतों का दर्शन, उनके विचार कालनिरपेक्ष होते हैं और दुनिया में रहते हुए काल को ध्यान में लेकर जो कुछ किया वह कालसापेक्ष होता है। उनका जीवन, चरित्र कालसापेक्ष होता है। उनका दर्शन, विचार कालनिरपेक्ष। *

प्रश्न – एकआध व्यक्ति के प्रति सहज स्नेह पैदा होता है। एकआध व्यक्ति के प्रति द्वेष तो नहीं, पर उससे दो हाथ दूर रहने की इच्छा होती है। क्या यह ठीक है?

बाबा – हम क्या करते हैं? मां को नजदीक जाकर, झुककर प्रणाम करते हैं। गुरु को झुककर पर थोड़ा दूर से प्रणाम करते हैं। और दूसरे लोगों को केवल हाथ जोड़कर प्रणाम करते हैं। मां और गुरु, इन दोनों में भी हमने फरक किया। तो मनुष्य कोई अविवेकी नहीं। किसी को नारायणस्वरूप समझकर उससे दूर रहते हैं, तो वह गलत नहीं माना जायेगा। साधारणतया सभी से दूर ही रहें। लेकिन जहां सेवा का सवाल आयेगा, वहां झट् से

प्रश्न – आप व्याख्यान में अपने को हमेशा थर्ड (तृतीय पुरुष) में क्यों रेफर करते हैं?

बाबा – क्योंकि बाबा 'परसनल' (व्यक्तिगत) नहीं है। 'इम्परसनल' (अव्यक्तिगत) है। 'इम्परसनल' को रेफर (संकेत) करने के लिए कम-से-कम तृतीय पुरुष का उपयोग करना पड़ता है। अगर व्याकरण में 'चौथे पुरुष' की योजना होती, तो बाबा उसका उपयोग करता। *

प्रश्न – करुणा और प्रेम से समाज-परिवर्तन के कार्यक्रम का क्या स्वरूप होगा?

बाबा – 1. सत्ता का विकेंद्रीकरण। नीचे ज्यादा-से-ज्यादा सत्ता, ऊपर कम-से-कम सत्ता। बिल्कुल ऊपर नैतिक सत्ता। 2. सहकारिता, 3. व्यक्ति के विकास के लिए पूरा मौका, 4. समाज के लिए समर्पण बुद्धि, 5. शिक्षा में ज्ञान और काम को जोड़ना। *

प्रश्न – हम क्या हैं, हमारा स्वरूप क्या है, हम कहां से आये हैं और हमें कहां जाना है?

बाबा – जहां हमें जाना है, वह अपने पांव से नहीं जाना है। भगवान खींचकर अपनी ओर ले जानेवाला है। जिसने हमें भेजा, वही हमें जोरों से अपनी तरफ खींच लेगा, इसलिए उसकी चिंता हमें नहीं करनी चाहिए।

हमें अपनी मानसिक तैयारी यह रखनी चाहिए कि यहां हमारी आसक्ति न रहे। यदि यहां के लिए आसक्ति रखेंगे तो जब वह खींचकर ले जायेगा, तब हम दुःखी होंगे। यदि हम आसक्ति नहीं रखेंगे, सेवा करके छूट जायेंगे तो हमें दुःख नहीं होगा। भागवत में आता है – **गृहेषु अतिथिवद् वसन्** – यानी घर में मेहमान के समान रहो। घर में भी हमें आसक्ति और मालिकी की भावना नहीं रखनी चाहिए। चित्त अगर आसक्त है, चिपका हुआ है तो हम ईश्वर की परीक्षा में फेल हैं। जिसका चित्त अनासक्त रहेगा, ईश्वर की सेवा करनी है, यह समझकर काम करता रहेगा, तो बुलावा आने पर खुशी-खुशी, आनंदपूर्वक जायेगा। हर बच्चा जन्म पाता है तब रोता है। पर कम-से-कम, मरते समय रोओ नहीं, हंसते-हंसते जाओ। इसका एकमात्र उपाय है – आसक्ति त्यागकर सेवा करना। *

प्रश्न – जीवन यानी क्या? सत्य क्या है? जीवन का सत्य के साथ क्या

गांधीजी ने जीवन को 'सत्य के प्रयोग' कहा। मैं सत्य की 'शोध' कहता हूं। प्रयोग विज्ञान का शब्द है। उसमें सत्य का एक-एक अंश हाथ में आता है। समूचा सत्य एकदम प्राप्त नहीं होता।

सत्य, यानी 'है'। संस्कृत में सत्य का अर्थ नैतिक सत्य (मॉरल ट्रुथ) करते हैं। किसी भी चीज की व्याख्या करनी हो तो वह सत्य के आधार पर ही हो सकती है। परंतु परम सत्य (सुप्रीम ट्रुथ) की व्याख्या नहीं हो सकती। जिससे हम अंतरात्मा को पहचान सकते हैं और जिससे अंतरात्मा का समाधान होता है वही सत्य है। जहां अंतरात्मा को असमाधान हो या उसे धक्का लगे तब वह असत्य है। मतलब अंतरात्मा सत्यासत्य का साक्षी है। अनुभूति अलग-अलग हो सकती है। सत्य में समत्व होता है। यह दूसरी पहचान है। सत्य में संतुलन है, समदर्शन है, समाधान है; अंतःसमाधान है। समत्वयुक्त निर्णय में सत्य है।

सत्य कैसे प्राप्त हो? गांधीजी ने कहा कि सत्य अहिंसा से प्राप्त होता है। सत्य नम्रता, तटस्थता और अनाग्रह से प्राप्त होता है, ऐसी मेरी राय है। विज्ञान में अनाग्रह होता है। प्रयोगों में जो सही होगा, वही सिद्ध होगा।

सत्य एक बुनियादी मौलिक गुण है। सत्य सबसे बड़ा नीतिधर्म है। एक तरफ समूचा नीतिशास्त्र और दूसरी तरफ केवल सत्य हो, तो दोनों की तुलना में सत्य का पलड़ा भारी होगा। इसलिए बाकी के सारे नीतिधर्म सत्य की तुलना में गौण हैं। आत्मप्राप्ति के लिए सत्य अत्यंत महत्त्व की चीज है। सत्य यानी केवल वाणी का सत्य नहीं, मनसा-वाचा-कर्मणा सत्य का पालन होना चाहिए। मनुष्य का जीवन सत्य पर खड़ा होगा, तभी उसे आत्मा का दर्शन होगा। परमेश्वर तक पहुंचने का मार्ग सत्य से ही बना हुआ है। *

प्रश्न – मनुष्य की बुनियादी आवश्यकता क्या है? उसकी पूर्ति कैसे होगी?

बाबा – मनुष्य मुख्यतया सामाजिक प्राणी है, और उससे भी अधिक उसकी अपनी वंशावली है। वंशावली यानी उसके बाप-दादा या पूर्वज नहीं, लेकिन उसका जन्म, पूर्वजन्म, पुनर्जन्म और वह सब, जो उसके जीवन को आकार देता है।

मेरा धर्म है – समाजसेवा करना। मेरे जीवन का अंतिम लक्ष्य है –

बाबा – ऐसा मानने का कारण नहीं। बहुत-से मनुष्यों से जड़ तथा पशु-पक्षी अधिक चेतन हो सकते हैं। यह तो उनके विकास पर निर्भर है। *

प्रश्न – साधारण लोग तो बहुत हंसते-खेलते नजर आते हैं, तो क्या वे 'योगियों से अधिक आनंद में हैं' ऐसा समझना चाहिए?

बाबा – जो लोग इस प्रकार से सदा हंसते-खेलते नजर आते हैं, वे दुःख आने पर इतने दुःखी होते हैं कि जिसका ठिकाना नहीं। इसलिए हमें आनंद या विषाद, दोनों की अति से बचना चाहिए। सच्चा आनंदी तो वही है, जो दुःख में भी आनंद मनाये, बल्कि मनुष्य सुख-दुःख से अपने आत्मा को तटस्थ समझे। तभी वह सच्चे आनंद का अनुभव कर सकता है।

टॉल्स्टॉय ने अपने से छह प्रश्न किये थे और जब तक उनका संतोष-कारक उत्तर नहीं मिल गया, तब तक उनका जीवन दुःखी रहा। उनके प्रश्न थे – 1. मैं किसके लिए जीता हूं? 2. जीवन का उद्देश्य क्या है? 3. जीवन का कारण क्या है? 4. अच्छे और बुरे का भेद क्या अर्थ रखता है? 5. हमें किस प्रकार जीना चाहिए? 6. मृत्यु क्या है? मैं अपनी रक्षा किस प्रकार करूं? इसका उत्तर अंत में उन्होंने यही पाया कि ईश्वर की इच्छा के अनुसार जीवनयापन करना ही मानवजीवन का मुख्य उद्देश्य है और उसकी इच्छा है कि मनुष्य आपस में प्रेमभाव से शांतिपूर्वक रहें। मनुष्यसमाज इसके विपरीत आचरण कर रहा है, अतः दुःखी है। *

प्रश्न – जीवन में रस लेने का क्या अर्थ है?

बाबा – रस तो वह है, जो सनातन तथा एकरस हो। उपनिषद में रस की यही व्याख्या है कि जिससे जीव उत्पन्न होते, कायम रहते तथा जिसमें लीन होते हैं – **रसो वै सः**। अतः हमें भी जीवन और मरण के समय एक समान आनंद में लीन रहना चाहिए। जीवन के प्रत्येक कार्य में, चलते-फिरते, उठते-बैठते, बोलते हुए हमें रसानंद का अनुभव होना चाहिए। तभी हम जीवन का सच्चा रस ले सकेंगे।

प्रश्न – मतलब कि हमें एकरस रहना चाहिए।

बाबा – मगर यह बिना आत्मज्ञान के नहीं हो सकता। यह अवस्था स्थितप्रज्ञ की सुख-दुःखातीत अवस्था है। श्रीकृष्ण भगवान को यह अवस्था प्राप्त थी। जब उन्हें व्याध ने तीर मारा, तब उन्होंने उसका उपकार ही माना

प्रश्न – मानसिक और आत्मिक सुखों में केवल परिमाण का अंतर है, गुण का नहीं, यह बात सही है?

बाबा – दोनों में आकाश-पाताल का अंतर है। प्रकाश और अंधकार के समान दोनों भिन्न हैं। वैसे तो निद्रा में भी एक आनंद है और उपनिषदों ने उसकी तुलना आत्मानंद से कर डाली है। जहां तक दुःखनिवृत्ति का सवाल है, वह आनंद अवश्य है। दुःखनिवृत्ति तो क्लोरोफार्म से भी होती है। आत्मिक सुख के लिए आत्मानुभव की आवश्यकता है। मानसिक सुख-दुःख से परे जाने पर ही यह आनंद मिलता है। आनंद एक स्थायी वस्तु है। वह जीवन में नित्य अनुभव की वस्तु है। आने-जानेवाली अस्थिर चीज नहीं। वह स्थिर-समाधि है। *

प्रश्न – जब आत्मा आनंदरूप है, तब फिर हम दुःख क्यों करते हैं?

बाबा – हम दुःख का अपने ऊपर आरोप कर लेते हैं – अज्ञान और अविवेक के कारण। अपने स्वरूप के ज्ञान के द्वारा ही वह दूर हो सकता है। *

प्रश्न – सौंदर्य, सुगंध तथा आनंददायक वस्तुओं में क्या परमात्मा का रूप अधिक स्पष्ट नहीं होता?

बाबा – सुंदर-असुंदर, सुगंध-दुर्गंध, सुख-दुःख ये सब वस्तुएं सापेक्ष हैं; या तो ईश्वर दोनों में है अथवा दोनों से परे है, वह केवल एक में नहीं रह सकता। सुगंध-दुर्गंध तो हमारी इंद्रियों की मर्यादा के कारण मालूम होती है। कानों से बहुत धीमा या बहुत तेज स्वर, दोनों ही नहीं सुन सकते। फिर इस मर्यादा में ईश्वर कैसे बंध सकता है? वह तो दोनों से परे है, अथवा दोनों में एक समान है। *

प्रश्न – चैतन्य तो केवल मनुष्य ही का गुण है, बाकी प्रकृति को तो जड़ ही समझना चाहिए ना?

बाबा – यह ठीक नहीं है। हमें जागृत चैतन्य और सुप्त चैतन्य, इस प्रकार दो विभाग करने चाहिए। जिन्हें हम जड़ समझते हैं, उनमें भी चैतन्य है। सूर्य, पृथ्वी आदि जो ग्रह जड़ समझे जाते हैं, उनमें भी अंतर्यामी आत्मा या व्यक्तित्व हो सकता है। वृक्षों में भी वट, पीपल या तुलसी में विशेष चैतन्य होना चाहिए। पशुओं में भी गाय की आत्मा विशेष जागृत मानी

प्रश्न – जीवन का उद्देश्य क्या है?

बाबा – जीवन का उद्देश्य है, गुणविकास। भगवान सर्वगुणसंपन्न है। दूध में दूध मिल जाये, इस तरह हमें भी भगवान में मिल जाना है। अपने में जो गुण हैं उनका विकास करना और भगवान के गुणों का ग्रहण करना। गुणग्रहण, गुणवृद्धि, गुणगान यही जीवन का कर्तव्य है। महापुरुषों को याद करके, हम उनके प्रखर गुण का ही अभिवादन करते हैं न? हरिश्चंद्र की सत्यनिष्ठा, भीष्म की प्रतिज्ञा, वसिष्ठ की सौम्यता, विश्वामित्र का पुरुषार्थ। इस तरह, मानवजीवन का उद्देश्य गुणविकास ही है। *

प्रश्न – देह और आत्मा का क्या संबंध है?

बाबा – एक भाई मरने की तैयारी में था। उसने रिश्तेदारों को पास बुलाकर मरने के बाद क्या-क्या किया जाये वह सारा बताया। यह जो कहनेवाला था, वह आत्मा है। वह व्यवस्था करता है। वह मरता नहीं। शरीर छोड़कर चला जाता है। *

प्रश्न – सूक्ष्म देह किसे कहते हैं?

बाबा – जो मेरे सामने बैठा है वह कौन-सा देह है? स्थूल देह है। तो यह जिसने कहा कि 'यह स्थूल देह है' वही सूक्ष्म देह है। इस पुस्तक या घड़ी से पूछो, सूक्ष्म देह किसे कहते हैं? तो कहेगी, मालूम नहीं। लेकिन जिसने जवाब दिया कि 'जो बैठा है वह स्थूल देह' – वही सूक्ष्म देह है। जैसे पुस्तक पढ़नेवाला पुस्तक से भिन्न है, वैसे ही यह जवाब देनेवाला स्थूल देह से भिन्न है। यह स्थूल शरीर चलानेवाला जो अंदर है, वही सूक्ष्म देह है। *

प्रश्न – क्या ज्ञान से कर्मफल नष्ट होते हैं?

बाबा – ज्ञान या भक्ति से कर्म की वासना नष्ट होती है, जिससे वे कर्म फिर नहीं होते, परंतु जो हो चुके हैं, उन्हें तो भोगना ही पड़ेगा। तीर निकल जाने के बाद पछताने से क्या होता है? पश्चात्ताप से चित्त की शुद्धि होती है और उससे आगे कर्म होना बंद हो जाता है। ज्ञानी और अज्ञानी में यही अंतर है कि अज्ञानी दुःखपूर्वक भोगता है और ज्ञानी आनंदपूर्वक। पश्चात्ताप से मानसिक शुद्धि होती है और पाप के फल मिलते भी हैं, तो भी असर नहीं होता। यही पापनाश समझना चाहिए।

प्रश्न – यह भी कहा है कि ईश्वरकृपा से पाप क्षीण होते हैं। उसमें अपनी कृति कुछ काम नहीं आती?

बाबा – भक्तिमार्ग की भाषा में यही कहना पड़ेगा। परंतु ज्ञानमार्ग में तो अपनी ही कृति मुख्य मानी गयी है। अगर दोनों का समन्वय करना है, तो यह कहना होगा कि ईश्वरकृपारूपी अग्नि तो सब जगह पड़ी है। हम अपनी इच्छा से यदि उसके पास गये, तो उसकी गरमी मिलेगी। इसमें कृपा और कर्तृत्व दोनों का मेल बैठता है।

प्रश्न – इस प्रकार तो ईश्वरकृपा एक तटस्थ वस्तु हो जाती है। क्या उसमें अपना या स्वतंत्र कर्तृत्व कुछ भी नहीं है?

बाबा – यह भी मान सकते हैं कि ईश्वरकृपा चुंबक के समान हमें आकृष्ट करती है। यदि हम लोहे के समान उसका विरोध न करें, तो वह हमें अपनी ओर खींच लेगी। परंतु हम उसके बीच अपनी इच्छा का विरोधी विकर्षण लगाते हैं, वह बाधक होता है। चुंबक लोहे से संपूर्ण समर्पण चाहता है। *

प्रश्न – कभी-कभी संदेह होता है कि क्या इतने छोटे शरीर में आत्मा और परमात्मा, दोनों रह सकते हैं?

बाबा – आपमें खटाई और मिठाई, दोनों एकसाथ कैसे रहती हैं? क्या आप उनके रहने का कोई खास स्थान बता सकते हैं? उसी प्रकार आत्मा और परमात्मा का हाल है।

प्रश्न – असल में तो दोनों एक ही हैं न?

बाबा – हां, जब वैसा अनुभव आये तब! अभी तो यही समझना चाहिए कि परमात्मा इस शरीर में रहते हुए भी उसके बाहर हवा या आकाश के समान व्याप्त है और आत्मा केवल शरीर में ही सीमित है। पहले तो हमें यह अनुभव होना चाहिए कि वह देह से अलग है। *

प्रश्न – ईश्वर की इच्छा किस प्रकार जानी जा सकती है?

बाबा – ईश्वरी इच्छा का अर्थ है – पुण्यमय जीवन। अतः हमारे जीवन का उद्देश्य पुण्य-प्रवृत्तियों को बढ़ाना और पाप-वृत्तियों को घटाना होना चाहिए, जहां तक कि हमें पूर्णता प्राप्त न हो जाये। इस जीवन में नहीं, तो अगले जीवन में सही, बिना पूर्णता प्राप्त किये हमें शांति नहीं

ही उपस्थित नहीं होता। और मनुष्य में पाप-पुण्य का भेद होता है। पापी मनुष्य के हृदय में भी यह भावना रहती है कि मैं पाप कर रहा हूं, जो मुझे नहीं करना चाहिए।

प्रश्न – फिर वह पाप से दूर क्यों नहीं होता?

बाबा – प्रयत्न तो करता है, पर आदत के बंधन के कारण उससे दूर नहीं हो पाता। परंतु ज्यों-ज्यों उसे पाप से घृणा और दुःख होने लगेगा, त्यों-त्यों वह उससे मुक्त होता जायेगा।

प्रश्न – हम तो देखते हैं कि जिनमें विवेकबुद्धि है, वे अधिक दुःखी रहते हैं। पापी तो कभी सोचते ही नहीं कि वे क्या कर रहे हैं।

बाबा – यह विवेक का दुःख ही उनके सुख का कारण है। असल में सुखप्राप्ति जीवन का उद्देश्य नहीं। शांति प्राप्त कर दोनों से परे होना और पुण्य की पूर्णता प्राप्त करना ही उसका उद्देश्य है। *

प्रश्न – पापों का अंत कैसे आयेगा?

बाबा – पापों का अंत लाने के लिए 1. नये पाप न करने का निश्चय होना चाहिए 2. पुराने पाप लोगों में जाहिर हो जाने चाहिए 3. पश्चात्तापपूर्वक पापों का प्रायश्चित्त होना चाहिए। उसके लिए अपने को सजा करनी चाहिए। सजा यानी उपवास करना या संपत्ति छोड़ना आदि 4. नामस्मरण करना, जिससे पाप खत्म हो जायें। *

प्रश्न – आपने कहा कि मुझे भूतकाल में कोई रस नहीं है। क्या यही कारण है कि आप पाप का प्रतिकार नहीं करते? क्या आप पाप (ईविल) को भूतकाल की चीज समझते हैं?

बाबा – पाप पर हमला (कनफ्रंट) करने का अर्थ है उसे महत्त्व देना। वह है ही नहीं। उसकी कोई गर्भितशक्ति (पोटेन्सी) नहीं। वह शक्तिहीन (इंपोटेंट) है। हम ही उसकी ओर ध्यान देकर उसे महत्त्व देते हैं। उसकी संपूर्ण उपेक्षा करेंगे, तो वह यों ही खत्म हो जायेगा। मैं सदैव सूर्य की उपमा दिया करता हूं। सूर्य अंधकार पर हमला नहीं करता। वह आ गया तो अंधकार खत्म! अंधकार नाम की कोई चीज है और उसका मुकाबला करना है – ऐसी बात ही नहीं। हम अंधकार को देखते हैं, लेकिन सूर्य से कहा जाये कि तुम अंधकार दूर करते हो, तो वह पूछेगा, 'कहां है अंधकार?'

रहेगा। वैसे उसे कोई प्रतिष्ठा, स्टैंडिंग ही नहीं है। हम ही उसे प्रतिष्ठा देते हैं। पाप खत्म ही है। 'रेजिस्ट नॉट ईविल' यानी पाप का प्रतिकार मत करो। 'बिकाज बाय रेजिस्टिंग यू गिव्ह पोटेन्सी टू ईविल' – क्योंकि प्रतिकार करने से आप ही उस पाप को शक्ति प्रदान करते हैं। इसलिए पाप की ओर ध्यान ही न दें। पाप है ही नहीं, ऐसा मानकर अपने रास्ते चलते चलो – गो दाय वे!

*

प्रश्न – श्रीअरविंद का कथन है कि मनुष्ययोनि प्राप्त होने के बाद आत्मा अन्य योनियों में नहीं जाता। परंतु हमारे प्राचीन सिद्धांतों के अनुसार ऐसी बात नहीं है। इस संबंध में आपकी क्या राय है?

बाबा – स्वाभाविक अपेक्षा यह है कि मानव-जन्म पाने के बाद हम नीचे की योनि में न जायें, ऊपर की योनि में ही जायें। लेकिन ऐसा कोई नियम नहीं हो सकता कि मानव-जन्म के बाद दूसरी योनि मिल ही नहीं सकती। जड़भरत की कहानी है। वह हिरन के बच्चे की सेवा करता था। उससे आसक्ति पैदा हुई, तो उसे दूसरा जन्म हिरन का लेना पड़ा। जैसी तीव्र वासना होती है, वैसा जन्म होता है। मैं इसे वैज्ञानिक मानता हूं। आपका आगे का जन्म आपकी तीव्र वासना पर निर्भर है। इसके अलावा मनुष्य-जन्म में भगवान ने ऐसी शक्ति दे रखी है कि वह उत्तम-से-उत्तम देवता के समान बन सकता है और नीची-से-नीची योनि तक भी गिर सकता है। गाय मांसाहारी नहीं हो सकती। शेर शाकाहारी नहीं हो सकता। उन्हें ऊपर चढ़ने के लिए एक मर्यादा है, नीचे गिरने के लिए भी एक मर्यादा है। पर मानवों में कोई महामानव, देवता की कोटि के मिलते हैं, तो कोई गिरे हुए भी। एक बहुत बड़े दार्शनिक ने कहा है कि जितना मेरा मानव के साथ परिचय बढ़ता जा रहा है, उतनी ही मेरी श्रद्धा कुत्ते पर बढ़ती जा रही है। यानी कई मानव ऐसे होते हैं, जो पशु से भी हीन बरतते हैं। तो मानव-जन्म की विशेषता यह है कि उसे नीचे गिरने और ऊपर उठने का पूरा स्वातंत्र्य है।

मैं यह भी मानता हूं कि मानव की तरह पशु भी मुक्ति की तरफ जा सकता है। गजेंद्र-मोक्ष की कहानी पर मेरी श्रद्धा है। सामान्यतया मुक्ति का साधन पशुयोनि में नहीं है, फिर भी ईश्वर से सब प्राणी समान फासले पर हैं। ईश्वर वर्तुल का मध्यबिंदु है और वर्तुल के घेरे पर मानव, कुत्ता, गधा

दूसरी योनियों में भी मुक्ति प्राप्त हो सकती है, क्योंकि ईश्वर की कृपा सब पर समान है। आप भक्ति करते हैं, तो भगवान आपको बुद्धि देता है। आपको पश्चात्ताप होता है, तो भक्ति निर्माण होती है। यह बौद्धिक-प्रक्रिया नहीं, हार्दिक-प्रक्रिया है। बौद्धिक ज्ञान होगा, लेकिन वह हृदय में उतरना चाहिए। सार यह कि दूसरी योनियों में मुक्ति की शक्यता (पॉसिबिलिटी) है, संभावना (प्राबेबिलिटी) नहीं है। *

प्रश्न – मृत्यु के बाद इस जन्म में अर्जित ज्ञान भी साथ जाता है?

बाबा – निश्चय ही ज्ञान के बीज साथ में जाते हैं। बहुत-सा ज्ञान तो हम इसी जन्म में भूल जाते हैं, पर उसका प्रभाव विद्यमान रहता है। हम सीखी हुई भाषा भूल जाते हैं, परंतु भाषा सीखने की क्षमता बढ़ जाती है, जिससे शीघ्रता से फिर उसे सीख सकते हैं। शंकराचार्य का अल्प अवस्था में ही इतना ज्ञानी होना यही सिद्ध करता है।

प्रश्न – क्या हम विज्ञान के आधार से पुनर्जन्म के सिद्धांत को सही साबित कर सकते हैं?

बाबा – विज्ञान मूलतः इंद्रियगम्य है। इसलिए उसकी एक सुनिश्चित मर्यादा होती है। विज्ञान तो अत्यंत नम्र होता है। विज्ञान यह नहीं कहता कि परमेश्वर है ही नहीं। क्योंकि इस प्रकार का निषेधात्मक वाक्य कहने के लिए भी ज्ञान चाहिए। विज्ञान तो कहता है कि परमेश्वर हो भी सकता है, नहीं भी हो सकता। लेकिन हम अभी तक उसके बारे में कुछ भी नहीं जानते। विज्ञान इंद्रियों के सहारे आगे बढ़ता है। चाहे जितनी बढ़िया दूरबीन क्यों न हो आखिर देखना होगा हमें अपनी आंख से ही। कोई भी सिद्धांत इंद्रियों के जरिये सही हुए बगैर विज्ञान उसे नहीं मानता। लेकिन इंद्रियों की अपेक्षा मन अधिक शक्तिशाली होता है और मन से भी शक्तिशाली है आत्मा। क्योंकि उस मन के सारे व्यापार मैं (आत्मा) जान सकता हूं। चंद्रमा से निकली प्रकाश-किरणों को यहां आने में तीस सेकंड लगते हैं, लेकिन हमारा मन एक सेकंड से कम समय में ही यहां से चंद्रमा तक पहुंच सकता है। इस प्रकार सृष्टि में लघुता और विशालता दोनों अनंत हैं। तो फिर तर्क के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि मानवजीवन का आदि-अंत क्यों होगा? एक मुसलमानभाई से चर्चा में मैंने कहा था कि एक लड़का

व्यक्त हो जाता है और फिर अनंतकाल तक अव्यक्त रहता है। यह बात तर्कसंगत मालूम नहीं होती।

यदि हम पुनर्जन्म को नहीं मानेंगे तो जीवन में कोई स्वाद ही नहीं रहेगा। मान लो, इस समय कोई सांप मुझे काटता है और मैं मर जाता हूं, तो क्या इसका मतलब यह हुआ कि मैंने आज तक जो सारा ज्ञान प्राप्त किया वह बेकार गया? सांप के जैसे बुद्धिशून्य और क्षुद्र प्राणी के काटने से मेरा सारा ज्ञान एक क्षण में नष्ट हो सकता हो तो फिर मेरी सारी ज्ञानलालसा ही खत्म हो जायेगी। लेकिन मुझे और भी ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा होती है, क्योंकि मैं पुनर्जन्म में विश्वास करता हूं। मुझे सिगरेट-बीड़ी पीने की इच्छा कभी नहीं हुई, तो इसका कारण यह हो सकता है कि मैंने अपने पूर्वजन्मों में कुछ ऐसे अनुभव लिये हों और उनकी व्यर्थता मुझे महसूस हुई हो। इसका मतलब यह है कि हर कोई अपने पुराने जन्मों के अनुभवों की पूंजी लेकर नया जन्म लेता है।

प्रश्न – भक्तिभाव कैसे उत्पन्न होगा?

बाबा – भक्ति नहीं बनती, तो कुछ पुण्यकार्य करें। पड़ोसियों की सेवा आदि अच्छे काम करते-करते मन भक्ति की ओर खींचा जायेगा – रास्ता खुल जायेगा। सत्कार्य करने से चित्तशुद्धि होगी, भक्ति का संस्कार मिलेगा। दान, धर्म, सेवा करते रहें। *

प्रश्न – ईश्वरी-प्रेरणा से चल रही हूं या अपनी इच्छा से इसकी परख क्या?

बाबा – अपनी प्रेरणा से जो चलता है, उसे अपने आग्रह होंगे। जो ईश्वर की प्रेरणा से चलता है, उसे अपने आग्रह नहीं होंगे। यह अलग बात है कि हरएक के पास अपना विचार होता है, वह अपना विचार समझाता भी है। लेकिन, इतना होते हुए भी वह अपना आग्रह नहीं रखता। ऐसा होगा, तब माना जायेगा कि वह ईश्वरी-प्रेरणा से चल रहा है। *

प्रश्न – श्रद्धा का स्वरूप कैसा है?

बाबा – बच्चे को मां पर श्रद्धा होती है। मां कहती है कि आकाश में वह चांद है, तो बच्चा श्रद्धापूर्वक उसे मान लेता है। बच्चों में यदि ऐसी स्वाभाविक श्रद्धा नहीं होती तो ज्ञान का मार्ग ही कुंठित हो जाता। पहले श्रद्धा रखनी पड़ती है, फिर अनुभव आता है, उसके बाद उसकी निष्ठा

लिए गुरु ने श्वेतकेतु से पेड़ पर से फल लाने को कहा। फिर कहा – इसे तोड़ो – उसने तोड़ा। गुरु ने पूछा – भीतर क्या दीखता है?

'बीज' – शिष्य ने कहा।

उसे भी तोड़ो और देखो, भीतर क्या दीखता है?

'कुछ भी तो नहीं!'

तब गुरु कहता है – जिसमें कुछ भी नहीं दीखता है, उसमें से इतना बड़ा पेड़ पैदा हुआ। फिर कहा – **श्रद्धत्स्व सोम्य।** बेटा, श्रद्धा रखो, बरगद के फल के बीज में कुछ भी नहीं होता, तब भी उसमें से वटवृक्ष बना। कैसे? – मालूम नहीं। फिर भी श्रद्धत्स्व सोम्य। *

प्रश्न – बुद्धि कहती है कि हम जिसे जान सकते हैं, उसमें विश्वास यानी श्रद्धा से क्यों काम लें?

बाबा – बुद्धि सबकुछ तो जान नहीं सकती। फिर श्रद्धा से काम क्यों न लिया जाये? श्रद्धा और बुद्धि में विरोध कहां है? श्रद्धा ही तो बुद्धि को प्रेरित करती है और उसी बुद्धि से हम श्रद्धा रखने को बाध्य होते हैं। जहां हमारी बुद्धि नहीं पहुंचती, वहां फिर विश्वास का ही आश्रय लेना पड़ता है। *

प्रश्न – क्या जीवन में गुरु-दीक्षा आवश्यक है?

बाबा – गुरुभावना अपने देश में बहुत काम करती है। उसके कारण बहुतों को लाभ हुआ है और बहुतों को हानि भी। परमात्मा हम सबको पैदा करते हैं, तो यों ही छोड़ नहीं देते। हमारी चिंता करने, रक्षा करने के लिए उनके पास कोई योजना होनी चाहिए। इसलिए ऐसे गुरु हो सकते हैं।

लेकिन अब मैं अपने अनुभव से बोलूं, तो मुझे अभी तक ऐसा मनुष्य नहीं मिला, जिसे खालिस दुर्जन कह सकूं। गुण-दोष का मिश्रण तो देखा, लेकिन 'दुर्जन'मात्र नहीं देखा। सद्भावना हर मनुष्य में देखने को मिली। इसी तरह यह भी अनुभव नहीं आया कि कोई पूर्ण पुरुष हो। हो सकता है, मेरी आंखों को पहचानने का मौका न मिला हो। जो भी हो, गुरु को तो पूर्ण पुरुष होना चाहिए। मुझे अनेक सत्पुरुषों के सहवास में रहने का अवसर मिला है। घर में माता-पिता ऐसे थे, जिनके स्मरणमात्र से पापवासना छूती ही नहीं थी। ऐसे ही अनेक मार्गदर्शक मित्र भी मिले। लेकिन जिसे

यह अलग बात है कि किसी में कोई, तो किसी में कोई गुण होता है। प्रेम, करुणा, सत्यनिष्ठा ये गुण किसी में देखे गये। उनसे वे गुण मिलते हैं, इसलिए वे 'गुण-गुरु' हो सकते हैं। लेकिन जिसे मैं अपने-आपको सौंप दूं और वह मुझे मुक्त कर दे, ऐसा पूर्ण गुरु अभी तक दिखायी नहीं दिया। कोई मुझसे कहे कि 'मैं तुझे मुक्त कर देता हूं', तो मैं कहूंगा, 'ऐसी मुक्ति मुझे नहीं चाहिए।' मेरे पेट में रोग है। कोई कहे कि 'अमुक मंत्र से वह मिट जायेगा,' तो मैं उस तरह रोग से मुक्ति पाना नहीं चाहूंगा। यद्यपि मैं मानता हूं कि मंत्र से रोग मिट सकता है, क्योंकि वह श्रद्धा का सवाल है। रोग क्यों आया और कैसे गया, इसका ज्ञान मुझे चाहिए।

ऐसे अव्यक्त गुरु मुझे मिले हैं। उनका प्रभाव भी पड़ा है। प्राचीन काल से जो अनेक महापुरुष हो गये हैं, उनसे मुलाकातें होती हैं, बातचीत भी होती है। जैसे आपलोगों से बातें हो रही हैं, वैसे ही उनके साथ भी होती हैं। बुद्धि भी उन्हें ग्रहण करती है, जितना कर पाती है। इस प्रकार अनेक महापुरुष हवा में घूमते रहते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। *

प्रश्न – क्या बिना गुरु के आत्मज्ञान संभव है? यदि नहीं तो गुरु कहां से पाया जाये?

बाबा – बिना गुरु के आत्मज्ञान असंभव नहीं, यद्यपि कठिन अवश्य है। विवेक से बढ़कर कोई गुरु नहीं। *

प्रश्न – मंत्र क्या और कितने प्रकार के होते हैं?

बाबा – मंत्र मूलतः मनन के लिए होते हैं। मंत्र में एकआध छोटा-सा शब्द होता है, जिसमें बहुत अर्थ भरा रहता है और वह मनन में मदद करता है।

मंत्र दो-तीन प्रकार के होते हैं। एक प्रकार के मंत्र को 'विधि' कहते हैं। वह मामूली मंत्र होता है। जैसे उपनयन के समय गायत्रीमंत्र दिया जाता है, इसी तरह विवाह के समय भी मंत्र बोला जाता है। संन्यास या वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा के समय भी मंत्र प्राप्त होते हैं। ये मंत्र निश्चित होते हैं। यानी विद्या, गृहस्थाश्रम या दूसरे आश्रमों में प्रवेश करने की विधियां निश्चित हैं। उस समय मंत्र देनेवाला गुरु या पुरोहित निमित्तमात्र होता है। वह महाज्ञानी या अनुभवी हो, यह अपेक्षा नहीं। अच्छा हो, सदाचारी हो, इतनी

कुछ मंत्रों का उपयोग बुरे काम के लिए होता है जैसे जारण-मारण के मंत्र। ऐसे मंत्रों को 'तामस-मंत्र' भी कहते हैं। उनके द्वारा संहार-शक्ति प्राप्त होती है। दूसरे प्रकार के सकाम मंत्र अच्छे काम के लिए उपयोग में आते हैं। ऐसे मंत्र काम के साथ कुछ प्रेरणा देते रहें, ऐसी भावना से दिये जाते हैं। जैसे, हमने अपने काम के साथ 'जय-जगत्' मंत्र जोड़ा है ताकि भावना रहे कि हमारा काम दुनिया को जोड़ने के लिए है। इसमें भी व्यक्तिगत सत्कामना और सामूहिक सत्कामना ऐसा भेद हो सकता है।

तीसरे प्रकार के जो मंत्र हैं, वे परमात्म-ज्ञान में प्रवेश कराते हैं। उनका उद्देश्य है, साधना में मदद पहुंचाना। ऐसे मंत्र अनुभवी गुरु से प्राप्त होने चाहिए। वह मंत्र गुप्त होता है। यानी व्यक्ति की प्रगति के लिए उसकी परिस्थिति को ध्यान में लेकर गुरु एक विशेष मंत्र उसे देता है। संतों ने राम-कृष्ण-हरि आदि व्यापक मंत्र भी दिये हैं। जहां तक व्यक्तिगत मंत्र का संबंध है, साधक की शक्ति-बुद्धि ध्यान में लेकर अनुकूल मंत्र दिया जाता है। अनुभवी योग्य गुरु न मिले, तो शास्त्र के आधार पर ही आगे बढ़ें। जप की जगह स्वाध्याय करें।

चौथे प्रकार का मंत्र सबसे महत्त्व का है। ऐसे मंत्र का केवल जप ही नहीं, उसके अर्थ पर चित्त में सतत चिंतन भी करना पड़ता है। केवल जप से नुकसान नहीं, लेकिन उतना लाभ भी नहीं। असम के संत श्री शंकरदेव-माधवदेव की बात है। माधवदेव पहले शक्ति के भक्त थे। शंकरदेव ने उन्हें समझाया, मंत्र दिया तो उनकी भावना बदल गयी। शंकरदेव ने दिया मंत्र आध्यात्मिक था। क्या था, प्रकट नहीं। लेकिन मान सकते हैं कि उन्होंने माधवदेव को जड़ पकड़ने को सिखाया। जड़ को पानी देते हैं, तो पत्र-पुष्प आदि सबको मिल जाता है।

इस प्रकार का मंत्र किसी प्रकार के बंधन में नहीं डालता। मंत्र देने के बाद गुरु भी स्वतंत्र है और शिष्य भी स्वतंत्र। वह शिष्य की स्वतंत्रता और बुद्धिविकास में बाधा नहीं डालता।

मंत्र की आवश्यकता है ही, ऐसी भी बात नहीं। बहुत मिसालें ऐसी मिल सकती हैं, जहां मोक्षदाता गुरु ने स्पर्शादि द्वारा भी मदद की है। पर इस प्रकार तत्काल मोक्ष दिलानेवाला गुरु मिले, तो उसमें मुझे रुचि नहीं

पास आयेगा। स्पर्शादि से दीक्षा देना असंभव नहीं, पर मैं उसे पसंद नहीं करता। अपने लिए तो पसंद करता ही नहीं, साधक की दृष्टि से भी उसे लाभदायक नहीं मानता। गफलत से कोई मुक्ति में चला जाये, तो क्या वह ठीक बात होगी? *

प्रश्न – मंत्र-दाता गुरु कौन है? गुरु-शिष्य संबंध क्या है?

बाबा – गुरु का मुख्य अर्थ है, दृष्टिदाता। इस जमाने में कुछ लोग गुरु शब्द के पीछे पड़े हैं। वे 'गुरु' कहना या कहलवाना पसंद नहीं करते। यह ठीक है कि दुनिया में ढोंगी गुरु भी हो सकते हैं। लेकिन उन्हें हम क्यों 'कंडेम' (दूषण लगायें) करें? वे 'सेल्फ कंडेम्ड' (स्वयं-निंदित) ही हैं। लेकिन आजकल एक भाषा बन गयी है कि 'किसी को गुरु नहीं मानना चाहिए, शिष्य नहीं बनना चाहिए' आदि। इसमें गुरुभाव छोड़कर मित्रभाव पसंद करें यही वृत्ति है। मैं मित्रभाव को सबसे बढ़कर मानता हूं। लेकिन गुरु-शिष्यभाव भी मानता हूं। मैंने अपनी मर्यादा मान रखी है कि न मैं किसी का शिष्य बनूं और न किसी को शिष्य बनाऊं।

कोई मुझे लिखता है कि 'अमुक महात्मा के स्पर्श से हममें एकदम परिवर्तन हुआ, पर हम उन्हें गुरु वगैरह नहीं मानते।' यह तो केवल एक नयी भाषा हुई। जहां स्पर्श आदि के प्रभाव को आपने मान्यता दे दी, वहां वह गुरु-शिष्य की श्रद्धा ही कही जायेगी। पुराने जमाने में गुरु-शिष्य का संबंध बहुत मान्य था। ज्ञानेश्वर ने 'ज्ञानेश्वरी' में सर्वत्र गुरु-महिमा गायी है। ज्ञानदेव ने गुरु को सर्वस्व अर्पण किया था। वे भाषा भी ऐसी ही लिखते हैं – **निवृत्ति गुरु माझा अंधपण फेडिलों** – निवृत्ति गुरु ने मेरा अंधत्व मिटा दिया। परंतु मेरा चित्त कुछ ऐसा बना है कि मैं प्रभावादि की बात पसंद नहीं करता।

पुरानी बात है, उन दिनों महादेवभाई का सिर बहुत दुखता था। मेरा भी थोड़ा दुखता था। हमारे एक मित्र, बाबाजी मोघे वहां थे। उन्होंने कहा कि 'सिर दुखने की मेरे पास एक औषधि है, लेकिन वह औषधि एक मंत्र के साथ ही दी जा सकती है।' महादेवभाई को तब 'यंग इंडिया' का बहुत काम रहता था, इसलिए बहुत परेशान थे। वे औषधि लेने को तैयार हो गये। बाबाजी ने तांबूल के पत्ते पर कुछ लकीर खींचकर पान बनाकर खाने

सुझाया। मैंने कहा, रोग मिटाने के लिए पान चबाकर देख सकता हूं, परंतु लकीर खींचने की बात नहीं मान सकता।

मैं मंत्र को ढोंग नहीं मानता। मानता हूं कि मंत्र में सामर्थ्य होती है, पर उससे रोग मिटाना नहीं चाहूंगा। नहीं तो रोग आयेगा और ज्ञान दिये बिना चला जायेगा। उससे बुद्धि पर प्रहार होता है।

मैं स्पर्श की सामर्थ्य मानता हूं। बच्चे पर मां के स्पर्श का प्रभाव होता है, क्योंकि बच्चे की मां पर पूरी श्रद्धा होती है। उसके लिए मां से बढ़कर दुनिया में कोई चीज नहीं है। मां को भी बच्चे के प्रति अत्यंत प्रेम होता है। तो अन्योन्य श्रद्धा और प्रेम के कारण स्पर्शमात्र से काम होता है। वैसी असीम शक्ति ज्ञानी पुरुषों में भी हो सकती है और उससे परिवर्तन आ सकता है।

परंतु उपनिषद में दिशा दिखानेवाले गुरु की बात कही गयी है। एक धनवान जंगल में जाता है। कुछ चोर उसकी आंखें और हाथ बांधकर उसके पैसे चुरा लेते हैं। वह चिल्लाता है, "अरे मुझे चोरों ने लूट लिया।" वहां एक सज्जन आता है और उसकी आंखें खोल देता है। मुसाफिर पूछता है, "गांधार देश कहां है?" तो सज्जन जवाब देता है, **एतां दिशं गंधाराः, एतां दिशं व्रजेति।** गांधार देश इस दिशा में है, इस दिशा में जाओ। मुसाफिर निकल पड़ता है। फिर उपनिषद कहती है, **स ग्रामाद् ग्रामं पृच्छन्, पंडितो मेधावी, गंधारानेव उपसंपद्येत** – इस ग्राम से उस ग्राम, इस तरह पंडितों को पूछते-पूछते वह गांधार देश पहुंच गया। तो गुरु को दिखाने का ही काम करना है। *

प्रश्न – गुरुकृपा कैसे प्राप्त होगी?

बाबा – **अमानित्वं, अदंभित्वं,** आदि गीता (अ.13.7-11) में बताये शिष्य-गुणों का विकास करना ही गुरु की उपासना है। गुरु अंतर्यामी हैं। उनकी कृपा शिष्य को सहज प्राप्त है। *

प्रश्न – संन्यास की दीक्षा लेने के लिए मेरा दिल तड़प रहा है। गेरुए वस्त्रों के प्रति मुझे अत्यंत आकर्षण है। संन्यास के बारे में आपके क्या विचार हैं?

बाबा – संन्यास के लिए मेरे मन में बहुत आदर है। लेकिन गेरुआ पहनना आदि, जो संन्यासी का बाह्य वेश है, उसको मैं महत्त्व नहीं देता।

आज के जमाने के संदर्भ में मैं बोल रहा हूं। पुराने जमाने की बात अलग थी। समाज के सेवक होने के बजाय हम समाज की सेवा पाने के अधिकारी बन जाते हैं। इसलिए मेरी सिफारिश है कि समाजसेवक का बाह्य वेश सादा हो और अंतर में संन्यास की भावना उत्तरोत्तर मजबूत बने। *

प्रश्न – आपके जीवनकार्य की कल्पना क्या है?

बाबा – मेरे जीवनकार्य की कल्पना थोड़े में चतुर्विध है – 1. आत्मा की उन्नति का सतत प्रयत्न 2. आश्रम-संस्था के द्वारा सेवक-वर्ग की निर्मिति का प्रयत्न 3. ग्रामसेवा के प्रयोग हेतु आदर्श कार्य का प्रयत्न 4. सर्वत्र तत्त्व-संकीर्तन। *

प्रश्न – आपकी साधना का स्वरूप बतलाइए।

बाबा – मैं तो इतना ही जानता हूं कि हम पर अनेक लोगों के उपकार हैं – माता-पिता, भाई, मित्र, शिक्षक, मार्गदर्शक आदि के। इसी तरह हमारे लिए अनाज, कपड़ा आदि उत्कृष्ट पदार्थ पैदा करनेवाले, घर बनानेवाले, ऐसे अनेक लोगों की सेवा बचपन से हमें मिलती रही है। इसलिए बाबा ने सोचा कि हमें भी अपनी ओर से सेवा करनी चाहिए। उससे लोगों के उपकार चुकाये जायेंगे, ऐसी बात नहीं। फिर भी प्रयत्न करना ही चाहिए। इसे आप साधना कहते हों तो भले ही कहें, मैं इसे साधना नहीं समझता। हम खाते हैं तो दूसरों को भी खाने को मिले ऐसा प्रयत्न किया, तो उसमें से भूदान-ग्रामदान आंदोलन चल पड़ा और लोगों को खाने-कमाने के साधन मिलने लगे।

दुनिया की सेवा करना और अपने पर अधिक उपकारों का बोझ न बढ़ाना – यही है बाबा की साधना। सारे धर्मशास्त्र संयम और करुणा के बारे में बताया करते हैं। संयम यानी स्वयं किसी झमेले में न पड़ना और दूसरों को कष्ट न देना, यह बाबा का मत है। करुणा यानी दूसरे से हमें मिला, उसी तरह हमें भी दूसरों को थोड़ा देना है। *

प्रश्न – सादा जीवन बिताने से आपको कोई खास सुखानुभूति होती है क्या?

बाबा – मनुष्य के लिए सादगी बड़ी शोभा है। विशेष कर तब, जबकि जनता दरिद्र हो। जब हम सादगी से रहते हैं तो ज्यादा ध्यान बाहर की चीजों में नहीं लगाना पड़ता। मकान में बहुत फर्निचर रखा, तो उसे साफ रखने

से अमृतत्व की प्राप्ति हो सकती है? उत्तर मिला – धनसंपत्ति से अमृतत्व मिलने की आशा नहीं है। सादगी में मनुष्य का जीवन ऊंचा उठता है, इसलिए हम सादगी पसंद करते हैं। हम आश्रम में रहते थे, तब दो ही धोती रखते थे। अब पदयात्रा में बारिश में घूमना होता है, इसलिए चार धोती रखी हैं। संपत्ति कुछ मर्यादा तक बढ़ाना आवश्यक है, क्योंकि दरिद्रता में ध्यान नहीं लगता और प्रचुरता में भी व्यक्ति अंतर्मुख नहीं हो सकता। इसलिए समत्व की आवश्यकता है। जीवन में समत्व और सादगी हो, पर दरिद्रता न हो।

*

प्रश्न – वर्तमानयुग में मानवता के नाते संपूर्ण जीवन जीने का सर्वोत्तम मार्ग कौन-सा हो सकता है?

बाबा – हमें जो अनुभव है, उसके आधार पर इसका उत्तर है – 1. परिपूर्ण जीवन की शक्यता हम किसान के जीवन में देखते हैं। अतः जीवन में निरंतर भूमाता की सेवा हो। 2. शरीरश्रम से खेती की सेवा करें, बैल की मदद से नहीं और उसी आधार पर जीवन जीयें। 3. इसके साथ सतत नामस्मरण और आध्यत्मिक ग्रंथों का अध्ययन करें। 4. इसके अलावा आसपास के लोगों की जितनी सेवा कर सकते हैं, करें। ये चार चीजें होती हैं, तो परिपूर्ण जीवन का अनुभव आयेगा और उत्तम विकास होगा।

*

प्रश्न – मुझे ईश्वर यानी क्या, यह समझ में ही नहीं आता।

बाबा – ईश्वर यानी प्रत्येक गुण का पूर्ण स्वरूप।

प्रश्न – जिसमें सारे गुण पूरे खिले हों, ऐसे आदर्श मानव की कल्पना आती है। परंतु उससे ईश्वरदर्शन की तड़पन या भक्ति जाग्रत् नहीं होती।

बाबा – सारे गुण खुद अपने में उतारें, उन्हें विकसित करें यही है भक्ति। प्रत्येक चीज के पीछे जो मूलतत्त्व है, उसका महत्त्व पहचानना यही है ईश्वरदर्शन। वह सर्वव्यापी और पूर्ण है। सामने जो कुछ भी दीखता है, वह ईश्वर ही है। बाह्य आकार से ऊपर उठकर भीतर के मूलतत्त्व को पहचानो।

पहले सगुण ब्रह्म की उपासना हो। गुणयुक्त होने के कारण वह आकर्षक और सरल है। परंतु असल में निर्गुण-सगुण में कोई अंतर नहीं

परिणत रूप है। यदि निर्गुण कोरे कागज के समान है, तो सगुण लिखे हुए कागज के समान है। परंतु समझना चाहिए कि निर्गुण में असीमता है और सगुण ससीम है। सगुण को निर्गुण तक पहुंचने की सीढ़ी ही समझना चाहिए। *

प्रश्न – ईश्वर-प्राप्ति का मार्ग क्या है?

बाबा – ईश्वर-प्राप्ति का सरल उपाय यह है कि उसकी मनुष्य को उत्कट इच्छा हो। इच्छा नहीं तो ईश्वर-प्राप्ति भी संभव नहीं। इच्छा है, दरवाजा खुला है, तो ईश्वर स्वयं प्रवेश करेगा। ईश्वर ऐसे मनुष्यों को ढूंढ़ता ही रहता है, जो उसकी इच्छा करते हैं। परंतु मनुष्य दरवाजा बंद किये रहता है। ईश्वर को अंदर आने ही नहीं देता। हमें ईश्वर को पाने की जितनी इच्छा है, उससे अधिक ईश्वर को हमारे भीतर प्रवेश करने की इच्छा है। लेकिन हम ही हृदय बंद रखते हैं तो वह क्या करेगा? हृदय खोलने का उपाय है – सत्य, प्रेम, करुणा। *

प्रश्न – परमात्मा का परिचय कैसे हो?

बाबा – परमात्मा का परिचय यानी मूर्तियों के भीतर जो अप्रकट तत्त्व पड़ा है उसका परिचय होना। परमात्मा सबके अंदर भरा है, परंतु साथ-साथ काम-क्रोधादि विकार भी भरे हैं। उन विकारों को हटा दिया जाये तो अंदर का परमात्मा दीख पड़ेगा। गुरु निर्देश कर सकता है, परंतु परमात्मा का अनुभव तो अपने प्रयत्न से ही आ सकता है। *

प्रश्न – जीवात्मा और परमात्मा में क्या संबंध है?

बाबा – दोनों एक ही हैं, केवल शक्ति-सामर्थ्य का अंतर है। शुद्ध होने पर जीव और ईश्वर में कोई अंतर रह ही नहीं सकता।

हम शरीर में हैं, परंतु इस शरीर को पहचाननेवाले; शरीर से काम लेनेवाले 'हम' शरीर से भिन्न हैं। शरीर-मन-बुद्धि कमजोर पड़ते हैं, तो 'हम' कमजोर नहीं पड़ते। हमारे पिंड को संभालनेवाली जो शक्ति है – वह आत्मा है। वैसे ही बाहर ब्रह्मांड को संभालनेवाली जो शक्ति है – वही ईश्वर है। ब्रह्म बिंब है, शरीर प्रतिबिंब है। बाहर की परमात्मशक्ति लेकर आत्मशक्ति बलवान बनती है। *

प्रश्न – आत्मा ब्रह्मरूप कैसे है?

सूर्य न हो तो सारी पृथ्वी ठंडी पड़ जायेगी। बाहर हवा नहीं होती तो अंदर नाक में वायु नहीं होती। दुनिया में जो वायु फैली है, वही नाक में है। मान लो, पानी नहीं होता, तो खेती, रसोई आदि कैसे होती? इस तरह सृष्टि का अनुग्रह हम पर होता है। तो ब्रह्म व्यापक है। जो भीतर है, वह बाहर भी है। **यथा पिंडे तथा ब्रह्मांडे** – इधर आत्मशक्ति है, उधर परमात्म-शक्ति। *

प्रश्न – ईश्वर की सत्ता का अनुभव होता है, परंतु उसके चैतन्य का अनुभव क्यों नहीं होता?

बाबा – जड़ में भी जब हम सुप्त चैतन्य का भाव समझ पायेंगे, तब अनुभव होगा, काष्ठ में अग्नि की तरह।

प्रश्न – मगर उसके आनंदरूप का अनुभव कैसे हो?

बाबा – वह तभी होगा, जब हम उसका विस्तार जगत् की सत्ता में देखने लगेंगे। जन्म-मृत्यु सभी में नित्य ही उसी रसरूप का आनंद मिलना चाहिए। दुःख में भी एक प्रकार के आनंद का अनुभव करना चाहिए। दर्द होता हो तो वह और किसी को होता है ऐसा समझना चाहिए। *

प्रश्न – ब्रह्म को सदा स्मरण रखना कैसे संभव है?

बाबा – गीता में मान्य आत्मस्मृति अपने आत्मस्वरूप ही की स्मृति है। उसका असली रूप समझ लेना ही काफी है। सदा याद रखना जरूरी नहीं है। जैसे हमें यह जान लेना काफी है कि केंद्रबिंदु से वृत्त के सब बिंदु समानांतर हैं। इसका ज्ञान हो जाये तो वह स्मृति में जम जायेगा और आवश्यकता पड़ते ही उपस्थित हो जायेगा। प्रयत्न की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी।

प्रश्न – परंतु कार्यों में वह स्मृति भूली जाती है।

बाबा – यदि कार्य सत्कार्य, कर्तव्य कर्म है, तो उससे आत्मस्मृति का विरोध नहीं है। असदाचार से उसका विरोध है। अतः यम-नियमों का साधन करने से और कर्तव्य पालन में निरत रहने से वह स्मृति आंतरिकरूप से जाग्रत् रहती ही है।

प्रश्न – फिर हम प्रार्थनादि करके उस स्मृति को क्यों जाग्रत् करते हैं?

कहा है कि – **आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः। सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः।** ध्रुव-स्मृति के लिए आहार-व्यवहार, सब शुद्ध करने की जरूरत है। *

प्रश्न – ईश्वर का भान होना यानी क्या?

बाबा – भगवान का भान होना पहला कदम है और अंतिम कदम है मुक्ति। जब आप ध्यान में डूब जाते हैं, मग्न होते हैं, तब भगवान सर्वत्र व्याप्त है, इस बात से जो शुरू होता है, वह है भान या ज्ञान। वह श्रद्धा, तर्क और गुरुकृपा से बनता है। उसके बाद साधना शुरू होती है। आखिर तक पहुंच जायेंगे, तो उसे मुक्ति कहते हैं। *

प्रश्न – ॐ यानी क्या?

बाबा – हम जब गहरा श्वास-निःश्वास करते हैं उस समय जो आवाज सुनायी देती है वह ॐ है – ॐऽऽऽ, ॐऽऽऽ। भारतीय प्रार्थनाओं का प्रारंभ ॐ से होता है और समाप्ति भी ॐ से ही होती है। ईसाई प्रार्थना 'आमेन' के साथ समाप्त होती है। आमेन ओमन शब्द से बना है। और ओमन ॐ से। आमेन यानी शांति। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः। ओमन भी शांति ही है। अरबी भाषा में अमन का अर्थ शांति होता है। अमन, आमेन, ओमन, ॐ।

ॐ का और एक अर्थ है – संपूर्ण विश्व, प्रत्येक वस्तु, सर्व – व्योमन्। व्योमन् यानी विश्व – संपूर्ण आकाश। इसी से ओम्निपोटंट (सर्व-शक्तिमान) ओम्निप्रेजेंट (सर्व-स्थित) शब्द निकले हैं। 'ओम्नि' शब्द 'ॐ' से बना है।

ॐ का दूसरा अर्थ है – 'हां'। अगर मुझे 'नहीं' कहना हो तो मैं 'नो' कहूंगा। संस्कृत में न+उ मिलकर 'नो' बनता है। ॐ विधायक – 'हां' है। जीवन की तरफ हमारी वृत्ति विधायक होनी चाहिए, निषेधक नहीं। हमें सबको 'हां' कहना चाहिए। यह ॐ सर्वत्र व्याप्त है। *

प्रश्न – राम और ॐ में क्या अंतर है?

बाबा – ॐ का झुकाव निर्गुण की ओर है, जबकि राम का सगुण की ओर। लेकिन सगुण-निर्गुण एक ही तत्त्व है। *

प्रश्न – निर्गुण-निराकार परमेश्वर का स्मरण कर प्रणाम किया तो वह 33 कोटि देवताओं को पहुंचता है। फिर हिंदुस्तान में इतनी सारी मूर्तियां और देवता

है और सगुण-साकार भी। वह एक है और अनेक भी। वह असंख्य, अनंत और शून्य भी है।

हिंदुस्तान में इतनी सारी मूर्तियां क्यों हैं, इसका उत्तर सरल है। हिंदुस्तान में ब्रह्मविद्या का सूक्ष्म विचार हुआ है। **एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति** यह व्यापक भारतीय विचार है। सब तरह की मनोभूमिकावाले साधकों की चिंता करनेवाले सर्वसमावेशक धर्म में स्वाभाविकरूप से ही विविधता को अवकाश रहेगा। विचार में एकनिष्ठ धर्म में उतना नहीं रह सकता।

*

प्रश्न – ब्राह्मीस्थिति और ब्राह्मीवृत्ति में क्या भेद है?

बाबा – वृत्ति क्षणिक वस्तु है, लेकिन स्थिति सनातन और स्थायी वस्तु है, जिसे प्राप्त कर फिर जन्म-मरण नहीं होता। जीव ब्रह्म में लीन हो जाता है। शरीर रहते पूर्णता प्राप्त होना कठिन है। इसलिए मेरा खयाल है कि ब्राह्मीस्थिति प्राप्त होते ही शरीर छूट जाना चाहिए। *

प्रश्न – क्या आपको ईश्वर-साक्षात्कार हुआ है?

बाबा – प्रश्न बहुत प्रचलित है। प्रश्न में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ बिना जाने उत्तर कैसे दे सकते हैं? 'घड़ी' कहने से आप और हम एक ही अर्थ समझते हैं, क्योंकि वह स्थूल वस्तु है। पर 'ईश्वर' और 'साक्षात्कार' ये शब्द सूक्ष्म अर्थ बतानेवाले हैं। आप उनका अर्थ क्या समझते हैं और मैं क्या समझता हूं, यह निश्चित हुए बिना उत्तर संभव नहीं। तथापि व्याख्या की परवाह न करते हुए उत्तर देना हो, तो इस तरह दूंगा, 'हुआ है और नहीं भी!' *

प्रश्न – प्रेरणा भगवान ही दे रहे हैं, यह कैसे पहचाने?

बाबा – प्रेरणा भगवान की है या शैतान की, यह समझना अनुभूति पर निर्भर है। आपको अंदर से कैसी अनुभूति होती है? प्रसन्नता की। कल प्रेरणा हुई और प्रसन्नता महसूस हुई तो वह प्रेरणा ईश्वर की है। आज मन में विचार आया और कल चला गया, प्रसन्नता का भी खास अनुभव नहीं हुआ, तो समझ लें कि वह ईश्वर की प्रेरणा नहीं है। ईश्वर की ओर से प्रेरणा होने पर प्रसन्नता और हिम्मत बढ़नी ही चाहिए। *

प्रश्न – अंत में भगवत्-स्मरण हो, इसके लिए जीवन में किस चीज की

बाबा – भगवत्-स्मरण के लिए न आसन लगाने की आवश्यकता है न और किसी चीज की। गीता के आठवें अध्याय में बतायी गयी प्रक्रिया ध्यानयोग की एक विशेष साधना है। गीता एक समग्र ग्रंथ है। परमार्थ चिंतन की जितनी शाखाएं हैं, सब पर वह प्रकाश डालती है। गीता में भगवान ने कहा है कि 'जो अनन्यचित्त है, सदैव मेरा स्मरण करता है – केवल मनन के समय ही नहीं, जीवनभर करता है – उसके लिए मैं सुलभ हूं।'

योग का विचार है कि प्राणायाम आदि द्वारा परमात्मा को ग्रहण किया जाये। वह भी एक मार्ग है। जिनके चित्त में प्रेम प्रकाशित नहीं होता, उन्हें निग्रहमार्ग में जाना पड़ता है। ध्यानयोग का निग्रहमार्ग भी उसमें बताया है। लेकिन भगवान ने उसी अध्याय में कहा है कि मैं उसके लिए सुलभ हूं, जो निरंतर मेरा स्मरण करता है।

आगे नौवें अध्याय में भगवान कहते हैं – **यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् । यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्।** यानी 'तू जो करता है, जो खाता है, जो देता है या जो तप करता है, सबकुछ मुझे अर्पण करता चल और हृदय प्रेम से भरा रख।' तो भक्तिमार्ग से बढ़कर दूसरा मार्ग नहीं।

लेकिन परमेश्वर का प्रेम इतना सुलभ नहीं। कुछ लोगों का ईश्वर पर विश्वास ही नहीं बैठता। बैठे भी, तो इंद्रियां आदि जो मोह-जाल खड़ा करती है, उसके कारण उसकी ओर ध्यान ही नहीं जाता। संकट के समय ध्यान जाता है, तो वह संकट-निवारण के लिए ही जाता है। यानी मतलब के लिए ईश्वर की ओर ध्यान जाता है, ईश्वर के लिए नहीं। परंतु निरंतर परमात्मा का स्मरण रहा, तो अंत में परमात्मा हमारी सेवा अवश्य करेगा। हमने जीवनभर उसकी सेवा की, तो वही ध्यान रखेगा कि अंत में इसे मेरी सेवा की आवश्यकता होगी। *

प्रश्न – 'काल' (टाइम) के बारे में आपकी क्या राय है?

बाबा – 'काल' एक तत्त्व माना गया है। वह अत्यंत सूक्ष्म वस्तु है। विज्ञान के सारे प्रयोग 'काल में' होते हैं, 'काल पर' नहीं। काल को नापा जाता है, सूर्य, चंद्र आदि की गतियों के साथ तुलना करके! वैसे अब यह भी संभव हो सकेगा कि हम कहीं से 12 ता. को चलें और 11 ता. को पहुंचे या 1966 में चले और 1965 में पहुंचे।

नापा जाता है। केवल सहूलियत के लिए काल को नापा जाता है, वैसे काल अनादि-अनंत है। दूसरा काल है जो वेगक्षय करता है। कोई शोक में डूबा हो तो हम कहते भी हैं कि 'थोड़ा काल बीतने दो, फिर मन शांत हो जायेगा।' काल बड़ा सूक्ष्म तत्त्व है। *

प्रश्न – 'कवि' शब्द की उत्पत्ति कहां से हुई?

बाबा – 'कू' में से। 'कू' यानी कूजन। जो कूजन करता है वह है कवि। शास्त्र ने भी कवि के लिए क्रांतदर्शिता का गुण बताया है। *

प्रश्न – क्या एक ही जन्म में मोक्ष मिल सकता है?

बाबा – अवश्य मिल सकता है। क्योंकि मानवदेह ऐसी है कि उसमें चिंतनशक्ति पड़ी है। यह शक्ति चींटी में नहीं। चींटी चिंतन करेगी तो खाने की चीजें इकट्ठा कैसे करें इसका करेगी, इससे ज्यादा चिंतन उससे नहीं होगा। परमात्मा का चिंतन करने की शक्ति मानवदेह में है। लेकिन परमात्मा का निरंतर ध्यान और सत्कर्म करते हुए भी इस जन्म में मोक्ष नहीं सधा तो अगला जन्म मानव-जन्म मिलेगा और मोक्ष सधेगा। लेकिन प्राप्त करने का प्रयत्न तो इसी जन्म में होना चाहिए, तो शायद अगले जन्म में प्राप्त होगा। अगले जन्म में प्राप्त करेंगे ऐसा सोचेंगे तो शायद दस जन्म लग जायेंगे। *

प्रश्न – परलोक क्या है, कहां है और वहां का राजा कौन है?

बाबा – परलोक रात को, बिछौने पर है और उसके राजा हम ही हैं। सोने पर हम परलोक में जाते हैं और जागृत होने पर इहलोक में आते हैं। जो गाढ़ निद्रा लेते हैं, वे ब्रह्मलोक में जाते हैं। जिनको अच्छे सपने आते हैं, वे स्वर्गलोक में जाते हैं और जिनको बुरे सपने आते हैं, वे नरक में जाते हैं। निद्रा समाधि है, उसमें आप परलोक में जाते हैं और फिर वापस आते हैं। परमेश्वर की इच्छा है, इसलिए वापस आते हैं। इसी को व्यापकरूप देकर शास्त्रकारों ने समझाया है कि जैसे अगले दिन का अधूरा काम दूसरे दिन जागृत होने पर पूरा करते हैं, वैसे ही इस जन्म का काम पुनर्जन्म में आगे चलाते हैं। *

प्रश्न – ये भूः भुवः आदि लोक क्या हैं?

बाबा – ये लोक मानसिक अवस्थाओं के प्रतीक हैं। मैं तो इन्हें स्वप्न

वृत्तियां सम हो जाती हैं। हिंसक पशु और अहिंसक मृग सभी एक समान हो जाते हैं। उसी सुषुप्ति-अवस्था का बढ़ा हुआ आकार इन लोकों में हमको मिलता है। ये सब अवस्थाएं हैं। किसी में मन तथा किसी में बुद्धि प्रधान है। उनसे ऊबकर मनुष्य का आत्मा आगे-आगे बढ़ना चाहता है और सत्यमय ब्रह्मलोक में जाता है। सत्त्वगुण आत्मा के सबसे अधिक समीप होने पर भी वह अंतिम स्थिति नहीं है। इसी लिए कहा है कि **आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन।** उनका भी नाश है।

प्रश्न – ब्रह्मलोक का नाश कैसा?

बाबा – ब्रह्मलोक यानी ब्रह्मदेव का लोक, न कि ब्रह्म का लोक। ब्रह्मलोक तो सब लोकों से परे है। वह एक साम्यावस्था है, जिसके प्राप्त होने पर जीव ब्रह्मलीन और शांत हो जाता है।

प्रश्न – इस श्लोक में पुनरावर्तन का अर्थ पुनर्जन्म है?

बाबा – पुनरावर्तन अर्थात् परिवर्तन, पुनर्जन्म नहीं। *

प्रश्न – आप योगशक्ति पर विश्वास करते हैं?

बाबा – अवश्य। वह दो प्रकार की होनी है। एक तो वह जो यम-नियम आदि करने के बाद प्राप्त होती है। दूसरी, जिसका इनसे संबध नहीं और केवल मानसिक होती है। उसका दुरुपयोग होना संभव है। पतंजलि ने अपने योगसूत्र में इसलिए यम-नियम को ही मुख्य रखा है। बाकी हठयोगी आदि केवल शरीरशोधन या सिद्धिप्राप्ति के लिए योग करते हैं। पातंजल योग का उद्देश्य चित्तशोधन के द्वारा आत्मप्राप्ति है। *

प्रश्न – क्या आत्मा के स्वरूप का चिंतन आवश्यक है?

बाबा – चित्तशोधन द्वारा भी आत्मप्राप्ति हो सकती है और स्वतंत्ररूप से भी हो सकती है परंतु चित्तशोधन द्वारा यह सरल होती है। शुद्ध चित्त में आत्मा का प्रतिबिंब अच्छा पड़ता है। *

प्रश्न – स्वरूप-चिंतन का क्या अर्थ है?

बाबा – मुख्य चिंतन यह होना चाहिए कि आत्मा शरीर से अलग है। केवल बौद्धिकरूप से समझ लेने से काम नहीं चलता, उसका अनुभव भी होना आवश्यक है। यह केवल अभ्यास से ही हो सकता है।

से तितिक्षा बढ़ती है, परंतु शरीर के अधिक पीड़न से उत्तेजना भी बढ़ जाती है। हमें तो मनोवृत्ति ही ऐसी बनानी चाहिए कि हम शरीर से अलग हैं।

प्रश्न – शरीर से किस प्रकार अलग हुआ जाये?

बाबा – अपने को इंद्रियां और शरीर से अलग समझना सबसे बड़ी वैज्ञानिक प्रक्रिया है। इसकी शिक्षा पहले से ही बालकों को दी जानी चाहिए। कोमल हृदय पर किसी भी तत्त्व का जमाना सरल होता है। परंतु हम बच्चों को पहले ही से इंद्रियलोलुप बनाते हैं। उन्हें यह समझाना चाहिए कि इंद्रियां केवल ज्ञान की साधन हैं, न कि भोग की। कड़वी होते हुए भी यदि कोई चीज लाभदायक सिद्ध कर दी जाये, तो वे अवश्य खायेंगे और मीठी चीजें यदि हानिकर सिद्ध हों तो वे कभी नहीं खायेंगे। बालकों को सदा यही शिक्षा देनी चाहिए कि हम आत्मरूप हैं और शरीर से अलग हैं। इंद्रियां उसके ज्ञान या कर्म के साधन हैं। इस प्रकार उनमें निर्लिप्तभाव का उदय होगा और वे आजन्म वैसा व्यवहार करेंगे। *

प्रश्न – कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि मनुष्य-स्वभाव प्राकृतिकरूप से ही अधोगामी है?

बाबा – ऐसा नहीं है। वह प्रकृति से शुद्ध है, परंतु बाहरी प्रभावों और प्रवृत्तियों के कारण विकारयुक्त हो जाता है। सारे वातावरण में सत् और असत् विचार भरे पड़े हैं। वे हमारे दिमाग से आकर टकराते हैं और हमें दुःखी कर डालते हैं। उनसे प्रभावित न होकर हमें दृढ़ता और सद्विचारों की तरंग स्वयं उत्पन्न करनी चाहिए। आत्मा का स्वरूप तो शुद्ध-बुद्ध और निरंजन है। वैज्ञानिक मन का विश्लेषण करते हैं, परंतु 'मनोजय' का उपाय नहीं बतलाते। हमारे यहां बाहरी और भीतरी दोनों उपाय बताये गये हैं। मन अशांत या विकारयुक्त होते ही स्नान कर डालना चाहिए। बुरे विचारों को वचनरूप तथा कार्यरूप में न आने देना चाहिए। अगर वे मन में भी न आयें तो बहुत अच्छा, अन्यथा उन्हें वचन और कार्य में तो रोकना ही चाहिए। *

प्रश्न – चित्त शुद्ध करने की प्रक्रिया क्या है?

बाबा – अपने में कौन-सा गुण है, यह देखें। दुनिया में ऐसा एक भी मनुष्य निर्माण नहीं हुआ, जिसमें एक भी गुण न हो। और ऐसा भी

प्रक्रिया है। जब गुण का अत्यंत उत्कर्ष होगा, तब उन गुणों के आधार से समाधि लगेगी। दूसरा, मुझमें कुछ दोष हैं। वे जिस मनुष्य में नहीं होंगे, उसका आदर करें, उसका द्वेष न करें।

मान लीजिए एक वर्तुल है और उसके मध्य में परमात्मा है तो हम सब परमात्मा से समान फासले पर हैं। किसी के पास सत्य (गुण) है। इनके पास क्षमा है। और उनके पास प्रेम है। सत्यवाला अपना गुण बढ़ाते-बढ़ाते परमेश्वर के पास पहुंचे। परमेश्वर के पास पहुंचने के बाद बाकी गुण अपने-आप ही आयेंगे। सत्यवाला सीधा परमेश्वर के पास पहुंचेगा। अगर वह क्षमावाले के मार्ग पर जाने लगेगा, तो वह भूमिति के तत्त्व के खिलाफ होगा। त्रिकोण की दो रेखाएं तीसरी से बड़ी होती हैं। इसलिए उसके मार्ग पर जाने के बदले, अपने मार्ग से जाना ही सीधा और सरल होगा। वहां पहुंचने के बाद पूर्णता सहज ही प्राप्त होगी। इस तरह चित्तशुद्धि की दुहरी प्रक्रिया है।*

प्रश्न – शीघ्र और अहंशून्य निर्णय कैसे किया जाये?

बाबा – सहजप्राप्त सत्कार्य करते रहने से अहंशून्यता की ओर जाने में मदद होगी। यह शीघ्र सधे, इसकी आवश्यकता नहीं, धीरे-धीरे सधता रहेगा। भगवान की कृपा हुई तो शीघ्र भी सध सकता है, लेकिन वह बात अपने अधीन नहीं है। *

प्रश्न – 'तुम महान हो, क्षुद्र जीव नहीं' यह भाव रखते हुए काम करने पर अहं का भाव कैसे निकल सकता है? क्या इस भाव से कार्य करना अहंबोधक नहीं?

बाबा – हम क्षुद्र जीव नहीं और न दूसरे ही क्षुद्र हैं। अहंता तो तब आती है, जब दूसरों को क्षुद्र मानकर अपने को बड़ा समझें। *

प्रश्न – समाधान कैसे मिल सकता है?

बाबा – अपने को भूलने से ही समाधान प्राप्त होगा। सदैव याद रखो कि हम दूसरों की सेवा के लिए हैं, अपने लिए नहीं। यदि सोचोगे कि मैं अपने लिए हूं, तो असमाधान ही रहेगा। मेरा जीवन मेरे लिए नहीं, यह खयाल करने से ही समाधान मिलेगा। जितना अपने को याद करोगे, उतना असमाधान होगा और जितना अपने को भूलोगे, उतना ही समाधान मिलेगा।

बाबा – दरवाजा बंद रहा तो सूर्य अंदर प्रवेश नहीं करता। पूरा खोला तो पूरा प्रवेश करेगा, आधा खोला तो आधा प्रवेश करेगा। अब खोलना यानी क्या? **सांस सांस पर राम कहो, वृथा सांस मत खोय** – प्रत्येक सांस के साथ रामनाम चलना चाहिए। एक क्षण भी नामस्मरण के बिना नहीं जाना चाहिए। यह है खुला चित्त। इसका अर्थ यह नहीं कि स्मरणरूप क्रिया चलनी चाहिए, क्रिया की जरूरत नहीं। जिसको 'कान्शसनेस' कहते हैं ऐसी जाग्रति चित्त में चाहिए। हम उसके पास हैं, वह हमारे पास है, ऐसी निरंतर अंदर में जाग्रति चाहिए। यह होता है तो चित्त खुला है। *

प्रश्न – चित्तस्फोट कैसे होगा?

विनोबा – चित्त माईन्यूट (सूक्ष्म) होना चाहिए। स्थूल नहीं रहना चाहिए। चित्त स्थूल इसलिए बनता है कि उस पर संसार के आवरण होते हैं। उन आवरणों को हटाने पर चित्त सूक्ष्म की ओर मुड़ता है। *

प्रश्न – वासनात्याग कैसे हो?

बाबा – वासनाओं के निराकरण का क्रम होगा – 1. कुवासना-त्याग, 2. सद्वासना भी सबको उपलब्ध न हो, तो उसका भी त्याग, 3. सद्वासना हो, लेकिन उसके भोग में मात्रा हो और 4. व्याकुलता को काबू में रखने के लिए सद्वासनात्याग। *

प्रश्न – हम आत्मज्ञान की ओर बढ़ रहे हैं, इसका मापदंड क्या है?

बाबा – निर्विकारता ही उसका पैमाना है। केवल काम-क्रोध आदि स्थूल विकार ही नहीं परंतु आलस्य, स्वाद, शरीरसुख की कामना आदि सूक्ष्म विकार भी हममें कम होते जाने चाहिए। *

प्रश्न – असत्य से कैसे छूटें?

बाबा – असत्य को जब तक लाभदायक के बदले घातक नहीं समझेंगे, तब तक वह दूर नहीं होगा। अभी तो हम असत्य को ही सत्य की अपेक्षा अधिक लाभदायक और प्रिय समझते हैं, इसलिए उसके प्रयोग में संकोच नहीं करते। साहित्य में भी असत्य को 'अतिशयोक्ति' नाम देकर ऊंचा उठाने का प्रयत्न किया है। वास्तव में 'स्वभावोक्ति' से ही असली आनंद आना चाहिए। *

की रोशनी छोड़ी जाये, तो आंख को पीड़ा होगी, सहन नहीं होगा। इसका नाम है – द्वेष। यदि हराभरा मैदान आंख के सामने हो, तो आनंद होता है, खुशी होती है। यह है – राग। इस तरह स्पष्ट है कि इंद्रियों में राग-द्वेष अनिवार्य हैं। बल्कि इंद्रियों में राग-द्वेष न हो तो वे बेकार बन जायेंगी। खाने के लिए कोई वस्तु बनायी गयी और नाक को दुर्गंध आयी तो वह नहीं खाते। इस तरह कुछ राग-द्वेष लाभदायी होते हैं, कुछ राग-द्वेष नुकसान करनेवाले भी हैं।

दोष वहां आता है, जहां हम मर्यादा से आगे बढ़ जाते हैं। मधुर गायन सुनने से आनंद होता है, लेकिन बहुत अधिक सुनने से दिमाग को नुकसान भी पहुंचता है। घंटों गाना सुनते रहें, जागते रहें, तो वह अति हो जायेगा। वह आसक्ति है। जहां विषयों का मर्यादित सेवन होता है, वहां राग-द्वेष हानिकारक नहीं होते। जहां अतिरेकी सेवन होता है, वहीं हानि होती है। वेदांत समझानेवाले यह नहीं समझाते कि राग-द्वेष दो प्रकार के हैं। उलटे उसका खंडन ही करते हैं। मनुष्य कई राग-द्वेषों से मुक्त हो सकता है। पर जो जरूरी राग-द्वेष हैं, उनसे मनुष्य को देह से मुक्त होने पर ही छुट्टी मिलती है, देह के रहते वह संभव नहीं है। देह में रहते हुए इतना ही हो कि राग-द्वेष मर्यादा से बाहर न जायें। ज्ञानी की जिह्वा पैनी होनी चाहिए। कोई कुछ भी खा ले, तो या तो वह पागल है या अच्छे अर्थ में वह ध्यानयोगी हो सकता है। लेकिन जो सच्चा ज्ञानी होगा, वह खाने की चीज का गुणधर्म और मात्रा बराबर पहचानेगा!

*

प्रश्न – हमारी वासनाएं और आत्मा की इच्छा या प्रेरणा, दोनों का अंतर कैसे पहचानें?

बाबा – दोनों का अंतर अंधकार और प्रकाश जैसा है। वासना चित्त को अशांत करती है, जबकि परमात्म-प्रेरणा शांति देती है। वासना का चित्त पर बोझ होता है, जबकि परमात्म-प्रेरणा से प्रेरित चित्त सब भारों से मुक्त होता है।

*

प्रश्न – आप प्राचीन धर्मग्रंथों के अध्ययन पर जोर देते हैं, लेकिन आधुनिक साहित्य के बारे में कुछ नहीं कहते। क्या आइन्स्टीन का साहित्य अमर साहित्य नहीं है?

में प्राचीन किताबें पढ़ें। यह थोड़े में नुस्खा है, युक्ति है। विज्ञान में नयी-नयी खोजें होती रहती हैं। विज्ञान निरंतर बदलता रहेगा। न्यूटन के जमाने में न्यूटन से बढ़कर दूसरा विद्वान नहीं था। परंतु आज स्कूल का बच्चा भी उससे अधिक जानता होगा। यह खयाल भी गलत है कि आइन्स्टीन का साहित्य अमर है। विज्ञान बहुत गति से आगे बढ़ रहा है, इसलिए नयी-नयी खोजें होंगी और पुरानी पीछे रह जायेंगी। *

प्रश्न – ईश्वरानुभूति होने का सबसे मुख्य प्रमाण क्या है?

बाबा – यह अनुभूति जीवन में उतर जायेगी और अपने-पराये का भेद दूर होकर एक सत्ता का अनुभव होगा।

प्रश्न – इसका मतलब दूसरे के दुःख को अपना दुःख और दूसरे के सुख को अपना सुख समझना?

बाबा – अगर व्यक्ति सारे संसार का दुःख अपने ऊपर लेकर बैठ जायेगा तो उसके बराबर दुःखी कोई न होगा। दूसरों के सुख-दुःख से सुखी-दुःखी होने का अर्थ है – लोगों से सहानुभूति की भावना, न कि उनके दुःख से एकरूप हो जाना।

प्रश्न – फिर आत्मौपम्य बुद्धि का क्या अर्थ होगा?

बाबा – उसका अर्थ है – समत्वबुद्धि। सुख और दुःख को सम समझना, फिर चाहे वे अपने हों या दूसरों के। हमें सुख-दुःख में तटस्थ और समत्वबुद्धि रखनी चाहिए और अनासक्तभाव से उसे दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। *

प्रश्न – 'सामूहिक समाधि' से आपका क्या मतलब है?

बाबा – मनुष्य अपनी देह से छूटता है, तो भी उसकी मुक्ति की अपेक्षा बाकी रह जाती है। अमुक्त रहते हुए मुक्ति की अपेक्षा रखता है। इसका अर्थ यह हुआ कि उसकी मुक्ति 'देहबद्ध' – यानी एक विशिष्ट देह के साथ बंधी है। लेकिन जिस समय वह पहचान लेगा कि मैं इस एक ही शरीर में नहीं, अन्य सभी शरीरों में हूं, तभी वास्तव में उसकी उपाधियों से मुक्ति होगी। ऐसी स्थिति में यदि एक देह से छूटने पर कोई समझ ले कि मैं मुक्त हो गया, तो वह मुक्त नहीं। तब तो वह मुक्ति ही बंधन बन बैठती है। इस तरह 'मुक्ति' का स्वच्छ और निर्मल अर्थ लेना हो तो उसे

प्रश्न – सामूहिक साधना कैसे सधे?

बाबा – वास्तव में व्यक्तिगत साधना के अभाव में सामुदायिक साधना बनेगी नहीं। लेकिन, व्यक्तिगत साधना का स्वरूप ही निरहंता यानी ही व्यक्तिशून्यता और सामुदायिक साधना का स्वरूप यानी सर्वापेक्षता अथवा अन्योन्य सहकार। इस प्रकार की साधना का पैमाना बढ़ने के लिए परस्पर संवित् जाग्रत् रहना चाहिए। अर्थात् हमारी सभी हलचलें – स्वार्थ की या परार्थ की या परमार्थ की; अंतर या बाह्य दोनों प्रकार की – हमारे एक आत्मा की सन्निधि में रहती हैं, वे सब आत्माओं की सन्निधि में होनी चाहिए।

*

प्रश्न – धन और द्रव्य दोनों में क्या अंतर है?

बाबा – संस्कृत में एक 'धन' शब्द है और एक 'द्रव्य' शब्द है। 'धा' धातु से धन बना है, जिसका अर्थ है रखना। तो धन का अर्थ हुआ, एक जगह बैठनेवाला। 'द्रव्य' शब्द द्रु धातु से बना है, जिसका अर्थ है बहना। तो द्रव्य यानी दौड़नेवाला, फुटबाल का खेल। मेरे पास गेंद आयी तो मैंने लात मारकर उसे आपकी ओर फेंकी। आपने लात मारकर दूसरे की ओर, उसने तीसरे की ओर। मान लीजिए, मैंने गेंद आपकी ओर फेंकी और आपने उसे पकड़ रखा, तो क्या होगा? तो सारा खेल समाप्त! आपके पास गेंद आये, और आप उसे दूसरे के पास भेज दें, तभी खेल चलेगा। वैसे ही द्रव्य का होना चाहिए। आपके पास आया, तो तुरंत फेंक दें। यदि धन ऐसा दौड़ता रहे, द्रव्य बने तो तारक होगा।

मान लीजिए, मैं गांव का तेली हूं और आप हैं गांव के जुलाहा। आप मेरा तेल खरीदते हैं, तो आपका थोड़ा पैसा मेरे पास आया। मैंने हजाम से हजामत करवायी, तो मेरे पास से पैसा उसके पास गया। फिर हजाम को कपड़ा खरीदना पड़ा, तो पैसा आपके पास आया। यानी जुलाहे से पैसा तेली के पास आया, तेली से हजाम के पास गया और हजाम से फिर जुलाहे के पास आया। इस तरह गांव में एक-दूसरे के धंधे को मदद करते जायें, तो वह पैसा जीवन के लिए तारक होगा। खेलता हुआ पैसा ही 'द्रव्य' है।

इसके विपरीत आपके पास पैसा आया और आपने जेब में रख लिया, गांव में एक-दूसरे से माल नहीं खरीदा, बुढ़ापे में काम आयेगा, यह कहकर

हम भोजन के लिए बैठे हैं। थाली में लड्डू आया। हाथ ने ले लिया और हाथ बन गया स्वार्थी यानी लड्डू को पकड़ रखा, मुंह में नहीं डाला तो शरीर को पोषण कैसे मिलेगा? लेकिन हाथ ऐसा नहीं करता। वह लड्डू मुंह में डालता है। मुंह उसे चबा-चबाकर पेट में ढकेल देता है और पेट पचाकर उसका खून बनाता है तथा शरीर में चारों ओर भेज देता है। शरीर के अवयव स्वार्थी नहीं होते। यदि हृदय स्वार्थी बना और उसने खून को इधर-उधर नहीं बहाया, तो हार्टफेल हो जायेगा। शरीर के सारे अवयवों में अन्योन्य प्रेम है। अपनी चीज दूसरों को देने की यह क्रिया जैसे शरीर में चलती है, वैसी ही समाज में चलनी चाहिए।

चीज पास न रखकर बांट देने में ही लाभ है। आपके पास कटहल है, तो वह भी बांटकर खायें। आपका कटहल इनके पास जायेगा, इनका आपके पास आयेगा। यह जो दान की प्रक्रिया है, वह सतत चले – एक के पास से दूसरे के पास, दूसरे से तीसरे के पास, तो समाज खड़ा रहेगा।

आज गांव की स्थिति उलटी है। गांव के लोग गांव के तेली का तेल नहीं खरीदते। तेली गांव के बुनकर का कपड़ा नहीं खरीदता। बुनकर गांव के चमार से जूता नहीं खरीदता। यानी हम गांववाले एक-दूसरे की मदद नहीं करते, अपना स्वार्थ देखते हैं। बाहर सस्ता मिलता है, तो वहां से खरीदते हैं। परिणामस्वरूप गांव का शोषण होता है। यदि हमें दूसरे गांव से चीज खरीदनी हो, तो ग्रामसभा द्वारा खरीदें। आज क्या होता है? हर कोई बाहर से माल खरीदता है और अपनी-अपनी चीजें बाहर बेचता है। इसी लिए बाहरी लोगों द्वारा गांवों का शोषण होता है। इसके बजाय ग्रामसभा द्वारा व्यवहार हो।

इस तरह व्यवहार चलेगा, तभी 'धन' 'द्रव्य' बनेगा। 'धन' नाशकारक तो 'द्रव्य' लाभदायक है। धन के बिना तो अच्छा चलेगा, उससे कोई मामला नहीं बिगड़ेगा। पर द्रव्य के बिना चल नहीं सकता।

*

प्रश्न – खुशी किसे कहते हैं और गम किसे?

बाबा – चित्त को समाधान हो, उसे 'खुशी' और चित्त को असमाधान हो, उसे 'गम' कहते हैं।

यह नहीं हो सकता कि हमें गर्मी के दिनों में ठंडा पानी मिले तो खुशी न महसूस हो। लेकिन चित्त ऐसा बन सकता है कि कर्तव्य के लिए तकलीफ होने पर भी इन्सान उसे उठाये और उसी को आनंद समझे। यह सुख का विषय है और यह दुःख का, यह पहचाने, लेकिन कर्तव्य के लिए दुःख भुगतना पड़े तो उसे खुशी से भोगे। *

प्रश्न – पैदा होते ही बालक रोता क्यों है?

उत्तर – इसका आध्यात्मिक उत्तर है कि बालक पैदा हुआ यानी परमेश्वर के यहां से आया। आधार छोड़कर आने से वह अपने को निराधार महसूस करता है। फिर उसे मां मिलती है, जो परमेश्वर की जगह ले लेती है। मैं कहता हूं, हम पैदा हुए तो रोते हुए आये, लेकिन मरते समय तो हंसना चाहिए, क्योंकि अब पुनः भगवान के पास जा रहे हैं। *

प्रश्न – विज्ञान की नयी-नयी खोजों से सृष्टि की ज्ञानसंबंधी उलझनें कम होने के बजाय बढ़ती-सी दीख रही हैं। क्या किया जाये?

बाबा – कहा जाता है, 'लिटिल नॉलेज इज ए डेंजरस थिंग (अल्प ज्ञान खतरे की चीज है), वैसे ही 'लिटिल साइन्स इज ए डेंजरस थिंग' (अल्प विज्ञान खतरे की चीज है)। आज दुनिया में 'लिटिल साइन्स' (अल्प विज्ञान) है, इसी लिए उलझनें हैं। विज्ञान खूब बढ़ना चाहिए। ज्यों-ज्यों वह बढ़ता जायेगा, उलझनें दूर होती जायेंगी। *

प्रश्न – आज चारों ओर श्रद्धाहीन जीवन दिखायी दे रहा है। कहीं श्रद्धा और निष्ठा दिखायी नहीं देती। क्या समाज ऐसा ही चलता रहेगा?

उत्तर – श्रद्धा पर भगवान ने बहुत बड़ा भाष्य किया है। श्रद्धाहीन कोई भी नहीं है। श्रद्धा के बिना जीवन ही संभव नहीं। लेकिन वह सात्त्विक, राजस, तामस त्रिविध है और उनमें सात्त्विक श्रद्धा ही तारक होती है। उसकी वृद्धि के लिए संतों का उत्तम साहित्य उपलब्ध है। उसमें कुछ भाग पुराना-सा हो गया है, उतना छोड़कर उसका चिंतन, मनन करना चाहिए। इसके अलावा सात्त्विक आहारादि की भी योजना होनी चाहिए। *

प्रश्न – दिवास्वप्न, आदर्शवाद और यथार्थवाद में कितना अंतर है?

बाबा – दिवास्वप्न व्यर्थ है। आदर्शवाद की ओर मनुष्य को जाना

प्रश्न – देश में जो अन्याय चल रहा है, उसका मुकाबला कैसे करें?

बाबा – इस समय भारत में इतना अन्याय चल रहा है कि हम उसके पीछे पड़े, तो हमारे लिए न्याय के साथ एक भी कदम उठाना कठिन हो जायेगा। फिर भी हम कदम उठा रहे हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि काल-प्रवाह हमारे लिए अनुकूल है। यह हमारा दर्शन है। वैसे तो जरा आंख खोलो, तो सर्वत्र अन्याय-ही-अन्याय दीखता है। राजनैतिक क्षेत्र से लेकर रचनात्मक क्षेत्र तक और खादी से लेकर गादी तक सर्वत्र अन्याय दीख रहा है। लेकिन मेरी दृष्टि यह है कि छोटे-मोटे अन्यायों को दूर करने में शक्ति खर्च करने के बजाय भावात्मक (पॉजिटिव) काम उठायें, तो ठोस परिणाम आयेगा। हमें परिणामपरायण भी नहीं बनना है और न परिणामनिरपेक्ष ही। दूसरे लोग छोटे-मोटे काम करते हैं और सफल होते हैं, तो मैं कहता हूं कि अच्छा हुआ! समर्थ रामदास ने कहा है – **परस्परें उभारावें, भक्तिमार्गासी** – अर्थात् भक्तिमार्ग का आयोजन दूसरों के जरिये ही करवाया जाये। कर्ममार्ग के लिए तो यह कहा ही जाता है, लेकिन भक्तिमार्ग के लिए भी कहा गया है कि दूसरों के जरिये काम करवाये जायें। **दास डोंगरीं राहतो। यात्रा देवाची पाहतो** – समर्थ रामदास कहते हैं कि वे स्वयं पहाड़ पर रहते हैं और भगवान के मंदिर में चल रही यात्रा को दूर से ही देखते हैं। *

प्रश्न – वर्तमान समाज में मुक्ति के लिए किन चीजों की आवश्यकता है?

बाबा – तीन चीजें जरूरी हैं – 1. हम जिसे सत्य समझते हैं, उस पर चलना। 2. सुखी लोगों के लिए प्रेम रखना, और 3. दुःखी लोगों के लिए करुणा। ये तीनों चीजें अत्यंत आवश्यक हैं। इनके अलावा दो चीजें और हैं जो इन्हीं में से निकलती हैं – 1. निर्भयता और 2. इंद्रियों पर संयम। इन दो को हमने अलग स्थान नहीं दिया, क्योंकि सत्य, प्रेम, करुणा में ये आ ही जाती हैं। ये पांच चीजें हों, तो मुक्ति का मार्ग खुल जाता है।

प्रश्न – कोणार्क के नग्न चित्रों का क्या अर्थ है?

बाबा – उसमें तो बहुत गहरी आध्यात्मिक दृष्टि है। जिस क्रिया से मैं पैदा हुआ, उसकी मैं तो कीमत कम नहीं करता। वह पवित्र क्रिया ही माननी चाहिए। किंतु ब्रह्मचर्य उससे भी अधिक ऊंचा है। इसलिए वीर्यशक्ति

चाहिए, यह मेरी समझ में ही नहीं आता। यदि उसे स्त्रियों का संपर्क मिलता हो, तो उससे उसे पवित्रता का ही अनुभव आना चाहिए। साधारण अवस्था में जितना पवित्र लगता है, उससे ज्यादा पवित्र स्त्रियों के संपर्क में लगना चाहिए, तभी वह ब्रह्मचारी है। *

प्रश्न – पहले धर्म पैदा हुआ या मानव?

उत्तर – धर्म दो प्रकार का होता है। एक मानव का और दूसरा प्रकृति का। प्रकृति का धर्म मानव से पहले पैदा हुआ, जबकि मानव का धर्म मानव के साथ पैदा हुआ। *

प्रश्न – प्रयत्न करने पर भी क्रोध आ जाता है, फिर पश्चात्ताप होता है। फिर भी क्रोध आता है। शमन का क्या उपाय है?

बाबा – क्रोध एक निर्दोष रिपु है। उसमें बहुत डंक या जहर नहीं है। जहर होता है द्वेष में, मत्सर में। द्वेष की भावना बरसों से रहती है। बरसों से उसकी योजना बनती है। क्रोध तो उफान है, वेग है। क्रोध जंगल के सूअर के समान है, जो सामने से सीधा हमला करता है। क्रोध का कभी-कभी उपयोग भी होता है। लेकिन उसको क्रोध नहीं, तेज कहते हैं। महाभारत में कहा है – तेज हमेशा अच्छा नहीं और क्षमा भी हमेशा अच्छी नहीं।

क्रोधशमन के लिए अच्छा उपाय है कि क्रोध आ रहा है ऐसा भास हो, तब तुरंत मिश्री का एक टुकड़ा अपने मुंह में और एक टुकड़ा सामनेवाले के मुंह में डाल देना। मैं ऐसा करता था, तो इसका अच्छा परिणाम आता था। मुंह बंद भी होता था और मीठा भी होता था। लेकिन मुख्य बात यह है कि मुझे क्रोध आ रहा है, यह भान होगा, तब तो मिश्री मुंह में जायेगी! *

प्रश्न – क्या आपको आशा है कि आपका लक्ष्य पूरा होगा?

बाबा – मुझे तो पूरी आशा है। आप गंगोत्री में गंगा से जाकर पूछिए कि क्या तुझे समुद्र में पहुंचने की आशा है? तो वह क्या कहेगी? मेरी हद तक मैं इतना ही कहूंगा कि जब तक यह काम पूरा नहीं होता और जब तक मेरे पांव में भगवान ने ताकत रखी है, तब तक मैं चलते रहनेवाला

बुद्ध आये, पर मसले हल नहीं हुए। तो यह सारा भगवान का नाटक चल रहा है। हमें देखना इतना ही है कि हमने जिस रास्ते को अख्तियार किया है, वह कारगर है या नहीं। अगर आप उस रास्ते से ही नहीं जाना चाहते तो कौन क्या करेगा?

*

प्रश्न – आपकी पदयात्रा चलती है, उसमें ग्रामोद्योगों के नियम होने चाहिए या नहीं?

बाबा – देखो, नियम मेरे लिए हैं, मैं नियमों के लिए नहीं। कारण मैं मुक्ति के लिए कार्य कर रहा हूं, बंधन के लिए नहीं। इसलिए नियम करने की वृत्ति मुझमें नहीं है। समाज में परिवर्तन करने की शक्यता मुझे लगे, तो मैं करूंगा। अन्यथा अपने पास मैं एक चावल की पोटली रखूं और उसे पकाकर खाऊं और किसी जगह पर चावल न मिले, तो चावल के बिना चला लूं, तो उसमें अपनी तपस्या का ही प्रचार होता है, ग्रामोद्योगों का प्रचार नहीं।

*

प्रश्न – (जर्मन टेलिविजनवालों का) – भूदान-ग्रामदान के जरिये क्या हासिल किया?

बाबा – बाबा हॅज अचीव्हड् ए बिग झीरो ॲण्ड बाबा इज गोइंग टु अचीव्ह अनदर झीरो। टू झीरोज मेक इनफिनिट इन मॅथमेटिक्स। सो, वन झीरो इज अचीव्हड् ॲण्ड अनदर इज गोइंग टु बी अचीव्हड् (बाबा ने एक बड़ा शून्य हासिल किया है और बाबा दूसरा शून्य हासिल करनेवाला है। दो शून्य मिलकर गणित में अनंत होता है। एक शून्य तो मिला है, दूसरा शून्य मिलनेवाला है)।

*

प्रश्न – सोशॅलिस्ट लोग कहते हैं कि आपके तरीके से भूमिसमस्या के सुलझाने में पांच सौ बरस लगेंगे। आपका इस संबंध में क्या खयाल है?

बाबा – क्रांतियां ऐसे गणित से नहीं हुआ करतीं! अगर मेरी अकेले की शक्ति से ही यह काम होना हो, और आप सब लोग हाथ-पर-हाथ धरे खामोश बैठनेवाले हों, तब तो इस तरह गणित का हिसाब लगाइए। लेकिन मैं आपसे कहना चाहता हूं कि यह काम तांत्रिक या यांत्रिक नहीं है। यह काम तो मांत्रिक है। इसका एक मंत्र है। वह चल पड़ा है। जब कोई 'मंत्र' समाज में जाता है तो फिर वह बीज शक्ति से काम करता है।

सिद्ध करने में, हजम करने में, जो समय लगता है वही लगता है। एकबार मंत्र सिद्ध हुआ, तो काम भी सिद्ध हुआ समझिए। इसलिए यह काम पांच सौ बरस में नहीं, एक साल में भी पूरा हो सकता है। और वास्तव में तो वह पूरा हो चुका है। *

प्रश्न – क्या आपकी अहिंसा की भूमिका और पश्चिम के शांतिवादियों की भूमिका एक ही है?

बाबा – अहिंसा के बारे में चार भूमिकाएं (पोजिशन्स) होती हैं – व्यावहारिक (प्राग्मैटिक), सैद्धांतिक (डाग्मैटिक), वैचारिक (रैशनल), और सर्वातीत (ट्रान्सेन्डेण्टल)। पश्चिम के शांतिवादियों की पहली भूमिका है। वे युद्ध के गुणावगुणों (मेरिट्स) में नहीं जाते और हर युद्ध का विरोध करते हैं। वैज्ञानिकों की भूमिका तीसरी होती है। पं. नेहरू की भूमिका (प्राग्मैटिक) थी, जबकि मेरी भूमिका सर्वातीत (ट्रान्सेन्डेण्टल) है। *

प्रश्न – कर्मसंन्यास यानी क्या?

बाबा – कर्मसंन्यास यानी कर्म छोड़ना नहीं है। मनुष्य कुछ-न-कुछ कर्म करता ही है। खाना-पीना छोड़ नहीं सकता, तो गरीब को खिलाने का कर्म कैसे छूट सकता है?

संन्यास का अर्थ है – सत्कर्म करना, अहंकार छोड़ना। कुछ संन्यासियों के देह की वासना खत्म हो जाती है, इसलिए वे उपवास कर देह छोड़ने का सोचते हैं। पर वे तो बहुत आगे गये हुए लोग हैं। संन्यास का मतलब है कि मूल में जो रस है, वह छोड़ना। देहरक्षण और लोकसंग्रह के लिए जिन कर्मों की आवश्यकता नहीं, वे कर्म छोड़ें, बाकी कर्म करें – लेकिन संकल्प छोड़कर, वासना छोड़कर। *

प्रश्न – विश्वास में सावधानता का क्या स्थान?

बाबा – इतनी ही सावधानता रखी जाये कि आपके भीतर दूसरों के बारे में अविश्वास न पैठ जाये। ईश्वर से हम प्रार्थना करें कि हे ईश्वर! दूसरों के लिए अविश्वास न निर्माण हो इतना सावधान रहने की शक्ति और जाग्रति मुझे दे।

पूर्ति

1 वेदोपनिषद 355

2 गांधीजी 365

वेदोपनिषद

मैंने चारों वेद देखे हैं। सबका अध्ययन किया है, ऐसा नहीं कह सकता। कुछ अध्ययन किया है, तो वह केवल ऋग्वेद का किया है। ऋग्वेद को मैं आध्यात्मिक काव्य ही मानता हूं। और उस दृष्टि से उसका स्वतंत्र अर्थ मेरे मन में अंकित भी हुआ है।

वेद से हमें ऐतिहासिक या व्यावहारिक जानकारी मिल सकती है। लेकिन वह वेद का तात्पर्य नहीं। **यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति** (ऋसा 1.23.12) – जो परमात्मा को जानता नहीं, वह ऋग्वेद को लेकर क्या करेगा? वेद के बारे में एक वचन है – **सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति** (कठ 39)। उपनिषद कहते हैं कि सब वेद एक परमात्मा का ही विवेचन करते हैं। वैदिक ऋषियों को वेद के गौ इत्यादि शब्दों के स्थूल अर्थ अभिप्रेत नहीं हैं। जैसे, **चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादाः, द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य, त्रिधा बद्धो वृषभः** (ऋसा 4.5.6)। चार सींगों का, तीन पांवों का बैल, आदि। ऐसे अनेक वचन ऋग्वेद में मिलते हैं। स्थूल दृष्टि से अर्थ करने पर भी ऋग्वेद के ऋषियों को गोवध मान्य है, ऐसी छाप तो मुझ पर पड़ी नहीं। गाय का नाम **अघ्न्या** – अहननीय और **मा गामनागामदितिं वधिष्ट** (ऋसा 8.12.8) गरीब गाय को न मारें, ऐसी स्पष्ट आज्ञा है। इतना सबूत ही पर्याप्त होना चाहिए।

ऋषियों को गोवध मान्य नहीं था, फिर भी इसका आशय यह नहीं कि उस काल में गोवध होता ही नहीं था। लेकिन हमारा उससे कोई ताल्लुक नहीं। गाय के संबंध में हिंदू लोगों की भावना वैदिक ऋषिमान्य है, इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है। ऋषिकाल में सर्वसाधारण लोग क्या करते थे, यह एक ऐतिहासिक मुद्दा है। और उस विषय में मैं खास जानता नहीं।

वेद के विषय में तीन काल के तीन वचन यहां उद्धृत करता हूं – (1) **सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति** (कठ 39), (2) **वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः** (गी 15.15) (3) **वेद अनंत बोलिला। अर्थ इतुकाचि साधिला, विठोबासी शरण जावें** (वेद ने अनंत (बहुत) कहा है, लेकिन अर्थ इतना ही है कि भगवान की शरण जायें।) (तुका 402)।

के कर्मों को देखो। विष्णु की कृति को जो देखेगा, वह हर जगह देखेगा कि उसने अबाध्य अकाट्य नियम बनाये हैं।

* *

वेदमंत्र हमारी संस्कृति के मूल में हैं। वेद का एक बहुत सुंदर मंत्र है जिसका अर्थ है – 'अरिष्टनेमि हमारे लिए कल्याणकारक हो।' 'नेमि' यानी मर्यादा, कानून। जिसकी मर्यादा को कोई तोड़ नहीं सकता, उस 'अरिष्टनेमि' का आपके काम के लिए आशीर्वाद प्राप्त हो। भगवान की जो 'नेमि' है, मर्यादा है, उसे ठीक से समझना चाहिए।

भगवान की 'नेमि' तोड़कर कालनेमि बनता है। कालनेमि बड़ा असुर है। भगवान उसको खत्म करने के लिए अवतार लेते हैं। पुराण में वर्णन है कि कालनेमि नाम का एक राक्षस था। उसने अपना कानून बनाया। लोग उस कालनेमि को मानकर भगवान की नेमि के विरुद्ध जाते हैं, तब कालनेमि का नाश करने के लिए भगवान अरिष्टनेमि अवतार लेते हैं।

* *

आपो भूयिष्ठा (1.22.8) – मटका बनाना है तो एक कहता है पानी श्रेष्ठ। पानी नहीं तो मटका नहीं बनेगा। दूसरा कहता है कि अगर मटके को तपाया नहीं गया तो उसका क्या उपयोग इसलिए अग्नि श्रेष्ठ। तो तीसरा कहता है कि मिट्टी के बिना मटका कैसे बनेगा? ऋषि पूछते हैं कि तीनों में श्रेष्ठ कौन?

* *

हिंदुस्तान में पहली बार 'मैत्री' शब्द का उच्चारण वेद भगवान ने किया है। उसकी मिसाल सूर्यनारायण हैं। विश्वामित्र ऋषि का मंत्र है, जिसमें सूर्य को मित्र (ऋसा 3.1.8;3.6.2) कहा है।

हर कोई कह रहा है कि मेरे घर में सूर्य है, मेरी तरफ सूर्य देख रहा है। सबके साथ समान मैत्री करनेवाले सूर्यनारायण को आदर्श मित्र मानकर उसको ही 'मित्र' संज्ञा दे दी है। यह वैदिक भाषा है। पारसी भाषा में भी सूर्य के लिए मित्र शब्द है, दूसरी भाषा में नहीं है। अगरचे सूर्य जितनी मैत्री अपने देश में पैदा करता है और आनंददायी होता है, उससे बहुत ज्यादा आनंददायी यूरोप में होता है। हमें तो जरा उसका ताप भी होता है,

वेदों में एक भक्त का वर्णन है। वह भगवान से कहता है – भगवन्! तू मुझे बहुत अच्छा लगता है, इतना अच्छा कि जितना जरा-जर्जर बूढ़े को वस्त्र। वस्त्रों का प्रेम बुढ़ापे का लक्षण तो है ही, शरीर को जीर्ण बनाने का भी साधन है। बिना जरूरत के दिनभर सारे शरीर पर कपड़े डाले रखने से सबसे बड़ी हानि यह है कि शरीर नाजुक, निस्तेज और कमजोर हो जाता है। संस्कृत में सूर्य को 'मित्र' कहते हैं। इसका कारण पेड़-पौधे भी जानते हैं। सूर्यनारायण उत्तम मित्र है, उत्तम वैद्य भी है। **वैद्यो नारायणो हरिः** इस वाक्य में सूर्यनारायण की ओर भी संकेत है। मैं प्रायः यथासंभव खुले शरीर से ही रहता हूं। उससे मुझे शारीरिक और बौद्धिक लाभ का भी अनुभव आता है।

* *

वाणी से सख्य भी साध सकते हैं और वैर भी बांध सकते हैं। वाणी का वैर जितना टिकता है, शस्त्रों का भी उतना नहीं टिकता। इसलिए सारे विश्व से मैत्री की इच्छा रखनेवाले विश्वामित्र की प्रार्थना है – **अमृतं मे आसन्** (ऋसा. 3.2.8) मेरी वाणी में अमृत हो। परंतु सहृदय व्यक्ति के शब्द कटु होते हैं ऐसा आजकल का अनुभव है। सही बात तो यह है कि उतावले लोग ही कटु बोलते हैं। सच्चे आदमियों को जब अक्ल नहीं होती तब वे उतावले होते हैं और फिर कटु बोल जाते हैं। अक्ल हो तो वे मित और मधुर बोलते हैं और काम में लग जाते हैं।

* *

अव स्म यस्य वेषणे... (ऋसा 5.1.11) परमात्मा को प्राप्त करने के लिए, परमात्मा की सेवा के लिए साधक ने हाथ में कुल्हाड़ी ली है। पसीने से तरबतर हुआ वह साधक रास्ते में पसीने की बूंदें गिराता है। यज्ञ में घी की आहुति देते हैं वैसे यह पसीने की आहुति देता है। यस्य वेषणे = जिसकी सेवा के लिए साधक, स्वेद यानी पसीना, पथिषु = रास्ते में। जुह्वति = आहुति देता है। पसीना बहाने का यह विचार काफी प्राचीन है। आपलोग भी निश्चय करो कि जिस दिन शरीर परिश्रम नहीं करेंगे उस दिन खाना नहीं खायेंगे।

* *

वेद में भरद्वाज ऋषि का मंत्र आया है – **नाहं तंतुं न वि जानाम्योतुं।**

में यह वैदिक ऋषि भगवान की प्रार्थना कर रहा है, क्योंकि जीवन ओतप्रोत है। टुकड़े-टुकड़े जोड़कर सीना तो दरजी का काम है। वह कोई समग्रता नहीं। समग्रता यानी जीवन ओतप्रोत है इसका हमें भान होना चाहिए।

* *

वीणा का उल्लेख बहुत प्राचीन ग्रंथों में आता है – **तद् य इमे वीणायां गायन्ति एतं ते गायन्ति** (छां 10) । उस समय और वाद्य भी थे, लेकिन वीणा सबसे सुंदर वाद्य माना गया।

इंद्र के लिए ब्रह्मगान हो रहा है, उसका एक जगह वर्णन आता है।

अव स्वराति गर्गरः गोधा परि सनिष्वणत्
पिंगा परि चनिष्कदत् इंद्राय ब्रह्मोद्यतम् (ऋसा 8.9.5)

गर-गर नाम का एक वाद्य आवाज कर रहा है और गोधा पीटा जा रहा है। गोधा पर से मैं यह समझा कि कोई गाय के चमड़े का वाद्य होगा। पिंगा की ध्वनि निकल रही है और इंद्र के लिए ब्रह्मगान गाया जा रहा है। ऐसे इस पद्य में तीन वाद्यों का उल्लेख आया है। ये वाद्य कौन-से हैं, हम जानते नहीं। लेकिन उनकी जो ध्वनि बतायी है, उस पर से ध्यान में आ जाता है। **अव स्वराति गर्गरः** पर से 'गरगर' वाद्य समझ सकते हैं। क्या आवाज निकल सकती है, यह भी समझ सकते हैं। **गोधा परि सनिष्वणत्** यह क्या वाद्य है? गोधा शब्द आया है, तो गाय के चमड़े का वाद्य हो सकता है। **पिंगा परि चनिष्कदत्** इसमें पिंगा शब्द से जो ध्वनि निकलती है, उस पर से वाद्य की ध्वनि का पता चलता है। इस तरह से प्राचीन काल में ये वाद्य चलते थे और गायन के साथ इनका उपयोग करते थे।

वाद्य तीन प्रकार के होते हैं – एक तंतु-वाद्य, दूसरा सुशीर-वाद्य और तीसरा चर्म-वाद्य। चर्म के बने हुए वाद्यों को पीटने से आवाज निकलती है – जैसे मृदंग। एक सुंदर संस्कृत श्लोक है, उसमें लिखा है कि मृदंग बोलता है, 'धिक्तान'। अरे, धिक्कार है उन लोगों को जो भगवान का नाम नहीं लेते, इसलिए 'धिक्तान'। इस तरह से वह बोल रहा है। यह अपने देश का वाद्य है, चमड़े का। उसे चर्म-वाद्य कहते हैं।

सुशीर-वाद्य यानी जो हवा के आधार से, वायु के आधार से बजाये जाते हैं। जैसे बांसुरी, हारमोनियम आदि। हारमोनियम के अंदर हवा है।

हुई है, वह भी इसमें आता है। इन सबमें संगीत के खयाल से सर्वश्रेष्ठ माना जाता है – तंतु-वाद्य।

* *

ऋग्वेद में एक अति महत्त्व का वचन आया है **उत त्वः पश्यन् न ददर्श वाचं। उत स्वः शृण्वन् न शृणोत्येनाम्** (ऋसा 10.9.4)। इसका अर्थ है – कोई (त्वः) वाणी को देखकर भी देखते नहीं। 'वाणी का देखना' यह प्रयोग कहता है कि ऋग्वेद के काल में प्राचीन आर्य लोगों में लेखनकला थी।

* *

ऋषि कहता है **एतावान् अस्य महिमा अतो ज्यायाँश्च पूरुषः** (ऋसा 10.13.3)। यह सारी सृष्टि, जमीन, वृक्ष, पर्वत ईश्वर की महिमा है। इसलिए तो उसका महत्त्व है ही परंतु चेतन पुरुष का उससे भी अधिक महत्त्व है। जड़ के मोह में पड़कर चेतन की विस्मृति होगी तो हम खुद जड़ बनेंगे। इसलिए जड़ संपत्ति का मोह छोड़ो, चेतन मानव का प्रेम संपादन करो।

* *

वेदों ने आज्ञा दी है – **व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणः** (10.14.10) – व्रज बनाओ, तुम्हारे मनुष्यों को वही पिलायेगा, वही पालेगा। नृपाण यानी मनुष्य को पिलानेवाला और पालनेवाला – ऐसा दोहरा अर्थ 'पा' धातु का संस्कृत में होता है।

* *

ब्रह्मचर्य, स्वाध्याय और ईश्वर-भक्ति की विविध उपासना की 'त्रि-पथगा' में समर्थ रामदास स्वामी ने स्वयं तो जी भरकर स्नान किया ही, स्नान से डरनेवालों को भी स्नान कराया – **सो अस्नातृन् अपारयत् स्वस्ति।**

* *

पांच और पांच, दस उंगलियों से जो काम होता है, उसे 'दशयंत्र' कहते हैं। सोमरस दस उंगलियों से निचोड़ा जाता है, इसलिए वेद में **दशयंत्रा सोमाः** कहा गया है।

* *

भक्तों ने ईश्वर को पिता, गुरु, माता आदि का स्थान दिया है। वेद की प्रार्थना **पिता नोऽसि पिता नो बोधि** प्रसिद्ध ही है, यद्यपि वेद में **त्वं माता**

हो जाती है। ऋग्वेद की यह शिकायत हम इन दस हजार वर्षों में भी दूर नहीं कर सके हैं। हमारे देश में ज्यादातर बढ़इयों की पीठें धनुषाकार दिखायी पड़ती हैं और वे सामान्यतः दीर्घायु भी कम होते हैं। वैसे तो बढ़ईगिरी को शरीर के लिए लाभदायक समझना चाहिए, पर दिनभर पीठ झुकाकर काम करने की आदत हमें यह लाभ नहीं उठाने देती।

* *

प्राचीन काल में जमीन बहुत ज्यादा थी और लोग बहुत कम थे, तो बोला जाता था 'अष्टपुत्रा सौभाग्यवती भव'। फिर भी ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा थी। वेद में आता है, **दशास्यां पुत्रान् आद्येहि। पति एकादशं** (ऋवे 18.85.45) – दस पुत्रों को जन्म दें और बाद में ग्यारहवां पुत्र अपने पति को समझें। यानी दस पुत्र तक छूट थी। आज दस पुत्र कौन मांगेगा? प्राचीन काल में ब्रह्मचर्य को आध्यात्मिक मूल्य था परंतु आज के सामाजिक संदर्भ में ब्रह्मचर्य को सामाजिक मूल्य भी प्राप्त हो गया है। डबल इंजीन लगा है।

* *

जवान कैसे होते हैं? **सत्यश्रुताः कवयो युवानः** (ऋवे 5.57.8)। सत्यप्रतिज्ञ और कवि, क्रांतिदर्शी – दूर का देखनेवाले। हम कहां जा रहे हैं, इसका दर्शन होना चाहिए और सत्य की प्रतिज्ञा होनी चाहिए। आपको खयाल होना चाहिए कि आप क्रांतिदेवता के वाहन हैं।

* *

वेद में वर्णन आता है कि दुनिया को सरस्वती ने सत्यनिष्ठा की प्रेरणा दी है। प्रजा का धारण किया है। वह सारे समाज को सत्कार्य की प्रेरणा दे रही है। सर्वत्र सुमति जगाती है। सरस्वती को विद्या की देवी, वाग्देवता माना है। ऐसी सरस्वती का अधिकार बहनों को हैं। वे चुपचाप खामोश रहें, नीची नजरवाली रहें, सिर ढांक लें, हाथ-पांव में बेड़ियां डालें, भले ही वे सोने की हों, यह ठीक नहीं। स्त्री शारदा यानी सरस्वती की प्रतिनिधि होनी चाहिए। ज्ञान की छोटी-सी पूंजी पर स्त्री तेजस्वी नहीं बन सकती और पुरुषप्रधान समाज में स्वतंत्र होकर काम करने की शक्ति उसमें नहीं आ सकती। इसलिए स्त्रियों को ज्ञान में थोड़ा भी पीछे नहीं रहना चाहिए। स्त्रियों को संस्कृति की रक्षा करनी है, प्रकृति से ऊपर उठना है, पुरुष को प्रकृति से ऊपर उठाना है, इसलिए उन्हें पूरा ज्ञान होना चाहिए।

चाहिए। सेना आगे चली जायेगी और गोला-बारूद पहुंचने में देरी होगी, तो लड़ाई कैसे जीतोगे? सरस्वती की उपेक्षा करके अग्नि और इंद्र का भी काम बनता नहीं, ऐसा वेदों में कहा है। ऋषि कहता है कि मैं सरस्वतीयुक्त इंद्राग्नि की उपासना करता हूं।

* *

ऋग्वेद में एक सूक्त है – हे अग्ने स्थूल शरीर को तू जला, सूक्ष्म शरीर को नहीं। हे भूमाते, तू इस मिट्टी को स्वीकार कर।

हमने अपने पिताजी की रक्षा गढ़ा खोदकर उसमें डाली और उस पर पेड़ लगाया। मिट्टी मिट्टी में ही मिल जाये यह ठीक है। उसे पानी में न डालें।

* *

सृष्टि सारी हरितवर्ण है। संस्कृत में 'हरित' शब्द है और वेद में उसके लिए 'हरि' शब्द आया है। वेद में हरिसूक्त है। यह पृथ्वी हरितरूपवाली है, इंद्र आकाश से हरित वर्ण की वर्षा करवाता है – ऐसा वर्णन वेद में आता है। वर्षा होते ही सारी सृष्टि हरितवर्ण हो जाती है। एक-एक रंग में एक-एक भाव माना गया है। लाल रंग में प्रेम माना गया है और हरित में शीतलता।

* *

वेद में आया है – "अघा में गायें मारी जाती हैं।" अघा यानी मघा नक्षत्र। मघा को अघा कहते हैं। अघा यानी घात नहीं। अभी नाम पड़ा मघा। 'म' यानी महान। 'घा' यानी वृष्टि। मघा में गायें बारिश की मार खाते-खाते मर जाती हैं।

* *

अहिंसा टुकड़ों में काम नहीं करती। वह अखंड एकरस है। वेदों ने उसे ही 'अदिति' नाम दिया है।

* *

वेदों में कहा है कि जो अपने घर पर आनेवाले को अच्छा भोजन कराता है, रात को निद्रा का अच्छा प्रबंध करता है, वह महायज्ञ करता है।

* *

ऋषि-पत्नी कह रही है कि – हे ज्ञानीजनो, सुनो! ये सब लोग

वेदों में वर्णव्यवस्था नहीं है। सत्ययुग का वर्णन करते हैं कि तब एक ही वर्ण था, केवल हंस-वर्ण यानी नीरक्षीर-विवेकी समाज था। प्रारंभ में जीवन खूब सादा था। जंगल के कंद-मूल-फल खाना, नदी का पानी पीना और ध्यान-धारणा करना, ऐसा वह काल था। इस कारण कायदा-कानून की जरूरत नहीं थी। धीरे-धीरे विभिन्न प्रकार के नये-नये काम निकलते गये, और आवश्यकतानुसार बढ़ते-बढ़ते चार वर्ण हुए।

* *

वेदों में विशः शब्द का अर्थ मनुष्य होता है। वैश्य को 'आम जनता' कहना होगा।

* *

तीनों वर्णों के लिए वेदाध्ययन मान्य था। उस जमाने में लेखन-मुद्रण की सुविधा नहीं थी। वेद उच्चार-प्रधान थे इसलिए जिनके उच्चारण स्पष्ट रहते थे, उन्हें ही वेदाध्ययन का अधिकार था। शूद्रों का इसी कारण अधिकार नहीं माना गया था।

* *

वैदिकधर्म में प्रार्थना है – **जिजीविषेत् शतं समाः** और **पश्येम शरदः शतम्।** लेकिन आज का दिन आखिरी है समझकर व्यवहार करना चाहिए। हमने नियम किया था, कभी किसी से कर्जा लेना नहीं और देना नहीं। देना है तो दान देना और लेना है तो दान लेना। देनेवाला भी मुक्त और लेनेवाला भी मुक्त। आज का काम आज पूरा करके सोयेंगे। आज का दिन आखिरी समझकर काम पूरा कर लेंगे। भगवान ने बुलाया, तो यह नहीं कहेंगे कि अभी थोड़ा काम बचा है।

* *

केनोपनिषद में कहा है कि अग्नि और इंद्र ने तपस्या की, लेकिन उन्हें ब्रह्म के दर्शन नहीं हुए। फिर उमा हैमवती के दर्शन उन्हें हुए और उस उमा ने इंद्र और अग्नि को आत्मज्ञान दिया। इस तरह दुनिया को आत्मज्ञान देनेवाली उमाएं प्रकट हों।

* *

हरएक के हृदय में परमात्मा विराजमान है। उस परमेश्वर के पास

मिट्टी के घर में तो हरि रहेंगे नहीं, और पत्थर की मूर्ति में भी हरि रहेंगे नहीं। वे तो यहां हृदय में रहते हैं। **अंगुष्ठमात्रः पुरुषः मध्ये आत्मनि तिष्ठति** (कठ 67)। भगवान का रूप कैसा है? अंगूठे जितना। बाहर वह पुरुष विराट, व्यापक है, लेकिन अंदर विराजमान है वह अंगूठे जितना है। तो उसका हमें दर्शन करना है, उससे हमें बात करनी है।

* *

बाबा का मत है कि वेद, उपनिषद और गीता हिंदूधर्म की प्रस्थानत्रयी है। वैसे गीता, उपनिषद और ब्रह्मसूत्र को प्रस्थानत्रयी माना जाता है। ब्रह्मसूत्र स्वतंत्र ग्रंथ नहीं। वह गीता-उपनिषद पर आधारित है। गीता और उपनिषदों के वचनों का उसमें मेल दिखाया है। वेद हमारा मूल प्रस्थान है। इसलिए बाबा ने कहा – **वेद-वेदांत-गीतानां विनुना सार उद्धृतः ।**

* *

मुझे इस बात का दुःख नहीं है कि वेदमंत्रों का ज्यादा परिचय आम लोगों को नहीं। क्योंकि संतों ने ब्रह्मविद्या मातृभाषा में खोल दी है। सारा वेद-सार उसमें आ जाता है। फिर भी वेद का अपना महत्त्व है। वेद, संस्कृति का मूल उद्गम-स्थान है। उसमें सूचन जिसे संस्कृत में लिंग कहते हैं, मिलता है। हरएक अपना विचार वेद में ढूंढ़ता है। इसका एक मंत्र **द्वा सुपर्णा** (ऋसा. 1.23.8) उपनिषदों में (मुंडक 36) भी आया है। द्वैतियों ने उसके आधार से द्वैत स्थापना की। अपना-अपना आधार वेद में ढूंढ़ने का रिवाज है। क्योंकि वह मूल स्रोत है। उसमें से सब विचार निकले, इसलिए संशोधक अपने विचार उसमें ढूंढ़ना चाहते हैं। उपनिषद, गीता, भागवत, विष्णुसहस्रनाम, महाभारत, मनुस्मृति और संतों पर वेद का असर है।

* *

श्वेतकेतु के पिता उसे ज्ञान (छां 12) दे रहे हैं। नमक की मिसाल देकर समझाते हैं कि आत्मा व्यापक है। लड़के ने पूछा 'वह कैसे?' इस पर पिता ने उसको पानी लाकर उसमें नमक डालने को कहा। उसने नमक डाल दिया। फिर पिता ने कहा कि ऊपर से थोड़ा-सा पीओ। उसने पी लिया। पिता ने पूछा कि कैसा लगता है। लड़का बोला खारा। पिता ने कहा कि ऊपर से थोड़ा पानी फेंक दो और बीचवाला पीओ। पीने पर लड़के को वह भी खारा लगा। इसके बाद पिता ने कहा कि सब फेंक दो और नीचे

था और चखने पर ही पता चलता था, उसी तरह आत्मा सारे विश्व में घुलमिल गया है। देखनेवालों को मालूम नहीं होता, चखनेवालों को मालूम होता है। तो आत्मा एक चखने की चीज है। लड़का समझ गया।

* *

वेद का बहुत ही सुंदर वाक्य है – जो विद्वान हैं, ज्ञानी हैं, उनकी वाणी कैसी हो उस विषय में कहते हैं – **अवोदेवं उपरिमर्त्यम्** ... (ऋसा 8.4.2) मर्त्यों से कुछ ऊपर और देवों से कुछ नीचे ऐसे उसकी वाणी होनी चाहिए। तब वह जनता के काम आयेगा। एक बिल्कुल ऊंचा व्यक्तित्व हो, और उसकी वाणी ऐसी हो जो सबकी वाणी को दबाये या वश में करे, वशीकरण मंत्र चलाये, तो काम नहीं बनेगा, उससे फायदा नहीं होगा। * *

पुरोहितम् (ऋसा 1.1.1) पु = प्युरिफाइंग, रोहितम् = रेड (लाल) – रक्त शुद्ध करनेवाला। दूसरा अर्थ है सामने रखा हुआ। सूर्य का पीठ की ओर से और अग्नि का सम्मुख रहकर सेवन करना चाहिए। * *

इमा या गावः स जनास इंद्रः (ऋसा 6.4.13) – ये जो गायें दीखती हैं, वे ही इंद्र हैं। इंद्र पर्जन्यधारा बरसाता है, गायें दुग्धधारा। ऋग्वेद कहता है, दोनों की योग्यता समान है। * *

देवस्य पश्य काव्यं महित्वा। अद्या ममार स ह्यः समान (ऋसा 10.7.6) – भगवान का काव्य देखो। उसके लिए महान बनना पड़ेगा। कल जो जीवित था आज मर गया। समान = श्वासोच्छ्वास। * *

वृजनेन वृजिनान् त्सं पिपेष (ऋसा 3.4.1) – इंद्र ने अपनी सामूहिक शक्ति से कुटिलता का नाश किया। * *

त्रिः सप्त नामाघ्न्या बिभर्ति (ऋसा 7.7.12) – गाय इक्कीस नाम धारण करती है। ऋग्वेद में गाय के मुख्य इक्कीस नाम आये हैं – 1. अघ्न्या 2. अदिति 3. अष्टाकर्णी 4. अष्टापदी 5. इळा 6. उस्रा 7. उस्रिया 8. गौ 9. गौरी 10. दक्षिणा 11. दूधा 12. धेना 13. धेनु 14. पशु 15. पृश्नि 16. मातृ 17. रोहिणी 18. वशा 19. वाश्रा 20. सुरभि 21. स्तरी। इसके अलावा और भी नाम गाय के वेद में आये हैं।

* *

उदीर्ध्वं जीवो असुर्न आगात् । अप प्रागात् तम आ ज्योतिरेति (ऋसा 1.18.7)–

गांधीजी

गांधीजी ने अपने परिवार को आश्रम का स्वरूप दिया। उसमें बाहर के अनेक लोगों को समाकर परिवार को व्यापक बनाया। संन्यासी का वेश धारण किये बिना गृहस्थाश्रम का संन्यासाश्रम में रूपांतर करने की यह प्रक्रिया है।

* *

पूना में बापू को तीन बार मिला। उनका अपूर्व आनंद, शांति, प्रेम देखकर सामान्य मनुष्य तो मुग्ध होगा ही, परंतु उनसे इतना परिचय रखनेवाला मैं भी एकदम स्तब्ध हुआ इसमें शंका नहीं। बुद्धि की इतनी स्थिरता और शुद्धावस्था मैंने अन्यत्र कहीं नहीं देखी।

* *

मैं गांधीजी का नाम बहुत कम लेता हूं। दूसरे बहुत ज्यादा लेते हैं, इसलिए मेरा कम लेना शोभादायक है। लेकिन मेरी आत्मा साक्षी है कि मैं उनका छोटा-सा बालक हूं। 1916 में मैं जब उनके पास पहुंचा, तो मैं बालक था। तबसे आज तक मैं किसी के आश्रय में नहीं गया, उन्हीं के आश्रय में हूं। पहले से आखिर तक उन्होंने जो विचार हमें दिये, जो निधि दी, उसको 'एसीमिलेट' करने की मेरी काफी कोशिश रही है। उन्होंने जो उसूल रखे, उनका हमने बहुत गहराई से अध्ययन किया, ऐसा मेरा दावा है। हम तो पामर जीव हैं। 1916 में जब मैं उनके पास पहुंचा, तभी उन्होंने मुझसे कहा कि 'विनोबा, गांव-गांव में आश्रम होना चाहिए और हमें गांव-गांव में बिखरना चाहिए।' किस तरह सर्वोदय समाज का रूप बनना है, इसका वे चित्र खींचते थे और आखिर तक वह बदलता रहता था। परंतु इसका मूल स्वरूप आप थोड़े से क्रूड शब्दों में देखना चाहते हैं, तो 'हिंद-स्वराज्य' में देख सकते हैं। मैंने क्रूड इसलिए कहा कि आगे वे जिन शब्दों में रखते थे, वैसे शब्द उसमें नहीं हैं। परंतु जैसे उपनिषदों की भाषा कानों को क्रूड लगती है, वैसे 'हिंद-स्वराज्य' की भाषा भी क्रूड है। जब हम शंकराचार्य के भाष्य देखते हैं, तो उनकी भाषा की सफाई, विवेचन पद्धति, दलील से किसी भी प्रश्न का उत्तर देने की सामर्थ्य, इन

नतमस्तक थे। वैसे ही 'हिंद-स्वराज्य' में गांधीजी का विशुद्ध हृदय प्रकट हुआ है। उन्होंने उसमें जैसा कहा है, उसको जैसे-का-तैसा हम लें, ऐसा वे नहीं चाहेंगे और न हम भी वैसा लेंगे। उसमें कुछ परिवर्तन की जरूरत है। परंतु उसको ध्यान में रखकर हम काम करें, तो जिस शक्ति की खोज हुई है, उसका हम उपयोग कर सकेंगे।

* *

उरुलीकांचन के प्राकृतिक चिकित्सा की जब बात निकली, तब गांधीजी ने एक-एक को बुलाकर कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा का काम करना चाहते हो, तो आजन्म ब्रह्मचर्य रखो, तभी वह कर पाओगे। सुननेवाले तो सुनकर दंग रह गये। प्राकृतिक चिकित्सा का संबंध मिट्टी, हवा और एनिमा से हो सकता है, पर गांधीजी ने उसका संबंध ब्रह्मचर्य से भी जोड़ दिया। अब यह हमें न सूझे और हम ऊपर-ऊपर की बातें करते रहें, तो उससे अपने देश का काम नहीं बनेगा। इसलिए हमें अपने देश की भक्ति, आत्मज्ञान आदि सब चीजों पर ध्यान देना चाहिए। ये हमारे जीवन की बुनियादी चीजें हैं। इसके लिए शास्त्र-पारंगतता की नहीं, बल्कि श्रद्धा की जरूरत है। हमारे हृदय का मुख्य हिस्सा भक्तिभाव से भरा हो।

* *

बापू सद्गुण-विकास और चित्तशुद्धि पर बार-बार जोर देते थे। तुलसीदासजी को जैसे रामनाम, वैसे उनके लिए सत्य-अहिंसा थी। वे खुदके जीवन का नित्य परीक्षण करते थे। उनके जीवन को जिन्होंने बारीकी से देखा है, उनका अनुभव है कि बापू हर क्षण आगे बढ़ते थे। यह कैसे होता था? अगर मनुष्य अपने में कोई दोष ही नहीं पाता है, तो वह आगे कैसे बढ़ेगा? बापू आगे बढ़ते थे, इसका अर्थ ही यह है कि वे अपना नित्य परीक्षण करते थे और जो दोष दिखायी देते थे, उनको दुरुस्त करते थे।

* *

गोरक्षण, चर्मविभाग, तेलघानी, खादी आदि सब चलानेवाले गांधी आश्रम यानी झमेला आश्रम। प्रार्थना नाममात्र की, व्रतों में निष्ठा नहीं, अध्ययन तो बिल्कुल ही नहीं। तो अध्ययनशून्य, भक्तिहीन, व्रतनिष्ठारहित लोग कितना क्या काम करेंगे? बाकी गांधी विचारधारा में आध्यात्मिक चिंतन-मनन के अलावा, अलग-अलग विचारधाराएं और आज की परिस्थिति

ही था। यानी जिनको अपना कोई न स्वार्थ था और न अहंकार। वे केवल दूसरे के दुःख से दुःखी ही नहीं होते थे बल्कि दूसरे के पाप से अपने को पापी भी मानते थे। यह बहुत बड़ा फर्क हो जाता है। इसी लिए लोग उन्हें महात्मा कहते थे। महात्मा यानी आत्मा इतनी विशाल हो गयी कि हरएक के शरीर के साथ जुड़ गयी। दूसरे के पापों से अपने को पापी मानना और समझना, ऐसा करनेवाले बहुत ही बिरले लोग होते हैं। ऐसे लोग मुक्त भी नहीं होना चाहते। ये मोक्ष की परवाह नहीं करते, सबका पाप-पुण्य अपने सिर पर उठाते हैं। उन्हें क्या नाम दिया जाये! वे परम भक्त होते हैं। ऐसे महापुरुष का स्मरण करने से हमें अपनी आत्मा की ताकत का भान होता है। जो ताकत ऐसे महापुरुषों की आत्मा में होती है, वह ताकत हम सबमें आ सकती है। इसका भान ये महापुरुष कराते हैं। खाना, पीना, सामान्य काम हर कोई करता है, पर देह से ऊपर उठनेवाले ही सत्पुरुष हो सकते हैं। यह जब देखते हैं तो विश्वास होता है कि हम भी वैसी चेष्टा करें, तो हम भी उठ सकते हैं। ऐसे सत्पुरुषों के स्मरण से हमें खुदको लाभ होता है।

* *

लोग मानते हैं कि महात्मा दूसरे के दुःख से दुःखी होते हैं। किंतु दूसरे के दुःख से दुःखी होना महात्मा का नहीं, मनुष्य का लक्षण है। अपने दुःख से दुःखी और अपने सुख से सुखी होना तो जानवर का लक्षण है। दूसरे के दुःख से दुःखी होना और सुख से सुखी होना, यह मनुष्य का ही लक्षण है और ऐसा लक्षण अगर बापू में था तो इसमें उनकी कोई विशेषता नहीं है। उनकी तो यही विशेषता है कि वे सबके पापों से पापी होते थे। अपने ऊपर सबके पापों का आरोप करते थे, सारा बोझा अपने सिर पर लेते थे।

* *

बुद्ध ने भिक्षुओं को तैयार किया, महावीर ने श्रमणों को, शंकर ने परिव्राजकों को। गांधीजी ने रचनात्मक कार्यकर्ताओं पर भरोसा रखा।

बुद्ध-महावीर-शंकर ने परिव्राजकों को अत्यंत अपरिग्रह, भिक्षा, तितिक्षा इन गुणों का आधार दिया। गांधीजी ने एकादश-व्रतों का आधार दिया।

* *

एक गांधीजी हजारों सैनिकों की पलटन का काम अकेले करते थे। वे खुद ही एक पलटन थे। उनकी ताकत और आवाज स्वतंत्र थी। सब

यानी वहां जामन बनता था। जामन अगर अलग पड़ा रहा, तो वह खट्टा और निकम्मा होगा। अपने देश में अध्यात्म-विचार का ऐसा ही हुआ। योगी, मुनि जनता से अलग होकर ध्यान-धारणा आदि करते थे, तो वे खट्टे और निकम्मे बने। उनका विचार सड़ गया। कोई बच्चा चिल्लाये, तो उनके ध्यान में खलल पहुंचती। क्रोध इतना था कि वे बात-बात में शाप दे देते। कोई सुंदरी देखी, तो मोहित हो जाते। कारण यही था कि वे समाज के अंदर घुल-मिलकर नहीं रहे। जनता से अलग पड़ गये। आध्यात्मिक गुणों का विकास, ताकत का विकास लोगों में रहकर ही होता है। इसलिए 45 साल के बाद भी बापू ने यही मंत्र दिया कि ''हमें गांव-गांव में फैलना है।'' इसे हमें अमल में लाना है। उसे अमल में नहीं लायेंगे, तो स्वराज्य फीका पड़ेगा, उसे खतरा होगा। स्वराज्य का असली रंग कायम रखना है, इसलिए यह बहुत जरूरी है कि गांव-गांव में खादीवाले फैलें। सरकारी मदद कहीं-न-कहीं खत्म होने ही वाली है। उसके पहले नया तंत्र हम खड़ा नहीं करेंगे, तो टिक नहीं सकेंगे। गांव-गांव में अपने किले बनाने चाहिए।

* *

गांधीजी ने भी ब्रह्मचर्य पर जोर दिया था। गृहस्थाश्रम में भी ब्रह्मचर्य का पालन करो, यह एक विशेष प्रेरणा दी। अक्सर माना जाता है कि ब्रह्मचर्य वानप्रस्थों और संन्यासियों के लिए है। गृहस्थाश्रम में ब्रह्मचर्य नहीं आता। साधारण समाज इसे मानता था, लेकिन शास्त्रकार ऐसा नहीं मानते। गांधीजी ने इस विषय को प्रोत्साहन दिया और खुद इसका आचरण भी किया। ब्रह्मचर्य का विचार उनके मन में तीव्रता से चला, तब उनकी उम्र 23-24 साल की थी और उसे उन्होंने जाहिरा तौर पर कहा। सन् 1906 में जब उनकी उम्र 38 साल की थी, जाहिरा तौर पर उन्होंने इसका व्रत लिया और दूसरों को भी प्रेरणा दी। दक्षिण अफ्रीका से यहां आने के बाद भी अनेकों को प्रेरणा दी। सार्वजनिक सेवकों के लिए इसकी आवश्यकता वे बताते रहे। हमारे योगी, साधक आदि ब्रह्मचर्य का विचार साधना के लिए मानते थे। लेकिन गांधीजी ने ब्रह्मचर्य निष्काम सेवा के लिए भी माना। इस कारण इस विचार को जोरदार प्रेरणा मिली। यह विचार कई सालों से विकसित होता आया।

* *

इतनी थोड़ी मुद्दत में नहीं नापा जा सकता। और इससे भी कोई इन्कार नहीं कर सकता कि इस सदी में जितने जीवन, कम-से-कम हिंदुस्तान में गांधीजी ने बदले हैं उतने और किसी दूसरे ने नहीं।

* *

एक न्यूयार्कवाला भाई पूछ रहा था कि "क्या आज दिल्ली की सरकार, सेना, कोर्ट-कचहरी में कहीं भी गांधीजी का असर दीखता है?" मैंने उससे कहा कि गांधीजी का असर चर्मचक्षु नहीं देख सकते। वह इतना सूक्ष्म है कि भारत के खून और हड्डी में व्याप्त हो गया है।

* *

गौतम बुद्ध की बात है। गौतम बुद्ध के चार शिष्य बुद्ध की मृत्यु के बाद गुरु के नाम से विचार-प्रचार करने निकले। चारों में से एक ने कहा – "मेरे गुरु ने कहा है कि मन सत्य है और सृष्टि मिथ्या है।" दूसरे ने कहा – "मेरे गुरु ने सिखाया है कि सृष्टि सत्य है और मन मिथ्या है।" तीसरे ने कहा – "मेरे गुरु ने जो कुछ कहा, उसका सार है कि सृष्टि भी मिथ्या है और मन भी मिथ्या। कुछ है ही नहीं, सब शून्य है।" चौथे ने कहा – "मेरे गुरु के कहने के अनुसार यह सृष्टि भी सत्य है और मन भी सत्य।" इस तरह विज्ञानवाद, सर्वअस्तित्ववाद और शून्यवाद आदि बने। वे चारों एक-दूसरे के खिलाफ बात करते थे। इसी प्रकार आज गांधी के चार शिष्य गांधी के नाम से देश में एक-दूसरे के विरोध में प्रचार कर रहे हैं और देश के दिमाग में 'कन्फ्यूजन' पैदा करते हैं। वे सब एकत्र बैठकर समान अंश पर जोर देते, तो एक दूसरी ही सूरत होती। अगर वे कहते हैं कि उनमें कोई 'सबस्टॅन्शियल कामन ग्राउण्ड' जैसा कुछ भी नहीं है, तो मैं मानता हूं कि वे गांधी के शिष्य नहीं हैं।

* *

गोलमेज परिषद के लिए महात्मा गांधी इंग्लैंड गये थे। उनके लिए वहां भी महल तैयार था। वे तो हिंदुस्तान के प्रतिनिधि बनकर गये थे। बादशाह ने उनसे बातें कीं। लेकिन गांधीजी ने महल में रहना कबूल नहीं किया। लंदन में जो गरीब बस्ती थी, जिनकी उपेक्षा होती थी, जो लंदन का सबसे गरीब हिस्सा था, वहां वे ठहरे। इसमें उनका हेतु यही था कि गरीबों की ताकत बढ़नी चाहिए।

* *

पड़ा। यानी यही सत्य कम पड़ा कि मनुष्य के लिए मनुष्य ही मूलतत्त्व है, यह हम भूल गये और मनुष्य से ज्यादा नियम को माना।

* *

गांधीजी का यह स्वभाव ही था कि जिस चीज को वे ठीक समझते थे, फौरन उसका अमल शुरू कर देते थे। प्रगति का यही श्रेष्ठ नियम है। जो चीज ठीक लगी, उसके अमल में जो देरी करता है, वह जिंदगी का अमूल्य समय खोता है। इसके सिवा यह भी ध्यान में रखें कि विचार और आचार के बीच अंतर रखकर किसी को जीवन में समाधान नहीं मिलता।

* *

गांधीजी अपने पक्ष के दोष जाहिर करते थे तो कुछ खोते नहीं थे। मनु ने कहा है, ख्यापन से दोषों का क्षय होता है, गोपन से वे बढ़ते हैं।

* *

बापू एक व्यक्ति नहीं रह गये थे, समूचे राष्ट्र की भावना के प्रतिनिधि बन गये थे। उनकी वाणी में और उनके चिंतन में लोक-वाणी और लोक-चिंतन प्रकट होता था। इतनी विशाल राष्ट्रभावना उनके कारण पैदा हुई थी।

* *

महात्मा गांधी ने अपने साथियों के पाप का बोझा नहीं उठाया होता, तो उनकी हत्या नहीं होती। यह हत्या इसलिए हुई कि हमारे पापों का बड़ा बोझा वे उठाकर चलते थे। ईसा ने कहा था कि मैं सबके पाप का बोझ उठा रहा हूं। यही हालत गांधीजी की थी। नहीं तो कोई कारण नहीं था कि दुनिया को प्यार करनेवाला एक शख्स मारा जाये और प्रार्थना में खड़ा-खड़ा चला जाये और जिसने गोली मारी, उसे वहीं हाथ जोड़कर प्रणाम करके जाये। इससे बेहतर और कोई अंत नहीं हो सकता।

* *

मेरा मन तो कहता है कि **क्षण-क्षण क्षीण होतसे जीवन** हरक्षण हमारा जीवन क्षीण होता जा रहा है। यह मैं केवल देह के बारे में नहीं, गांधी-आचार के बारे में भी कह रहा हूं। गांधी-विचार के बारे में तो हर्गिज नहीं – कारण वह तो इतना अमर है कि लाखों चपेटें खाकर भी अब तक अभंग

उसका अंतर-तत्त्व अमर रहेगा। इसलिए गांधी-विचार के बारे में मुझे चिंता नहीं। मात्र गांधी-आचार क्षण-क्षण क्षीण होता जा रहा है, इस बारे में चिंता, उतावली हो रही है।

* *

गांधीजी की एक आध्यात्मिक किताब है 'मंगल प्रभात'। उसमें इस जमाने का नया अध्यात्म है।

* *

गांधीजी ने बताया है, 'जो काते सो पहने और जो पहने सो काते'। इसमें शोषणमुक्ति और शासनमुक्ति दोनों आ जाते हैं।

* *

गांधीजी ने भी ईसा की तरह लोगों को पकड़ने के लिए तरह-तरह के जाल फैलाये थे। खादी का जाल, ग्रामोद्योग का जाल, स्त्री-उद्धार, हरिजन सेवा, आदि तरह-तरह के जाल आपके हाथ में दिये थे, ताकि आप हर किसी को पकड़ सकें। कुछ जाल छोटे छिद्रवाले थे, कुछ बड़े छिद्रवाले, ताकि हर मछली किसी-न-किसी जाल में फंस जाये। ये सारे जाल आपके पास हैं ताकि आप अहिंसा की शक्ति को संगठित कर सकें। अगर अहिंसा, संगठन-शक्ति नहीं दिखायेगी तो टिकेगी नहीं।

* *

गांधीजी का चित्र घर-घर में जाये, इसे मैं बहुत ज्यादा जरूरी नहीं मानता। प्रदर्शनी की गैलरी में चित्र हो, उसे मैं पसंद करूंगा, लेकिन घर-घर में गांधीजी का चित्र टांग दें, यह तो एक प्रकार से मूर्तिपूजा ही हो जायेगी। वह करने के लिए कृष्ण भगवान हैं, राम भगवान हैं। इतना बस है हमारे लिए।

* *

गांधीजी ने पंचीया (घुटने तक की धोती) पहनना शुरू किया। क्यों? उन्होंने देखा कि कोई एक बहन गंदे कपड़े पहने हुए थी। किसी ने उससे पूछा कि तुम कपड़े क्यों नहीं धोती हो? उसने जवाब दिया कि दूसरे कपड़े हैं नहीं। यही एक कपड़ा है। जब भी इसे धोने की इच्छा होती है तो खुले

हिंदुस्तान में कई लोग ऐसे हैं जो लंगोटी भी नहीं पहनते। वे नंगे बदन रहते हैं। कुंभमेले में ऐसे कई लोग आते हैं। लेकिन उनका त्याग करुणामूलक नहीं है। इसलिए उसकी आध्यात्मिक कीमत भी नहीं है। जीवन के जो मुख्य अंग – सामाजिक क्रिया और चित्त-शोधन, वे दोनों अलग-अलग नहीं होने चाहिए। उनका परस्पर संपर्क बना रहना चाहिए।

* *

गांधीजी हमेशा सर्वाधिक आवश्यकतावाले की मदद का तरीका ढूंढ़ते थे। इसी में से चरखा निकला। वह उनकी अद्‌भुत प्रतिभा थी, काव्यशक्ति थी। केवल कुछ पंक्तियां लिख डालने से कोई कवि नहीं होता। **कविः क्रांतदर्शी** कहा है। जिसे क्रांतदर्शन होता है, दूर का दर्शन होता है, सूक्ष्म दर्शन होता है, वह कवि है। इस अर्थ में गांधीजी कवि थे। उन्होंने सालों पहले कह दिया था कि भारत को ग्रामद्योगों की जरूरत है। उन्होंने नयी तालीम, राष्ट्रभाषा, जमीन का बंटवारा आदि के संबंध में भी कई साल पहले ही कह रखा था। कितना उनका उपकार, कितनी उनकी महान बुद्धिमत्ता, कितनी प्रतिभा, कितनी उनकी वत्सलता! इतना सब होने पर भी, उनसे इतना प्रकाश पाकर भी हम आज लड़खड़ा रहे हैं, तो हम कितने कमबख्त हैं!

* *

जब गांधीजी के नाम पर कोई काम करते हैं तो उसकी कसौटी होनी चाहिए, क्रांति। फुटकर काम गांधीजी के नाम पर करने की अपेक्षा प्रसंगप्राप्त उचित काम करते रहें।

* *

महिला यानी महान। बापू में जितनी शक्ति थी, उससे ज्यादा कस्तूरबा में थी। बाबा भी स्त्री है। बा+बा। एक 'बा' कस्तूरबा का, एक 'बा' बापू का।

* *

एकमात्र गुण सत्यनिष्ठा को लेकर मैं बापू के पास पहुंचा था। मुझमें प्रेम बहुत कम था। करुणा उससे भी कम थी और इन गुणों की मुझे बहुत जरूरत थी, आज भी है। सत्यनिष्ठा के साथ ये दो चीजें मुझे बापू के पास मिलीं। उसमें मेरी जो कठिन परीक्षा, कसौटी ली गयी, उसमें अगर उस वक्त मैं कम पड़ता, तो उनके पास नहीं रह सकता था। भगवान की अपार करुणा थी कि उसने मुझे उनके चरणों में स्थिर किया।

* *

था। उनके साथ मेरा आंतरिक अनुबंध था। कुछ वैचारिक अनुबंध भी था। ऐसा मनुष्य जब जाता है, तब शोक करना बालिश माना जायेगा। वह नहीं होना चाहिए। लेकिन कर्तव्य के निर्णय का सवाल आता है तब मनुष्य सोच में पड़ जाता है। हिंदी का 'सोच' शब्द दो अर्थ का है। सोच यानी चिंतन और सोच यानी शोक। वैसे आज देश की परिस्थिति ठीक है। बड़े पुरुष अपने जाने के बाद अगर देश को बदतर हालत में छोड़कर जायेंगे तो बड़े कैसे कहलायेंगे? उनके जाने पर स्थूल आधार कम हो जाता है, लेकिन सूक्ष्म में लाभ पहुंचाकर वे जाते हैं।

* *

बापू द्वारा स्वराज्य का आंदोलन चलाये जाने पर कुछ लोग पूछने लगे कि स्वराज्य का क्या अर्थ है? बापू ने एक दिन सहजभाव से स्वराज्य का अर्थ बता दिया – स्वराज्य यानी गलतियां करने का अधिकार। उन्होंने ऐसी सुंदर व्याख्या बतायी कि मैं तो देखता ही रह गया!

* *

जिस दिन बापू गये यह खबर मुझे मिली उस दिन मैंने समझ लिया कि मेरे लिए इशारा है कि अब मुझे बैठे नहीं रहना है। मेरा एक-डेढ़ साल चिंतन में गया। फिर देश में घूमना हुआ। सर्वोदय सम्मेलन में मैं गया था। पहले एक-डेढ़ साल रेल्वे में घूमा। फिर एक साल कांचन-मुक्ति का प्रयोग हुआ और फिर निकला तो निकला ही। किशोरलालभाई के साथ यह निश्चय किया कि हम घूमते ही रहेंगे। जिस दिशा में हम जा रहे हैं उस दिशा में सोचते हुए समाज के लिए भी घूमना जरूरी है – ऐसा मैंने अपने लिए तय किया था। जिस दिन बापू गये उस दिन एकदम अंदर से आवाज आयी "तुम्हारे लिए अब **चरैवेति चरैवेति** है।"

* *

मुझे तो ऐसे बिरले महापुरुष का आश्रय मिला है, जिनमें वे सब दोष नहीं थे, जो मुझमें हैं, और वे सब गुण बहुत ही उत्कृष्ट रूप में थे, जो मुझमें न्यून रूप में थे। उनके मार्गदर्शन में मैंने बहुत कुछ पाया है। उन्हीं की यह भूमि है, जो मुझे हमेशा खींचती है। मेरी जन्मभूमि महाराष्ट्र है, पर यह कहने में कोई संकोच नहीं होता है कि उसकी अपेक्षा मेरी जो दूसरी जन्मभूमि गुजरात है, मुझे ज्यादा खींचती है। पहले जन्म से दूसरा जन्म

हिंदू-संघटन के औचित्य के बारे में प्रश्न पूछा गया है। हिंदू-संघटन यानी मुस्लिम-द्वेष तो नहीं हो सकता। अगर चारित्र्य-संघटन होता है या सेवा-संघटन होता है, और **सर्वेषां अविरोधेन** के तत्त्व से होता है, तो उसका औचित्य हो सकता है। क्या गांधीजी से बढ़कर हिंदूधर्म पर प्रेम करनेवाला और हिंदू-संघटन को बल देनेवाला कोई हुआ है? गीता-प्रचार को गांधीजी ने जितना महत्त्व दिया, उतना शंकराचार्य और ज्ञानदेव के बाद किसी ने नहीं दिया। लेकिन उन्होंने उसी 'सर्वेषाम्' के सिद्धांत से काम किया। इस तत्त्व को पहचानो, इसकी कसौटी पर अपने काम को कसो।

* *

सामाजिक न्याय छोटी बात है। यह मिनिमम रिक्वायरमेंट ऑफ दी केस है। आज जरूरत है करुणा की। सोशल जस्टिस जो होता है वह मिनिमम मांगता है। यानी आपके पिताजी का किसी ने खून किया तो सामाजिक न्याय कहेगा कि उसको फांसी चढ़ाना चाहिए यह सोशल जस्टिस है। अगर उसको फांसी नहीं चढ़ाते हैं तो अन्याय होता है। गोडसे ने गांधीजी को गोली मारी और रामदास गांधी को छटपटाहट रही कि गोडसे को फांसी नहीं चढ़ाना चाहिए। रामदास ने उसके लिए कितनी कोशिश की! गोडसे ने स्वयं पत्र-व्यवहार किया रामदास से कि मैंने बड़ा अन्याय किया तुम्हारे ऊपर। तुम्हारे पिताजी के बारे में तो मैं जब तुमसे बात करूंगा तो तुम्हें समझा सकूंगा यह उम्मीद मुझे है। सत्यनिष्ठा के लिए जो मुझे लगा वह मैंने किया, ऐसा मेरा दावा है। लेकिन तुम पर तो बड़ा ही अन्याय हुआ है क्योंकि तुम्हारे पिताजी को मैंने इस प्रकार से कत्ल किया है। तुम्हारा मैं गुनहगार हूं, यह उसने रामदास को लिखा। और रामदास ने कोशिश की कि उसको फांसी पर नहीं चढ़ाना चाहिए। इस सिलसिले में बात करने के लिए किशोरलालभाई और मेरा नाम भी सुझाया गया। वह पत्र भी मेरे पास आया। मैंने कहा कि इस निमित्त से फांसी की सजा रद्द, ऐसा अगर भारत सरकार करे तब तो मैं समझ सकता हूं। लेकिन संत पुरुष को जो मारेगा वह फांसी नहीं चढ़ेगा और मामूली मनुष्य को मारेगा वह फांसी पर चढ़ेगा यह तो कानून में बैठेगा नहीं। यह असंभव है। इसलिए मैं इसको सपोर्ट नहीं कर सकता कि वह फांसी पर न चढ़े। फिर वह गोडसेवाला आदमी मेरे पास आया और मुझे कहने लगा कि आप तो अहिंसा के प्रेमी हैं, तो

नहीं? बोला – मानता हूं। तो गीता में क्या है, आत्मा मरता है? नहीं मरता। तो मेरे पास क्यों आये? चुप होकर वह चला गया। * *

गांधीनिधि जबसे निकली है, मैं घबड़ा-सा गया हूं। गांधीजी का स्मरण हम कैसे कायम कर सकते हैं? वह तो उनके गुणों के अनुकरण और अनुशीलन से हो सकता है। वे जैसे त्यागी थे, भोग छोड़कर बैठे थे, वैसे हमको बनना चाहिए। गांधीजी का सारा जीवन परार्थ था। वे सतत जागरूक थे, चिंतनशील थे, वैराग्य की मूर्ति थे। उनके उन गुणों का स्मरण ही हमारी उत्तम निधि है। उससे हमारा निःसंशय भला होगा। लेकिन उनके नाम से हमने पैसे इकट्ठे किये तो उस निधि से हमारा भला ही होगा ऐसा नहीं कह सकते। भला भी हो सकता है, अगर हम विष्णु भगवान जैसे अलिप्त रहें। लक्ष्मी पांव के पास पड़ी थी, पर विष्णु भगवान को उसका पता भी नहीं था। ऐसी अलिप्तता कठिन है। लेकिन वही हममें होनी चाहिए। वह उसी में होती है जो अपना जीवन उत्तरोत्तर कठोर बनाता जाता है।

* *

मैंने किसी जगह एक मौके पर कहा कि 'सत्याग्रहियों का शस्त्र है सत्य और अहिंसा है ढाल।' तो मेरे सामने बापू का एक वाक्य रखा गया, जिसमें शायद यह था (अगर मुझे ठीक याद हो) कि 'अहिंसा है शस्त्र और सत्य है ढाल।' मैंने सुन लिया और कह दिया कि भाई, उनकी जो भी ढाल हो और मैंने भी जो कोई ढाल बतायी हो; लेकिन मेरी अपनी ढाल है 'समन्वय', मेल-जोल करना। मैं दोनों विचारों को कबूल कर लेता हूं। अगर सोचो तो सत्य को शस्त्र कह सकते हो या ढाल भी। इसी तरह अहिंसा को शस्त्र और ढाल भी कह सकते हो। फैसला करना मुश्किल है। लेकिन इतना सच है कि सत्य के साथ अहिंसा आती ही है। एक दफा गांधीजी ने कहा कि "अहिंसा तो मुझे पीछे से मिली, सत्य की खोज करते हुए।" ध्यान में आया कि सत्य की खोज अहिंसा द्वारा ही हो सकती है, हिंसा द्वारा नहीं। आध्यात्मिक क्षेत्र में यह बहुत बड़ी खोज मानी जायेगी कि सत्य की खोज के लिए अहिंसा रास्ता है।

गांधीजी के बारे में हम देखते हैं कि उन्होंने अनेक प्रयत्न किये। धीरे-धीरे उनकी ताकत बढ़ती गयी। कपिलादि की तरह वे अलौकिक सिद्धियुक्त

और हम अपने स्थान में। आपका अनुकरण हम नहीं कर सकते। आप महान हैं, सूर्यनारायण हैं। लेकिन हमें तो पृथ्वी पर ही चलना है। आप हमारे नमस्कार-पात्र अवश्य हैं। लेकिन आपके पीछे हम चल नहीं सकते। श्रेणी ही बिल्कुल अलग है। यक्ष, किन्नर, गंधर्व में आपकी गिनती होगी, पर हम तो सामान्य मानव हैं।''

किंतु यह बात हम गांधीजी के बारे में नहीं कह सकते। हमें, हरएक को मानना होगा कि गांधीजी जन्मतः एक सामान्य मनुष्य थे। और वे मेहनत करके महान हुए। उनका सारा पराक्रम इसी जन्म का है। अगर वे पूर्वजन्म की कुछ सिद्धि लेकर आये होते, तो वह हमारे लिए आदरणीय होते, अनुकरणीय नहीं। लेकिन वे पूर्वजन्म की सिद्धि लेकर नहीं आये थे। अगर सिद्धि थी, तो यही थी कि सत्य पर निष्ठा थी।

गांधीजी का चरित्र अनुकरणीय है यह हमको समझना चाहिए। अगर हमने उनको अवतार वगैरह बना दिया तो मामला खत्म हो जायेगा। अवतार की भी जरूरत होती है। मानवरूप में परमात्मा आये हैं ऐसा मानकर उपासना-भक्ति करना मनुष्य के लिए लाभदायी होता है। इसलिए अवतार की भी मानवों को जरूरत होती है, पर उसके लिए राम हैं, कृष्ण हैं, इतने अवतार बस हो गये। इससे ज्यादा अवतारों की जरूरत नहीं, अब मानवों की जरूरत है। अगर हमने कभी गांधीजी को अवतार बना दिया तो उनका हमको कुछ भी उपयोग नहीं होगा, सिवा इसके कि उनका नाम वगैरह हम लें। नाम लेने के लिए राम-कृष्ण का आधार हमारे लिए बस है। इसलिए गांधीजी का मानवरूप हम कायम रखें, उनका कोई संप्रदाय न बनायें।

* *

गांधी शताब्दी के उत्साह का उपयोग मत कीजिए। वह बड़ा खतरनाक है। जो 99 में नहीं था, 100 में है और 101 में समाप्त हो जायेगा, वह एक ज्वार है, जो उतर जायेगा।

दो अक्टूबर क्षमादिन

कल रात को गाढ़ निद्रा में से जागने के बाद एक विचार मुझे सहज सूझा। उसकी चर्चा सुबह मैंने हमारे साथियों से की, जो यहां मेरे जन्मदिन के निमित्त इकट्ठा हुए थे, बिहार के प्रखंडदान के बारे में आगे की दिशा

2 अक्टूबर महात्मा गांधी का जन्मदिन नजदीक आया है, उसको भारत में क्षमादिन के तौर पर मनाया जाये। उसके लिए चार बातें सूझी हैं। दो हरएक व्यक्ति को निजी तौर पर करने की हैं, और दो हमारे देश की सरकार को – अगर वह पसंद करेगी – करने की हैं।

व्यक्तिगत दो बातें –

1. जिस किसी ने हमारा कोई बुरा किया हो, और जिसके लिए हमारे मन में गुस्सा हो, उसे हम क्षमा करें।

2. हमारे अपने अनंत अपराधों के लिए हम विश्वशक्ति से नम्रतापूर्वक क्षमा-याचना करें।

सरकारी तौर पर करने की दो बातें –

1. गुनहगार माने गये कैदियों को, जो पांच साल सजा भुगत चुके हों, मुक्त किया जाये, चाहे उन्हें आजन्म कारावास की सजा हुई हो।

2. राजनैतिक कारणों से बिना ट्रायल के डिटेन्शन में रखे हुए सब बंदियों को मुक्त किया जाये – चाहे वे किसी पार्टी के हों – सिवा उनके कि जिन्होंने हिंसक कृत्यों में सक्रिय भाग लिया हो।

अगर ये चार बातें अमल में आती हैं तो उससे होनेवाले लाभ स्पष्ट हैं। फिर भी उनका थोड़ा जिक्र करना ठीक होगा।

नंबर 1 में दूसरों को हम क्षमा करें यह बात है, और नंबर 2 में हमारे व्यक्तिगत अपराधों के लिए क्षमा मांग रहे हैं। यह क्रम महत्त्व का है। जब तक हम दूसरों को क्षमा नहीं करते, तब तक हम क्षमा-याचना के अधिकारी नहीं बन सकते। दोनों मिलकर हृदय-परिवर्तन और हृदयशुद्धि की आशा हम रख सकते हैं।

सरकारी स्तर पर करने की पहली बात, बिना दलील के, सर्वमान्य हो सकती है। भारतीय अध्यात्मविद्या और आधुनिक अपराधशास्त्र दोनों की उस विषय में सम्मति है। सरकारी तौर पर करने की दूसरी बात, हिंदुस्तान की आज की परिस्थिति में, हमारे गणतंत्र की रक्षा, प्रतिष्ठा और मजबूती के लिए, बहुत ही लाभदायी होगी। अगले साल चुनाव होनेवाले हैं, उसके लिए इससे शुभ वातावरण बनेगा। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उससे भारत की इज्जत बढ़ेगी।

अपने बारे में

स्कूलों में क्या पढ़ाई होती है? हमें क्या स्कूल में शिक्षण मिला? हमारी मां तो बिल्कुल अनपढ़ थी। हमने ही उसे हरिपाठ की पुस्तक और मराठी गीता पढ़ायी। उम्रभर ये दो पुस्तकें उसके काम आयीं। तीसरी पुस्तक उसने पढ़ी नहीं। उन दोनों पुस्तकों को पढ़ने में तीन घंटे काफी होंगे। लेकिन नित नया भजन उसके मुख से हमें सुनने को मिलता। उसके संस्कार हुए हैं चित्त पर! बारह बजे तक वह घर का कामकाज करती। जब सबको खिला-पिला चुकती, तो हाथ-पांव धोकर फिर भगवान के पास जाकर पंद्रह मिनट पूजा करती। कुल पंद्रह मिनट, परंतु एकाग्रभाव से, सब दुनिया को भूलकर पूजा में मग्न हो जाती और अंत में जब ''हे अनंत कोटि ब्रह्मांड नायक, मेरे सारे अपराध क्षमा कर'' कहती, तो उसकी आंखों से अश्रुधारा बह निकलती। ईश्वर का और उसका मानो सीधा संबंध हो, ऐसा वह अद्‌भुत दृश्य होता था। वे संस्कार हम पर हैं। उस बल पर यह ग्रामदान और भूदान चल रहा है। क्या किसी हाईस्कूल-कॉलेज में या किसी पुस्तक द्वारा हमें ये संस्कार मिल सकते थे?

* *

मेरी मां की सुगंध आसपास फैली थी। जब उसकी मृत्यु हुई, तो कितने ही लोगों ने कहा कि एक 'महान योगिनी' की मृत्यु हुई। उसको खयाल में रखकर ही मैंने 'गीता-प्रवचन' में लिखा है कि ऐसी कितनी ही माताएं होंगी, जो आगे बढ़ी होंगी और योगी अहंकार में फंसे होंगे।

* *

मुझे सबसे अधिक मां का स्मरण होता है। मैं मां का लड़का हूं। कोई मां के बच्चे होते हैं, कोई पिता के तो कोई दादाजी के। मैं मां का हूं। आपको लगेगा कि यह क्या कहना! लेकिन यही मेरी सच्ची पहचान है। मैं मां का लड़का हूं यानी मेरे जीवन पर माता का परिणाम जितना हुआ है, उतना और किसी का शायद ही हुआ हो! मुझ पर मेरी मां की जितनी सत्ता चलती है, उतनी और किसी सगे-संबंधी की नहीं। उसने लगायीं वे

नहीं होता। स्त्रियों की ओर देखने की मेरी दृष्टि भी वैसी ही है। मैं आज तक स्त्रियों की ओर मातृदृष्टि से ही देखता आया हूं। मैंने जो गीता का मराठी अनुवाद किया है, उसको नाम भी 'गीताई' दिया है। लड़कियों को, बच्चों को, स्त्रियों को समझ में आये इस दृष्टि से सुलभ किया है। गीताई नाम देने का उद्देश्य भी यही कि सारी दुनिया का आश्रय छूट जाये तो भी मां का आश्रय कभी छूटता नहीं। अर्थात् मां की योग्यता गीता में है। मां के पास बालक को जो सुरक्षितता अनुभव में आती है, वही गीता के पास भी हो इसलिए गीता के साथ आई (मां) शब्द जोड़ा है। स्त्रियों को धार्मिक शिक्षा देनेवाली गीता से अच्छी किताब नहीं।

* *

बचपन से ही मुझे प्रेरणा थी कि शीघ्र-से-शीघ्र घर छोड़ना चाहिए। मैंने आयु के बीसवें साल घर छोड़ा और तबसे आश्रम में या घूमने में ही सारे दिन बिताये। लेकिन घर छोड़ने का संकल्प बचपन से ही था। अपना मटका कच्चा न रहे, पक्का हो जाये, इस दृष्टि से मैंने विभिन्न शास्त्रों का खूब अध्ययन किया। रात-दिन अध्ययन में ही बीतता। यह सारा इसलिए था कि बाहर निकलते हैं तो अपनी पूरी तैयारी होनी चाहिए। कारण लोगों के बीच पहुंचने पर दूसरा कोई आधार न रहता।

* *

अभी बच्चे नंगे नहीं घूमते, उनको बचपन से चड्डी पहनाते हैं। लेकिन हम बिल्कुल नंगे घूमते थे। और कब तक? नौ साल की उम्र तक! बिल्कुल नंगे। देहात में दूसरे हमारे साथी बच्चे भी नंगे। उसके बाद हमारा उपनयन संस्कार हुआ। उपनयन के बाद हमने लंगोटी पहनी। तो साल-डेढ़साल तक लंगोटी पहनी। उसके बाद हम गये बड़ौदा। वहां हमारे पिताजी थे इसलिए हम वहां गये, विद्याभ्यास के लिए। हम तो लंगोटी पहने गये थे, तो पिताजी ने कहा – 'अब शहर में आये हो। अब तो तुमको धोती पहनना ठीक रहेगा।' देखा कि यहां तो कोई लंगोटी पहनते नहीं, तो हमने धोती पहनना शुरू किया। बहुत बोझ मालूम होता वह सारा लपेटना, तब फिर घर में आने के बाद तुरंत सब फेंक देते थे। केवल लंगोटी पहने रहते थे। ऐसा चला 4-6 महीने। फिर पिताजी ने कहा 'तुम घर में लंगोटी पहनते हो यह ठीक है, लेकिन घर में भी मेहमान वगैरह आया करते हैं। इसलिए अब

बचपन का एक किस्सा। हमारे घर के पास पत्थर फोड़ने का काम चलता था। मैं वह देखने जाता था और उन मजदूरों से कहता था कि मुझे भी पत्थर फोड़ना है। तो वे मुझे ऐसा पत्थर फोड़ने को देते थे जो बिल्कुल फूटने की तैयारी में होता था। फिर मैं अपनी छोटी-सी हथौड़ी से उस पर प्रहार करता था और वह फूट जाता था, तो सब लोग खुशी से चिल्ला उठते थे – 'विन्या ने पत्थर फोड़ा।'... उस घटना का मेरे मन पर गहरा असर हुआ है। मैं मानता हूं कि आखिरी प्रहार, जो कि सफलता का प्रहार होता है, जिसके हाथ से होता है, वह व्यक्ति सबसे कम योग्यतावाला होता है। जो उसके पहले काम करते हैं, वे उससे महान होते हैं। भगवान बुद्ध, शंकराचार्य आदि का नाम दुनिया जानती है। वे तो महान थे ही, परंतु उनसे भी महान उनके गुरु थे जिनको दुनिया नहीं जानती। जो सर्वश्रेष्ठ पुरुष होते हैं, वे कभी दुनिया के सामने आते ही नहीं, लेकिन उनके हाथ में वे लोग होते हैं, जिनको दुनिया महापुरुष कहती है।

* *

आज हमारे शरीर के साठ साल पूरे होते हैं। लेकिन इन वर्षों का कोई भार बाबा को मालूम नहीं हो रहा है। वृद्धावस्था तो दूर रही, बाबा को जवानी का भी अनुभव नहीं। बाबा का तो अभी बचपन ही चल रहा है।

* *

मैं दिन-प्रतिदिन जवान होता जा रहा हूं। वास्तव में मैं न तो वृद्ध हूं और न युवक, बल्कि बलवान बालक ही हूं। आखिर बालक की व्याख्या भी यही है कि 'जो बलवान हो, वह बालक'। इन दिनों मैं बाल-दशा में ही हूं। खूब पैदल घूमता हूं। इसलिए आपलोग मेरी गिनती बूढ़ों या जवानों में न कर बालकों में ही करें और इसे बाल-वाणी मान वैसे ही स्नेहपूर्वक सुनें, जैसे कि मां अपने बच्चे की बोली सुनती है।

* *

हमें तो बचपन से अज्ञात में ही कूदने का शिक्षण मिला। 25 मार्च 1916 को जब हम घर छोड़कर निकले, तो हमारी उम्र 20-21 साल की थी। हमने कॉलेज छोड़ 'ब्रह्मविद्या' का नाम लेकर अज्ञात में कूदने का साहस किया। हमें मालूम नहीं था कि दुनिया में कौन-सा आश्रय मिलेगा। लेकिन दो-तीन महीने के अंदर गांधीजी का आश्रय मिला। हम तो अज्ञात

गुरुदेव हमें सिखा रहे हैं, अरे डरना क्या है? तू तो अज्ञात में प्रवेश कर ही चुका है। क्या तेरी मां तुझे पहले ज्ञात थी? भगवान ने तुझे प्रथम से ही अज्ञात में प्रवेश करने की हिम्मत दी है। तो जैसे अज्ञात में जन्म लिया, अज्ञात में स्नेहमयी माता मिली, वैसे ही हमने ब्रह्मविद्या में कूदने का साहस किया तो महात्मा गांधी जैसी स्नेहमयी माता हमें मिली।

* *

गांधीजी के आश्रम में आया, तबसे आज तक मैं उन्हीं के आश्रय में हूं और मैंने अपने लिए और कोई दूसरा धर्म नहीं पाया। अपने लिए वही मैंने धर्म माना, जो आदेश उन्होंने दिया और उसी से मेरी निष्ठा बनी।

* *

साधारणतया व्याख्यानों के लिए अध्यक्ष होता है। लेकिन मेरे व्याख्यान के लिए अध्यक्ष की आवश्यकता नहीं पड़ती। कारण जिस-जिस सभा में मैं बोलता हूं, वहां गांधीजी अव्यक्तरूप में रहते ही हैं।

* *

1916 में गांधीजी के पास पहुंचा – लेकिन उनके नजदीक बहुत कम रहा। दूर रहकर ही काम किया। उनके लेख बराबर पढ़ता रहता था। उस समय हरिजन में उनके प्रश्नोत्तर आते थे, प्रश्नपेटी के नाम से। वे मैं पढ़ा करता था। पहले मैं प्रश्न देख लेता था, उत्तर नहीं पढ़ता था। फिर सोचता था, मुझे यदि यह प्रश्न पूछा जाता तो मैं क्या उत्तर देता? ऐसा खयाल करके मन में उस प्रश्न का उत्तर तैयार करता। उसके बाद उनका उत्तर पढ़ता। तो उनके और मेरे चिंतन में कहां फरक पड़ा, उनके चिंतन में कहां विशेषता रही, कहीं कमी भी हो तो उसका अध्ययन होता था। वह प्रश्न-पेटी मैंने पढ़ने का साधन नहीं माना था, अध्ययन का साधन माना था।

* *

मुझे अपना जीवन अत्यंत भाग्यवान मालूम पड़ता है, कारण इसमें मुझे भरत-भक्ति का अनुभव होता है। शास्त्रों में जिसे वियोग-भक्ति कहा जाता है, उसका मुझे अनुभव हुआ है। बापू से दूर रहकर उनके विचारों का मैं बड़ी ही बारीकी से अध्ययन करता और उसमें से जो मिलता, उस पर अमल करने का यथाशक्ति यत्न भी करता था। यह मेरा बड़ा-से-बड़ा सौभाग्य था।

तो प्रेम और करुणा का ''पाथेय'' नहीं ले गया था। वैज्ञानिक मन का लक्षण है कि वह सत्य को ही सर्वेसर्वा मानता है। वेद, उपनिषद पढ़कर मैं 'सत्य' को ही एक मुख्य प्रमेय मानता हूं। परंतु सत्य की उपासना, सत्य की खोज प्रेम और करुणा के बिना हो नहीं सकती। इसलिए करुणा और प्रेम मेरे हृदय में पैठ गये और यह करुणा ही मुझे घुमाती है। मेरे शरीर में दूसरी कोई शक्ति नहीं। सात-साढ़ेसात सालों से सिर्फ कारुण्य की शक्ति ही मुझे घुमा रही है। परंतु यह करुणा मुझमें पीछे से आयी। मेरी मूल प्रकृति तो सत्य, विज्ञान और गणित के शास्त्र की है।

* *

साबरमती में बापू रोज कातने का आग्रह रखते थे। मैं रोज कातता था, लेकिन रोज कातने का महत्त्व मैं नहीं मानता था। बाद में मैं पवनार गया, वहां भी मेरा रोज का कातना जारी था। उस वक्त बापू ने पत्र लिखा था कि ''तू रोज कातता तो है, लेकिन रोज कातने पर तेरा विश्वास नहीं, यह मेरी कमी है।'' मुझे लगा कि उनकी 'कमी' दीखना ठीक नहीं। इसलिए मैंने उन्हें लिख दिया था कि मैं बारह साल रोज कातूंगा। उसके बाद मैं कई बार बीमार भी पड़ा, लेकिन एक भी दिन मेरा नागा नहीं गया। बाद में उन्होंने पूछा तो मैंने कहा कि मैं रोज कातता हूं। मेरा कहने का मतलब यह है कि मैं कर्मकांड नहीं चाहता।

* *

ब्रह्मांड में जो संकल्प है वह परमेश्वर है, देह में जो संकल्प है वह आत्मा है। आत्मा में कमी होती है, तो उसके लिए उधर से मदद आती है। बाबा की यात्रा चल रही है, कभी ताकत कम पड़ती है फिर बाबा उधर से शक्ति मांगता है। वह मिल जाती है। फिर बाबा बादशाह जैसा चलता है।

* *

मेरा अपना मन एक खास ढंग से सोचता है। मैं समझता हूं कि इस दुनिया में एक शक्ति काम करती है। वह परम चेतन है। उसके अलावा दूसरी कोई शक्ति दुनिया में नहीं और उसकी इच्छा सर्वोपरि है। उसके अनुसार सब काम होता है। ऐसा मेरे मन में पूर्ण विश्वास है। इसलिए जिससे जितना काम बना, उसके लिए मैं उनका उपकार मानता हूं। उसकी प्रशंसा करता हूं। जिससे काम नहीं बना, उसका मैं उच्चारण नहीं करता।

है। दूसरों को मेरी मदद में दौड़ आने की प्रेरणा क्यों नहीं देता?' तो वह जवाब भी दे सकता है। वह कह सकता है, 'कम्बख्त, तू नहीं समझता कि मैं तेरा यश बढ़ाना चाहता हूं।'

* *

मेरे अंतर से सदैव ईश्वर ही बोलता है। अभी हमारा संवाद चल रहा है। मैं उससे कहता हूं कि तुझसे मेरी तकरार नहीं है। मैंने जितनी भक्ति की है उसकी अपेक्षा तूने कम फल दिया, ऐसी मेरी फरियाद नहीं है। मेरे द्वारा जो अल्प भक्ति हुई, उसकी अपेक्षा बहुत अधिक फल मिला है। बहुत लोग कहते हैं कि 13 वर्ष तक भूदान चला, परंतु अभी तक उसका परिणाम नहीं आया। मैं कहता हूं कि आपका कहना ठीक होगा। परंतु मैंने जो पुरुषार्थ किया, जिस पुरुषार्थ का निर्माण किया, और हमारी मंडली ने जो कुछ किया उसके परिमाण में अधिक परिणाम आया। इसलिए मेरे मन में कृतज्ञता ही है।

* *

भगवान मुझे मेरी पात्रता से कहीं अधिक सफलता दे रहा है। मैं जानता हूं कि ज्यों-ज्यों मेरी चित्तशुद्धि बढ़ेगी, त्यों-त्यों सफलता की मात्रा भी बढ़ेगी।

* *

लोग पूछते हैं कि यह काम असफल हुआ तो क्या होगा। लेकिन हम इस तरह सोचते नहीं हैं। यह काम विनोबा का नहीं है, परमेश्वर का है इसलिए यह असफल हुआ तो विनोबा की फजीहत नहीं होगी बल्कि परमेश्वर की फजीहत होगी।

* *

मेरे देवताओं की मैं क्रमानुसार भक्ति करता हूं। प्रथम अपील भगवान को। वे सबके प्रभु हैं। उनसे संवाद और प्रार्थना करता हूं। यह बाबा की बड़ी शक्ति है। दूसरा देवता जनता। ये दो मेरे देव हैं। जिनको आप सरकार कहते हैं, वे देवता नहीं, वे नौकर हैं। लोग खेती में सेवा के लिए सालदार रखते हैं। वैसे पांच साल के लिए इनको चुना है।

* *

जिस दिन मुझे पहला सौ एकड़ का दान मिला उस रात को मैं सोचने लगा कि इस घटना का कोई अर्थ है? तो मेरे ध्यान में आया कि दुनिया

निमित्तमात्र हूं। फिर मैंने सोचा कि क्या मुझमें यह काम उठाने की शक्ति है? तो अंदर से आवाज आयी मैं शक्तिशून्य हूं। लेकिन यद्यपि मैं शक्तिशून्य था, विश्वासशून्य नहीं था। इसलिए मैंने सोचा कि अगर मैं अभिमानशून्य हो जाऊं तो जिसने रामावतार में बंदरों से काम लिया वह मुझसे भी काम लेगा। दूसरे दिन दूसरे गांव में जाकर मैंने कहा कि अगर आपके घर में पांच लड़के हैं तो मैं छठा हूं, मुझे छठा हिस्सा दीजिए। वहां के लोग इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे कि ऐसी कोई मांग की जायेगी। लेकिन हिरोशिमा में एटम बम का जो परिणाम हुआ वह मेरे उस वक्तव्य का वहां पर हुआ। मुझे पचीस एकड़ जमीन मिल गयी और भूदान-यज्ञ का आरंभ हुआ।

* *

जब हमें प्रथम भूदान मिला तो हम चिंता में पड़े कि क्या किया जाये? अंतर में आवाज आयी – **ओरे भीरु तोमार हाते नाइ भुबनेर भार,** डरने का कोई कारण नहीं है। मेरे कान में आवाज आयी कि निकल पड़, किसी से सलाह-मशविरा मत कर। अगर सलाह-मशविरा करते और मित्रों से पूछते कि भारत में घूमने से क्या लाखों एकड़ जमीन दान में मिलेगी, तो वे क्या जवाब देते? हम ही अपने मन में नहीं कह सकते थे कि जमीन मिलेगी, तो दूसरे कौन ऐसी सलाह देते? शास्त्रवचन है – **एकाकी पौरुषं कुर्यात्** – पुरुषार्थ अकेले को करना चाहिए। जब कोई पराक्रमी संकल्प करना है तो अकेले निकल पड़ना चाहिए, ऐसी प्रेरणा मिलनी चाहिए। उस प्रेरणा से काम करने के लिए भगवान ने हमें शक्ति दी है। गुरुदेव गाते हैं – **तोमार पताका जारे दाओ तारे बहिबारे दाओ शकति** । उसने पताका दी है और उसे वहन करने की शक्ति भी दी है। इसलिए उसके उपकार का स्मरण करते हैं।

दूसरा उपकार हम स्मरण करते हैं भारतीय हृदय का। हम कश्मीर, केरल, कामरूप या जहां भी गये, सर्वत्र हमें प्रेम का ही अनुभव आया। हर प्रांत में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई सबने बाबा को अपना माना। उसके संदेश को प्रेम से स्वीकार किया। यह जो भारत का हृदय है, उदार हृदय, व्यापक हृदय, उस हृदय का हमें परिचय हुआ और उसका बड़ा उपकार मालूम हुआ।

भूदान-यज्ञ में 15 लाख एकड़ जमीन वितरित हुई। एक एकड़ में एक व्यक्ति की जीविका चल सकती है। तो 15 लाख लोगों का पेट भरा। एक बड़ा उद्योगपति भी कुछ हजार लोगों को ही काम देगा। उस हिसाब से देखा जाये तो काफी काम हुआ।

मैंने हिसाब किया है कि कितने समय में कितना काम हुआ। भगवान की जितनी भक्ति हमसे हुई उससे दस गुना फल मिला है। लोगों में हमारे काम के लिए कितनी अनुकूलता है इसका भान हुआ और उससे हमारी आत्मनिष्ठा बढ़ी। कार्यकर्ताओं में जनता के लिए विश्वास उत्पन्न हुआ कि जनता कितनी उदार है।

* *

(भीड़ को देखकर) जैसे आपलोगों को मेरे दर्शन की इच्छा होती है। वैसे मुझे भी आपके दर्शनों की बहुत प्यास है, उत्कंठा है। आप मेरे भगवान हैं। भगवान केवल काशी-रामेश्वर के मंदिरों में नहीं रहते। वे मेरे इन सब भाइयों में मौजूद हैं। ऐसा नहीं होता तो कौन ऐसा पागल है जो व्यर्थ घूमता?

* *

मेरे कृष्ण सिर्फ मथुरा में नहीं हैं, मैं तो जहां जाता हूं, वहीं मुझे मेरे कृष्ण के दर्शन हो जाते हैं। आप सब मेरे कृष्ण हैं और मैं आपके दर्शन के लिए आया हूं।

* *

हम समझते हैं कि बारह साल में हमें जितना दर्शन हुआ, उतना बहुत थोड़े लोगों को हुआ होगा। हमारा जो लोकसंपर्क होता है, वह चेहरों का लोकसंपर्क नहीं, हृदयों का लोकसंपर्क है।

* *

हम जब आपलोगों को सामने देखते हैं, तो केवल मनुष्यों के चेहरे नहीं देखते। उनमें हमें परमात्मा की ज्योति का दर्शन होता है। बारह साल में हमने जितना पाया, अगर यह यात्रा नहीं करते तो उसका एक अंश भी हमें मिलनेवाला नहीं था। हमें ईश्वर की लीला का दर्शन हुआ, मानव-हृदय की उदारता का दर्शन हुआ। हमारे लिए यही मुख्य निधि है।

* *

वृद्धावस्था में पदयात्रा से मनुष्य थक जाता है, लेकिन हम अपने को

रूप देखने को मिलता है। भगवन्मूर्ति हमारे सामने खड़ी है और हम उसकी सेवा में लगे हैं, ऐसा साक्षात् दर्शन हमें रोज होता है।

* *

सबके चेहरे में जो भाव हम देखते हैं, उसके अलावा मित्र के चेहरे में और भी भाव देखते हैं। सबके चेहरों में भगवान की मूर्ति दीखती है, लेकिन मित्र के चेहरे में अपनी ही मूर्ति दीखती है।

* *

मैं तो सबके प्रेम का भूखा हूं। चाहता हूं कि सबमें जो नारायण है, उसके दर्शन करूं। मेरे लिए **नर नारी बाळें अवघा नारायण** हैं। नारद जिस वृत्ति से हर किसी के पास पहुंच जाते थे, वैसे मैं भी पहुंच जाता हूं। मेरे लिए तो सब अंतरात्मा और परमेश्वर के ही रूप हैं। उनमें से हरएक में गुण हैं। उन गुणों के जरिये मैं सबके अंतःकरण में प्रवेश पाने की कोशिश करता हूं। यदि मेरी आवाज सच है, तो वह हर घर में जायेगी, हर हृदय में पहुंचेगी।

* *

आज सुबह मैं जरा थका हुआ था, पर यहां आते ही पुनः ताजा हो गया। प्रातःकाल जनता के दर्शन हुए तो थकावट भी उतर गयी। जनता का दर्शन यानी क्या? वेद में आया है कि प्रभु हजारों मस्तकों से शोभित है। हजारों हाथ-पांव से काम करनेवाला है, ऐसा उपनिषदों और गीता में भी आया है। जनता के रूप में वही यह प्रभु है। **सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपाद् ।** वह प्रभु कहां है? इस पर विचार करने पर मुझे ऐसा भास होता है कि उसी का मुझे अखंड दर्शन हो रहा है। तेरह वर्ष तक वह दर्शन मैंने प्राप्त किया और उसके द्वारा मेरा पोषण हुआ। हमारा यह देह अन्न का बना हुआ है। क्योंकि अन्नाधारित उसका पोषण होता है। पर देह के लिए केवल अन्न का पोषण ही पर्याप्त नहीं। दूसरे पोषणों की भी अपेक्षा होती है। तेरह वर्ष तक मुझे वह पोषण मिला, जिसके कारण मैं अनेकविध विषम परिस्थितियों में भी इस शरीर द्वारा सेवा कार्य कर सका। वह पोषण हरिदर्शन का ही पोषण है।

* *

इन 13 वर्षों में जो कुछ काम हुआ उसमें जनता ने मेरी मांग के

हूं। वह मेरी परम देवता है। इसी लिए मैं उससे श्रद्धापूर्वक मांगता हूं। माता चाहे जैसी हो पर पुत्र आकर जब उससे कुछ मांगता है, तब नहीं दे सकने के कारण पुत्र को जितना बुरा लगता है, उसकी अपेक्षा माता को ही अधिक बुरा लगता है। वह अपनी शक्ति के अनुसार देने का प्रयत्न करती है। क्योंकि वह बालक की मांग है। उसके सामने मां का नहीं चलता। उसी तरह बाबा ने जनता के सामने मांग की। तब जनता मना नहीं कर सकी। परंतु जितनी सफलता मिलने की अपेक्षा थी, उसकी अपेक्षा कम मिली। इसका मुख्य कारण यह है कि बाबा की इच्छा अभी तक पूर्ण निरहंकार रूप में परिणत नहीं हुई, शून्यरूप नहीं हुई।

वह शून्यता प्राप्त होने पर उस शून्य के आगे दूसरी संख्या प्रविष्ट होगी। शून्य के पहले पांच होने पर पचास होंगे। और आठ होने पर अस्सी होंगे। शून्य स्वतंत्र बैठा रहेगा तो बन-बनकर कितना बनेगा? दो, तीन, चार, अधिक-से-अधिक नौ बनेगा, आगे उसकी गति नहीं। उस शून्य ने एक का स्थान प्राप्त किया और दस दूसरे को दिया तो बहुत बड़ा अंक होगा। और सौ देने पर तो और भी बड़ी संख्या होगी। यह शून्यशक्ति सिद्ध करने का प्रयत्न करने पर भी अभी तक पूर्ण सिद्ध नहीं हुई है। पर जो सफलता मिली, वह योग्यता की अपेक्षा अधिक मिली है।

* *

हमारी यात्रा चल रही है। शरीर तो दिन-ब-दिन वृद्ध होता जा रहा है, लेकिन हृदय में अत्यंत संतोष है। अगर आज परमेश्वर हमको बुलाये और हम यहीं से उसके पास जायें, तो पूर्ण समाधान के साथ जायेंगे। हमको यह नहीं लगेगा कि कोई इच्छा शेष है। यह ठीक है कि भगवान ने और कुछ दिन शरीर में रखा तो हम नाराज नहीं होंगे। उस समय का उपयोग भगवान की सेवा में किया जायेगा। उसमें भी हमको प्रसन्नता है। इस प्रकार का समाधान जिंदगी में आने से हम समझते हैं कि मानव-जन्म सार्थक हुआ।

आज भी हमारे शरीर में कोई थकान महसूस नहीं होती, क्योंकि अंदर एक प्रेरणा का झरना है। हम समझते हैं कि यह प्रेरणा भगवत्-प्रेरणा है। वही हमको हिलाती-डुलाती रहती है। हम कौन हैं, चिंता करनेवाले? हमने सारी चिंता ऊपरवाले पर छोड़ दी है। सफलता, निष्फलता, गुण-दोष, सब

मेरा शरीर तो पहले से ही कमजोर था। मैंने यदि शरीर को कसा न होता; सर्दी, गर्मी, बरसात, आंधी आदि सहन करने की शक्ति प्राप्त न की होती, तो मैं इस भूदान-यात्रा में नहीं टिकता। सात-आठ साल से यह यात्रा चल रही है और कौन जाने कब तक चलेगी। वर्षा, गर्मी, सर्दी सहनी पड़ती है। कभी-कभी तो जहां अधिक-से-अधिक वर्षा होती है, वहां भी सतत बारिश में चलना पड़ा।

प्रकृति हमारी मित्र है। खूब पानी गिरे, तो मानना चाहिए कि हमारा मित्र हमें मिलने आया है। कड़ाके की धूप हो, तो भी ऐसा ही मानना चाहिए। धूप से मिट्टी गरम होगी और उस पर पानी पड़ेगा, तो फसल पैदा होगी। धरती को धूप न लगे, तो केवल पानी से फसल नहीं होगी। उसी तरह अपना शरीर भी मिट्टी है, उसे सूर्यनारायण का स्पर्श होना चाहिए। ये सब हमारे मित्र हैं और मित्ररूप में ही हमें उनका स्वागत करना चाहिए।

कसा हुआ जीवन ही मधुर जीवन है। जीवन में माधुर्य कायम रह सके, इस तरह का जीवन बनाना चाहिए।

* *

मुझे लोग कहते थे कि वर्षा के इन दिनों अक्राणी महाल में जाना बड़ा ही कठिन है। वहां नदी-नाले, जीव-जंतु आदि का काफी भय रहता है। मैंने कहा – आखिर वहां आदमी रहते हैं या नहीं? अगर वे रहते हैं, तो मैं अवश्य जाऊंगा, भले ही कैसी भी मुसीबत उठानी पड़े।

* *

आज तो बिल्कुल भरे पैरों चलना हुआ। आज पैर उठाते समय स्त्रियों की जेवरों के कारण क्या स्थिति होती होगी, इसकी अच्छी कल्पना आयी। बरसात के जैसी आनंददायी यात्रा दूसरी नहीं। चारों ओर हरीभरी प्रसन्न सृष्टि, मंद शीतल वायु, गर्मी का बिल्कुल कष्ट नहीं। मोरोपंत ने एक पत्र में लिखा था कि 'अभी वर्षा के दिनों के कारण बुद्धिमांद्य होने से अधिक लिखना नहीं होता।' इसका कारण है, वे घर में बैठे रहते थे। वर्षा के दिनों में घूमनेवाले की प्रतिभा विशेष खुलती है, यह मैं अनुभव से कहता हूं।

* *

(उस दिन रास्ते में बहुत कीचड़ था। बाबा ने कहा –) कीचड़ में चलने से तीन लाभ होते हैं। पहला लाभ, व्यायाम। दूसरा लाभ, पैरों की मालिश सहज

उस समय उत्तर प्रदेश की यात्रा चल रही थी और चुनाव के दिन थे। एक साथी ने कहा कि आप पंद्रह दिन एक जगह रुकिए। हमें चुनाव के लिए जाना है, क्योंकि पहले से ही वादा किया हुआ है। मैंने जवाब दिया कि गंगा नहीं ठहरती, तो मैं क्यों ठहरूंगा? मैं तो चलता ही रहूंगा।

* *

रास्ते में सुबह तीन ग्रामदान जाहिर हुए। लोग काम करते हैं। बाबा के नाम पर वह चलता है। लेकिन बाबा उसे अपने को छूने नहीं देता। ईश्वर के पास पहुंचा देता है। ऐसा यह फुटबाल का खेल चल रहा है।

* *

मैंने अपना स्वार्थ समाज के स्वार्थ से भिन्न कभी नहीं माना। मैं जिंदा हूं, समाज के लिए। लिखता हूं, समाज के लिए और कोई काम भी करता हूं तो समाज के लिए। यही कारण है कि मेरा अपना सारा काम समाज ही उठा लेता है। मैं दो हाथों से लोगों के लिए काम करता हूं तो लोग हजारों हाथों से मेरा काम करते हैं।

* *

'मैं म्युनिसिपालिटी की तरफ से उसके अध्यक्ष के नाते आपका स्वागत करता हूं।' ऐसा कहकर एक भाई ने सूत की एक गुंडी दी। आजकल स्वागत भी प्रातिनिधिक होता है। उसमें इन्सान का दिल नहीं होता। परंतु जब मेरे स्वागत के लिए बच्चे आते हैं तो देखिए उनका प्रेममय हास्य! यों जब कोई हृदय से मेरा स्वागत करता है, तब उसमें मुझे साक्षात् नारायण का दर्शन होता है। पर जब कोई प्रतिनिधि आकर मेरे गले में माला डालता है तो मुझे वह फांसी ही मालूम होती है। इन प्रतिनिधियों से मैं बहुत डरता हूं। वे न नर होते हैं, न नारायण।

* *

आज हमें सूत से तौलने की बात कही गयी। जिस तुला में प्रभु श्रीकृष्ण बैठे थे, उसकी तो मैं इज्जत ही कर सकता हूं। मैं भक्त हूं और मेरे लिए यह असंभव है कि मैं श्रीकृष्ण-चरित्र का अनुसरण करूं। हमें तो भक्तों का अनुसरण करना चाहिए। अलावा इसमें मैं साधक का श्रेय नहीं देखता। शरीर की तुला यानी शरीर की पूजा ही है और यह देहपूजा अनुचित है।

* *

ही नहीं कर सकता। सृष्टि में कोई मामूली सौंदर्य नहीं है। वहां परमेश्वर ही सजकर खड़ा है। और (3) मानवों के चेहरों को देखकर होनेवाला दर्शन। शांति और एकाग्रता के साथ श्रवण करनेवाली इतनी सारी नारायण-मूर्तियां मेरे सम्मुख बैठी रहती हैं। वे मुझसे बुलवाती हैं। तुकाराम कहते हैं, **शिकवूनि बोल, केलें कवतुक** यानी मेरे विठ्ठल बाबा ने मुझे बोलने के लिए सिखलाया और बुलवाकर मेरी सराहना की तथा स्वयं को रिझा लिया। इसी तरह मुझे लगता है कि आप सब शांति और प्रेम से सुनकर मुझसे बुलवा रहे हैं तथा इस बच्चे की सराहना कर रहे हैं। आप सब मेरे लिए नारायणस्वरूप ही हैं। आपलोगों के दर्शन के लिए ही मेरी यह यात्रा चल रही है।

* *

जब मैं प्रवचन करता हूं तो मुझे खूब उत्साह आ जाता है और इससे मुझे ऑक्सीजन मिल जाता है। बहुत-से लोग मुझसे पूछते हैं कि "इस तरह रोज पैदल चलने से क्या आप थक नहीं जाते?" मैं कहता हूं कि "क्या रामनाम लेने में कभी थकान मालूम पड़ती है?" मेरे लिए तो यही रामनाम है। इसका वर्णन करने में ही उत्साह आता है – इतना अधिक बोल गया, फिर भी थका नहीं। बल्कि इससे थकान ही जाती रही। अब मैं बड़े उत्साह और उमंग के साथ अपने कमरे में जाऊंगा।

* *

आज हम कुछ थक भी गये हैं। सुबह से अब तक चलते तो इतनी थकान नहीं लगती। लेकिन हमें चार घंटा लांच (नौका) में बैठना पड़ा। वहां इन्तजाम फर्स्ट क्लास जैसा था, लेकिन हमेशा हम जिस क्लास में रहते हैं, वह इस फर्स्ट क्लास से बहुत ऊपर का क्लास होता है। हम बिल्कुल आराम से निकलते हैं और सतत आकाश सेवन करते हैं। और हम पर परमेश्वर की छत और गगन का वितान रहता है। परंतु इधर तो हम पर कोई बनावटी वितान था। चार घंटे के बाद हमें कोई आधा मील चलना पड़ा तो थोड़ी चेतना आ गयी। अगर चलने का उतना भी मौका न मिलता, तो हम अचेतन जैसे बन जाते।

* *

मेरा स्वभाव ऐसा नहीं कि जन-समुदाय के बीच घुलमिल जाऊं। लोगों

कि सारा शक्ति-संचय अंदर ही है, बाहर नहीं, इसलिए उसे अर्जन करने का अवसर मिल रहा है, तो व्यर्थ न खोया जाये। आज अगर बापू होते तो मैं पहले जैसा ही काम में लगा रहता। अगर वे आदेश देते तो बाहर भी आता। लेकिन वैसे मैं जिस काम में लगा था, उसी में तन्मय रहता। किंतु उनके जाने के बाद मुझे लगा कि अब इस समय यदि मैं जन-समुदाय के बीच दाखिल नहीं होता तो वह कर्तव्य का अवसर खोने जैसा होगा।

* *

मेरी मां मुझे कहती थी कि 'विन्या माणुसघाणा' है, यानी उसको मनुष्य की बू आती है। वह मनुष्य को टालनेवाला है। लेकिन अजीब बात है कि हम मनुष्यों के पीछे हैं और मेरे साथ इतने लोग हैं। और मेरा हार्दिक परिचय इतने लोगों से है कि उतना बहुत ही कम लोगों का होगा। बिल्कुल बचपन से आज तक। उसका कारण क्या था? मनुष्यों का संग्रह क्यों हुआ? अपना रक्षण कैसे करना और दूसरे के काम में कैसे आना, यह बाबा जानता था। अपने रक्षण के लिए गोपन करना, दूसरे के लिए खोलना, यह नल बंद करने और खोलने जैसी सादी बात है। यह शक्ति बाबा को हासिल थी। इसलिए उसने अपने पर किसी का आक्रमण नहीं होने दिया, और न होने देता है। न मित्रों का, न बड़ों का, न अपरिचितों का। लेकिन उपयोग के लिए खोलता है और किसी का अच्छा असर होता है तो उसके लिए भी दिल खोलता है। और जहां जरूरत नहीं, एकदम बंद कर लेता है।

* *

गुण-दोष तो सबमें होते हैं। बाबा में तीन गुण हैं। एक तो करुणा, गरीबों का दुःख मिटाना चाहिए, यह बाबा के हृदय में चल रहा है। दूसरा, जो काम लिया उसको छोड़ना नहीं, सतत करते ही रहना। लोगों का सहकार मिले अथवा नहीं, सातत्यपूर्वक उस काम को करते रहना। और तीसरी बात, बाबा की ईश्वर पर श्रद्धा है। ये तीन गुण उसके हैं, बाकी अनंत दुर्गुण हैं।

* *

यदि विनोबा इस काम में हारा तो आप सभी हार जायेंगे और देश भी हार जायेगा। इस काम से गरीब जो आशा लगाये हुए हैं, यदि वह

ही काम कर रहा हूं, इसलिए मेरे लिए सफलता या विफलता का कोई प्रश्न ही नहीं है।

* *

आज यहां कुछ लोगों ने मुझे लिखा है कि आप उत्पीड़ित, शोषित लोगों की सेवा करनेवाले साधुओं जैसे ही एक साधु हैं। लेकिन मैं साधु नहीं हूं। जो सेवा ही नहीं कर सकता, वह साधु कैसा? मैं तो सिर्फ लोगों का मन मोड़नेवाला हूं। जो लोग दान देते हैं, वे ही साधु हैं।

मैं सिर्फ मालिक के एजेंट के नाते उसका संदेश सुना रहा हूं। जिसका संदेश है, उसी की मिठास है, मेरी नहीं। मैं तो उसका पोस्टमैन हूं। मान लीजिए कि कोई पोस्टमैन आपको पत्र देता है और उसमें मां के मरने की खबर है, तो क्या आप पोस्टमैन को पीटेंगे? अथवा उसके द्वारा लाये गये पत्र में आपको दस हजार रुपये मिलने का समाचार है, तो क्या आप उसे इनाम देंगे? वह तो केवल संदेशवाहक है। इसलिए जिन्होंने मुझे जमीन दी, वे ही साधु हैं। मैं तो सिर्फ घूमता हूं। मुझे कोई कष्ट नहीं होता। लोग अच्छे घर में रखते हैं, अच्छा-अच्छा खाना खिलाते हैं, मेरा कुछ भी त्याग नहीं। उलटे मेरा घूमने का व्यायाम ही हो जाता है, इसलिए मेरी कोई तपस्या नहीं। मैं तो सिर्फ मजदूर हूं, ढोनेवाला हूं। माल तो मालिक का है, परमेश्वर का काम है।

* *

आज हमारे स्वागत में करीब साठ-सत्तर लड़के खड़े थे। मेरी आंखें उन लड़कों के पांवों की तरफ गयीं। मैंने देखा कि उनकी आंखें मेरे चेहरे की ओर थीं। सिवा एक के, किसी के पांव में जूते नहीं थे। धूप कड़ी थी। मैं लज्जित था कि मेरे पांव में जूता था और वे नंगे पांव खड़े थे। ऐसा क्यों होना चाहिए कि एक को पहनने के लिए ठीक कपड़ा मिले और दूसरे अनेक नंगे बदन रहें? एक को अच्छा भोजन मिले और दूसरे अनेक भूखे पेट रहें, ऐसा क्यों?

मुझे अपने व्याख्यानों या भाषणों के विषय, दर्शनमात्र से मिल जाते हैं। अंधकार से मिलते हैं और प्रकाश से भी मिलते हैं। लेकिन मेरा आज का व्याख्यान लोगों को रिझा नहीं सकता, क्योंकि मुझे तो रखा गया है छांह में और मेरे श्रोतागण हैं धूप में। अगर मुझे भी धूप में रखा गया होता

मेरा काम 'भूदान' का है, यह जिसने माना, उसने मुझे पूरा समझा नहीं है। हमारे लिए जो पत्रक निकला है, उसमें दो प्रकार के धर्म की बात की है – निवृत्तिधर्म और प्रवृत्तिधर्म। लिखा है कि बाबा का प्रवृत्तिधर्म चलता है, क्योंकि वह भूदान का काम करता है। मेरे नम्र विचार में उन्होंने इसमें धोखा खाया है। वे समझे ही नहीं कि प्रवृत्तिधर्म और निवृत्तिधर्म क्या होता है? अगर कानून से जमीन बांटने की बात होती, तो वह प्रवृत्तिधर्म होता। लेकिन जहां करुणा से जमीन बांटने की बात होती है, वहां निवृत्तिधर्म हो जाता है। बुनियाद आध्यात्मिक और नैतिक होती है।

* *

हम एक आध्यात्मिक विचार के प्रतिनिधि हैं, इस खयाल से आपको काम करना है। अब तक जो-जो आध्यात्मिक प्रवाह भारत में बहे हैं – बुद्ध-महावीर-शंकर-रामानुज-कबीर, राम-कृष्ण, बसव इन सबके विचारों का समन्वयकारी स्वरूप सर्वोदय में आ गया है। बहुत-से लोग सर्वोदय को केवल सामाजिक विचार मानते हैं। परंतु ऐसा नहीं है। मुझे तो बिहार जाता हूं, तो बुद्ध भगवान से प्रेरणा मिलती है, कालड़ी जाता हूं, तो शंकर से मिलती है और बंगाल जाता हूं, तो चैतन्य महाप्रभु से। मैं क्या कहूं, ये सारी शक्तियां हमारे इस कार्य में हैं, ऐसा मुझे अनुभव होता है।

* *

मैं प्रेम के एक प्रांत से प्रेम के दूसरे प्रांत में बढ़ता गया – तुलसी और कबीर के प्रांत से चैतन्य और जगन्नाथ के चरणों में और फिर शंकर और रामानुज तथा बसवेश्वर का दर्शन लेकर आज मैं ज्ञानोबा माउली के चरणों में...।

* *

इन दिनों हम जरा जूते निकालकर चलने का अभ्यास कर रहे हैं। हम जानते हैं कि इससे आंखों को बहुत तकलीफ होनेवाली है। इसका अनुभव भी हमने किया है। जीवन के तीस-बत्तीस साल जूते पहने ही नहीं। उससे आंखें खराब हुईं। हम मानते हैं कि पथिक को जूता पहनना ही चाहिए। फिर भी कुछ दिन हुए हमने जूते छोड़ दिये हैं। वह इसलिए कि 'गंगासागर' जा रहे हैं। बहुत-से लोग वहां तपस्या करने जाते हैं। हमारा अपना ऐसी तपस्या पर विश्वास नहीं है। लेकिन असंख्य यात्री वहां पादत्राणरहित जाते

मैं अंतर्मुख तो पहले से हूं लेकिन जैसे-जैसे देशभर काम का विस्तार हो रहा है, मेरी अंतर्मुखता भी बढ़ रही है। प्रभु का काम प्रभु पार करेगा। हम निमित्तमात्र हैं। हमें काष्ठपुतलीवत् रहना है।

* *

मैं तेरह साल से बोल ही रहा हूं। केवल व्याख्यानों का हिसाब करना हो तो, दिन में तीन दफा बोलना इस हिसाब से तेरह हजार व्याख्यान हुए। और दूसरी अनेक चर्चाएं हुईं, उसकी गिनती ही नहीं। इन व्याख्यानों में असंख्य विषयों पर चर्चा हुई। उस हालत में कुछ अंतर में जाऊं, थोड़ा वाणी का उपयोग कम करूं, ऐसा मुझे जरूरी लगा। इतना अखंड बोलने के बाद स्वाभाविक इच्छा हुई कि अब कुछ नया दर्शन होना चाहिए।

* *

सर्वोदय-सम्मेलन में जाने का मैंने जान-बूझकर छोड़ा है। लोग कहते हैं कि विनोबाजी हैं, इसलिए काम बनेगा। मैं चाहता हूं कि मेरे रहते भी मेरा मार्गदर्शन न लें और काम करें। विनोबाजी के न रहते जो होगा, वह रहते हुए होना चाहिए। और उसमें मामला बिगड़ा, तो भी अच्छा ही है। तालीम मिलेगी, शिक्षण होगा। इंदौर के बाद तो मैं लोगों के काम में बिल्कुल दखल देनेवाला नहीं हूं। यह बात सही है कि पहले जैसी मेरी स्थिति अब नहीं रही। कहीं भी जाऊं, तो लोग मेरे पीछे आयेंगे। पहले तो दुनिया को पता भी नहीं चलता था। मैं अकेला मस्ती से घूमता था। पेपरों में खबर नहीं आती थी। इसलिए वह आनंद अब नहीं रहा है। अज्ञात यात्रा चलेगी, तो शायद उसमें मुझे वह आनंद फिर से मिले। संभव है कि बीच-बीच में मेरा कार्यक्रम ज्ञात भी हो, लेकिन मेरी कोशिश यही रहेगी कि आज तक मेरे जो लेख और ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं, उसी पर से लोग मार्गदर्शन लें। अब मार्गदर्शन देने की जिम्मेवारी मेरी नहीं रहेगी। मैं मार्गदर्शन देता रहूंगा, तो लोग कमजोर होंगे।

* *

जी चाहता है फिर से अज्ञात यात्रा आगे चले। अज्ञात से ज्ञात में बीच-बीच में कूदना पड़ता है। लेकिन शक्ति का संचय अज्ञात में होता है, उसका खर्च ज्ञात में।

* *

के लिए थोड़ा समय लगा है, तो मैंने यही देखा कि वह विचार मैं पूरी तरह से समझा नहीं हूं। विचार पूरी तरह समझने के बाद भी उसे अमल में लाने में समय जाता हो, ऐसा मुझे कभी अनुभव नहीं हुआ। इसका एकमात्र कारण विचारनिष्ठा ही है। विचार और भावना से अधिक संरक्षण देनेवाली दूसरी कोई भी चीज इस दुनिया में नहीं है। इसके जैसा कोई स्नेही, कोई आप्त नहीं। भावनाएं मूल विचार का ही विकसितरूप है। निश्चित और स्थिर विचार ही भावना का रूप लेता है। वह हृदयंगम होता है, इसी लिए उसे भावना का स्वरूप मिल जाता है।

* *

अपने जीवन में मुझे हमेशा जो विचार जंचा, उस पर उसी क्षण अमल करना शुरू किया। विचार जीवन में लाये बिना विचारों का आकलन ही नहीं हो सकता, सिर्फ शब्दों के अर्थ मालूम हो जाते हैं। मैंने एक साल तक अर्थशास्त्र का अध्ययन किया था। उस वक्त मैं दिन में सिर्फ दो आने का आहार लेता था। लोग मुझसे पूछते थे कि अर्थशास्त्र के अध्ययन का इस 'दो आने आहार' से क्या ताल्लुक है? लेकिन क्या दुनिया में गरीबी है, यह सिर्फ किताब पढ़ने से मालूम हो सकता है? मैंने अर्थशास्त्र की बहुत ज्यादा किताबें नहीं पढ़ीं, चार-पांच किताबों का अध्ययन किया, बाकी मेरा काम और चिंतन चलता था। एक साल में मुझे अर्थशास्त्र का पर्याप्त ज्ञान हो गया।

* *

मैं फकीर हूं। पैसे को कोई कीमत नहीं देता। इतना ही नहीं, जिसे संगठन कहते हैं, उसको भी कोई कीमत नहीं देता। जो मनुष्य पैसा और संगठन, दोनों को कीमत नहीं देता, वह आखिर किस चीज को कीमत देता होगा? वह विचार को कीमत देता है। इसलिए विचार की हद तक आप जो मदद मुझसे चाहेंगे, जरूर पा सकेंगे।

* *

मेरे जीवन पर दो प्रवाहों का, दो विचारों का असर है। एक तो आत्मज्ञान का प्रभाव। उसका असर बचपन से ही है। दूसरा प्रवाह विज्ञान-विचार का, पर शुरू में वह ज्यादा महत्त्व नहीं रखता था। पहले प्रवाह का बहुत जोर था और वह आज भी कायम है। परंतु अब आत्मज्ञान के विचार

निवृत्ति नहीं है। काम न करना भी काम करने की तरह ही एक वृत्ति है। निवृत्ति में दोनों से मनुष्य भिन्न हो जाता है और वह मुझे हमेशा आकर्षक लगता है, तथा मेरा विश्वास है कि उसमें ताकत है। पारमाणविक शक्ति सूक्ष्म है और विस्फोट से वह प्रकट होती है। वैसे एक आत्मशक्ति है। वह सब शक्तियों से भिन्न है। बहुत सारी नहीं, बल्कि सब-की-सब शक्तियां उसी में हैं, भले ही वे पूरी प्रकट न हों। जीवन में वही काम भी आती है। जीवन उसके साक्षीस्वरूप स्पर्श से ही चलता है। जाने-अनजाने हरएक के जीवन में उसका स्पर्श रहता है। उसका स्फोट होता है, तब उसका दर्शन होता है। आत्मज्ञान की वह प्रक्रिया मुझमें है। सृष्टि में भी वही शक्ति है। उसे जितना मौका देते हैं, उतना अच्छा है।

जो निवृत्ति का प्रवाह है, उसका असर मुझमें दीखता है। मेरी एक वैचारिक भूमिका है। उसी पर मैं खड़ा हूं। जरा लोगों से अलग हुआ, तो उसी पर पहुंच जाता हूं। वह मुझे कहती है कि बस, 'केवल-स्वरूप' होकर ही अब मुझे घूमना चाहिए। नदी की तरह समुद्र में तू पहुंच जा। स्वाभाविक कर्म कर। जिस तरह नदी अपनी ओर से कुछ नहीं करती, दूसरे जैसा चाहते हैं, वैसा ही वह करती है, उसी तरह मैं भी चलूं।

बनने-बनाने की बात केवल-स्वरूप के विरुद्ध है, पर मुझे केवलता के लिए कुछ नहीं करना पड़ेगा। वह जो कुछ है, ध्यान की बात है। मुझे एकाग्रता के लिए कुछ नहीं करना पड़ता। प्रज्ञा भी एक शक्ति है। उसकी आवश्यकता है। प्रज्ञा में ज्ञान है, समाधि में समाधान है। मुझे समाधि की कोशिश नहीं करनी पड़ती। वह है, उस पर विश्वास भी है और अनुभव भी। अतः केवल-स्वरूप बनना मेरे लिए स्वाभाविक है। अब मेरे मन में आता है कि 1957 के बाद उसी तरह मैं घूमूं, तो मेरे लिए ज्यादा अच्छा होगा। यह वेदांत का विचार है।

दूसरा जो विचार है उसको विज्ञान-विचार नाम दूं। गांधी-विचार में विज्ञान-विचार भी आता है, अतः गांधी-विचार नाम न देकर उसे विज्ञान-विचार ही कहूंगा। यह विचार ज्यादातर मुझे गांधीजी से मिला। विज्ञान के इस जमाने में यह विचार प्रकट हुआ है कि साधना सामूहिक ही हो सकती है, एकांत जैसी साधना मनुष्य के लिए नहीं है। मनुष्य स्वयं एक समूह

उन्होंने अपनी आत्मकथा को भी 'प्रयोग' नाम दिया। आज तक किसी ने ऐसा नहीं किया। जिसने अपनी आत्मकथा को भी 'सत्य के प्रयोग' नाम दिया, वह विज्ञान-विचार की ही तो देन हो सकती है।

उनके जाने के बाद मैं भी शोध में ही लगा था और देखता था कि अहिंसा तो गायब हो रही है! जिनका उस पर विश्वास नहीं, उनकी बात नहीं करता। लेकिन श्रद्धावालों के कार्यक्रम में भी उसका स्थान नहीं है। मुझे एक के बाद एक चीज उठानी पड़ी। प्रथम दान का जो प्रभाव मुझ पर हुआ, उसे मैं टाल नहीं सका। मुझे कोई आदेश दे रहा है। मैं उसका विरोध कर रहा हूं और वह मुझे आदेश दे रहा है। अंदर से ऐसा खिंचाव हुआ कि वह टल नहीं सका।

आज देश में वास्तविक शांति नहीं है। कोई भी छोटा-बड़ा कारण लेकर झगड़ा हो जाता है। पर यह जमाने के अनुकूल नहीं है। आज विज्ञान इतना बढ़ा है कि हमारा काबू हिंसा पर नहीं है। आज कहीं भी तुरंत हिंसा हो जाती है। अतः उसका कुछ उपाय करना चाहिए। पर जो भी उपाय करें, वह हमारे मूल विचार से भिन्न न हो। इसके लिए मुझे जरूर तीव्रता महसूस होती है। विज्ञान हमसे कुछ त्वरा करा रहा है। वह हम मंदबुद्धि से मंद नहीं, त्वरित पुण्य करवाना चाहता है। यह अच्छा है। **त्वरेतं कल्याणं** । यह मेरा दूसरा विचार-प्रवाह है। गहराई में बोया बीज कभी-न-कभी उगेगा यह मैं मानता हूं, पर त्वरा की कीमत हमें पहचाननी चाहिए।

* *

लगता है कि चिंतन के तरीके में फर्क होना चाहिए। मैं बहुत गहराई से सोचता हूं, क्योंकि अपनी बात रोजमर्रा दुहराता चलूं, इसकी मुझे आदत नहीं। यह ठीक है कि रोज वही अन्न खाता हूं, रोजमर्रा के अन्न में फर्क नहीं होता लेकिन जहां तक विचार का ताल्लुक है, जिस दिन विचार में कुछ नयी ताजगी, नयी सूझ – चाहे वह विचार पुराना ही क्यों न हो – न हुई हो, ऐसा नहीं होता।

* *

योगसूत्र में लिखा है मनुष्य विचार से परे हो जाता है, उसमें विशारद हो जाता है, तो उसे आध्यात्मिक प्रसाद मिलता है। वह एक ऐसी चीज

के काम के लिए विचार-शक्ति है और अपने काम के लिए निर्विचार-शक्ति है, जो अपने को ऊंचे अनुभव में पहुंचाती है। विचार-शक्ति मनुष्य के नित्य के उपयोग के बारे में बताती है। ज्यादातर मैं लोगों के साथ ही विचार-चिंतन करता हूं। कुछ चिंतन ऐसा होता है जो उसी दिन के काम में आता है। कुछ ऐसा भी होता है, जो उस दिन काम में नहीं आता, कुछ देरी से उसका उपयोग होता है।

* *

मैंने सारे जीवन में किसी काम में सबसे ज्यादा मेहनत अगर की हो तो वह शास्त्र के अध्ययन में। दूसरे किसी काम में मैंने इतनी मेहनत नहीं की। शास्त्र का अध्ययन कर मैंने धर्म सीखा है और वह मैंने अपने पास रखा है।

* *

मैं इतिहास का अध्ययन पुस्तकों से नहीं करता, बल्कि लोगों के चेहरों से करता हूं। किसी लेखक ने लिखा है कि 'राष्ट्र का इतिहास आदमी की आंखों में पढ़ो'। उसी के अनुसार मैं लोगों की आंखों में इतिहास का अध्ययन करता हूं।

* *

मुझे गणित का शौक है। मैं चाहता हूं कि हर बात में गणित हो। खुद भी हर काम गणित से करता हूं। रात को जाग गया तो पहले अंदाज करता हूं कि 11 बजकर 15 मिनट हुए होंगे। अगर उसमें दो-चार मिनट की भूल हुई तो मैं अपने को माफ करता हूं, पास कर देता हूं, नहीं तो फेल। अगर पौने बारह बजे हों, तो अपने को उलाहना देता हूं। निद्रा में भी जागृति रहनी चाहिए। एकबार मैंने विनोद में कहा था कि 'बाबा घड़ी देखे बिना मरेगा भी नहीं। अगर रास्ते में ही कहीं ठोकर लगकर मर गया तो अलग बात है। नहीं तो घड़ी देखूंगा 12 बजकर 7 मिनट हुए हैं, अब मैं मर रहा हूं। प्राण निकलने में कितना समय लगा, यह देखूंगा।' यह इसलिए कहा कि व्यवहार-कुशलता का अर्थ है गणित और गणित से ही काम करना चाहिए। हर कार्यकर्ता को इसका ध्यान रखना चाहिए।

* *

इतने थोड़े शब्दों में जीवन का इतना समग्र दर्शन गीता छोडकर दूसरे

होगा कि हरएक ने अपनी दृष्टि से भाष्य किया है। परंतु मुझे 'ज्ञानेश्वरी' प्रिय है, क्योंकि गीता के इस विचार का एक कुशल चित्रकार की तरह परिपूर्ण सुंदर चित्र ज्ञानदेव ने खींचा है। वे हर विचार से उतने ही तद्रूप होते हैं।

* *

आजकल लोग अदालतों में जाते हैं, तो प्रतिपक्षी का दोष बताते हैं। तेलंगाना में घूमता था तब लोग मेरे पास शिकायतें लेकर आते थे। मैं उनसे कहता, "इस अदालत का न्याय निराला है। यहां आपको प्रतिपक्षी के दोष नहीं बतलाने हैं। आपके हाथ से कौन-सी गलतियां हुईं यही बतलाना है। क्योंकि उनकी गलतियां सुनकर, उन्हें तराजू पर रखकर तौलनेवाला मैं कौन हूं?" यह बात उन लोगों को जंच गयी। इस तरह रोज 10-12 मामले हमारी अदालत में हल हो जाते थे।

* *

यहां इस गांव में झगड़े हैं। यहां के लोगों ने आज मुझसे न्याय की अपेक्षा रखी है, पर मैं सोचता हूं कि इस पक्ष के अपराध कितने और उस पक्ष के कितने? मान लो, इस पक्ष के पांच अपराध हैं और उसके तीन हैं। इसके पांच और उसके तीन यों मिलकर आठ अपराध मेरे ही हो गये। अगर इस पक्षवाले मेरे हैं तो वे भी मेरे ही हैं। एक ही बाप के बेटे आपस में लड़ें?

* *

मैं किसी का न्याय नहीं करता। मुझ पर यह आक्षेप भी किया जाता है कि तुममें मनुष्य को परखने की शक्ति नहीं है। ठीक भी है। मैं तो हर मनुष्य में जो ब्रह्मबीज है उसे ही पहचानता हूं। कुछ लोग कहते हैं कि तुम बिना पहचाने मनुष्य के सामने उच्च आदर्श रखते हो, लेकिन वे वहां पहुंच नहीं सकते। ऐसा आक्षेप लोग उठाते हैं। परंतु मैं तो ब्रह्मबीज को ही जानता हूं और सबके सामने बात रखता हूं। मुझे लोग कहते हैं, मनुष्य को परखो। परखो यानी क्या? मेरे पीछे, मेरी अनुपस्थिति में क्या करते हैं, कैसे सोचते हैं, कैसे बरतते हैं सो देखो और पहचानो। मैंने यह धंधा न कभी किया, न करनेवाला हूं। मैं तो इतना जानता हूं, मेरी श्रद्धा बैठ गयी है कि मेरे पास जो रूप प्रकट होता है वही सच्चा रूप है, असली रूप है, सत्यरूप

बयालीस के आंदोलन में हुई हिंसा का मुझ पर खास असर नहीं हुआ; लेकिन उसमें जो छिपाना आदि असत्य हुआ वह मुझे ठीक नहीं लगा। वह मुझे भयंकर लगा। वैसा कुछ थोड़ा अपने यहां भी हुआ। मुझे बचपन से ही असत्य की चिढ़ है। जान-बूझकर कभी असत्य बोला, ऐसा मुझे याद नहीं। इसलिए मेरे शब्द की प्रतिष्ठा थी।

आगे इतिहास के अध्ययन से देश के लिए असत्य बोलने में हर्ज नहीं, ऐसा लगने लगा और मेरा बर्ताव भी वैसा होने लगा। 25 मार्च 1916 को एक लगन से मैंने घर छोड़ा। हृदय में शंकराचार्य की सिखावन थी, सामने बुद्ध का चित्र था और स्वामी रामदास की मिसाल थी। मैंने घर छोड़ा वह आध्यात्मिक भावना से ही, लेकिन उस दिन की याद करता हूं तो दुख होता है। परीक्षा के लिए जाता हूं कहकर घर छोड़ने में असत्य हुआ। रामदास के पलायन में असत्य नहीं था। 'सावधान' सुनकर उसका अर्थ ध्यान में ले वे निकल पड़े। वैसा करने में कोई हर्ज नहीं था। पर मैं परीक्षा के लिए जा रहा हूं कहकर भाग गया! बुद्ध की मिसाल, उन्होंने भी असत्याचरण किया ऐसा नहीं कह सकते। पत्नी को बिना बताये चले गये, उसे चाहे तो विश्वासघात या वचनभंग कह सकते हैं। विवाह के गहरे अर्थ को देखें तो ऐसा कहना होगा। इसलिए बुद्ध की कृति केवल निर्दोष थी ऐसा नहीं कह सकते। लेकिन परीक्षा के लिए जा रहा हूं कहकर चला गया, उसमें तो स्पष्ट ही असत्य था। आगे जीवन में जब चिंतन बढ़ा, तब यह गलती ध्यान में आयी।

देश के लिए असत्य और व्यक्तिगत असत्य, ऐसा अंतर कैसे और कब करना? वह संभव नहीं। यह बात जब स्थिर हो गयी तो फिर व्रत ले लिया। यह बात मैं अब तक कभी बोला नहीं था। जेल में एकबार एक लड़के से कहा था। व्रत वर्धा में आने के बाद लिया। वैसे तो जो भी आश्रम में आये, उसे सत्य का व्रत लेना ही चाहिए। फिर भी मैंने सवा माह के बाद व्रत लिया। तबसे अब तक जान-बूझकर असत्य नहीं हुआ। अज्ञानवश कुछ हुआ हो तो पता नहीं।

आत्मदर्शन के लिए घर छोड़ा। देशसेवा का भी उद्देश्य उसमें था। आत्मदर्शन 20 वर्षों में कुछ हुआ, पर अपेक्षानुसार नहीं हुआ। इसका

होता है। उसका प्रायश्चित्त लूं तो भी दुष्परिणाम टलता नहीं। तो यहां हुए असत्य की जिम्मेवारी मैं लेता हूं और सबको प्रार्थना करता हूं कि अपने अंदर का, सब तरह का सारा असत्य निकाल दें।

मैं एकबार बोल गया था कि असत्यरहित हिंसा हो तो मुझे हर्ज नहीं, लेकिन युद्ध के लिए असत्य का शास्त्र ही बना है। उसे कॅमुफ्लाज कहते हैं। उसके बिना युद्ध हो ही नहीं सकता। इसलिए अपने अंदर का असत्य पूरा दूर करें, चाहे लोग बेवकूफ समझें। तुकाराम ने कहा है, भक्त को चतुराई की जरूरत नहीं, वह भोला ही अच्छा! तो अब सब भूलकर और सोचकर छुपाने की वृत्ति छोड़ दें। बिना लुका-छिपी के लड़ाई कैसे होगी, यह मुझे न पूछें। अल्प चातुर्य की भी हमें जरूरत नहीं, इस निश्चय पर मैं आ गया हूं। हमको तो सत्य संभालना है। सत्य-पालन मुक्तता से हो, उसके लिए मूर्ख कहलवाने में भी हर्ज नहीं।

* *

मेरा विश्वास है, यहां की जनता पर।
- विश्वास है, महापुरुषों पर।
- विश्वास है, परिस्थिति पर।
- विश्वास है, विज्ञानयुग पर।
- विश्वास है, परमेश्वर पर।
- विश्वास है, कार्य पर। और
- विश्वास है, अपने-आप पर।

इस प्रकार सप्तविध विश्वास लेकर आया हूं।

* *

मेरे पास चार प्रकार की सूचियां हैं – 1. मैं किन-किन को पहचानता हूं, 2. वृद्धों की गिनती, 3. कौन-कौन पत्र लिखते हैं? (करीब 300), 4. कौन-कौन मरा।

इस्लाम ने कहा है कि मृतकों का स्मरण करना चाहिए और भगवान उन्हें सद्बुद्धि दे ऐसी उनके लिए प्रार्थना भी करनी चाहिए। वे सूक्ष्म देह में पड़े रहते हैं। प्रार्थना से उन्हें मदद पहुंचेगी।

* *

मैं वर्धा गया और वहां मैंने आश्रम शुरू किया। बारह साल तक मैं

थे। यह एक बंगाली गाली है। परंतु मैं उसको सहर्ष स्वीकार करता था।

* *

जिंदगी के पांच साल जेल में बिताने का मौका हमको मिला है। वहां बहुत-से काम करने का भी मौका मिला। रसोई का काम किया है, रस्सी बंटने का काम किया है, दरी बुनने का काम किया है, आटा पीसने का काम किया है और गिट्टी फोड़ने का काम किया है। गिट्टी फोड़ने का काम आसान नहीं, लेकिन मैंने वह किया है। हम समझते हैं कि काम करने में मनुष्य की इज्जत है।

हमें करना क्या है? देह से मुक्त होना है। मरने से यह नहीं होता। मरता तो हर कोई है, लेकिन वासना नहीं छूटती। इसलिए हम मानते हैं कि जितने मानव देहधारी हैं, सब जेल में हैं और सबको उस जेल से मुक्त होना है। सचाई से रहना, किसी पर अपना भार न पड़े, और सतत काम करते रहना। यह है मुक्ति की साधना। इसके लिए आपको बहुत अच्छा मौका मिला है, आप उसका उपयोग करें। भगवान का ध्यान करें। जेल में ध्यान के लिए अच्छा मौका मिलता है।

* *

मैंने एक छोटी-सी कविता मराठी में बनायी थी। उसका आरंभ था –

कल्याणकारी, शक्तिशाली, सर्वलभ्य उपासना
चित्तीं मुरो विश्वांत पसरो हीच माझी वासना ।

उपासना का लक्षण क्या? उपासना कैसी हो सकती है? जो कल्याणकारी हो, जिसमें सबका कल्याण हो। जिसमें उत्थान की शक्ति भरी हो और ऐसी चीज हो, जो सबके लिए लभ्य हो। जैसे सूर्यनारायण की उपासना है – कल्याणकारी है, शक्तिशाली है और सर्वलभ्य है। यानी हरएक को भगवान सूर्यनारायण प्राप्त हैं। उपासना में ये तीनों चीजें होनी चाहिए, यह उपासना की कसौटी है। मेरी यही वासना है कि वह मेरे चित्त में स्थिर हो जाये और विश्व में फैले।

* *

उपवास जैसी तपस्या को मैं मानता नहीं। उस पर मेरी श्रद्धा नहीं। मेरी श्रद्धा ठीक खाने पर है। ठीक से श्वास लिया तो प्राणायाम में मैं

भजन-कीर्तन लोग घंटों-घंटों करते हैं। जहां तक बाबा का ताल्लुक है, नाचना-कूदना बाबा को अनुकूल नहीं है। **शांतं शिवं अद्वैतम्** – शांत रहना। उछल-कूद अच्छी नहीं लगती, उसमें चित्त की शांति नहीं रहती। सांसारिक लोगों की विषयों की आसक्ति में उछल-कूद होती है। उनकी प्रतिक्रियारूप यह उछल-कूद है। ये दोनों रस ही हैं। शांतं शिवं यह परमेश्वर का स्वरूप है।

* *

मानना यह चाहिए कि वह मनुष्य अविश्वास रखता है, तो 'मुझ' पर नहीं, परंतु उसकी कल्पना का जो 'मैं' हूं, उस पर अविश्वास रखता है। मुझे यह कला बहुत सध गयी है, कुछ लोग मुझ पर आक्षेप करते हैं, तो मैं यही मानता हूं कि वे दोष मेरे दोष नहीं, बल्कि आप मुझे जिस तरह देखते हैं, जैसा मैं देखा जाता हूं, उस पर यह आक्षेप है।

* *

जब मैं बजाजवाड़ी में रहता था, तो नित्य सुबह-शाम प्रार्थना में एक कुत्ता आया करता था। वह कभी प्रार्थना छोड़ता न था। रोज तीन बार भोजन की घंटी बजती तब भी वह वहां उपस्थित रहता। एक दिन म्युनिसिपैलिटीवालों ने कुत्ते कम करने के लिए उसे भी विष खिला दिया। दौड़ता-दौड़ता वह आश्रम में आया। उसे तड़फड़ाता देख विष चढ़ने की बात ध्यान में आ गयी। उल्टी कराने की दृष्टि से उसे आश्रम में जितनी छाछ थी, सारी पिला दी। फिर भी वह बच नहीं पाया। हमारा एक मित्र चला गया मानकर हममें से किसी ने भी उस दिन खाया नहीं। सारे आश्रम ने उस दिन उपवास किया। एक गड्ढा खोदकर उसमें उसे दफनाया गया। उस समय मैंने वेदमंत्र पढ़े। वह कुत्ता साधक था और था हमलोगों का मित्र!

* *

बड़ौदा में रहते समय हमलोगों के घर से दो फर्लांग दूर एक मंदिर के पास संपतराव गायकवाड का हाथी बंधा रहता था। मैं रोज घूमकर आता तो उस मंदिर में जाकर भजन गाया करता। नित्य दस-पांच मिनट बैठता। एक दिन जल्दी थी इसलिए एक मिनट बैठकर भजन न गाते हुए ही चल पड़ा, तो वह हाथी जोर-जोर से चिंघाड़ने लगा। मुझे लगा, इसे क्या हो गया? इसलिए मैं वापस वहां लौटा तो वह शांत हो गया। मैं पुनः चलने

तबसे वह मेरा गुरु बना। वह हाथी मेरी साधना का मित्र बना। ऐसे अनेक साथी, मित्र हैं।

* *

तीन साल के कारावास के बाद मैं जब 1945 में जेल से छूटा, तब बाहर की दुनिया का जो पहला प्रकाश मैंने देखा, उसका स्मरण भूलना असंभव है। मैंने क्या देखा? इतवारी स्टेशन (नागपुर) के नजदीक, रेल्वे लाइन के पास के मैदान में पचासों पुरुष खुले सूर्यप्रकाश में सर्व लज्जा छोड़कर शौचविधि कर रहे हैं। क्योंकि रिहाई के बाद का यह मेरा पहला दर्शन था, मेरे दिल पर इसका तीव्र असर हुआ। उसी के परिणामस्वरूप मैंने सुरगांव का भंगीकाम बीस महीने सूर्य की नियमितता से सतत चलाया।

* *

महापुरुषों की स्मृतियों का मनुष्य के चित्त पर बहुत गहरा असर रहता है, यह दुनिया का और मेरा अपना भी विशेष अनुभव है। मैं उन स्मृतियों में इतना तन्मय हो जाता हूं कि उनसे अपने को अलग नहीं कर पाता, स्व-चित्त को भूल जाता हूं। जब कभी महापुरुषों के स्मरण का प्रसंग आता है, मैं अपने शरीर से उठकर उनके शरीर में दाखिल हो जाता हूं। **चित्तस्य परशरीरावेशः** – चित्त परशरीर में आविष्ट होता है, इसकी एक प्रक्रिया योगशास्त्र में बतायी गयी है। मैं तो वह प्रक्रिया नहीं करता, फिर भी मेरा चित्त उनके शरीर में प्रविष्ट हो जाता है। उन महापुरुषों के हृदय में शब्द द्वारा चित्त प्रविष्ट होता है।

* *

बाबा को कोई पूछेगा, 'जय जगत्' कहते हो तो तुमने इंग्लैंड और जर्मनी को कितना समय दिया? इसमें पक्षपात नहीं है। भारत को समय ज्यादा मिलता है, लेकिन भारत को प्रेम ज्यादा नहीं मिलता। प्रेम सबको समान मिलता है। नहीं तो बाबा संकुचित प्रेमी साबित होगा। कोई व्यक्ति सारे विश्व को समान समय नहीं दे सकता, विश्व को समान सेवा नहीं दे सकता, लेकिन समान प्रेम दे सकता है। वह अपने देश, प्रदेश या जिले के लिए ऐसा कोई काम नहीं करेगा जिससे दुनिया का नुकसान हो।

* *

इन दिनों बाबा हंसता ही रहता है। इसलिए हंसता है कि रोना वाजिब

ध्यान में रखकर बाबा हंसता है। और वह इसलिए भी हंसता रहता है कि वह इस दुनिया को निकम्मी समझता है। बहुत ज्यादा वास्तविक अस्तित्व इसको है, ऐसा बाबा को प्रतीत नहीं होता।

* *

आजकल बाबा अभी छह-साढ़ेछह बजे सो जाता है, पांच बजे उठ जाता है। तो लोग पूछते हैं कि इतना सोकर क्या करते हैं? तो मैं कहता हूं कि जितनी निद्रा आती है उतनी 'समाधि' है, जो नहीं आती है उतना 'ध्यान' है। इन लोगों को समझाता हूं कि सोना बिल्कुल 'सोना' (सुवर्ण) – बिना पैसे का सोना है।

* *

केरल यात्रा में मैं अचानक बीमार हुआ। उस बुखार में भी आत्मचिंतन करने का मुझे बहुत समय मिला। वैसे तो आत्मचिंतन और विश्वचिंतन का अवकाश मुझे मिलता ही है। और अगर अवकाश नहीं मिलता, तो मैं उसे प्राप्त कर ही लेता हूं, क्योंकि चिंतन के लिए अवकाश न मिलने को मैं एक भयानक अवस्था मानता हूं, उस अवस्था में मैं अपने को कभी भी डालना नहीं चाहूंगा। इसलिए उस चिंतन में मेरे ध्यान में आया कि हमलोगों ने आज तक अनेक काम किये, लेकिन उसके लिए लोगों की सम्मति कहां प्राप्त की? हमारे सभी कामों में लोकसम्मति मिलनी चाहिए। इसलिए मेरे मन में आया कि हमारे कार्यकर्ताओं में से कम-से-कम आधे लोग तो लोगों पर ही आश्रित रहें, तो उनमें शक्ति आयेगी। इसलिए मैंने आजकल शांतिसेना, सर्वोदय-पात्र आदि का ही जप चला रखा है। जिन बातों पर मेरी श्रद्धा है, वे होनी ही चाहिए, यह मेरी आंखों को दीखता है और मैं उस काल्पनिक आनंद में मग्न रहता हूं। लेकिन यह 'कल्पनानंद' सबको पच नहीं सकता, वे प्रत्यक्ष आनंद चाहते हैं।

* *

मुझे ब्रह्मविद्या सहज सधती है क्योंकि मैं बड़ा आलसी हूं। क्योंकि उसमें करने का है नहीं, न करने का ही है। बहुत दफा मैंने अनुभव किया है कि खाने में मजा नहीं आता। जिसको मराठी में 'कंटाला' कहते हैं, वैसा होता है। यानी खा लो, लेकिन मजा नहीं। उसकी रुचि नहीं। कंटाला आता

में कंटाला नहीं आता। सोने को मिल जाये तो मुझे सोना मिल गया। क्योंकि उसके लिए पुरुषार्थ की जरूरत नहीं। और इसके कारण सैंकड़ों झंझटों से मैं बच गया। तो मुझे ब्रह्मविद्या से आसान चीज कोई मालूम ही नहीं होती। मैं आलस का इतना प्यार और गौरव करता हूं।

* *

शुरू में मैं कांग्रेस का सदस्य था। 1924 में उससे मुक्ति पायी। पर रचनात्मक कार्य करनेवाली संस्थाओं में मेरा नाम था। फिर बापू ने स्नेह से वह भी हटा दिया। और उस दिन से मेरी ताकत बढ़ी और अनुभूति हुई कि अब मैं भगवान का हो सकता हूं। मनुष्य भगवान का तब हो सकता है जब वह और किसी का न हो। जब तक हम दूसरे के रहेंगे तब तक ईश्वर के नहीं हो सकते और इसलिए मैंने सब संस्थाओं से नाम हटा दिया। इससे हिंदुस्तान ने कुछ खोया नहीं और मैंने भी कुछ खोया नहीं। जब-जब त्याग करने की जरूरत हुई, मैंने किया है। संस्थाओं से अलग होने के कारण मुझे आनंद और शक्ति महसूस होती है इसलिए मेरी कामना रहती है कि लोग संस्थाओं में न फंसे। जो नये लोग हैं, वे समझें कि हमें रागद्वेष-रहित होकर, किसी प्रकार का नाम न रखकर काम करना है।

* *

वैसे तो मुझे अनेक दोष स्पर्श करते हैं, परंतु मैंने अपने में एक दोष नहीं पाया, जो बहुतों ने मुझमें पाया। यह एक अजीब-सी बात है कि दूसरे लोग मुझमें जो दोष पाते हैं, उसे मैं खुद अपने में नहीं पा रहा हूं। और वह दोष है अपने लिए अभिमान। मुझे अपने लिए अभिमान रखने का कोई कारण ही नहीं। यह ठीक है कि मेरी बुद्धि उत्तम काम करती है, परंतु वह मेरी वजह से नहीं है। उसको उत्तम बनाने में कितनों के उपकार हैं, यह देखा जाये तो उसको 'मेरी' कहने का अधिकार ही मुझे प्राप्त नहीं होता।

आजकल मैं कृत्रिम दांत नहीं लगाता। उसके सौंदर्य की प्रशंसा भी हुई है। लेकिन मैं जानता हूं कि उन दांतों के सौंदर्य के साथ 'मेरा' ताल्लुक नहीं है। जैसे दांत के बारे में मुझे स्पष्ट अनुभव होता है, वैसा ही अपनी बुद्धि के बारे में महसूस होता है कि मुझमें जो बुद्धिप्रकाश दीखता है, वह मेरा नहीं है। उसमें शास्त्रग्रंथों की मदद, गुरुजनों की मदद, मित्रों, विद्यार्थियों,

वर्धा आश्रम में रहते हुए अध्ययन-अध्यापन, चिंतन-मनन आदि और भंगीकाम से लेकर रसोई तक के काम और बीमारों की सुश्रुषा एवं खादी-काम आदि जो भी विचार सूझ पड़े, उन पर मैं अपनी शक्तिभर अमल करता रहा। किंतु उन सबमें मेरी एक ही दृष्टि थी और वह थी आत्मदर्शन की। मुझे यह कहते हुए आनंद होता है कि मेरा समाधान होनेभर का आत्म-दर्शन मुझे हो गया है। मैं मानता हूं कि परिपूर्ण दर्शन तो सदैव दूर ही रहता है। और ज्यों-ज्यों हम आगे बढ़ते जाते हैं त्यों-त्यों वह दूर भागता जाता है। उसके और हमारे बीच सदैव खेल (आंखमिचौनी) चलता रहता है और उस खेल में ही मजा है। आत्मदर्शन का स्पर्श होने पर तो यह खेल ही खत्म हो जाता है। फिर तो आनंद भी रफू हो जाता है। इसलिए आत्मदर्शन और हमारे बीच थोड़ा अंतर रहना ही अच्छा है। यह सच है कि मानव-जीवन में आत्मदर्शन की प्रेरणा रहती है, लेकिन समाधानभर का आत्मदर्शन हो जाये तो मानव निश्चिंत, निर्भय और निःशंक हो जाता है। यही अनुभव में आता है। घर और कॉलेज छोड़ने में मेरी यही मुख्य प्रेरणा थी।

* *

वल्लभ मेरे पास रहा, सीखा, मैंने उसे पढ़ाया, उसकी सेवा की, इसके कारण उसकी जितनी उन्नति हुई होगी, उस तुलना में उसने मुझ पर जो श्रद्धा रखी और उसके कारण मेरी जो उन्नति हुई, वह कम नहीं है। वल्लभ ने मुझ पर जो श्रद्धा रखी, उसने मुझे उन्नत बनाया है। मेरी अपनी खुदकी जो भी स्थिति हो, लेकिन इस प्रकार की श्रद्धा उस स्थिति को ऊंचा उठाती है।

इस प्रकार हम एक-दूसरे पर श्रद्धा रखेंगे तो उससे हमारी अपनी उन्नति तो होती ही है, लेकिन दूसरे की भी उन्नति होती है। मैं आशा करता हूं कि हम जितने लोग विचारवश, कार्यवश, स्नेहवश एकत्र हैं, वे एक-दूसरे के प्रति आदर और श्रद्धा बढ़ायेंगे, तो उन्नति का मार्ग हासिल करेंगे।

* *

हम कोई आरंभ ऐसा नहीं करते, जिसे भाररूप समझें। बल्कि निश्चित हुआ, निर्णय हुआ, तो हमको ऐसा मालूम होता है कि हमारे सिर पर का भार उतर गया। हमको महसूस नहीं होता कि कोई बहुत कठिन कार्य हमने उठा लिया है। बल्कि कठिन तो हमारे लिए कुछ हो ही नहीं सकता। ऐसे

पेट, आंत, हर जगह यमदूतों ने अड्डा बना रखा है। जब चाहे उड़ा सकते हैं। इन लेकिन यमदूतों को हम पहचानते ही नहीं। क्योंकि हम कोई काम उठा ही नहीं रहे हैं।

* *

पंढरपुर में जब आना हुआ तब चर्चा चली कि मैं अहिंदुओं को लेकर मंदिर में घुसनेवाला हूं। इस तरह घुसना मेरे लिए असंभव है। आक्रमण करना न मेरे शील में है, न मेरे विचार में है और न मेरे गुरु ने मुझे ऐसा सिखाया है। मुझे कोई जबरदस्ती नहीं करनी है। पंढरपुर के विठोबा के लिए मेरे मन में जो भक्ति है, उसका साक्षी और कोई नहीं हो सकता, उसका साक्षी साक्षात् भगवान ही हो सकता है।

* *

हिंदी में जिसको प्रचार कहते हैं, वह मैं नहीं चाहता। मैं प्रकाश चाहता हूं। यह बिल्कुल स्वतंत्र शब्द है। हिंदुस्तान का खास शब्द है। इंग्लिश के प्रपोगंडा और पब्लीसिटी शब्द बिल्कुल ऊपर-ऊपर के हैं। मैं पब्लीसिटी, प्रचार नहीं चाहता, प्रकाश चाहता हूं। सिक्ख लोगों में रिवाज है कि सुबह उठकर प्रातःविधि समाप्त करके भक्तिभाव से अपने घर में एक स्थान पर बैठकर गुरुग्रंथ खोलते हैं और सहज ही जो खुल जाता है, वह यह कहकर पढ़ते हैं कि आज के लिए हमें क्या प्रकाश मिलेगा? इस विधि को सिक्ख लोग प्रकाश कहते हैं। मैं भी ऐसा प्रकाशन चाहता हूं।

* *

झगड़ों की बात मेरे कानों तक तो पहुंचती है पर अंदर पैठती नहीं। झगड़े आश्रम में भी होते हैं और बाबा की टोली में भी होते हैं। सात्त्विक बुद्धि का लक्षण है, अनंत भेदों से अभेद ग्रहण करना। मृगजल लहरें मार रहा है। पर वह मृगजल है, मानवजल नहीं है। मानव को वह भ्रम छूता ही नहीं। जिनको अपने जीवन का क्षय करना है, उनको झगड़ों में जरूर पड़ना चाहिए और ध्यान देना चाहिए। उससे बेहतर क्षयकारिणी शक्ति हो ही नहीं सकती।

* *

निर्गुण में मेरी गति अच्छी चलती है। पहले शब्द सूझता है और शब्द के पीछे-पीछे निःशब्द की ओर जाया जा सकता है। किसी अव्यक्त विचार

सर्व साधारण को उसे व्यक्त में लाने के लिए, सगुण करने के लिए अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। तुलसीदासजी ने रामचरितमानस के उत्तरकांड में कहा है कि निर्गुण से सगुण कठिन है। मुझे यह विचार अधिक जंचता है। निर्गुण में आकलन होने की आवश्यकता पड़ती है। एकबार आकलन होने पर निर्गुण भी सगुण में आ जाता है।

* *

मेरे पेट में अल्सर है, उसके लिए मुझे मंत्र मिला है – No hurry, no worry (नो हरी, नो वरी) और उसमें मैंने जोड़ा है 'हरि, हरि'।

* *

मैं व्यक्तिगत जीवन के लिए खास कोई हिदायतें नहीं देता। ईश्वर से प्रार्थना करता हूं। उसमें से जिसको जो मिलता हो।

* *

मैं किसी के विषय में किसी तरह का आग्रह नहीं रखता। मुझे जो गुण दीखते हैं उनकी मैं मुक्तकंठ से स्तुति करता हूं। इसे मैं भगवान की उपासना समझता हूं। जीवित लोगों की उपासना का यह तरीका है।

* *

जो कोई मुझे सलाह पूछते हैं, उनको उत्तर देने की मैं कोशिश करता हूं। इसके अलावा व्यावहारिक बातों में मेरी ओर से किसी को कुछ खास कहने की मुझे प्रेरणा नहीं होती।

* *

बचपन से मेरा झुकाव रहा है कि मैं मनोवृत्तियों के जंजाल में नहीं पड़ता। इसलिए मेरे निकटवर्तियों के साथ जो भी चर्चाएं हुईं, वे तत्त्व-विषयक या सार्वजनिक सेवा के बारे में हुईं। मेरे साथ जो साथी रहते हैं, उनके मन में क्या चल रहा है, यह मैं उनसे पूछता नहीं। वे ही कभी अपने मन की बातें मुझे लिख देते हैं, तब मैं उनको सलाह देता हूं। मेरी इस वृत्ति के कारण मेरा मैत्रीभाव अखंड रहा, ऐसा मेरा दावा है। और इसी लिए जिनके साथ मेरा संबंध आया उन्होंने मुझे छोड़ा ही नहीं। क्योंकि मेरा मन उनके लिए अत्यंत आदरयुक्त रहा।

* *

मैं किसी मनुष्य की आजादी में जरा भी बंधन नहीं चाहता। पर हरएक

परिचित लोगों के संबंध में मनुष्यों की कुछ भावनाएं, धारणाएं बन जाती हैं। उनको निकालना मनुष्य के लिए बहुत ही कठिन होता है। पर मुझे वह अच्छा सधा है। उसके लिए मेरी एक सरल युक्ति है। मैं ऐसी धारणाएं बनाता ही नहीं। प्रतिपल मनुष्य नया ही होता है, यह बात मेरे मन में जम गयी है।

* *

उपाधियां लेकर चिंतन करने पर वह मुक्त चिंतन नहीं होता। उसमें नयी चीज की खोज नहीं होती। सौ एकड़ जमीन का जो प्रथम दान मिला, उसे मैंने ईश्वर का इशारा समझा। अगर मेरे मन में परंधाम की आसक्ति होती, तो वह काम हाथ में लेने की मुझमें शक्ति ही नहीं रहती। मैंने उसे ईश्वर का इशारा समझकर उठा लिया और निकल पड़ा। यह इसलिए कि मेरा चिंतन सभी उपाधियों से मुक्त था।

* *

आज से मेरे मौन की शुरुआत होगी। फिर चौबीस घंटे मैं क्या करूंगा, यह मैं नहीं जानता। उसका अनुभव आयेगा। इतना जानता हूं कि समय बेकार नहीं जायेगा। बाकी जितना विश्व बाहर है उतना ही विश्व अंदर है। बाहर के विश्व के साथ मेरा संपर्क छूटनेवाला नहीं। सब प्रकार की जानकारी रखूंगा। और अंदर का संपर्क, जो पहले से ही रखता था, पक्का, गहरा रखूंगा। इसलिए फुल एम्प्लायमेंट (पूरा रोजगार) मिलेगा।

* *

मेरी निवृत्ति की भी एक विशेषता है। वह मुझे कर्मयोग से कहीं रोकती नहीं। निरंतर क्रियाशील रहने देती है। लेकिन भाषण और लेखन के साथ उसकी कुछ दुश्मनी-सी है। वह बेखटके मुझे बोलने और लिखने नहीं देती। इस कारण वाचिक सेवा में मुझे कुछ झिझक लगती है। और क्योंकि इससे किसी का कोई खास नुकसान नहीं होता, बल्कि शायद कुछ लाभ ही होगा, ऐसा मैंने मान लिया है, इसलिए मैं इस स्वभावविशेष का अनुसरण करता हूं। यद्यपि वाणी की शक्ति का मुझे भान है और उसकी कीमत मैं समझता हूं, तथापि या इसी वजह से, मेरा यह स्वभाव बना हुआ है।

* *

बंगलोर में दंगा हुआ, शिमोगा में दंगा हुआ। बड़ौदा और अमदाबाद

अपने मन के अंतस्तल में मैं परिपूर्ण समाधान अनुभव करता हूं और परिपूर्ण शांति भी वहां है। इसका दूसरा कोई कारण नहीं सिवा इसके कि मुझे अंदर एक दर्शन है, आत्मदर्शन है, जिसके कारण अंदर की शांति मैं नहीं खोता। वह होते हुए भी मन के बाहर का जो अंश है, उसमें आजकल बहुत व्याकुलता है।

* *

अभी-अभी मैंने एक व्याख्यान में विनोद से कहा था कि मैं असफल होना चाहता हूं और चाहता हूं कि साथी सफल हों। सफलता मिलने का आभास होने लगता है, उतने में तो मैं आगे का कार्यक्रम खोजने लगता हूं और असफलता को साथी बनाकर आगे चलता हूं।

* *

लोग पूछते हैं कि मैं किस पक्ष का हूं। मेरा पंथ मैं आपको सुना दूं। मेरा पंथ पागल-पंथ है। मैं खुद पागल हूं और सबको पागल बनाना चाहता हूं। कांग्रेसवाले या अन्य पार्टी के लोग पागल नहीं हैं, जो मेरे साथ अपने काम के लिए घूमें। उसके लिए उनके पास हवाईजहाज़ और मोटरें पड़ी हैं। हां, जो मेरे जैसे पागल हैं, वे मेरे साथ जरूर घूम रहे हैं। लोग मुझे पागल कहते हैं, क्योंकि मैं जमीन मांगता हूं। लेकिन मैं मांग रहा हूं तो लोग दे भी रहे हैं। तो देनेवालों में भी पागल मौजूद हैं। पर तुलसीदासजी ऐसे आदमी को पागल नहीं कहते। उन्होंने सयाने का वर्णन किया है –
बरषा हिम मारुत घाम सदा सहिकै, जो भजे भगवान, सयान सोइ ।

* *

आज का रास्ता बड़ा ही सुंदर था। चर्चा हो रही थी कि पृथ्वी सपाट है या ऊबड़-खाबड़। बाबा का हाल भी ठीक ऐसा ही है। जो बाबा को दूर से देखता है, उसे लगता है कि बाबा की क्या-क्या महिमा है। लेकिन जो नजदीक रहता है, उसे उसका ऊबड़-खाबड़ पता है। जीवन का ऐसा ही दुहरा स्वरूप है। नजदीक से ऊबड़-खाबड़ और दूर से सुंदर। रात को आकाश में चमकनेवाले सितारे कितने सुंदर होते हैं। कहते हैं कि अगर आंख हमेशा उन्हें देखती रहे तो उसकी तेजस्विता बढ़ती है। परंतु वे ही तारिकाएं अगर हमारे नजदीक आ जायें तो शरीर जलना शुरू हो जायेगा। जो संसार का दूर से दर्शन करेगा, उसे वह बड़ा सुंदर मालूम

स्थूल कामों में चित्त विशिष्ट बनता है इसलिए हमने सूक्ष्म में प्रवेश किया है। सूक्ष्म प्रवेश का रहस्य आकाशवत् होने में है। आकाश में अवकाश है, प्रकाश है। प्रकाश के लिए सहूलियत है। लेकिन आकाश न प्रकाश से चिपकता है और न उसमें जो हलचलें होती हैं उनके साथ मर्यादित बनता है। तो चित्त बिल्कुल आकाश के समान होना चाहिए। एक बाजू से अनंत, दूसरी बाजू से शून्य। ऐसा रहने में जो अकर्म में कर्म की कल्पना है उसकी अनुभूति आ सकती है।

हमारे कुछ मित्र चाहते हैं कि वेद का कुछ चयन आदि करूं। लेकिन उसमें चित्त विशिष्ट बनेगा, आकाशवत् नहीं बनेगा। अपनी ओर से चित्त को विशिष्ट उपाधि में हम दाखिल नहीं होने देते। निर्बाध (निरुपाधिक) चित्त रहे। अकर्म में कर्म का अनुभव है उसमें जरूरी नहीं कि बाहर के स्थूल कर्म की कसौटी पर उसे कसा जाये। चित्त में अकर्म, संकल्प-शून्यता, अहं-मुक्ति हो तो बाहर कर्म प्रचंड होगा। लेकिन मान लीजिए न हुआ तो चिंता नहीं। कसौटी में, बाह्य कर्म की कसौटी में अकर्म खरा उतरा नहीं, ऐसा नहीं। कसौटी तो अंतर में है। बाहर का कर्म हजार साल बाद हो सकता है। लोग अपेक्षा रख सकते हैं बाहर के कर्म की, क्योंकि उनके पास कसौटी का अन्य साधन नहीं।

* *

मुझे अनुभव आता है कि अब कोई खास मेरा अपना जीवन नहीं रह गया है। चल रहा है खाना-पीना... वह चलेगा मरने तक! लेकिन चित्त में कोई व्यक्तिगत आकांक्षा या इच्छा का अनुभव नहीं होता। गलतियां होती हैं बोलने में, व्यवहार में, काम करने में; मैं देखता हूं, मुझे मालूम होती हैं; लेकिन उसकी चिंता नहीं करता।

अभी आपने तुकाराम का वचन सुना : ''जहां जाता हूं, तुम मेरे साथ हो।'' आप ठीक अक्षरार्थ से इसे मेरा वाक्य मानिए। जब मैं किसी का हाथ पकड़ता हूं चलने के लिए, तो मैं उसे भगवत्‌रूप ही समझता हूं। किसी लड़के का हाथ या किसी लड़की का हाथ ऐसा नहीं लगता; भगवत्-स्पर्श का अनुभव आता है! यह शब्द का विषय नहीं है। इसकी व्याख्या नहीं की जा सकती है। यह अनुभव का विषय है।

शब्द भी मैं ममत्वभाव से नहीं बोला। उतनी ही हमारी शक्ति है, ज्यादा नहीं।

* *

हमारा तो अपना कोई स्थान नहीं है। घूमता था तो लोग पूछते कि आप कहां के हैं? मैं पूछता था, ब्रह्मपुत्र नदी कहां की है? वह तिब्बत की भी है, पाकिस्तान (बंगलादेश) की भी है और भारत की भी। वैसे ही बाबा भी सब जगह का है।

* *

चर्चा करते समय अगर विनोबा को गुस्सा आया तो समझिए कि उतने समय के लिए विनोबा मरा हुआ था। जिंदा विनोबा गुस्सा नहीं करेगा।

* *

इंदौर में हमने कुल मिलाकर 125 से ज्यादा व्याख्यान दिये। बचपन से आज तक बोलता ही रहा हूं। इस तरह जो मनुष्य सतत बोलता रहता है, उसके मन में पूर्ण सद्भावना होने पर भी उसके मुंह से ऐसे कई शब्द निकल सकते हैं, जिनका किसी को सदमा पहुंचे। उसके लिए मैं उन सबकी क्षमा मांग लेता हूं, जिनके दिलों को मेरे शब्द चुभे होंगे। उन्हें क्षमा करनी ही चाहिए; क्योंकि वे सोचेंगे, तो उन्हें पता चलेगा कि इसने जो कहा है, उसमें इसका कोई निजी स्वार्थ या द्वेष नहीं है, उसने प्रेम से ही कहा है। साधारणतः मेरे शब्दों पर मेरा काबू रहता है। मुझे शब्दों का ज्ञान भी पर्याप्त है। मैं शब्दशास्त्र अच्छी तरह जानता हूं। बावजूद इसके मेरे शब्दों से किसी को ठेस पहुंची होगी, इसलिए मैं यहां पर सबकी क्षमा मांगना उचित समझता हूं।

* *

स्वयं बाबा को हृदय-परिवर्तन की और हृदयशुद्धि की जरूरत है। दूसरे को देखने के पहले बाबा अपने हृदय को देखता है। बारह साल में बाबा का हृदय-परिवर्तन हुआ है या नहीं, अपने दोषों का दर्शन हुआ है या नहीं, वे दोष कम हुए हैं या नहीं, ये सब बाबा परखता है। बाबा के जीवन में अपना हृदय-शोधन काफी हुआ है। परमात्मा की कृपा से हुआ। यह किसने किया? डाकुओं ने किया और दाताओं ने, जिन्होंने अपनी जमीन श्रद्धापूर्वक बाबा को अर्पण की।

* *

का जीवन स्वीकार करने में मुझे कोई तकलीफ नहीं हुई। लोग इसे संन्यास कहते हैं, लेकिन मेरे लिए तो वह शुद्ध आनंद है। मुझे तो लगता है संसारी-लोग तपस्या कर रहे हैं। वे उसे सुख-आनंद मानते हैं, पर वह असल में तपस्या है।

* *

हमारी इस 66 साल की उम्र में हम ईश्वर से यह नहीं कह सकते कि तूने हमें दुःख का दर्शन कराया। सर्वत्र सुख-ही-सुख हमने पाया। जितना प्रेम हमने पाया, उसका एक अंशमात्र भी हम नहीं चुका सके हैं। प्राचीनों से, अर्वाचीनों से, दूरवालों से, नजदीकवालों से हमें जो मिला उसका वर्णन हम नहीं कर सकते। हमें जो मिला, वह इतना अधिक मिला है कि हम कुछ दे रहे हैं, ऋण चुका रहे हैं ऐसा भास भी हमें नहीं होता। इसलिए लोगों को नमस्कार करने के सिवा दूसरा कोई उपाय नहीं है। सबको हम भक्तिभाव से प्रणाम करते हैं।

●

परिशिष्ट

1. प्रमुख घटनाएं 417
2. एकत्रित अनुक्रम 435
3. एकत्रित वचन-सूचि 449
4. पदयात्रा पड़ाव-सूचि 519
5. खंड एक की

विनोबाजी के जीवन की प्रमुख घटनाएं

1895 सितंबर 11 : गागोदा (महाराष्ट्र) में **जन्म** : नौ साल की उम्र तक दादा-दादी की संस्कार-छाया में

1900 जून 18 : छोटे भाई बालकोबाजी का जन्म

1903 : आठ साल की उम्र में ज्ञानेश्वरी का प्रथम संपर्क

- अगस्त 16 : छोटे बंधु शिवाजी का जन्म

1905 : बड़ौदा (गुजरात) : विद्याभ्यास : दस साल की उम्र में **ब्रह्मचर्य का निश्चय** और राष्ट्रसेवा का संकल्प

1913 : मैट्रिक पास

1914 : विद्यार्थी-मंडल (साथियों के समूह) की स्थापना

1915 : माता द्वारा गीता का सुलभ मराठी पद्यानुवाद कर देने की मांग

1916 मार्च 25 : अथातो ब्रह्मजिज्ञासा : दो साथियों के साथ **गृहत्याग** : काशी में दुर्गाघाट पर श्री खुर्देकर के मकान की तीसरी मंजिल पर लगभग तीन महीने निवास : अध्ययन-अध्यापन : क्रांतिकारियों से संपर्क और उनके खोखलेपन की पहचान : एक साथी की मृत्यु, उसका अग्निसंस्कार : गांधीजी के काशी हिंदू विश्व-विद्यालय में हुए क्रांतिकारी भाषण की रिपोर्ट का अवलोकन : गांधीजी के साथ पत्रव्यवहार

- जून 7 : गांधीजी के निमंत्रण पर कोचरब **आश्रम में प्रवेश** : बाद में कोचरब आश्रम का साबरमती में स्थानांतर

1917-18 : गांधीजी से एक साल की छुट्टी : वाई (महाराष्ट्र) की प्राज्ञ पाठशाला के प्रमुख आचार्य श्री नारायणशास्त्री मराठे के मार्गदर्शन में दर्शन-ग्रंथों का अध्ययन : गीता पर प्रवचन करते हुए दक्षिण महाराष्ट्र का भ्रमण

1917 मार्च 6 : लोकमान्य तिलक से प्रथम भेंट

1918 अक्तूबर 24 : आश्विन कृष्ण चतुर्थी के दिन, 42 साल की उम्र में माता रुक्मिणीदेवी की मृत्यु : उसी दिन से **वेदाध्ययन का आरंभ**

1921 अप्रैल 8 : श्री जमनालालजी बजाज के आग्रह पर, गांधीजी के आदेश से चार

1923 जनवरी से अप्रैल : 'महाराष्ट्र-धर्म' मासिक में उपनिषदों पर लेखमाला (बाद में 'उपनिषदों का अभ्यास' नाम से पुस्तकरूप में प्रकाशित)

- अप्रैल 13 : भारत के प्रथम व्यापक (नागपुर झंडा) सत्याग्रह का संचालन : प्रथम बार चार माह का कारावास

1924 फरवरी 12 : सत्याग्रह आश्रम का (अभी के महिलाश्रम में) स्थानांतर

- जून 18 से 15 अप्रैल 1927 : 'महाराष्ट्र-धर्म' साप्ताहिक में संत तुकाराम के अभंगों पर लेखमाला (1945 में 'संतांचा प्रसाद' नाम से पुस्तकरूप में प्रकाशित)
- आश्रम में कताई-बुनाई के वैज्ञानिक प्रयोग और संशोधनकार्य : जातीय एकता के लिए गांधीजी के 21 दिन के उपवास के समय दिल्ली में गांधीजी के साथ

1925 : गांधीजी के आदेशानुसार वायकम् (केरल)-मंदिर-हरिजन-प्रवेश सत्याग्रह का निरीक्षण : पंडितों से चर्चा और सत्याग्रह के तरीकों में सुझाव : वायकम् से लौटते समय मद्रास में डॉ. एनी बेसेंट की थिऑसॉफिकल सोसायटी में अंग्रेजी में प्रवचन

1926 जून : 'दो आने आहार योजना' का प्रयोग : वर्धा में जमनालालजी द्वारा स्थापित हायस्कूल की जगह राष्ट्रीय विद्या-मंदिर की स्थापना, बचपन के साथियों के द्वारा उसका संचालन

1928 जुलाई 16 : वर्धा में कन्याशाला का आरंभ

- जुलाई 19 : लक्ष्मीनारायण मंदिर (वर्धा) हरिजनों के लिए खुला
- दिसंबर 7 से 13 मार्च 1931 : सायं-प्रार्थना के बाद मौन का आरंभ : 'विचार-पोथी' लेखनकार्य

1930 अक्तूबर 7 से 6 फरवरी 1931 : महिलाश्रम (वर्धा) में गीता के मराठी पद्यानुवाद **गीताई की रचना**

1931-32 : वर्धा जिले में मंदिर और कुएं हरिजनों के लिए खुले करने के लिए प्रचार

1932 जनवरी 7 से 14 जुलाई : धुलिया जेल (महाराष्ट्र) में निवास : गीताई का प्रथम संस्करण प्रकाशित

- फरवरी 21 से 19 जून : धुलिया जेल में, हर रविवार को गीता पर प्रवचन – साने गुरुजी द्वारा प्रवचन लिपिबद्ध : **गीता-प्रवचन** नाम से प्रसिद्ध
- अगस्त 7 : ग्रामाधारित विकेंद्रित आश्रम-केंद्र योजना का प्रारंभ; वर्धा की एक तहसील में 14 केंद्र बनाकर आश्रमवासियों के द्वारा ग्राम-रचना और प्रचार-कार्य

- दिसंबर 25 : वर्धा से दो मील दूरी पर **नालवाड़ी की हरिजन बस्ती में** निवास प्रारंभ : एकादश व्रत-माला की रचना

1933 जुलाई 26 : साबरमती आश्रम विसर्जित

- सितंबर 26 : गांधीजी का वर्धा में आगमन और स्थायी तौर पर निवास : प्रारंभ में सत्याग्रह आश्रम में निवास फिर सेवाग्राम

1934 मई 6 : वर्धा जिले में आश्रम की ओर से चलनेवाले विविध कार्यों और प्रवृत्तियों को संगठित रूप देने की दृष्टि से 'ग्राम-सेवा-मंडल' की स्थापना

- जून 16 : अखिल भारत हरिजनयात्रा से, गांधीजी की गीता के साप्ताहिक पाठ की योजना की मांग पर, जवाब में पत्र द्वारा 'गीताध्याय-संगति' का लेखन

1935 अप्रैल 1 : देवली (वर्धा) में प्रथम खादीयात्रा का आयोजन

- जून 7 : मजदूरी के क्षेत्र में प्रयोग : कताई के द्वारा न्यूनतम आवश्यक मजदूरी प्राप्त करने की दृष्टि से, लगभग एक साल रोज 16 लटी सूत कातने का प्रयोग : हैदराबाद से आश्रम में आये हुए मुस्लिम लड़के को सिखाने के निमित्त से कुरानशरीफ का अध्ययन आरंभ

- जुलाई 1 : आश्रम-कार्यकर्ता द्वारा नालवाड़ी (वर्धा) में चर्मालय का प्रारंभ

1936 मई 18 : वर्धा में महारोगी-सेवा मंडल (दत्तपुर) की स्थापना को प्रेरणा; कुष्ठ सेवा-क्षेत्र में प्रथम भारतीय संस्था का पदार्पण

- जून 16 : गांधीजी का सेवाग्राम में स्थायी तौर पर निवास प्रारंभ

1938 मार्च 7 : गांधीजी के आदेशानुसार स्वास्थ्य-सुधार के लिए **पवनार आगमन।** 'संन्यस्तं मया' का त्रिवार उच्चारण। विचार-शून्यता, अकर्म-स्थिति का अनुभव : स्वास्थ्य में आश्चर्यकारक सुधार : पवनार में स्थायी निवास : जमीन खोदते समय (1932 में गीता पर प्रवचन करते हुए वर्णित भरत-राम-भेंट के कल्पित चित्र के अनुरूप) **भरत-राम-मूर्ति की प्रसाद-लब्धि**

1940 अक्तूबर 17 से 3 दिसंबर 1941 : व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए गांधीजी द्वारा **प्रथम सत्याग्रही** घोषित : सत्याग्रही के रूप में पवनार में प्रथम भाषण : तीन बार सत्याग्रह, तीन बार सजा – क्रमशः तीन माह, छह माह, एक साल : नागपुर जेल – गुनाहखाना नं. 1 में निवास : वहीं महाराष्ट्र के संत ज्ञानेश्वर, एकनाथ, नामदेव के भजनों का चयन : गांधीजी की 'मंगल-प्रभात' पुस्तक के आधार पर पंचव्रतों का 'अभंग व्रतें' नाम से मराठी पद्यानुवाद : 'स्वराज्य-शास्त्र' पुस्तक की रचना

1941 जनवरी 17 : सेवाग्राम में युद्धविरोधी भाषण

1942 अगस्त 9 से 9 जुलाई 1945 : जेल-निवास। वर्धा जेल – आंदोलन शुरू होने से पूर्व गांधीजी से हुई चर्चा के अनुसार, जेल में प्रवेश करते ही उपवास आरंभ : यरवड़ा से गांधीजी द्वारा उपवास की कल्पना स्थगित होने का संदेश, तदनुसार एक दिन के बाद उपवास-समाप्ति : नागपुर जेल – वेलोर (तमिलनाड) जेल – गांधीजी से हुई पुरानी बातचीत के अनुसार, गांधीजी के 21 दिन के उपवास के साथ (जानकारी एक दिन देरी से मिलने के कारण) 20 दिन का उपवास (11.2 से 3.3.1943) : सहयोगी बंदियों के सामने गीता पर प्रवचन : **दक्षिण की चारों भाषाओं का** लिपियों के साथ **अध्ययन** : संशोधित लिपि – **लोकनागरी की खोज** : सिवनी जेल (म.प्र.)– गांधीजी की आज्ञा के अनुसार ईशावास्योपनिषद पर लिखी हुई पुरानी टिप्पणी का विवेचनात्मक भाष्य में रूपांतर–'ईशावास्यवृत्ति' का लेखन : ईशावास्योपनिषद का मराठी अनुवाद : साथियों के सामने गीता के स्थितप्रज्ञ के श्लोकों पर मराठी में विवेचनात्मक प्रवचन (बाद में **स्थितप्रज्ञ-दर्शन** नाम से पुस्तकरूप में प्रकाशित) : 9 जुलाई सिवनी जेल से मुक्ति

1945 जुलाई : सिवनी जेल-मुक्ति के बाद गोपुरी (वर्धा) में निवास : परंधाम आश्रम की सरकारी जब्ती उठने के बाद पवनार आगमन : प्रातःकालीन प्रार्थना में ईशावास्य के मराठी अनुवाद का समावेश : पत्रव्यवहार आदि के लिए लोकनागरी लिपि का आरंभ

- नवंबर 21 से 20 मई, 1946 : 'गीताई-शब्दार्थ-कोश' की रचना

1946 अप्रैल 2 : पवनार से तीन मील दूर सुरगांव में प्रतिदिन सुबह **भंगी-कार्य** आरंभ, सूर्यसी नियमितता से बारिश में भी 20 माह सतत जारी

1946-47 : पवनार : ज्ञानदेव के भजनों पर चिंतनिका-लेखन–समाधिवत् अवस्थामें : चैत्र शुद्ध प्रतिपदा 1947 को पवनार, आश्रम में भरत-राम प्रतिमा की प्रतिष्ठापना

1947 अक्तूबर 29 : शरदपूर्णिमा (आश्विन शुद्ध) के दिन धुलिया में पिताजी का देहांत : 'गीताई अधिकरण-माला' (गीता के 60 विभागों के नामों की पद्य-रचना) का प्रथम बार प्रकट पाठ : पिताजी की अस्थियां भूमि में ही विसर्जित

1948 जनवरी 15 : लोकनागरी लिपि में 'सेवक' मासिक का प्रकाशन

- जनवरी 30 : गांधीजी का बलिदान
- जनवरी 31 से 12 फरवरी गांधीजी को श्रद्धांजलि : वर्धा, सेवाग्राम, गोपुरी में 13 दिन प्रवचन
- फरवरी 12 : पवनार की धाम नदी में गांधीजी के अस्थि-विसर्जन-प्रसंग पर

बहुत सारे राष्ट्रनेता तथा सेवक उपस्थित : **सर्वोदय समाज** की कल्पना प्रस्तुत, **सर्व सेवा संघ की स्थापना** : "हर 12 फरवरी को सर्वोदय-यात्रा व **सूत्रांजलि-** समर्पण" का विचार प्रस्तुत

- मार्च 30 : पंडित नेहरू के निमंत्रण पर निर्वासितों के पुनर्वसन व शांतिकार्य के लिए दिल्ली प्रस्थान : दिल्ली, पंजाब, राजस्थान में मेवों के पुनर्वसन का कार्य, करीब छह माह तक : अजमेर दर्गाहशरीफ में सामूहिक सर्वधर्म-प्रार्थना
- दिसंबर 14 : जयपुर कांग्रेस में खादी प्रदर्शनी का उद्घाटन
- दिसंबर 26 से 14 जनवरी 1949 : धुलिया (महाराष्ट्र) गांधी तत्त्वज्ञान मंदिर में निवास : प्रतिदिन सायं-प्रवचन में सर्वोदय विचार का विवरण

1949 मार्च : राऊ (इंदौर) सर्वोदय सम्मेलन में : पंडित नेहरू के अनुरोध पर हैदराबाद रियासत का प्रवास

- अप्रैल 13–20 : वेडछी (गुजरात) : स्वराज्य आश्रम में आश्रम-जीवन संबंधी प्रवचन-माला : केरल और दिल्ली का प्रवास
- जुलाई 9 : हिंदूधर्म की व्याख्या – 'हिंसया दूयते चित्तम्'
- अगस्त 15 : 'सर्वोदय' मासिक का आरंभ तथा संपादन
- अगस्त 18 : एक सप्ताह उरुलीकांचन के निसर्गोपचार आश्रम में निवास
- अगस्त 28–30 : मशहूर सिंधी कवि श्री दुखायलजी के अनुरोध पर कल्याण के सिंधी कैंप में
- अगस्त 31 : बंबई : जिना हॉल में कांग्रेस कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन
- नवंबर 1 : डिओडिनल अल्सर का डॉक्टरों द्वारा निदान
- दिसंबर 15 : सेवाग्राम : जागतिक शांति परिषद का उद्घाटन – "अहिंसा को अणुबम का भय नहीं है, भय है छोटे (कन्वेन्शनल) शस्त्रों का।"

1950 जनवरी 1 : पवनार के परंधाम आश्रम में साथियों के साथ **कांचनमुक्ति-प्रयोग** तथा **ऋषि-खेती** का आरंभ – "प्रचलित अर्थ-व्यवस्था को तोड़े बिना संभाव्य क्रांति नहीं होगी।"

- मार्च : गांधीजी की 'रामनाम' (संबंधित विचार की) पुस्तक के परीक्षणार्थ सर्वोदय पत्रिका में 'रामनाम – एक चिंतन' का लेखन-प्रकाशन

1951 फरवरी 27 से मार्च 6 : सेवाग्राम में नयी तालीम सम्मेलन के निमित्त निवास

- मार्च 6 : सेवाग्राम : सर्व सेवा संघ की बैठक : शिवरामपल्ली सर्वोदय सम्मेलन के लिए पैदल शिवरामपल्ली जाने का संकल्प घोषित
- मार्च 7 : सेवाग्राम से सर्वोदय-यात्रा का शुभारंभ : प्रथम पड़ाव पवनार –

श्रमः शांतिः समर्पणम्' – पंचविध कार्यक्रम प्रस्तुत : सम्मेलन-मंच से – ''स्वराज्य के बाद जो काम करना है, वह बहुत गहरा और कठिन है। समाज की बुनियाद के मजबूती का काम करना है। सामाजिक और आर्थिक क्रांति का काम हाथ में लेना है। हमारी सेवा आत्म-विचार की सेविका हो।''

- अप्रैल 15 : रामनवमी को अशांतिशमनार्थ तेलंगाना की पदयात्रा का आरंभ
- अप्रैल 18 : पोचमपल्ली : श्री रामचंद्र रेड्डी द्वारा सौ एकड़ का **प्रथम भू-दान**
- अप्रैल 19 से : भूदान-यात्रा का शुभारंभ : लगभग सवा दो माह में 12,000 एकड़ भूमिदान की प्राप्ति
- जून 27 : पवनार आगमन : 'एकनाथांचीं भजनें' पुस्तक के प्रस्तावना-खंड का लेखन
- अगस्त 10 : परंधाम आश्रम में योजना आयोग के सदस्य श्री रा. कृ. पाटील से चर्चा, प्रथम पंचवर्षीय योजना के बारे में
- सितंबर 12 : पंडित नेहरू के निमंत्रण पर योजना आयोग के साथ प्रथम पंच-वर्षीय योजना के बारे में चर्चा करने दिल्ली के लिए पैदल प्रस्थान : नयी अहिंसक क्रांति की ओर देश-विदेश का ध्यान आकृष्ट : प्रेम से मांगने पर प्रेम से जमीन मिल सकती है, इस निष्ठा का निर्माण
- सितंबर 30 : जीवन-मंत्र-श्लोक की रचना –

  वेद-वेदांत-गीतानां विनुना सार उद्धृतः
  ब्रह्म सत्यं, जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्य-शोधनम्

- अक्तूबर 2 : सागर (म.प्र.), भारत की कुल उपजाऊ जमीन के छठे हिस्से – पांच करोड़ एकड़ उपजाऊ जमीन की मांग
- नवंबर 1,2 : मथुरा में उत्तरप्रदेश के कार्यकर्ताओं का सम्मेलन
- नवंबर 13–23 : राजघाट, दिल्ली : दिल्ली तक यात्रा में 18 हजार एकड़ भूमि की प्राप्ति। योजना आयोग के साथ चर्चा – अन्नं बहु कुर्वीत तद् व्रतम् : सरदार वल्लभभाई के ''हमें 'वॉर पोटेंशिअल' (युद्धसहायक शक्तिशाली) उद्योगों की जरूरत है'' व्याख्यान के जवाब में ''भारत को 'पीस पोटेंशिअल' (शांतिसहायक शक्तिशाली) उद्योगों की आवश्यकता है – ग्रामोद्योगों की जरूरत है।''

1951 नवंबर 24 : **उत्तरप्रदेश पदयात्रा आरंभ**

1952 जनवरी 19 : बदायूं, देहरादून की पर्वतमाला की यात्रा में कालीकमलीवालों ने

- अप्रैल 12–19 : सेवापुरी सर्वोदय सम्मेलन : कुल एक लाख एकड़ भूदान-प्राप्ति की घोषणा : सर्व सेवा संघ का दो साल में 25 लाख एकड़ जमीन प्राप्त करने का संकल्प
- मई 8 : लखनऊ : बुद्ध-पूर्णिमा – "भगवान बुद्ध ने बोया हुआ बीज अंकुरित हो रहा है, भूमि की समस्या शांति से हल करने का प्रयास है, यह धर्मचक्र-प्रवर्तन का कार्य है।"
- मई 23 : मंगरोठ (उत्तरप्रदेश) भारत का **प्रथम ग्रामदान** घोषित
- जुलाई 4 से सितंबर 11 : काशी : चातुर्मास का निवास और स्वच्छ-काशी आंदोलन
- सितंबर 12 : **बिहार-प्रवेश :** व्यापक भूमिदान
- अक्तूबर 23 : पटना : **संपत्तिदान-**विचार की घोषणा – गांधीजी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत का व्यापक रूप
- दिसंबर 12 से 12 मार्च 1953 : चांडिल (सिंहभूम, बिहार) : रुग्णावस्था : महाराष्ट्र के संत समर्थ रामदासस्वामी के 'दासबोध' ग्रंथ का चयन और 'मनाचे श्लोक' का सटीप वर्गीकरण : 'धम्मपद' की पुनर्रचना : शंकराचार्य के प्रकरणग्रंथों का चयन : सर्वोदय सम्मेलन में हिंसा-विरोधी और दंड-निरपेक्ष **तीसरी शक्ति** की घोषणा

1953 सितंबर 19 : वैद्यनाथधाम (संथाल परगना,बिहार) का प्रसाद – मंदिर में हरिजनों के साथ प्रवेश करने पर पंडों के द्वारा प्रहार

1954 अप्रैल 12–25 : बोधगया : सर्वोदय सम्मेलन में 25 लाख एकड़ भूदान-प्राप्ति के संकल्प-पूर्ति की घोषणा
- अप्रैल 18 : बोधगया में **समन्वय आश्रम** की स्थापना
- अप्रैल 20 : जयप्रकाशजी के आवाहन पर भूदानमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक क्रांति के लिए **जीवन-समर्पण**
- दिसंबर 31 : सवा दो साल की बिहार यात्रा में 23 लाख एकड़ भूदान प्राप्त

1955 जनवरी 1 से 25 : **बंगाल-यात्रा :** प्रेमयात्रा : 25 दिन की यात्रा में कार्यकर्ताओं के साथ अंतरंग-चर्चा ('कार्यकर्ता-पाथेय' नाम से पुस्तकरूप में प्रकाशित)
- जनवरी 10 : विष्णुपुर (बंगाल) : श्रीरामकृष्ण परमहंस का समाधि-स्थान : **सामूहिक समाधि** का नया दर्शन
- जनवरी 26 : **उड़ीसा-प्रवेश :** भूमिक्रांति : भूदान का अगला कदम – ग्रामदान का व्यापक प्रचार और लब्धि

- मार्च 25–27 : जगन्नाथपुरी सर्वोदय सम्मेलन : भूदान-क्रांति का आवाहन – ''हर भूदान-पत्र विश्वशांति के लिए वोट है'' : ''सत्याग्रह यानी सौम्य-सौम्यतर-सौम्यतम पद्धति'' का विवेचन
- अप्रैल 7–12 : ब्रह्मपुर (उड़ीसा) : अ.भा. कांग्रेस कमिटी की विशेष बैठक के सामने, ''आक्रमणकारी अहिंसा की आवश्यकता, युनिलॅटरल डिस्-आर्मामेंट (एक तरफा शस्त्र-मुक्ति) से शस्त्र-स्पर्धा के दुष्टचक्र का भेद संभव'' का विचार प्रस्तुत
- जून-जुलाई : भागवत के एकादश स्कंध का चयन – ('भागवत-धर्म-सार' के नाम से प्रकाशित)
- अगस्त 31 : डांगसुरुडा (कोरापुट, उड़ीसा) : निबिड़ जंगल में प्राप्त प्रेरणा के अनुसार **साम्यसूत्र** की रचना पूर्ण
- अक्तूबर 1 : **आंध्र-प्रवेश** : ''आरंभ से ही सत्ता के विकेंद्रीकरण से, राज्यविलयन संभव'' का विचार प्रस्तुत : सामूहिक प्रार्थना की नयी पद्धति, मौन प्रार्थना – सामूहिक ध्यान का आरंभ – ''भगवान का जो नाम जिसे प्यारा हो, और जिस नाम की जिसे आदत हो, वह नाम अपने मन में लें और भगवान से प्रार्थना करें कि वह हमें सत्य दे, प्रेम दे, करुणा दे – सत्य, प्रेम, करुणा, यही भगवान से प्रार्थना।''
- नवंबर 20 : अमलापुरम् (आंध्र) : दान-न्यास-मीमांसा – ''दान यानी सम्यक् विभाजन, न्यास यानी विकेंद्रीकरण।''

1956 जनवरी 30 : पोचमपल्ली (तेलंगाना) – भूदानगंगा की गंगोत्री में पुनरागमन : ''छठा हिस्सा भूमि मिले, तो शांतिमय क्रांति : क्रांति का इससे सस्ता सौदा क्या हो सकता है? आत्मज्ञान और विज्ञान के योग से ही भारत सफल होगा।'' का संदेश

- मार्च 24 : अडोनी (आंध्र) : व्यापारियों को आवाहन – ''व्यापारियो, आओ! धर्मनिष्ठा आपमें है। शास्त्रकारों ने आपमें विश्वास और निष्ठा रखी है। जो गुण आपको हासिल हैं, उनका उपयोग कर देश और दुनिया को बचाओ। आप प्रजा के सेवक बनो। हमारे देश के व्यापारी वैश्यधर्म को पहचानते हैं, व्यवस्थाबुद्धि और करुणाबुद्धि सबकी सेवा में लगाते हैं, तो हमारे देश की सरकार अत्यंत निर्भय बनेगी।''
- मई 13 : **तमिलनाड-प्रवेश** : गांव-गांव में भव्य मंदिर : ''मंदिर-संस्कृति ग्रामस्वराज्य की बुनियाद। प्रथम, दक्षिण के आचार्यों का भारत पर असर था

- मई 26 से 3 जून 1956 : कांचीपुरम् (तमिलनाड) सर्वोदय सम्मेलन : ''सर्वोदय का आधार ब्रह्मविद्या। विज्ञानयुग में अतिमानस भूमिका अपरिहार्य है। व्यक्तिगत नेतृत्व के स्थान पर गणसेवकत्व का उदय हो रहा है।'' : संकल्प-शक्ति बढ़ाने के लिए तीन दिन का उपवास
- जुलाई 9 पांडिचेरी : अरविंद आश्रम : माताजी के आशीर्वाद – ''यू लिव फॉर डिवाईन, वर्क फॉर डिवाईन, अॅस्पेअर फॉर डिवाईन (आप दिव्यता के लिए जीते हैं, दिव्यता के लिए काम करते हैं, दिव्यता के लिए उत्कंठित हैं)।''
- जुलाई 10 से 2.11.56 : तमिलनाड : रोज दो पड़ाव
- नवंबर 16–22 : पलनी (तमिलनाड) : ''जनआंदोलन के लिए **निधिमुक्ति** व **तंत्रमुक्ति** आवश्यक'' – सर्व सेवा संघ का क्रांतिकारी निर्णय

1957 अप्रैल 15 : कन्याकुमारी : ग्रामस्वराज्य की प्रतिज्ञा और संकल्प

- अप्रैल 18 : **केरल-प्रवेश** : ''इस प्रेमराज्य के राजा ईसा मसीह और शंकर। ईसा मसीह ने कहा था, पड़ोसी पर वैसा ही प्यार करो, जैसा अपने पर करते हो। शंकराचार्य एक कदम आगे बढ़े। अभेद की बात समझाते हुए कहते हैं – कस्य स्विद् धनम् – धन किसका है, मालिकी किसकी है?''
- मई 3 : कल्लरा : ख्रिश्चन चर्चेस के बिशपों का एकसाथ मिलन : उनको संबोधन – ''व्यक्तिगत स्वामित्व पवित्र वस्तु है, लेकिन स्वेच्छा से स्वामित्व-विसर्जन पवित्रतम है।''
- मई 4 : वायकम् (केरल) पुनरागमन – ''सत्याग्रहनिष्ठ जीवन की तालीम जनता को मिलनी चाहिए।''
- मई 8–13 : कालड़ी सर्वोदय सम्मेलन – ''साम्यवाद की गंगा और समाजवाद की यमुना सर्वोदय सागर में विलीन होंगी'' : 'गुरुबोध' (शंकराचार्य के प्रकरण ग्रंथों के चयन) का प्रकाशन
- जुलाई 11 : कोझिक्कोड़ (केरल) : **शांतिसेना** की घोषणा – ''हिंसाशक्ति ऊपर न उठे, इसके लिए शांतिसेना खड़ी की जाये । शांति-सैनिक सामान्य समय में समाजसेवा, ग्रामदान-प्राप्ति का काम करेंगे और विशिष्ट मौके पर शांति स्थापना के लिए अपना सिर समर्पण करने की तैयारी रखेंगे।''
- अगस्त 23 : मंजेश्वरम् (केरल) : शांतिसेना की स्थापना
- अगस्त 24 : **कर्नाटक-प्रवेश**
- सितंबर 21-22 : येलवाल (कर्नाटक) : सर्वपक्षीय ग्रामदान परिषद – ''ग्रामदान 'डिफेन्स मेजर' (संरक्षण का साधन)'' : सर्वपक्षीय राष्ट्रनेताओं की ओर से

- अक्तूबर 15–19 : बेंगलूर : **विश्वनीडम्** आश्रम की परिकल्पना – यत्र विश्वं भवति एक नीडम्
- नवंबर 1 : कडबा, तुमकूर (कर्नाटक) : **जय जगत्** : संयुक्त कर्नाटक के प्रथम वर्षदिन पर नये मंत्र का प्रथम उद्घोष

1958 जनवरी 7 : हंसभावि : देशभर के वरिष्ठ शिक्षा-अधिकारियों के सेमिनार का उद्घाटन – ''आज शिक्षा के नाम पर केवल 'इन्फरमेशन सप्लाई' (जानकारी-वितरण) होता है। शिक्षा का दावा होना चाहिए कि देश की रक्षा अहिंसाशक्ति से कर सकते हैं। ज्ञानरूपी शस्त्र के सामने सब शस्त्र निकम्मे हैं।''

- फरवरी 1 : धारवाड़ : **सर्वोदय-पात्र** की घोषणा
- मार्च 23 : **महाराष्ट्र-प्रवेश** : ''ज्ञानोबा माउली के चरणों में आया हूं। खुला होकर आया हूं। निरुपाधिक होकर आया हूं। मेरे पास विचार है और प्रेम है। विचार सदा सर्वदा खुला रहता है। उसको बंधन नहीं हो सकता।''
- मई 28 से 3 जून : पंढरपुर : 63 साल की उम्र में, प्रथम बार आगमन – ''मानवजाति के उद्धार के लिए आध्यात्मिक विद्या का आदितीर्थ'' : सर्वोदय सम्मेलन – ''विज्ञान का योग अहिंसा के साथ करना, यही सर्वोदय का काम है। उसकी प्रयोगशाला बड़े-बड़े शहरों में नहीं, देहातों के घर-घर में होनी चाहिए। पहले जमाने में साम्ययोग शिखर था, अब वह नींव बना है। उसके आधार पर जीवन बनाना है। विज्ञानयुग की यह मांग है।''
- मई 29 : **पंढरपुर** के विश्वप्रसिद्ध विठोबा मंदिर में सर्वधर्मियों के साथ प्रवेश : अ.भा. शांतिसेना समिति की स्थापना

1958 अगस्त : महाराष्ट्र : कृष्णजन्माष्टमी : गीताई के अंतिम श्लोक पर टिप्पणी लिखकर 'गीताई-चिंतनिका' का लेखन समाप्त

- अगस्त 14 : धुलिया (महाराष्ट्र) : जेल में गीता-प्रवचन के स्थान का दर्शन – ''प्रवचन भगवान ने ही मुझसे कहलवाये।''
- अगस्त 16 : भांबुरवाड़ी (महाराष्ट्र) : जीवनतंत्र-श्लोकरचना –

वेदांतो विज्ञानं विश्वासश्चेति शक्तयस् तिस्रः
यासां स्थैर्ये नित्यं शांति-समृद्धी भविष्यतो जगति

- सितंबर 19 : जवापुर (महाराष्ट्र) : भारत का पहला (धुलिया जिले के अक्राणी महाल और अक्कलकुआ) **प्रखंडदान**
- सितंबर 22 : **गुजरात-प्रवेश** : सोनगढ़ : ''भगवान की अपार दया थी कि मेरा हृदय और मेरा जीवन गांधीजी के चरणों में स्थिर रहा। 'गुरुमुखी' –

- सितंबर 27 : बारडोली (गुजरात) " गुजरात का हृदय वैष्णव और बुद्धि व्यावहारिक। दोनों का योग होता है, वहां योगेश्वर कृष्ण और धनुर्धर अर्जुन एकत्र रहते हैं। तो श्री, विजय, भूति मिलती ही है।" "ग्रामदान यानी अभयदान।"
- अक्तूबर 28 : सोखड़ा (गुजरात) में वेद-सम्मेलन
- अक्तूबर 29 : बड़ौदा : करीब 40 साल से कार्यवश, विचारवश, स्नेहवश साथ रहे हुए मित्रों (पुराने विद्यार्थी-मंडल) का मिलन – "मैत्री का रिश्ता सर्वश्रेष्ठ है। दास्यभक्ति का युग बीत गया, सख्यभक्ति का युग आया है।"
- नवंबर 8 : भावनगर : "विज्ञान युग में आज पॉलिटिक्स 'आऊट ऑफ डेट' (कालबाह्य) है। उसे जो पकड़े रखेगा, वह मार खायेगा और हार खायेगा।"
- नवंबर 28 : बोरसद (गुजरात) : "सत्याग्रह नैमित्तिक कार्यक्रम नहीं, प्रतिक्षण की प्रक्रिया है। सत्याग्रह में हार-जीत का सौदा नहीं, उसमें दोनों पक्षों की विजय है। विचारनिष्ठा ही सत्याग्रह का प्राणतत्त्व है।"
- दिसंबर 21 : साबरमती – हरिजन आश्रम – "यह गांव बन गया है, गांव के मसले यहां भी हैं, ग्रामदान हो जाता है तो सभी मसले हल हो जायेंगे।"

1959 जनवरी 15 : **राजस्थान-प्रवेश**

- फरवरी 27 से 1 मार्च 1959 : अजमेर सर्वोदय सम्मेलन
- मार्च 1 : अजमेर दर्गाहशरीफ में महिलाओं के साथ प्रवेश और सर्वधर्म-प्रार्थना
- मार्च 2 : गगवाना (राजस्थान) : शांतिसेना की प्रथम रैली
- मार्च 13 : काशीकाबास (राजस्थान) : स्व. जमनालालजी बजाज के जन्म-स्थान में **ब्रह्मविद्या-मंदिर** के स्थापना की घोषणा
- अप्रैल 1 : **पंजाब-प्रवेश** : 'बिसर गयी सब तात पराई' – "हमें निर्भय, निर्वैर और निष्पक्ष बनना है।"
- मई 22 : बुद्ध-जयंती : **जम्मू-कश्मीर-प्रवेश** : "यहां अल्ला और लल्ला का साम्राज्य है। मोहब्बत का पैगाम देने आया हूं।"
- मई 24 से जून 23 : जम्मू क्षेत्र : सिक्खों का धर्मग्रंथ 'जपुजी' का सामूहिक पाठ : उस पर विवरणात्मक प्रवचन : कुरान का सामूहिक पाठ
- जून 9-10 : जम्मू : "मसले हमने बनाये हैं, परमेश्वर के बनाये नहीं हैं। अगर हम ठीक ढंग से पेश आते हैं, तो मसले काफूर हो जाते हैं। सियासी ढंग कश्मीर को तोड़ेगा। यहां काम करने का तरीका सियासी नहीं, रूहानी हो।"
- जून 10 : श्री शेख अब्दुल्ला से जम्मू जेल में मुलाकात
- जुलाई 11 : पीर-पंजाल की साढ़े तेरह हजार फीट की [illegible] ऊंचाई पर

जो सबसे ज्यादा जरूरतमंद है, उसे ढूंढ़कर उसको मदद पहुंचाने का काम करना चाहिए। और गुर्बत मिटानी चाहिए। नहीं तो ब्यूटीस्पॉट (सौंदर्य-स्थल) यानी 'डर्टी-स्पॉट' (गंदगीस्थल) बनेंगे।''

- अगस्त 2–6 : श्रीनगर : राजनीति + विज्ञान = सर्वनाश; अध्यात्म + विज्ञान = सर्वोदय। ''मसले राजनीति से हल नहीं होंगे। अध्यात्म से हल होंगे। विज्ञान के युग में राजनीति और धर्मपंथों के दिन लद गये। मजहब, कौम, जबान, वगैरह सब तरह के भेद मिटाकर हम अपने दिल को व्यापक बनायेंगे, तभी कश्मीर और हिंदुस्तान की ताकत बनेगी।''
- सितंबर 21 : पंजाब में पुनरागमन
- सितंबर 23 : पठानकोट : **प्रस्थान आश्रम** की परिकल्पना
- अक्तूबर, 11-12 : अमृतसर : ''पक्षों के जूते गुरुद्वारा में न आयें।'' ''भाकरा नांगल आधुनिक तीर्थक्षेत्र तभी बनेगा, जब हर भूमिवान भूमिहीनों को अपनी छठा हिस्सा भूमि देगा।'' : अखिल भारत साहित्यिकों का सम्मेलन : **अज्ञात-यात्रा**-प्रारंभ। केवल तीन दिन का कार्यक्रम जाहिर
- दिसंबर 16-17 : सिरसा : ''तिब्बत पर हमला हुआ तो भारत ने सावधानी के लिए सीमा पर सेना भेजी। इससे गांधी-विचार खंडित नहीं होता। कोई सिर पर प्रहार करता है। तो सिर के बचाव के लिए हाथ तुरंत आगे आता है। भारत ने सेना रखी है, वह केला खाने के लिए नहीं। सेना रखनी पड़ी है, यही हमारे लिए चुनौती है।''

1960 मई 12 : पिनहट (भिंड, म.प्र.) : **चंबल घाटी-प्रवेश**

- मई 19 : कनेराग्राम (भिंड) : अहिंसा का साक्षात्कार : 19 **बागियों का आत्म-समर्पण** – ''बिगरी जनम अनेककी सुधरत पल लगै न आधु।''
- जुलाई 24 से अगस्त 25 : इंदौर – सर्वोदय नगर अभियान; शून्य समिति की स्थापना : वानप्रस्थ मंडल की स्थापना : अशोभनीय पोस्टरों का विरोध : 'शुचिता से आत्मदर्शन'-प्रवचनमाला
- अगस्त 15 : इंदौर में **विसर्जन आश्रम** की स्थापना
- अगस्त 26 से सितंबर 1 : कस्तूरबाग्राम – मातृस्थान में। सप्त नारी-शक्तियों का विवेचन : ''शांति-रक्षा और शील-रक्षा बहनों का कर्तव्य।''
- सितंबर 30 राऊ (म.प्र.) : पंडित नेहरू का असम जाने के लिए अनुरोध प्राप्त : इंदौर में दुबारा आगमन : असम की दिशा में यात्रा प्रारंभ
- दिसंबर 5-6 : वाराणसी : साधना-केंद्र में निवास : ''बाप के बाह्य राजनीति

में। तुलसीदासजी ने कहा – जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं । अंत राम कहि आवत नाहीं।''

- दिसंबर 25 से 9 फरवरी 1961 : बिहार यात्रा : '**बीघे में कट्ठा,** दान दो इकट्ठा' अभियान

1961 जनवरी 7 : बोधगया : बुद्ध मंदिर के प्रांगण में 'धम्मपद नवसंहिता' का पाठ

- फरवरी 10 से मार्च 4 : उत्तर बंगाल की यात्रा
- मार्च 5 : **असम प्रवेश** : ''ग्रामदान सामूहिक उत्थान का कार्यक्रम; जो खुद स्वामी बनेगा वह अवैष्णव होगा; विष्णु सृष्टि का स्वामी; नाम-संकीर्तन के साथ सहजीवन।''
- अप्रैल 8-9 : गुवाहाटी : महिला लोक-सेवक संघ की कल्पना
- दिसंबर 15 : असम : करीब डेढ़ साल के सतत परिश्रम से 'कुरान-सार' पूर्ण

1962 फरवरी 22 : असम के महापुरुष श्री माधवदेवकृत 'नाम-घोषा' का चयन

- मार्च 5 : लीलाबारी (असम) : **मैत्री आश्रम** की स्थापना
- जुलाई 31 : गोविंदपुर (असम) : ''घुसपैठ रोकने के लिए ग्रामदान आवश्यक। सीमा-क्षेत्र तुरंत ग्रामदानी क्षेत्र हो।''
- सितंबर 5 : **पूर्व पाकिस्तान-प्रवेश** : भुरुंगामारी : द्वार खुल गया – पहले ही दिन भूदान-प्राप्ति और उसका वितरण
- सितंबर 8 : पूर्व पाकिस्तान : '' बहनों को परदे में रखना गलत । उनको समाजसेवा में लगाना चाहिए।''
- सितंबर 13 : रंगपुर : (पूर्व पाकिस्तान) ''वर्ल्ड फेडरेशन का पहला कदम – 'भारत-पाक कॉन्फेडरेशन'। उससे दोनों देशों की समस्याओं का हल होगा।''
- सितंबर 19 : दिनाजपुर : (पूर्व पाकिस्तान) ''जिसके पास प्रेम है, उसको संसार से प्रेम ही मिलेगा। गरीबों का दुःख दूर करें। जनता का उद्यम 'जबर' (मुख्य) और सरकारी सहायता 'जेर' (गौण)।'' ''जैसे किसी नदी में कई नदियां मिलने से नदी खूब बड़ी और वेगवान होती है, उसी तरह वैदिक ध्यानयोग, बौद्धों की अहिंसा, वैष्णवों का प्रेमधर्म और इस्लाम का बंधुभाव मिलने से बंगला भाषा समृद्ध हुई है।''
- सितंबर 20 : पाकिस्तान-यात्रा का अंतिम दिन : ''अल्लाह एक है वैसा मानव भी एक है। जाति, धर्म, पंथ, देश, इन सबसे मानवता श्रेष्ठ है। यहां प्यार मिलेगा ऐसा मुझे 'इलमुल यकीन' (ज्ञानजन्य विश्वास) था। यहां प्रेम का जो

- दिसंबर 25 : नवग्राम (प. बंगाल) : पंडित नेहरू से अंतिम मुलाकात

1963 जनवरी 4 से 6 : नवद्वीप (प. बंगाल): अ.भा. खादी कार्यकर्ता सम्मेलन : ''खादी की आखिरी लड़ाई – 'द लास्ट ॲण्ड द बेस्ट' – सरकारी मदद से खादी को मुक्त करना आवश्यक।'' : मुफ्त बुनाई योजना का निर्णय

- अप्रैल 18 : कामारपुकुर (प. बंगाल) : ''ग्रामस्वराज्य के द्वारा करुणामूलक साम्य का विचार दुनिया में फैलाना है।''
- अप्रैल 25 से मई 2 : आरामबाग (प. बंगाल) : **सुलभ ग्रामदान** का आविष्कार : ''सुलभ ग्रामदान में समाज-प्रेरणा और स्वार्थ-प्रेरणा का समन्वय''
- मई 27 : गंगासागर : ''कपिल महामुनि ने यहां से सांख्य-विचार फैलाया। अब यहां से ग्रामस्वराज्य का विचार फैले।''
- जून 13 से 28 : कलकत्ता : बलि प्रथा पर प्रहार ''जो मां अपने बच्चे का बलि मांगती है, वह मां नहीं हो सकती।'' : शांति-सेवकों का संगठन : 'कुरान-सार' का प्रकाशन
- जुलाई 13 से नवंबर 11 : **उत्कल-यात्रा :** ''ग्रामदान में व्यक्तिगत स्वातंत्र्य और सामुदायिक समर्पण का सुंदर संगम।''
- दिसंबर 21 से 31 : रायपुर सर्वोदय-सम्मेलन : **त्रिविध-कार्यक्रम** : '' त्रिमूर्ति-उपासना – ग्रामदान, ग्रामाभिमुख खादी, शांतिसेना।''

1964 मार्च 3 : **महाराष्ट्र-प्रवेश**

- मार्च 5 से 7 : गोंदिया : आश्रम सम्मेलन
- अप्रैल 6 : सेवाग्राम : **मुफ्त बुनाई** योजना की घोषणा
- अप्रैल 10 से 20 : ब्रह्मविद्या-मंदिर, पवनार : 13 वर्ष 3 महीने 3 दिन के बाद भरत-राम का भावभीना दर्शन : ब्रह्मविद्या-मंदिर की स्थापना के बाद प्रथम बार आगमन
- अप्रैल 21 से जून 18 : वर्धा जिला यात्रा
- जून 19 से नवंबर 3 : ब्रह्मविद्या-मंदिर, पवनार में लंबा निवास
- नवंबर 4 : पदयात्रा प्रारंभ : गोपुरी (वर्धा) : 'गीताई-मंदिर' का भूमिपूजन
- नवंबर 13 : 'लॅबरंथाइन व्हर्‌टिगो' के कारण चक्कर की तकलीफ : पदयात्रा समाप्ति : ब्रह्मविद्या-मंदिर में पुनरागमन

1964 नवंबर 14 से 9 जुलाई 1965 : ब्रह्मविद्या-मंदिर में निवास : अकर्मयोग : 'वेदांत-सुधा, मनुशासनम्, विनयांजलि, गुरुबोध-सार' ग्रंथों का संकलन

''संतति नियमन और गर्भपात पर जो आध्यात्मिक आक्षेप है मैं उसे मानता

करता हूं, तो मैंने हिंदूधर्म का दावा छोड़ ही दिया, बल्कि मानवता में भी हार गया। मानव का लक्षण संयम रखना है। पुराने जमाने में ब्रह्मचर्य का आध्यात्मिक मूल्य था। आज उसको सामाजिक मूल्य भी प्राप्त हुआ है।''

1965 फरवरी 12–17 : भाषिक दंगों के कारण पवनार में उपवास : त्रिभाषी फार्म्युले के लिए सभी मुख्यमंत्रियों के आश्वासन पर उपवास समाप्ति

- जुलाई 9 से अगस्त 23 : विदर्भ (महाराष्ट्र) की वाहन-यात्रा
- अगस्त 24 : ग्रामदान **तूफान-यात्रा** के लिए बिहार की तरफ वाहन से प्रस्थान
- सितंबर 11 : **बिहार-प्रवेश**
- दिसंबर 14 : जमशेदपुर : लालबहादुर शास्त्रीजी से (उनके ताशकंद जाने से पूर्व) अंतिम मिलन : रुग्णावस्था के कारण करीब तीन महीने निवास : 'भागवत-धर्म-सार' पर विवेचन
- जून 7 : रानीपतरा (पूर्णिया, बिहार) : 50 साल का सेवाकार्य गांधीजी को समर्पित कर स्थूल प्रवृत्तियों से मुक्ति – **सूक्ष्म कर्मयोग** आरंभ : पत्रव्यवहार आदि लेखन बंद : व्यक्तिनिष्ठ निर्णय के बजाय सामूहिक निर्णय के लिए साथियों को प्रेरणा

1967 फरवरी 22 : पूसारोड (बिहार) : 'ख्रिस्तधर्म-सार' पूर्ण : बिहारदान का संकल्प

- दिसंबर 7-8 : पूसारोड (बिहार) : विद्वज्जनों की परिषद : विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक, उपकुलपति, मंत्री, शिक्षणतज्ञ उपस्थित : '' शिक्षा न्यायविभाग के समान स्वतंत्र हो। आचार्य राजनीति से मुक्त हों। देश में उनकी स्वतंत्र शक्ति बने और वे देश का मार्गदर्शन करें। एक होता है अशांति-दमन विभाग और दूसरा है अशांति-शमन विभाग। पहले विभाग को हम पुलिस विभाग कहते हैं और दूसरे को शिक्षा विभाग। अगर शमन विभाग समर्थ होगा तो दमन विभाग की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। केवल विश्वविद्यालय ही नहीं, सारा भारत ही विश्वविद्यालय-परिसर है। वहां पुलिस का होना आचार्यों पर एक कलंक ही मानना होगा।''

1968 मार्च 8 : कहलगांव (भागलपुर, बिहार) : **आचार्य-कुल** की स्थापना

- सितंबर 11 : मुजफ्फरपुर : बचे हुए पांच व्रतों पर 21 अभंग और लिखकर ''अभंग-व्रतें' पुस्तक की पूर्ति, कुल अभंग 108
- अक्तूबर 5 से 6 : बोधगया : संत सम्मेलन : अ.भा. गांधी विचारक सम्मेलन – ''भगवान बुद्ध की मुख्य देन करुणा नहीं, तृष्णाक्षय है। तृष्णाक्षय नहीं होगा,

1969 जुलाई 15 : रांची : 'अष्टादशी' (अठारह उपनिषदों का) चयन समाप्ति

- अक्तूबर 20 से 29 : राजगृह सर्वोदय सम्मेलन : **बिहार दान** की घोषणा : पुष्टि का अति तूफान चलाने का संदेश – "मेरे पास आपको देनेलायक कुछ नहीं है। लेकिन एक चीज मैं आपको दे सकता हूं – 'निद्रा'। गाढ़ निद्रा में शेर शेर नहीं रहता, मनुष्य मनुष्य नहीं रहता। आत्मा परमात्मा में लीन हो जाता है। परमेश्वर-स्पर्श का यह मौका न खोयें – रोज 8 घंटा निःस्वप्न निद्रा अवश्य लें।" : खानसाहब से मिलने सेवाग्राम जाने का निर्णय
- नवंबर 2 : सेवाग्राम आगमन और निवास : खानसाहब से भेंट
- नवंबर 8 : विनोबा, खानसाहब, जयप्रकाशजी का देश के नाम संयुक्त पत्रक
- नवंबर 15 से जून 1970 : शांतिकुटी (गोपुरी – वर्धा) में निवास

1970 जून 7 से : ब्रह्मविद्या-मंदिर में निवास : सूक्ष्मतर कर्मयोग का आरंभ

- सितंबर 23 : ब्रह्मविद्या-मंदिर में स्थिर रहने का निर्णय
- अक्तूबर 1 : सेवाग्राम में अमृतमहोत्सव-समारोह
- अक्तूबर 7 : **क्षेत्र-संन्यास** का संकल्प जाहिर

1971 फरवरी 9 : शिक्षा पर राष्ट्रीय सेमिनार

- अक्तूबर 20 : 'काल जारणम्...' इस मार्गदर्शक सूत्र की रचना : 'साम्यसूत्र-वृत्ति' का ग्रथन
- दिसंबर 2 : 'प्राज्ञ-सूत्राणि' की रचना

1972 मार्च 16 : ग्रंथ-मुक्ति

- अक्तूबर 15 : शिक्षण-परिषद – योग-उद्योग-सहयोग – शिक्षा-दृष्टि का विश्लेषण

1973 सितंबर 7-8 : उद्योगपतियों का सेमिनार : पंचशक्ति सहयोग

- सितंबर 11 : 'सर्वं ब्रह्म' की उपासना की जगह 'विमल ब्रह्म' की उपासना का विचार – **उपवासदान** का शुभारंभ
- सितंबर 23 : कार्यकर्ताओं के लिए चतुर्विध कार्यक्रम का निर्देश – 1. पंचशक्ति सहयोग 2. शं ना र ग दे 3. उपवासदान 4. सर्वसम्मति से निर्णयपद्धति
- अक्तूबर 3 : इस्लाम के उपास्य 99 नाम 'अस्माउल् हुस्ना' विष्णुसहस्रनाम में भी हैं, इसका स्पष्टीकरण
- दिसंबर 3 : सर्व सेवा संघ संगीति – जे. पी. का दस दिन पवनार में निवास, प्रभावतीजी के निधन के बाद प्रथम मिलन

1974 जनवरी 12 : प्रथम अ.भा. आचार्य-कुल सम्मेलन

- मार्च 9 : महिला सम्मेलन : शासन के लिए सप्तविध कार्य

- अगस्त 25 : हस्ताक्षर के बदले 'राम-हरि' लिखना प्रारंभ
- दिसंबर 13 : एक साल के मौन का संकल्प
- दिसंबर 25 : गीता-प्रतिष्ठान की ओर से प्रथम गीता प्रचार सम्मेलन, (गीता-जयंती + ईद + ईसाजयंती) मौन प्रारंभ

1975 मार्च 13 : संघर्ष की नीति के बाद सर्व सेवा संघ में मतभेद। सर्व सेवा संघ का मौन। प्रबंध समिति का त्यागपत्र

- मार्च 14 : सुबह 8.45 को दस मिनिट मौन-भंग करके जयप्रकाशजी से बातचीत
- मार्च 15 : सर्व सेवा संघ का विभाजन
- अप्रैल 3 : उपवासदान गीताई कार्य को समर्पित
- अप्रैल 24 : 'समणसुत्तम्' – जैन धर्म-ग्रंथ का प्रकाशन (महावीरजयंती)
- जून 25 : देश में आपातकाल घोषित
- सितंबर 6 : न्यूमोनिया से गंभीर बीमार
- सितंबर 7 : समाचार लेने इंदिराजी का आगमन
- दिसंबर 25 : भूरजस जयंती समारोह – एक साल की मौन समाप्ति : 'अनुशासन' शब्द का स्पष्टीकरण – "अनुशासन निर्भय, निर्वैर, निष्पक्ष आचार्यों का, शासन सरकार का।"

1976 जनवरी 16 : आचार्य-परिषद अनुशासन के लिए संगठन बने

- फरवरी 21 : अ.भा. देवनागरी परिषद
- फरवरी 25 : इंदिराजी से मुलाकात – गोहत्या-बंदी के लिए अंतिम चेतावनी
- अप्रैल 1 : एक दफा का आहार कम किया – (आंशिक उपवास)
- मई 17 : महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री से, गोहत्या-बंदी का पवित्र कार्य न हुआ तो आमरण उपवास की बात
- मई 29 : जन्मदिन 11.9.76 से गोहत्या-बंदी के लिए आमरण उपवास करने का संकल्प
- मई 31 : उस संबंध में जाहिर वक्तव्य
- जून 10 : वक्तव्य छापने के कारण 'मैत्री' पत्रिका जब्त
- जून 30 : सर्वोदय कार्यकर्ता सभा में सर्व सेवा संघ का विसर्जन करने की सलाह
- सितंबर 3 : बंगाल और केरल प्रदेशों को छोड़कर सभी प्रदेशों में सुप्रीम कोर्ट के निर्णयानुसार गोहत्या-बंदी की संसद में घोषणा

1978 जुलाई 18 : बीमारी के बाद जे.पी. मिलने आये

- अप्रैल 29 : उपवास की पूर्वतैयारी के लिए आहार कम किया
- नवंबर 20 : बंगाल में सरकारी इजाजत से बड़ी तादाद में होनेवाली गोधन की हत्या की बात सुनकर 1 जनवरी 1979 से आमरण उपवास की घोषणा
- दिसंबर 25 : सर्वोदय सम्मेलन : कार्यकर्ताओं के अनुरोध पर 111 दिन तक उपवास स्थगित
- दिसंबर 30 : प्रधानमंत्री मोरारजीभाई से मुलाकात

1979 फरवरी 25 : महाशिवरात्रि : उपवास की तैयारी के लिए आहार कम किया

- मार्च 13 : गोहत्या-बंदी के लिए सत्याग्रह का आवाहन
- अप्रैल 18 : केरल के मुख्यमंत्री वासुदेवन् नायर तथा बंगाल के मुख्यमंत्री ज्योति बसु से भेंट

1979 अप्रैल 22 : **गोहत्या-बंदी के लिए उपवास** आरंभ – 'आरब्धं जयजगत्'

- अप्रैल 26 : दोपहर 3 बजे प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई द्वारा संसद में पशु-संवर्धनसंबंधी संविधान-संशोधन का आश्वासन : 4.50 बजे उपवास समाप्ति
- अक्तूबर 8 : जे. पी. का देहांत
- अक्तूबर 25 : बहनों की बारह साल की पदयात्रा (लोकयात्रा) की समाप्ति
- दिसंबर 30 : विश्वमहिला सम्मेलन – 'सप्तविधप्रतिज्ञा' का संदेश

1980 अक्तूबर 7 : **गीताई-मंदिर** उद्घाटन

- अक्तूबर 10 : अ. भा. आचार्य-कुल सम्मेलन

1981 अगस्त 28 : बालकोबाजी की मृत्यु

- सितंबर 11 : अ.भा. खादी-सभा – 'खादी मिशन' की स्थापना
- अक्तूबर 17 : भारतीय शांतिसेना सम्मेलन

1982 जनवरी 11 : ''इस देश में किसी भी उम्र के गाय-बैल न कटें'' इस हेतु **देवनार,** बंबई मे **सत्याग्रह** प्रारंभ

- नवंबर 4 : बुखार आया
- नवंबर 5 : रात्रि 8.30 बजे हलका हार्ट अटैक
- नवंबर 8 : स्वास्थ्य लगभग पूर्ण सुधार पर
- नवंबर 8 : रात 10.30 बजे से आहार-जल-औषध का त्याग
- नवंबर 15 : **ब्रह्मनिर्वाण**
- नवंबर 16 : अग्नि संस्कार। धामनदी में गांधीस्तंभ के पास

20 खंडों का एकत्रित अनुक्रम

खंड 1 – वेद-चिंतन

1. ऋग्वेद-सारः मूल 1
2. ऋग्वेद-सार के 83 मंत्र (मूल) 91
3. वेद-चिंतन 97
   - 1 बाबा का वेदाध्ययन 99
   - 2 कालप्रवाह में वेद 104
   - 3 वेदार्थ-प्रक्रिया 111
   - 4 वेदोक्त यज्ञ-कर्म-उपासना 121
   - 5 वेद-प्रामाण्य 133
   - 6 देवता 141
   - 7 ऋषि 158
   - 8 वेद-मौक्तिक 180
   - 9 वेद-मंत्र 222
   - 10 यजुस्-साम-अथर्व 276
   - 11 वेदों की समन्वय-दृष्टि 286
   - 12 वेद-बिंदु 304
4. उपनिषदों का अध्ययन 313
   - 1 ॐ 315
   - 2 शांतिः 330
   - 3 ॐ शांतिः शांतिः शांतिः 346
   - 4 परमार्थ की प्रस्थान-त्रयी 375
5. सूचियां 389
   - 1 ऋग्वेदसारः मंत्रानुक्रमणिका 391
   - 2 ऋग्वेदसारः और मूल ऋग्वेद की संदर्भ-सूचि 410
   - 3 मंत्रार्थ विवरण-सूचि 424
   - 4 संदर्भ-सूचि 432
   - 5 नाम-सूचि 442
   - 6 उपनिषदों का अध्ययन की

शांतिमंत्र 2
   - 1 ईशोपनिषत् 6
   - 2 केनोपनिषत् 10
   - 3 कठोपनिषत् 16
   - 4 प्रश्नोपनिषत् 38
   - 5 मुंडकोपनिषत् 44
   - 6 मांडूक्योपनिषत् 56
   - 7 तैत्तिरीयोपनिषत् 60
   - 8 ऐतरेयोपनिषत् 76
   - 9 छांदोग्योपनिषत् 82
   - 10 बृहदारण्यकोपनिषत् 156
   - 11 श्वेताश्वतरोपनिषत् 212
   - 12 कौषीतकिब्राह्मणोपनिषत् 230
   - 13 मैत्रायण्युपनिषत् 238
   - 14 नारायणोपनिषत् 246
   - 15 जाबालोपनिषत् 256
   - 16 आरुणिकोपनिषत् 258
   - 17 कैवल्योपनिषत् 260
   - 18 ब्रह्मबिंदूपनिषत् 262
2. ईशावास्य-वृत्ति 265
   - 1 प्रस्तावना 267
   - 2 ईशावास्य-बोध 270
   - 3 वृत्ति 275
   - 4 ईशावास्य का हिंदी अनुवाद 316
   - 5 वितर्क और विवर्त 318
3. उपनिषद्-चिंतन 323
   - 1 तत्त्वमसि 325
   - 2 ईशादि 18 उपनिषद 334
4. ब्रह्मसूत्र 465

5 संक्षेप शारीरकम् (संस्कृत) 497

5. सूचियां 503

1 अष्टादशी विशेषनाम परिचय 505

2 अष्टादशी श्लोकानुक्रमणिका 522

3 विवरित उपनिषद्वचन-सूचि 527

4 ब्रह्मसूत्रभाष्य वचन-सूचि 535

5 वचन-नाम-संदर्भ-सूचि 537

खंड 3 – गीतामृत -1

1. गीता-गीताप्रवचन और बाबा प्रा.11

2. गीता-प्रवचन 1

3. साम्यसूत्र 219

1 वृत्तिः 221

2 प्रास्ताविक 231

3 अभिधेयं परम-साम्यम् 233

4 ज्ञानयोग की प्रक्रिया – महावाक्यमनुचिंतयेत् इ. 237

5 भक्तियोग की प्रक्रिया – नाम्ना सादगुण्यम् इ. 243

6 कर्मयोग की प्रक्रिया – कर्ममातृकं अकर्म इ. 249

7 त्रैगुण्य-विचार – प्रकृतिः शोध्या इ. 254

8 तमोगुण-शोधन – श्रमसंजात-वारिणा इ. 258

9 रजोगुण-शोधन – वेगस्य शमनं स्वधर्मेण इ. 262

10 सत्त्वगुण-शोधन – सत्त्वस्य सत्त्वेन इ. 266

11 छंदसि बहुलम् 274

12 गणितं सहकारि 277

13 मृति-स्मृतिः शुद्धये 278

14 मानुषं सौम्यम् 280

15 शरीरात् प्रवृहेत् 282

4. स्थितप्रज्ञ-दर्शन 305

1 निवेदन, अनुक्रम 307

2 स्थितप्रज्ञ-लक्षण 313

3 प्राज्ञ-सूत्राणि 316

4 स्थितप्रज्ञ-दर्शन 317

5 युग की आवश्यकता 432

6 आत्मस्मृति से स्मृति निराकरण 441

5. परिशिष्ट 449

1 गीताध्याय-संगति 451

2 गीतासार 459

6. सूचियां 463

1 वचन-नाम-संदर्भ-सूचि 464

खंड 4 – गीतामृत - 2

1. गीताई की कहानी प्रास्ता 11

2. गीताई-चिंतनिका विवरणसहित 1

1 चिंतनिका विवरणसहित 1

2 गीताई का ध्यान 412

3 गीताई की अधिकरणमाला 414

4 यामुन मुनि का गीतार्थसंग्रह 418

5 गीता-गीताई 423

3. गीताई शब्दार्थ कोश (संक्षिप्त) 429

4. सप्त शक्तियां 465

(कीर्ति, श्री, वाणी, स्मृति, मेधा, धृति, क्षमा)

5. सूचियां 491

1 गीताई श्लोक-सूचि 493

2 वचन-नाम-संदर्भ-सूचि 501

खंड 5 – गीता-भागवत

1. वेलोर-प्रवचन 1

(वेलोर जेल में दिये गीता पर के प्रवचन)

1 गीतापूर्व की विचारधाराएं 3

2 गीता और महाभारत 10

3 श्रीकृष्ण 13

2 विश्वधर्म का महान ग्रंथ 170
3 समन्वय का सर्वोत्तम ग्रंथ 174
4 गीता और अहिंसा 184
5 गीता शांकरभाष्य 192
6 बुद्धिग्राह्यम् 198
7 श्रेयान् स्वधर्मो 200
8 पापयोनि 203
9 ब्रह्मसूत्रपदैः 205
10 गीता और ... 210
11 स्फुट (गीता के श्लोकों पर स्फुट चिंतन) 212

3. भागवतधर्म-सार और मीमांसा 311
1 भागवतधर्म-सारः सूत्राणि 313
2 भागवतधर्म-सारः मूल श्लोक और अर्थ 317
3 भागवतधर्म-सारः मीमांसा (कतिपय श्लोकों का विवरण) 379
4 स्फुट (भागवत संबंधी स्फुट चिंतन) 482
5 कथाएं – ध्रुव-प्रह्लाद-रुक्मिणी-सुदामा-सांदीपनि-कुंती-उद्धव-अजामिल 487
6 कृष्ण – निष्काम अनासक्त सेवक, चार चित्र 493

4. सूचियां 503
1 भागवत धर्म-सारः श्लोक-सूचि 505
2 वचन-नाम-संदर्भ-सूचि 510

खंड 6 – शंकर-मनु

1. गुरुबोध-सारः – श्लोक और विवरण 1
2. शंकराचार्य 205
1 जीवन और समाज परिवर्तन की शांकर-प्रक्रिया, शंकराचार्य का संदेश, अद्वैत, शंकराचार्य का कर्मयोग, वचन, भाष्य 205
2 मनु महाराज 322
3 विविध 329

4. विष्णुसहस्रनाम 341
1 स्तोत्रम् 343
2 पारायण 353
3 अखंड स्मरण 357
4 अविरोध-साधक 358
5 कवियों पर असर 362
6 विविध नाम 364
7 अस्माउल् हुस्ना 375
8 अर्थ 379
9 नाम और शब्द-सूचि 409

5. सूचियां 395
1 गुरुबोध-सारः श्लोकानुक्रमणिका 397
2 मनुशासनम् श्लोकानुक्रमणिका 403
3 विष्णुसहस्रनाम – नाम और शब्द-सूचि 409
4 वचन-नाम-संदर्भ-सूचि 429

खंड 7 – बुद्ध-महावीर, योगसूत्र और ध्यान-मीमांसा

1. धम्मपदं–नवसंहिता (सार्थ) 1
2. भगवान बुद्ध 85
1 धम्मपद 112
2 विविध 123
3. समणसुत्तं (सार्थ) 133
4. वर्धमान महावीर 269
5. जैन पारिभाषिक शब्दकोश 285
6. योगसूत्र 303
1 पातंजल योगसूत्र 305
2 योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः 307
3 शुचिता से आत्मदर्शन 310
4 अष्टांग योग 326

7. महागुहा में प्रवेश (ध्यान-मीमांसा) 349
1 ध्यान का स्वरूप 351
2 ध्यान का प्रयोजन 363
3 ध्यान की प्रक्रिया 372
4 चमत्कार, साक्षात्कार 389
5 समाधि 395
6 अतिमानस 407
7 अभिध्यान 419
8 सूर्य का ध्यान 423
9 स्वानुभव 430
10 ध्यान-बिंदु 438
8. सूचियां 447
1 धम्मपदं गाथानुक्रमणिका 449
2 धम्मपदं नवसंहिता का मूल संदर्भ 455
3 समणसुत्तं गाथानुक्रमणिका 458
4 वचन-नाम-संदर्भ-सूचि 469

खंड 8 – बाइबिल-कुरान

1. ख्रिस्तधर्म-सार (अंग्रेजी-हिंदी) 1
2. ईसामसीह 157
(महिमा और जीवन, तीन आज्ञा, और भी मकान हैं, चॅरिटी-समादर,रिकन्साइलेशन-समन्वय, ईसा की सीख और उपदेश, प्रश्नोत्तर, ईसा के शिष्य, बाइबिल, विविध)
3. कुरान-सार 213
1 प्रस्तावना 215
2 चयन की दृष्टि 219
3 संस्कृत सूत्र 220
4 नखदर्पण में 221
5 अनुक्रमणिका 237
6 रूहुल्-कुरान (हिंदी) 245
7 कुछ अरबी शब्दों के अर्थ 349
8 मुहम्मद पैगंबर और इस्लाम 353
प्रश्नोत्तर, विविध, कुरान के चौदह रत्न, अस्माउल् हुस्ना – विष्णुसहस्र-नाम के साथ)
4. पारसियों की गायत्री 415
5. सूचियां 417
1 वचन-नाम-संदर्भ-सूचि 418

खंड 9 – संत-समागम

1. संतसुधा-सार की प्रस्तावना 1
2. विनयांजलि 11
3. गोस्वामी तुलसीदासजी 95
1 तुलसीदासजी 95
2 तुलसीरामायण 104
3 रामायण के आक्षेपों का उत्तर 122
4 तुलसीदासजी की बाल-सेवा 130
5 भजन – जय जय जगजननि, 132
ऐसेहू साहबकी, मोहजनित मल, केशव कहि न जाइ, मम हृदय भवन, सहज सनेही रामसों, लाभ कहा मानुष-तनु पाये, भरोसो जाहि दूसरो, तन सुचि मन रुचि, मेरो कह्यो सुनि पुनि, राम नाम मनिदीप, भलि भारत भूमि, नौमि नारायणं
6 वचन 150
7 व्यक्तिविशेष – राम, रामनाम, 177
सीता, भरत, लक्ष्मण, हनुमान, वाल्मीकि, विश्वामित्र, दशरथ, कौशल्या, कैकेयी, अहल्या, मंदोदरी, रावण, वालि, सुग्रीव, जटायु
4. नामघोषा-सार 219
1 प्रस्तावना, माधवदेव चरित्र, 221
व्याकरण, मूलग्रंथ, कठिन शब्दों के अर्थ
2 घोषाओं का विवरण 301
3 श्रीश्रीशंकरदेव 364

3 पौड़ी अनुक्रम 494
6. संतवाणी 439
1 कबीरदास 441
2 मीराबाई 454
3 सूरदास 460
4 सुंदरदासजी 463
5 भक्त रैदास 466
6 नरसिंह मेहता 467
7 लल्लेश्वरी 474
8 चैतन्य महाप्रभु 474
9 जगन्नाथदास 478
10 विविध 479
7. सूचियां 481
1 विनयांजलि भजनानुक्रम 483
2 नामघोषा-सार घोषानुक्रम 486
3 जपुजी की पौड़ियों का अनुक्रम 494
4 वचन-नाम-संदर्भ-सूचि 495

खंड 10 – पंचामृत 1
(ज्ञानदेव-नामदेव-एकनाथ)

1. ज्ञानदेव के भजन और चिंतनिका 1
1 चांगदेव चालीसी 115
2 भजनों के कठिन शब्दों के अर्थ 123
2. ज्ञानदेव महाराज 131
1 ज्ञानदेव और बाबा 131
2 संत ज्ञानेश्वर 135
3 ज्ञानेश्वरी और उसकी विशेषताएं 147
4 ज्ञानदेव की मधुर वाणी 170
5 ज्ञानेश्वरी में कृषिगौरक्ष्य-वाणिज्यम् , श्रीमत् और ऊर्जित, बोला बुद्धीसी अटक, यत्रोपरमते चित्तं 173
6 विविध 182
7 ज्ञानदेव और योगी गोरखनाथ 184
8 ज्ञानदेव-तुकाराम 186
12 हरिपाठ 198
13 स्फुट 198
14 निवृत्तिनाथ 237
15 सोपानदेव 238
3. नामदेव के भजन 239
1 कठिन शब्दों का अर्थ 323
2 भजनों की वर्णानुक्रमणिका 462
4. संत नामदेव 307
5. एकनाथ के भजन 327
1 प्रस्तावना-खंड (भागवत, भारूड, भजन, स्थूल चरित्र, भाव-चरित्र, जन ही जनार्दन, कीर्तन भक्ति, नाथपूर्वकालीन विचार-विकास, ऋणानुबंध, उपासनामृत) 329
2 भजन 368
3 भजन वर्णानुक्रमणिका 466
6. एकनाथ महाराज 426
(नाथ की दृष्टि, स्मरण, सत्याग्रही नाथ, प्रतिष्ठान की प्रतिष्ठा, भजन – साकर दिसे, जीवन-प्रसंग, विविध)
7. सूचियां 457
1 ज्ञानदेव भजन वर्णानुक्रमणिका 459
2 चांगदेव चालीसी वर्णानुक्रम... 461
3 नामदेव भजन वर्णानुक्रमणिका 462
4 एकनाथ भजन वर्णानुक्रमणिका 466
5 वचन-नाम-संदर्भ-सूचि 471

खंड 11 – पंचामृत 2
(तुकाराम-रामदास आदि)

1. तुकाराम के भजन 1
2. संत तुकाराम की प्रसादी – कतिपय अभंगों का विवेचन 152
3. तुकाराम महाराज 202
1 आत्म-चरित्र, वचनों का 219

4. समर्थ रामदास 275
1 भजन 280
2 बोधबिंदु (दासबोध से) 321
3 मनाचीं शतें 357
4 समर्थ का स्मरण 377
5. रामदासस्वामी 398
(मनाचीं शतें, भजन, दासबोध के वचनों पर)
6. केकाशतक (मोरोपंत की केकावलि का चुनाव) 429
1 मोरोपंत 450
7. दक्षिण के संत 457
1 आंडाल 459
2 अप्परस्वामी 461
3 माणिक्कवाचकर 464
4 तिरुवल्लुवर 477
5 नम्मालवार 488
6 कंबन 492
7 कूरत्तालवार 492
8 रामलिंगस्वामी 493
9 सुब्रमण्य भारती 494
10 पुरंदरदास 499
11 बसवेश्वर 500
12 त्यागराज 503
13 पोतना 503
8. सूचियां 505
1 तुकाराम भजन वर्णानुक्रमणिका 507
2 तुकाराम भजन प्रसादी वर्णा0 520
3 रामदास भजन वर्णा0 521
4 रामदास बोधबिंदु वर्णा0 524
5 रामदास मनाचीं शतें वर्णा0 531
6 मोरोपंत केकाशतक वर्णा0 534
7 वचन-नाम-संदर्भ-सूचि 536

खंड 12 – साहित्य और आत्मज्ञान-विज्ञान

3 उत्तम साहित्य के लक्षण 15
4 साहित्य की कला-कुशलता 30
5 शब्दशक्ति 40
6 भारत में शब्द-परंपरा 49
7 साहित्यिक विवाद के कुछ मुद्दे 55
8 विज्ञानयुग में साहित्य 66
9 साहित्य और साहित्यिकोंसे संबंध 71
10 साहित्य के लिए कुछ परहेज 76
11 कुछ व्यावहारिक बातें 82
12 काव्यसूत्र – साहित्य के लक्षण 90
13 विषय-सूचि 525
2. कवि और काव्य 95
1 वेदव्यास 97
2 महाभारत 99
(धर्मराज, अर्जुन, भीम, भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण, कुंती, गांधारी, विविध, विचरव्यु-गीता, नमो-दशक)
3 विनोबारचित मराठी कविताएं 127
(हितोपदेश, संयमी भारत, ईशतत्त्व-संशोधक संमेलन, गा गा रे सखया)
4 कालिदास 132
5 रवींद्रनाथ (पूजागीत और स्वदेशी से) 140
6 गोल्डन ट्रेझरी 214
3. मधुकर (स्फुट लेख, निबंधादि) 253
1 बूढ़ा तर्क 255
2 जैसे को तैसा 256
3 त्याग और दान 258
4 तीन गृहदेवता 260
5 स्व-रूप देखिए 261
6 नागपंचमी 264
7 कृष्णभक्ति का रोग 266
8 देहपूजा की दास्यभक्ति 270
9 स्वच्छता को लगाम 274

14 मत और मत-प्रचार 286
15 संतों का भागवतधर्म 290
16 तीन मुद्दे 292
17 श्रवण और कीर्तन 294
18 निपूती आशा और आलसी... 298
19 स्वदेशीधर्म 301
20 भिक्षा 303
21 चार पुरुषार्थ 305
22 सव्यसाची 320
23 अस्पृश्यता-निवारण का व्रत 321
24 अस्पृश्यता-निवारण का यज्ञ 322
25 राष्ट्रीय छात्रालय 322
26 मूर्ति क्यों नहीं? 323
27 सत्य ही सयानापन 324
28 प्रेम का आधार 325
29 सत्य और सौंदर्य 325
30 गरीबों के संरक्षक 327
31 सारे धर्म भगवान के चरण 327
32 राष्ट्र के लिए त्याग कितना... 328
33 देवस्थानों का सुधार 337
34 प्रार्थना में विवेक 338
35 विद्यार्थियों की उत्तम खुराक 340
36 शांत तेजस्वी 342
37 तीन मंत्रों की सार्थकता 344
38 पाप-पुण्य और भौतिक घटनाएं 347
39 गोदावरी-गंगा-नर्मदा 350
40 तुलना-मोह 355
41 गोरखनाथ 358
42 सत्ता और सेवा 361
43 जीवन-समस्या का हल 363
44 सच्ची स्वतंत्रता 364
45 वाणी का सदुपयोग 366
46 श्रम-जीविका 368
47 मृत्युरूपी वरदान 378

6. आत्मज्ञान और विज्ञान 465
1 मानव-पक्षी के दो पंख 468
2 परिवर्तन की मांग 477
3 सामूहिक जीवन की कला 482
4 राजनीति-धर्मपंथ कालबाह्य 486
5 दुनिया को बनानेवाली ताकतें 491
6 अभिनव विज्ञानयुग और अहिंसा 494
7 विज्ञान का कल्याणकारी स्वरूप 500
8 अतिमानस-भूमिका 510
9 विज्ञान और श्रद्धा दोनों टिकेंगे 516
10 विषय-सूचि 540
7. सूचियां 523
1 गोल्डन ट्रेझरी 525
2 विषयसूचि – साहित्य 527
3 विषयसूचि – विचारपोथी 530
4 विषयसूचि – आत्मज्ञान-विज्ञान 540
5 वचन-नाम-संदर्भ-सूचि 543

खंड 13 – पत्र-मंजूषा

1. पत्रव्यवहार 1
1 बापू की सेवा में 3
2 पिताजी तथा परिवार से 18
3 मालाकार की वृत्ति से 35
4 जीवनं-शोधयेत् 99
5 सेवा दिग्दर्शन 151
6 भूदान-यज्ञ पदयात्रा 222
7 बोध-बिंदु 263
8 विविध विचार-बिंदु 318
9 स्नेहेन सहजीवनम् 373
10 मुक्त चिंतन 416
2. सूचियां 453
1 व्यक्ति-परिचय 455
(पत्रों में उल्लिखित)
2 वचन-नाम-सूचि 467

पंचनिष्ठा, भौतिक अविरोधी, नया आयाम)
2 साधना सहकारी (आत्मचिंतन-प्रक्रिया, प्रार्थना, भक्ति, नामस्मरण, गुणोपासना, मन से ऊपर उठना, सेवा, स्थूल से सूक्ष्म कर्मयोग, विविध) 35
2. आश्रम-दर्शन 143
(1) आश्रम-विचार 145
1 प्रास्ताविक 145
2 जीवन-समन्वय-केंद्र 152
3 पावर-हाउस 161
4 अर्थमुक्त चिंतन की ओर 167
5 ग्यारह चौकीदार 177
6 कुछ साधनात्मक बिंदु 182
7 विविध विशेष 193
(2) आश्रम-परिचय 203
1 परंधाम आश्रम, पवनार 204
2 छह आश्रमों की स्थापना 220
1 समन्वय आश्रम 223
2 ब्रह्मविद्या-मंदिर 231
3 प्रस्थान आश्रम 232
4 विसर्जन आश्रम 233
5 मैत्री आश्रम 238
6 वल्लभ-निकेतन 242
3 अन्य आश्रम – मार्गदर्शन 243
1 सेवाग्राम आश्रम 243
2 निसर्गोपचार आश्रम 252
(3) ब्रह्मविद्या-मंदिर 260
1 प्रारंभ 261
2 सामूहिक प्रेरणा 269
3 सामूहिक साधना 273
4 विश्वसमस्या-परिहार 290
5 सामूहिक चित्त-निर्माण 297
6 सर्वसम्मति का सिद्धांत 312
11 सामूहिक साधना के संकेत 357
12 पत्र-दूत 369
3. व्रत-चिंतन 389
1 व्रत-निष्ठा 391
2 सत्य 398
3 अहिंसा 405
4 ब्रह्मचर्य 422
5 अस्वाद 436
6 अपरिग्रह 444
7 अस्तेय 451
8 शरीरश्रम 454
9 स्वदेशी 462
10 सर्वत्र भयवर्जन 470
11 सर्वधर्म-समानत्व 476
12 स्पर्श-भावना 481
13 अनिंदा 491
4. अभंग-व्रत (सार्थ) 493
(सूत्राणि, निवेदन, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, असंग्रह, शरीरश्रम, अभय)
5 सूचियां 535
1 अभंगव्रत-भजन वर्णानुक्रमणिका 537
2 वचन-नाम-संदर्भ-सूचि 539

खंड 15 – आरोहण

1. सर्वोदय का बीजरूप मंत्र 3
2. आरोहण – धाम से परंधाम 5
(1) विचार-बीज की विरासत 7
1 विरासत का एहसास 7
2 'सर्वोदय' के सब वारिसदार 11
3 खोजन-शोधन-संक्रमण 14
4 प्रकाश की एक झलक 35
(2) सर्जनशील आविष्कार 41
5 बीजरूप दर्शन 41

से भी दान क्यों?, समझे बिना चारा नहीं, हृदय-प्रवेश करना है, हक से मांगा और मिला, भूमि-वितरण, भूदान सफल कब?, समता – आज का युगधर्म, दीर्घं पश्य, भूदानवृत्ति का विकास)

8 सौष्ठवपूर्ण पौधा 106
(भूदान-यज्ञ का कलश : ग्रामदान, गिरिजनों में, श्रद्धा बढ़ानेवाला काम, विकसित प्रदेश में, मालिकी मिटेगी मिटेगी, सर्वतोभद्र ग्रामदान, विचार लोकमान्य, जपयज्ञ, 'केवल' होकर रहना, अज्ञात-संचार, प्रेमभरी शिकायत, एषः पंथाः एतद् कार्यम्, असम में)

9 नयी कलम और परिपूर्ण वृक्ष 152
(प्रथम प्रदक्षिणा, ग्रामदान का अभिनव-रूप, ग्रामस्वराज्य की योजना, पदयात्रा पूर्णाहुति, ईश्वरदत्त विश्राम)

(3) चैतन्य-वृक्ष 167

10 नयी-नयी शाखा-प्रशाखाएं 167
(नित्य नवपल्लवित, सूतांजलि, संपत्ति-दान, शांतिसेना, सर्वोदयपात्र, कूपदान, आचार्यों का मार्गदर्शन, लोक-संगठन, खादी, सत्याग्रह-शोधन शारदा-उपासना, नागरीलिपि, आश्रम स्थापना, स्त्रीशक्ति जागरण, नगर में काम, शील-संस्कृति रक्षा – पोस्टर आंदोलन, स्वच्छता, लोकनीति, प्लानिंग, राज-नीति के दिन गये, विज्ञान-अध्यात्म, सार लो, मौन-प्रार्थना, विश्व-शांति-सेना, जय जगत्)

11 विशेष अनुभूतियां 228
(अजमेर, वैद्यनाथधाम, जगन्नाथपुरी, पंढरपुर, पीरपंजाल, बागीक्षेत्र, पूर्व बंगला देश, बिहार आंदोलन, आपात्-काल, गोवंशहत्या बंदी)

(4) खाद-पानी 284

13 प्रयत्नों की पराकाष्ठा 284
(चरैवेति, बारिश में यात्रा, रोज दो पड़ाव, विश्वदर्शन, पांव रुकेंगे नहीं, ईश्वरार्पण, अंतरात्मा गवाह)

14 आंतरिक यात्रा 297
(भक्त की आर्तता, अनन्य भक्ति लाभ, तपस्या से शुद्धि, भगवान के हाथ का औजार, मानसिक द्वंद्व, बेचैनी, गहराई में, सूक्ष्मप्रवेश, विचार-निष्ठा)

15 आध्यात्मिक वृत्ति और क्रांति की भावना 323
(सेवकगण, गणसेवकत्व, गहरा अध्ययन, सातत्य, आत्मदीपो, निष्काम-सेवक-समूह, सामूहिक साधना, एक हृदय बनें, परिशुद्ध चेतन-संपर्क)

(5) पूर्णाहुति 337

16 एक जंग और 337
(एक प्रयोग – अंतिम और सर्वोत्तम, क्रांति की आन, तूफान, ठोस काम हो, अकाल में भी काम, सघन क्षेत्र, नक्सलवाद, कसौटी, अंतर में अग्नि, ग्रामदान के बाद क्या? संभावनाएं, आरोहण एक मुकाम पर)

17 कृष्णार्पणम् 384
(मोर्चे से हटाये सेनापति की छटपटाहट, अंतिम प्रयास, साधना के अगले चरण, कर्ममुक्ति, सर्वोदय-दर्शन)

18 राम हरि! राम हरि! राम हरि! 400

3. आंदोलन का विहंगावलोकन 407

1 विविध दृष्टिकोण 409

2 विश्व-प्रवाहों का दर्शन 416

4. क्रांति-प्रक्रिया 465
1 साम्यवाद का रास्ता 467
2 लोकशाही समाजवाद ... 478
3 कत्ल-कानून-करुणा 486
4 क्रांति : तत्व-विचार 498
5 क्रांति : व्यवहार-विचार 508
6 मनोविज्ञान की दृष्टि से सर्वोदय 520
7 साम्ययोग 530
5. सूचियां 547
1 वचन-नाम-संदर्भ-सूचि 548

खंड 16 – तीसरी शक्ति

1. अहिंसा और सर्वोदय 1
2. स्वराज्य शास्त्र 17
3. लोकनीति 55
1 राज्यसंस्था का उदय 57
शासन या दुःशासन? 61
सत्ता की माया 72
शासनमुक्ति का आदर्श 81
2 गणतंत्र या अवगुणतंत्र? 95
कल्याणराज या अकल्याणराज 118
लोकतंत्र-सुधार के लिए सुझाव 121
3 सत्ता कैसे मिटेगी? 133
राजनीति का विकल्प लोकनीति 141
गांधीजी और लोकनीति 157
लोकनीति की दिशा में 163
4 जय जगत् 166
5 आचार्यकुल 170
6 प्रकीर्ण 175
4. ग्रामस्वराज्य 183
1 गांव-गांव में हो स्वराज्य 185
2 सारा गांव एक परिवार 189
3 ग्रामदान : ग्राम-परिवार ... 197
4 भौतिक-आध्यात्मिक उन्नति मार्ग 213
5. सत्याग्रह 247
1 ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में 249
2 सत्याग्रह का अर्थ 259
3 आज के जमाने में सत्याग्रह 269
4 सत्याग्रह : साधन और तंत्र 278
6. शांतिसेना 289
1 शांतिसेना क्यों? 291
2 पार्श्वभूमि 299
3 शांति-शक्ति का प्रकटीकरण 303
4 शांतिसेना क्या है? 310
5 ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में 314
6 स्वरूप और कार्यक्रम 316
7 संघटन और अनुशासन 323
8 आक्षेप तथा स्पष्टीकरण 329
9 योग्यता और प्रशिक्षण 332
10 अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में 339
11 अणुशक्ति और निःशस्त्रीकरण 344
12 प्रकीर्ण 356
7. सर्वोदय-पात्र 362
8. संस्था-संघटन 381
9. सूचियां 401
1 वचन-नाम-सूचि 403
2 विषय-सूचि 409
3 संदर्भ-सूचि 413

खंड 17 – शिक्षा, स्त्री-शक्ति

1. शिक्षण-विचार 1
(1) भारतीय शिक्षण-दृष्टि और परंपरा 3
(2) शिक्षा के मूलभूत तत्त्व 16
1 जीवन और शिक्षण 16
2 सहज शिक्षण 20
3 निवृत्त शिक्षण 27
4 पूर्णात् पूर्णम् 37
5 साक्षर या सार्थक 40

8 शिक्षा का माध्यम – मातृभाषा 50
9 शासनमुक्त शिक्षण 58
10 मातृमुखेन शिक्षणम् 62
(3) वर्तमान शिक्षा के दोष और शिक्षा में क्रांति 69
1 यह विद्या है या अविद्या? 69
2 आज की परीक्षा-पद्धति 80
3 छुट्टियों की खैरात 81
4 इतिहास-शिक्षण 85
5 शिक्षा में क्रांति 101
(4) नयी तालीम 109
1 क्यों और कैसे 109
2 ज्ञान और उद्योग 122
3 पद्धति-पंचक 126
4 आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पहलू 128
5 विद्रोह की दीक्षा 130
6 मूलोद्योग की शिक्षण-दृष्टि 137
7 विषय कैसे पढ़ाया जाये 146
8 चरखे का विधिवत् अभ्यास 151
9 एकड़ का कोष्ठक 152
10 रेखन की सामग्री 154
11 चित्रकला की दृष्टि 158
12 गुण-विकास ही शिक्षण 163
(5) विद्यार्थी 167
(6) शिक्षक 182
1 शिक्षक 182
2 केवल शिक्षण 195
(7) विद्यालयों की विविध संकल्पनाएं 199
1 कौटुंबिक पाठशाला 199
2 एक घंटे की पाठशाला 201
3 चौबीस घंटे आनंद 205
4 देहात और शहरों की तालीम 208
5 परिश्रमालय द्वारा शिक्षण 211
(8) आचार्यकुल 227
स्फुट 235
2. स्त्री-शक्ति 237
1 स्त्री-शक्ति का आशय 239
2 स्त्री-शक्ति की बुनियाद – ब्रह्मविद्या 243
3 स्त्री-शक्ति और समाज-परिवर्तन 265
4 संयम से परिवार-नियोजन 274
5 स्त्री, मानवमूर्ति की शिल्पकार 278
6 प्रकीर्ण 284
3. कार्यकर्ता-पाथेय 297
1 कार्य 299
(हमारा मिशन, आत्मनिष्ठा और समग्रदृष्टि)
2 कर्ता 306
(कार्यकर्ता कैसा हो?, कुछ आवश्यक तैयारी, अध्ययनशीलता, कुछ सूचनाएं, लोकहृदय में प्रवेश)
3 संयोजन 330
(हमारा संघटन, गणसेवकत्व, काम की योजना)
4 विचार-सफाई 343
(श्रम-मीमांसा, संकल्प की छानबीन, अस्वाद-चर्चा, वृद्ध-तरुण-संवाद, सेवा-साधना का द्वंद्व, कुछ प्रश्न)
5 प्रयोजन-निष्प्रयोजन 356
(आपस में प्रेम, गुणदर्शन, विश्वास-शक्ति, चित्तशुद्धि, अनंतकोटि ब्रह्मांड में)
4. गांधी : जैसा देखा-समझा 373
1 क्रांति-शांति का अपूर्व संगम 375
2 एक विरल महापुरुष 379

7 सत्याग्रह 400
8 शांतिसेना का अक्षय बीज 408
9 अहिंसा की शक्ति 413
10 निःशस्त्र प्रतिकार 419
11 दरिद्रनारायण की उपासना 423
12 अहिंसक समाज-रचना-दर्शन 427
13 आश्रम-परंपरा 432
14 स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां ... 435
15 स्थूल छोड़ो, सूक्ष्म पकड़ो 439
16 रामनामशुं ताळी लागी! 443
17 कुछ खुलासा 446
18 गांधी-विश्वास या 449
19 गांधी-विचार का प्राणकार्य 456
20 संस्मरण 457
21 'हे राम!' 467
5. सूचियां 473
1 वचन-नाम-संदर्भ-सूचि 474

खंड 18 – साम्ययोगी समाज

1. आर्थिक विचार 1
(1) साम्ययोग : वैकल्पिक विचारधारा 3
1 समाजवाद-साम्यवाद की समीक्षा 5
2 साम्यवाद नहीं, साम्ययोग 24
3 गांधीजी और साम्यवाद 30
4 साम्ययोग : आवश्यकता... 50
(2) श्रमनिष्ठा और श्रमप्रतिष्ठा 60
(3) अपरिग्रह : शक्ति और सिद्धि 79
1 अपरिग्रह का आशय 79
2 दानधारा बहे 95
3 संपत्तिदान-यज्ञ 103
4 विश्वस्त-वृत्ति से स्वामित्व-विसर्जन तक 115
(4) भूदान-ग्रामदान : स्वामित्व विसर्जन का एक प्रयोग 127
(9) व्यापार और व्यापारी 210
(10) आर्थिक योजना 218
1 पहली पंचवार्षिक योजना 220
2 योजना : आक्षेप और विकल्प 238
3 अहिंसक नियोजन के मूलभूत सिद्धांत 254
(11) जनसंख्या का प्रश्न 257
(12) प्रकीर्ण 264
2. खादी 269
(1) तत्त्व 271
1 यंत्र-युग और खादी 291
2 निर्दोष दान और श्रेष्ठ कला का प्रतीक 294
3 चरखे के सहचारी भाव 299
4 खादी बनाम गादी 301
(2) रूप और तंत्र 305
1 खादी का गृह्यशास्त्र 324
(3) कार्य 328
1 खादी और सरकार 344
2 कताई-मजदूरी का सवाल 352
3 खादी-प्रचार 353
4 समग्रता से सोचें 354
5 खादी मिशन 356
3. गो-सेवा 357
1 गो-उपासना 359
2 गो-सेवा की दृष्टि 364
3 गो-सेवा का रहस्य 370
4 आज के जीवन की शोकांतिका 378
5 गो-रक्षा एक सांस्कृतिक मांग 382
6 गोवध-बंदी का सत्याग्रह 386
7 वेद में 'गो' 395
8 विविध 398
4. विविध 405

5 जातिभेद 440
6 कुष्ठसेवा 446
7 आदिवासी-सेवा 455
8 ग्रामसेवा 458
5. सूचियां 469
1 वचन-नाम-सूचि 470
2 विषय-सूचि 478
3 संदर्भ-सूचि 482

खंड 19 – धर्मामृत और चरितामृत

1. धर्मामृत 1
1 धर्म-विचार 3
2 समन्वय की दिशा 25
3 हिंदूधर्म 33
4 मूर्तिपूजा-रहस्य 50
5 उपासना-स्थान 69
6 ईश्वर 89
7 अवतार-मीमांसा 110
8 वर्णाश्रम-व्यवस्था 115
9 मांसाशन-मुक्ति 160
2. अहिंसा की तलाश 169
आरंभ में 171
(1) अयुक्तः (सन् 1916 तक) 182
1 वह गांव, वह घर 182
2 हमारे दादा 185
3 भक्तिमती मां 188
4 योगी पिताजी 196
5 विद्यार्थीकाल 203
6 गृहत्याग 209
(2) युक्तः (1916 से 1950) 214
1 काशीवास 214
2 सत्याग्रहाश्रम 216
3 एक साल की छुट्टी 222
8 बापू का सिपाही 235
9 ग्रामोपासना 237
10 खंडित मूर्तियों की उपासना 239
11 चालीस वर्ष की समाप्ति पर 240
12 कारावास-आश्रम 242
13 गीता-प्रवचन का जन्म 246
14 पवनार आगमन 247
15 प्रसाद-प्राप्ति 250
16 व्यक्तिगत सत्याग्रह 251
17 अंतिम लड़ाई 252
18 हरिजन-उपासना 256
19 गो-उपासना 259
20 शांति-उपासना 260
21 कांचन-मुक्ति का प्रयोग 262
(3) वियुक्तः (1951 से 1970) 267
1 पदयात्राकाल 267
2 प्रसुप्त भावना 267
3 भूदान-गंगा 269
4 सूक्ष्म प्रवेश 317
5 आचार्यकुल 320
6 समापन 321
(4) मुक्तः (1970 से 1982) 323
1 मुक्ति की राह पर 323
2 क्षेत्र-संन्यास 324
3 सूक्ष्मतर में 325
4 साथियों से 328
5 उपवासदान 329
6 एक साल का मौन 330
7 एतत् अनुशासनम् 331
8 गोवंशहत्या-बंदी-उपवास 332
9 मृत्यु का चिंतन 335
(5) वाङ्मय-उपासना 338
(6) साधना के पहलू 360

3. बागी-समर्पण 382

(सहज यात्रा, समस्या की जड़ें, सुबह का भूला शाम वापस, अहिंसा का सामूहिक साक्षात्कार, प्रायश्चित्त – शुद्धि – नवजीवन, व्यवहारी दुनिया की अव्यावहारिकता)

4. ऋषि-तर्पण 403

1 लोकमान्य तिलक 405
2 रामकृष्ण परमहंस 416
3 स्वामी विवेकानंद 421
4 रमण महर्षि 430
5 इतिहासाचार्य राजवाडे 433
6 श्रीअरविंद 438
7 सॉक्रेटिस 446
8 टॉल्स्टॉय 449
9 स्वामी दयानंद 454
10 कस्तूरबा 456
11 महादेवभाई देसाई 459
12 जमनालाल बजाज 461
13 काकासाहब कालेलकर 468
14 किशोरलालभाई 471
15 सानेगुरुजी 477
16 पंडित जवाहरलाल नेहरू 481
17 चक्रवर्ती राजगोपालाचारी 487
18 सरदार वल्लभभाई पटेल 491
19 जयप्रकाश नारायण 494
20 अमलप्रभा दास 498
21 गोपबंधु चौधरी 499
22 मगनलाल गांधी 500
23 पंडित खरेशास्त्री 503
24 ठक्करबापा 503
25 खान अब्दुल गफ्फारखान 506
26 वल्लभस्वामी 507
27 मनोहर दिवाण 513
28 धीरेंद्र मजुमदार 516
29 बाबा राघवदासजी 517

5. सूचियां 519

1 वचन-नाम-संदर्भ-सूचि 520

खंड 20 –शेषामृतम्

1. भारतीय संस्कृति 1

1 भारतीय संस्कृति 3
2 संस्कृत 40
3 हिंदी 52
4 नागरी लिपि 81
5 लिपि-सुधार 93

2. कश्मीर का प्रश्न 101

3. नाममालादि विविध 133

1 सर्वधर्म-स्मरण 135
2 विचार कणिका 195
3 अमृत-बिंदु 279
4 प्रश्नोत्तर 305

4. पूर्ति 353

1 वेदोपनिषद 355
2 गांधीजी 365
3 अपने बारे में 378

5.परिशिष्ट 415

1 जीवन की प्रमुख घटनाएं 417
2 एकत्रित अनुक्रमणिका 435
3 बीस खंडों की संकलित वचन-सूचि 449
4 पदयात्रा पड़ाव-सूचि 519
5 खंड 1 की अन्य वचन-सूचि 575

6. सूचियां 579

1 संक्षेप खुलासा संपूर्ण 580
1 वचन-नाम-संदर्भ-सूचि 582

20 खंडों की संकलित

वचन-सूचि

(जिन वचनों पर कुछ विवेचन किया गया है वे तिरछे–इटालिक–अक्षरों में दिखाये हैं।)

(कृपया संक्षेपों का खुलासा पृष्ठ 580-81 पर देखें।)

वचन	संदर्भ	खंड.पृष्ठ
ॐ असतो मा	बृह 9	*2.416*
ॐ इत्येकाक्षरम्	गी 8.13	2.310
ॐ इत्येतदक्षरं	छां 1	*2.398*
ॐ इत्येतद् ... अनुज्ञा	छां 1.3	*1.329*
ॐ क्रतो स्मर	ईश 17	1.368
ॐ तत् सत् श्री नारायण	विनोबा	2.450; *20.135*
ॐ तत् सदिति	गी 17.23	*3.201 से 204*,246,412,418,421,457;*5.143*,299
ॐ देहें प्राणें मनें	विनोबा	*13.438*
ॐ नमः शिवाय		*9.188*
ॐ नमो		*20.138*
ॐ नमो जी आद्या	ज्ञाने 1.1	*10.147*
ॐ नमो नारायणाय	रामानुज-मंत्र	6.244
ॐ नमो भगवते	मंत्र	4.404-5; 5.252; *13.145,449;* 20.137
ॐ नमो मृत्यवे	कठ शांभा	2.374
ॐ नमो सिद्धं		7.281
ॐ भवति या पक्षा	राबो 346	11.401
ॐ भूर् भुवः स्वः	गायत्री मंत्र	1.189;19.231
ॐ सह नाववतु	शांतिमंत्र	*2.372*
अंशेन कृष्णः किल	गीशांभा-उपो	*5.193;* 9.7
अंशेऽपि समावेशात्	सासू 56	3.297
अकरा अकरा बहु	रा स्फुट 58.17	*11.412*
अकर्दमं इदं तीर्थं	वारा बाल 2.5	*3.357;* 6.187
अकुतोभयम्	सासू 47	3.296
अक्कोधेन जिने	धम्म 1.16	*7.118*
अक्षरं अनिर्देश्यम्	गी 12.3	12.449
अक्षराणां अकारो	गी 10.33	11.279;17.40
अक्षरावगम-लब्धये		*19.61*
अक्षिण्वन् योगतस्	मनु 2.27	2.387;14.333
अक्षैर् मा दीव्यः	ऋसा 10.5.7	1.202; 4.247
अखंड एकांत सेवावा	राबो 405	11.394
अखंड न खंडे	तुका 505	*2.359; 11.223;* 13.253
अखंड हरिकथेचा	राबो 443	11.386
अगस्त्यः खनमानः	ऋसा 1.24.7	1.162-63
अगा मर हा बोलु	ज्ञाने 9.513	3.18; *10.210*
अग्नये इदं		13.53
अग्निः पूर्वेभिर्	ऋसा 1.1.2	1.224; 20.5
अग्निमीळे पुरोहितम्	ऋसा 1.1.1	1.115, 119,135,148-49,223; *3.108-9;* 6.381;12.43,51;15.508;20.5,48
अग्निरस्मि जन्मना	ऋसा 3.2.8	1.170,242
अग्निर् यथैको	कठ 81	*2.379*
अग्निवद् अहं	गीशांभा 9.29	*5.194*
अग्ने नय सुपथा	ईश 18	1.357,368; *2.311;* 8.382
अग्ने नय सुपथा	ऋसा 1.24.15	

अघं स केवलं	मनु 3.26	**4**.79
अघ्न्या	ऋग्वेद	**20**.355
अंगानां मर्दनं कृत्वा		*2.376;* **12**.313
अंगुष्ठमात्रः	कठ 99	**20**.363
अंगुष्ठोदकमात्रेण		**16**.394; **17**.330; **18**.179
अचित्तं ब्रह्म	ऋसा 1.20.8	**1**.184; *14.435; 17.177, 393;* **18**.51
अचिनोति अर्थान्		*17.183*
अचिंत्य अनंत शकतिर	नाघो 133	*9.314*
अच्युतभाववर्जितं	भागवत	*5.483; 11.483;* **14**.60
ॲज आय हॅव लवड्	ख्रिस्त 20.2.2	**8**.177
ॲज दायसेल्फ	ख्रिस्त 12.5.4	**8**. 171-72
अजं ध्रुवं	श्वे 25	*2.434*
अजां एकां	श्वे 43	*2.438*
अजि! नेउनि सर्व	विनोबा	**12**.128
अज्ञानांधस्य लोकस्य		**3**.111
अज्येष्ठासो	ऋसा 5.4.4	**1**.195; **14**.284; **17**.337; **18**.53
अणुरेणु या थोकडा	तुका 857	*1.340;* **2**.487; *6.170;* **10**.188; *11.200, 211*
अणोरणीयान् महतो	कठ 44	*2.377;* **11**.211, 408; **19**.469
अतप्ततनूर् न	ऋसा 9.4.10	**1**.113, 262
अतिथिर् गृहेगृहे	ऋसा 10.13.11	**4**.469
अतिपरिचयात् अवज्ञा	सुभाषित	**9**.348
अति लघु रूप	तुरा सुंदर 2	**9**.204; **20**.219
अतिवृष्टि अनावृष्टि	रामदास	**11**.413
अतिशब्दः कट्वादिषु	गीशांभा 17.9	*6.239*
अतिष्ठन्तीनाम्	ऋसा 1.8.6	**1**.228; *3.64;* **12**.355
अति सुकुमारः हि	योसू व्यासभाष्य	**7**.443
अतींद्रियं	गी 6.21	**10**.182
अती लीनता सर्वभावें	मश 102	*11.409*
अतो धर्माणि धारयन्	ऋसा 1.4.3	*19.5*
अतोऽस्मि लोके	गी 15.8	**20**.138
अत्ता चराचरग्रहणात्	ब्रसू 1.2.9	**4**.377
अत्र पिता अपिता	बृह 102	**1**.306; *2.326*, 464; **5**.5; **11**.198
अत्र वेदार्थः	सासू 87	**3**.301
अथ केन प्रयुक्तोऽयं	गी 3.36	*5.52*
अथ भारत-भू प्रशंसा	शंकरदेव	**9**.328
अथ यत् तपो दानं	छां 34	**1**.358
अथ यत् सत्रायणं	छां 135	**14**.434
अथ यद् अनाशकायनं	छां 135	**14**.434
अथ यद् यज्ञ	छां 134	*5.225; 14.434*
अथ योगानुशासनम्	योसू 1.1	**3**.290, 320, 454; **7**.307, 309, 329, 342; **12**.320; **13**.313
अथ योऽन्यां देवतां	बृह 16	**4**.178
अथवा प्राज्ञ योग्यांच्या	गीताई 6.42	**19**.381
अथातः प्राज्ञजिज्ञासा	प्रा 1	**3**.316
अथातस्त्यागमीमांसा	सासू 101	**3**.302
अथातो धर्मजिज्ञासा	पूर्व मीमांसा	**3**.290, 302
अथातो ब्रह्मजिज्ञासा	ब्रसू 1.1.1	*2.427, 470, 476, 492;* **3**.235, 290, 302; **4**.27, *192, 234, 324, 348;* **6**.31; **7**.404; **15**.330, 531
अदब्धानि वरुणस्य	ऋसा 1.5.6	**1**.156
अदितिर् द्यौर्	ऋसा 1.14.7	**1**.233, 337
अदित्सन्तं	ऋसा 6.8.1	**1**.253
अदीनाः स्याम		**2**.281
अदृष्टो द्रष्टा	–	**9**.413
अद्धि तृणमघ्न्ये	ऋसा 1.23.13	**1**.187; **18**.396
अद्यतेऽत्ति च	तैत्ति 9	**1**.334; **2**.419
अद्याद्या श्वःश्वः	ऋसा 8.8.4	**1**.259, 294; **2**.456; **7**.387; **8**.189; **12**.364; **14**.445

अद्वैत-वृत्ति चालो	एक 222	**10**.354
अद्वैतीं तों माझें	तुका 182	*11.224*
अधमे केवले दोष	नाघो 400	**9**.229, *348;14.92*
अधर्मेण एधते	मनु 4.69	*6.335;* **12**.91,499
अध स्वप्नस्य निर्विदे	ऋसा 1.19.4	**1**.235; *6.127*
अधिकस्य अधिकं		**3**.70; **18**.381
अधिक हानिकर	अन्न 48	**14**.439
अधिकार तैसा करूं	तुका 693	**11**.224
अधिकार-सामान्यात्	सासू 43	**3**.295
अधिचित्तेन आयोगः	बुद्ध	**7**.366; **14**.338
अधिष्ठान प्रगट डोळां	ज्ञाने 6.171	**10**.222; **19**.71
अधिष्ठानं तथा कर्ता	गी 18.14	*5.152;* **16**.363-64; *18.144;* **19**.292
अधीहि भगवो	तैत्ति 18	**2**.393
अधोक्षज	विसना	*10.366*
अधोभूते हि अक्षगुणे		**10**.366
अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं	गी 13.11	**2**.276; *5.281*
अध्यासो नाम	ब्रसूभा प्रास्ता	*2.475; 6.182-83*
अनति प्रश्न्यां	बृहद् 3.6.1	*2.427*
अनतिप्रश्न्यां वै	बृहद् 6.4.20	**5**.197
अनधिकृतत्वाच्च	सासू 57	**3**.297
अनंतः	विसना 70,95	**19**.92
अनंतकोटि-ब्रह्मांडनायका		**6**.380; **9**.359;**12**.68
अनंतकोटि-ब्रह्मांडा	एक 187	**10**.366
अनंतपारं गंभीरं	भागवत	**1**.106
अनंतं वै मनः		*1.142;* **12**.305
अनंतं हि मनः		*17.8*
अनंतरूपो ऽनंतश्रीः	विसना 100	**4**.298; **10**.206
अनंता वै वेदाः		*1.140,276;* **14**.149
अनन्य आवडीचें	एक 170	**10**.352
अनन्यचेताः सततं	गी 8.14	**3**.443; **11**.192
अनन्याश् चिंतयन्तो	गी 9.22	**7**.117
अनन्योदकें धुवट	ज्ञाने 15.3	**10**.352
अनपेक्षः शुचिर्दक्षो	गी 12.16	**11**.162
अनभिस्नेह	गी 2.57	*10.211*
अनलहक	मन्सूर (सूफी)	**6**.223; **8**.188,*375*,397,*404*
अनादि अनंत अचिंत्य	नाघो 63	*9.307*
अनाविष्कुर्वन्	ब्रसूभा 3.4.50	**2**.481
अनिकेतः स्थिरमतिः	गी 12.19	**3**.406; **5**.409; **7**.412; *10.229; 14.357;* **15**.502;**20**.263
अनिर्देश्यम्	गी 12.3	*12.11*
अनिर्वचनीयमुभयम्	सासू 21	**3**.293
अनिर्वचनीया	प्रा 35	**3**.316
अनिष्टमिष्टं मिश्रं च	गी 18.12	**19**.280
अनुकूलः	विसना 37	**14**.320; *19.95*,509
अनु जनान् यतते	ऋसा 9.5.4	**1**.206,262; *16.177;* **19**.381
अनुबंधं क्षयं	गी 18.25	*5.301*
अनुब्रुवाणो	ऋसा 5.3.8	**1**.250;*17.10*
अनुभव खरा	विनोबा	**12**.130
अनुरोधेन मार्गेण	भासा 20.9	**4**.142
अनुशासितारम्	गी 8.9	**9**.370
अनेक जन्म घेऊनि	गीताई 7.19	**19**.381
अनेकजन्मसंसिद्धः	गी 6.45	**3**.454; **15**.395
अनेकबाहूदर	गी 11.16	*15.334*
अनेकैः विवृतपदपदार्थ-	गीशांभा-उपो	**5**.174,192
अनेजदेकं	ईश 4	*2.284,351*
अनेन स्वधर्मो	सासू 104	**3**.302
अंतःशरीरे ज्योतिर्मयः	मुंडक 40	**7**.424

अंतरतरं यदयमात्मा	बृह 14	**4**.235
अंतर मम विकसित	रवींद्रनाथ	**4**.235; **14**.268
अंतरा आला नारायण	तुका 640	**11**.219
अंतरा चापि तु		*19.43*
अंतरीं संसार	तुका 322	**11**.224
अंतवंत इमे	गी 2.18	**3**.459; *5.215*
अंतस्त्यागी बहिःसंगी	योगवा	**3**.292; **4**.75; **5**.444; **9**.183,335; **10**.211; **13**.133, *144*; **19**.178
अंतहुं उचित नृपहि	तुरा अयो 56	*9.214*
अंतहुँ तोहि तजैंगे	तुलसीदास	**9**.151
अंतिमफलत्यागेन	सावृ 80.26	*3.270*
अंते मतिः सा गतिः		**15**.25; **19**.452
अंधं तमः प्रविशन्ति	ईश 9	*2.293,366*; **4**.486
अंधं तमः प्रविशन्ति	ईश 12	*2.297,368*;
अन्नं बहु कुर्वीत	तैत्ति 24	*2.397*; **4**.357; **5**.45,434; **11**.421; **14**.347; *15.112,428; 18.90,160*; **19**.155
अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्	तैत्ति 19	*2.395*,397, *442*; **7**.384; **14**.347
अन्ने समस्य	ऋसा 10.4.12	**1**.265
अन्बिलार् एल्लाम्	कुरल	*11.479*
अन्बे शिवम्		*11.487-88*
अन्यत् नवतरं	बृह 95	*2.422; 14.307*
अन्यथा संस्कारासंभवः	सासू 68	*3.282*,298
अन्यद् एव तद्	केन 4	**2**.295
अन्यदेवाहुः	ईश 13	*2.298,368*
अन्यदेवाहुर्	ईश 10	*2.294,366*
अन्ये कृतयुगे धर्माः	मनु 1.17	*6.329*
अन्ये तु एवम्	गी 13.25	*5.283*
अन्ये मनुष्येभ्यः	छां 51	*2.401*; ***17.7***
अप त्यं परि	ऋसा 1.9.8	**1**.229
अपने खातिर महल	कबीर	*9.450*
अपरिग्रह-स्थैर्ये	योसू 2.39	*5.234*;
अपि च संराधने	ब्रसू 3.2.24	*2.305, 480*; **7**.428
अपि च स्मर्यते	ब्रसू 1.3.23	**5**.205
अपि चेत् सुदुराचारो	गी 9.30	*5.261*; **19**.397
अपूर्व अवसर	राजचंद्र	**7**.281
अपूर्वं मानवस्य	सासू 91	**3**.301
अपेत-ब्रह्मक्षत्रादि	ब्रसू उपो	*2.468*
अप्पमादो अमतपदं	धम्म 9.1	**3**.260; *7.122*
अप्रदायैभ्यो	गी 3.12	**14**.180
अप्रमादः		**14**.426
अप्रवासगमनम्		**12**.173
अप्सु मे सोमो	ऋसा 10.2.6	**1**.152; *12.353*
अब तो बात फैल	मीराबाई	*9.455*; **15**.74; **18**.340
अब मैं नाच्यो बहुत	सूरदास	**9**.461
अबलौं नसानी	विन 48	*9.150*
अब हम अमर भये		**15**.403; **19**.336
अब है हमारी		**19**.336
अब्यक्त ईश्वर हरि	नाघो 181	*9.317*
अभयं नः करत्यंतरिक्षं	अथ 19.15.5	**1**.284, *355*
अभयं वै जनक प्राप्तो	बृह 81	*1.354*; **4**.41,401; **5**.43
अभयं सत्त्वसंशुद्धिः	गी 16.1	*5.133,290; 6.328*; **10**.149; *14.470*
अभाग्य न भजती	एक 220	*10.452*
अभाग्या नरा पामरा	मश 82	**9**.187; **17**.41
अभाव-प्रत्ययालंबना	योसू 1.10	**2**.408; *6.355*; **7**.340
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं	गी 5.26	*5.76*; **6**.7
अभित्वरेत कल्याणे	धम्म 4.2	*7.117*
अभिधेयं परम-साम्यं	सासू 1	*3.233*,236, 290; **5**.184; **14**.426; *15.530*,532; *19.349*

अभ्यास-वैराग्याभ्याम् योसू 1.12 **3**.455; **5**.206; **7**.309; **11**.381
अभ्यूर्णोति ऋसा 8.9.14 **1**.260
अभ्रातरो न ऋसा 4.1.8 **1**.247; **4**.22
अमध्यमः – **1**.195
अमंतवो मां ऋसा 10.18.4 **1**.272
अमंत्रमक्षरं नास्ति – **1**.369
अमरा निर्जराः अमरकोश **5**.254; **12**.43
अमानित्वं अदंभित्वम् गी 13.7 **2**.276; **3**.152; *5.117;* **10**.149,168; **19**.510
अमानिना मानदेन चैतन्य **6**.363
अमानी मानदः विसना 80 *6.363;* **9**.166
अमानी मानदः कल्पो भासा 11.20 **6**.363
अमी च त्वां गी 11.26 *5.111*
अमूलमेतद् भासा 28.4 *5.471*
अमृत कां रांधूनि ज्ञाने 10.314 **10**.219
अमृतत्वस्य तु न बृह 1:5 *2.423;* **8**.193; *14.450;* **17**.287; **18**.149
अमृतं चैव गी 9.19 *5.260*
अमृतं पर्युपास्यम् सासू 66 **3**.298
अमृतं मे आसन् ऋसा 3.2.8 *12.367;20.357*
अमृतस्य पुत्राः ऋसा 10.3.5 *8.188;* **19**.481
अमृतांशूद्भवः विसना 31 **1**.309
अमृताशः अमृतवपुः विसना 87 **6**.371; **11**.237
अमेध्यादपि कांचनं मनु 2.84 **4**.245
अंबितमे नदीतमे ऋसा 2.8.14 **1**.242; **10**.191
अम्मैये अप्पा माणिक्क **11**.476,487
अम्रु हुम् शूरा बैनहुम् कुसा 160 (कुरान 42.38) **1**.219; **4**.230; **6**.92; *8.382;* **14**.305
अयः स्पर्शे लग्नं गुबो 4.7.6 **6**.187
अयनुल् यकीन **8**.374
अयमस्मि सर्वः ऋसा 10.8.1 **14**.274
अयमात्मा ब्रह्म मांडूक्य 2 *2.333,*
अयं सूर्यः महाभारत **12**.113
अयि भुवनमनोमोहिनी रवींद्रनाथ **12**.145
अयुक्तः काम गी 5.12 *3.373*
अयोध्या निवासी एकनाथ **10**.452
अयोध्यां अटवीं वारा अयो 40.9 **20**.15
अरथ न धरम न तुरा अयो 204 **9**.132,195
अरिवु कुरल **11**.479
अर्चायामेव हरये पूजां भासा 3.3 *5.389*
अर्जुना समत्व चित्ताचें ज्ञाने 2.273 **2**.433; **10**.211
अर्थमनर्थं भावय गुबो 1.1.3 **12**.313
अर्थशास्त्रात्तु **12**.317
अर्थस्य पुरुषो दासः महाभारत **4**.11,265; **16**.120
अर्थस्य साधने भासा 18.1 *5.483*
अर्थार्थी – **1**.382
अर्थिनं अधिकरोति ब्रसूभा 3.4.38 **2**.492; **4**.407
अर्थे ह्यविद्यमानेऽपि भासा 28.2 *5.470*
अर्वाग्बिलश्चमस बृह 35,36 **1**.351
अर्हन्निदं दयसे ऋसा 2.6.7 **1**.241, 297; **7**.269
अलंकारो हि अयं ब्रसूभा 1.1.4 *2.477;* **3**.284; **12**.412; **14**.346
अलैकल् बलागु कुसा 338 *8.365*
अलौकिका नोहावें ज्ञाने 3.171 *10.211;* **13**.133
अल् गैब कुसा 2 **8**.387
अल्प धारिष्ट पाहे मश 36 **9**.160; **11**.410
अल्पस्य हेतोर् कालिदास **12**.135
अल् मलिकु कुरान **6**.360
अल् लजीन आमनू कुरान *5.211; 8.395*
अल्लाहु अकबर – **9**.397

अवघा इष्ट मित्र	नाम 163	**10**.317
अवघा चि संसार	ज्ञाभ 99	**10**.206; **19**.442
अवघी एकाचीच	तुका 820	**3**.61
अवघीं भाग्यें येती	तुकाराम	**12**.423
अवघीं भूतें साम्या	तुका 83	*5.420; 11.152*
अवघीं रूपें तुझीं	तुका 786	**11**.224
अवघे चि सुखी	राबो 434	**13**.30; **19**.202
अवघें ब्रह्मरूप	तुका 564	**11**.224
अवघ्या वाटा झाल्या	तुका 691	*11.178;* **19**.504
अवजानन्ति मां मूढा	गी 9.11	*5.101,176; 7.317*
अवलोकितां जन	एक 301	**10**.337,428
अवस नरक		**18**.298
अवस्थात्रय	प्रा 38	**3**.316
अव स्म यस्य	ऋसा 5.1.11	**1**.249; **4**.335; *20.357*
अव स्वराति गर्गरः	ऋसा 8.9.5	*20.358*
अवाकी अनादरः	उपनिषद	**9**.375
अविद्यभिया	ऋसा 10.15.2	**1**.270
अविद्यमानोऽप्यवभाति	भासा 2.6	*5.385*
अविद्या-अस्मिता	योसू 2.3	*6.146; 7.343*
अविद्वांसोऽबुधो	बृहद् 4.4.11	**2**.283
अविनयमपनय	गुबो 4.1.1	**9**.3; **13**.276
अविमुक्तं वै	जाबाल 1	*2.457*
अवोदेवं उपरिमर्त्यम्	ऋसा 8.4.2	*20.364*
अव्यक्तलिंगमपरम्	सासू 20	*3.252,292*
अव्यक्तलिंगाः	जाबाल 5	*2.461;* **12**.12; **20**.260
अव्यक्तासक्तचेतसां	गी 12.5	*5.114*
अव्यवहार्यम्	मांडूक्य 7	**2**.387; *15.161*
अशनपानादिकम्	शंकराचार्य	**19**.137
अशब्दं अस्पर्शम्	कठ 62	**2**.395,489

अष्टकं भावयेत्	सासू 105	**3**.302
अष्ट महासिद्धि आंगणिये	नमे	**6**.387
अष्टमो रसः	छां 2	**1**.321
अष्टाचत्वारिंशदक्षरा	छां 32	**2**.400
अष्टादश-पुराणानां		**11**.174
असकृत् आवृत्तिः	ब्रसू 4.1.1	**4**.385, 431-32
असंख मूरख अंध	जपुजी 18	**9**.430
असंगशस्त्रेण	गी 15.3	**15**.447
असज्झायमला मंता	धम्म 10.4	*13.81*
असतो मा सद् गमय	बृह 9	**1**.257; **2**.308,416; **12**.385
असंतोषः श्रियो मूलम्	व्यास	**9**.212; *12.120*
असन्नेव स भवति	तैत्ति 13	*1.379*
असमंजसमिदं	शांकरभाष्य	*17.184*
असमंजसमेव	ब्रसूभा 2.2.10	*2.474*
असंप्रदायवित्	गीशांभा 13.2	**2**.445; **5**.153; *6.240;* **17**.13
असंभेदः	छां 131	**4**.83
असाध्य तें चि साधावें	राबो 111	*11.390*
असितगिरिसमं स्यात्	शिवमहिम्न	**8**.225; **11**.186
असुराणां हि एषा	छां 149	**1**.358; *2.413;* **20**.178
असुर्या नाम ते	ईश 3	*2.282,349*
अंसुवन जल	मीराबाई	**12**.216; **13**.120
असूयकाय मां	सुभाषित	**9**.347
असे जे रंगले	गीताई 10.10	**13**.433
असेन्याः वः पणयो	ऋग्वेद 10.108.6	**1**.275; *16.313; 17.409*
असो खेळी-मेळी	सोपानदेव	**10**.238
असोत तुज आमुचीं	मोरोपंत	**11**.455
असो यागातली	विगी 7	**12**.124
अस्ति इत्येव	कठ 96	**13**.384
अस्ति तेषा		

अस्मत्कुलीनः छां 78 *5.213*
अस्माकमेवायं केन 15 **8**.233;**17**.35
अस्माकं ब्रह्म ऋसा 1.20.9 **1**.235
अस्य वामस्य ऋसा 1.23.1 **1**.186
अस्वाद साधाया अव्र 62 *17.349*
अस्सद्धो अकतञ्ञू धम्म 17.18 **1**.388
अहमन्नं अहमन्नं तैत्ति 25 **4**.41; **6**.362; **12**.317
अहमन्नादः तैत्ति 25 **4**.41; **12**.317
अहमात्मा गुडाकेश गी 10.20 *5.264;13.77*
अहमिंद्रो न ऋसा 10.6.10 **1**.266
अहमेवेदं सर्वम् **14**.354
अहं कविरुशना ऋसा 4.2.12 **1**.177; **4**.248
अहंकाराचा वारा नाम 107 **1**.386; **10**.312; **13**.303
अहं क्रतुः अहं यज्ञः गी 9.16 **15**.446; **16**.397
अहं च त्वं च ऋसा 8.8.5 **1**.259
अहं त्वा सर्व पापेभ्यो गी 18.66 *3.213;* **11**.179
अहं ब्रह्मास्मि बृह 16 **2**.333,*418*, 478; **3**.237,299; **4**.131,206; **5**.60,292, 296; **6**.6,89; **7**.444; **12**.421,424; **14**.345; **15**.298; **19**.21,241; **20**.152
अहं भूमिमददां ऋसा 4.2.13 **1**.172,339
अहं मनुरभवं ऋसा 4.2.12 **1**.172, 363; **4**.73
अहंमुक्तिः शब्दात् सासू 108 *3.288*-89, 302; **14**.287; **15**.403
अहं राष्ट्री संगमनी ऋसा 10.18.3 **1**.179, 272,301; **9**.2; *17.247*
अहं रुद्राय ऋसा 10.18.6 **1**.179
अहं वेद न च मां **9**.412
(मां तु वेद न कश्चन ? गी7.26)

अहश्च कृष्ण ऋसा 6.2.4 **1**.252
अहिंसका इत्यर्थः गीशांभा 5.25 **4**.153; **5**.269; **6**.238; **14**.406
अहिंसन् सर्वभूतानि छां 168 **19**.139
अहिंसा परमो धर्मः **7**.275; **8**.160
अहिंसा-प्रतिष्ठायां योसू 2.35 **7**.328; **14**.417; *15.236;* **19**.382
अहिंसा सत्य अस्तेय विनोबा **14**.395
अहिंसा-सत्य-अस्तेय योसू 2.30 **7**.326
अहिंसा सत्यमस्तेयं भासा 17.1 *5.429*
अहिंसा सत्यमस्तेयं मनु 8.1 *6.327; 14.427*
अहिंसासत्यादीनि नारद **9**.4
अहिंसा समता गी 10.5 *5.107*
अहुरा मज्दा **6**.361
अहेतुना तारयन्तः **11**.200
आइ एम् नॉट् कम टु ख्रिस्त **9**.369
आइ से नॉट सेवन ख्रिस्त 10.5.2 *8.191*
आइ हैव एव्हर ब्राऊनिंग **19**.312
आई थोर तुझे उपकार **11**.277
आई पंथी सगल जपुजी 28 **17**.48
आकल्प आयुष्य नाम 107 *10.311*
आकाशशरीरं ब्रह्म तैत्ति 4 *2.388;* **11**.469; **12**.418
आकाशस्तल्लिंगात् ब्रसू 1.1.22 *2.477*
आकाशात् पतितं विसना *6.353; 10.308*
आकाशे तिष्ठन् बृह 60 **2**.285
आकाशो ब्रह्मेति छांदो 3.18.1 **1**.370
आंख न मूंदौं कबीर **6**.120, 365,390; **9**.445-46; **15**.405
आ गावो ऋसा 6.4.12 **1**.187; **18**.396
आंगचि घे दवडा ज्ञाने 13.441 **7**.118
आंगें सानें परिणामें ज्ञाने 17.129 **2**.276; **10**.212
आचमन-प्रवृत्तस्य **11**.397
[illegible]

आजि सोनियाचा दिनु	ज्ञाभ 102	**10**.206
आजीविके साधन	ज्ञानदेव	**10**.212
आज्ञेचा आहेवतंतु	अमृ 2.1	**16**.327
आटु वेगु विंदाणु	ज्ञाने 13.272	**10**.171
आढ्योऽभिजनवानस्मि	गी 16.15	*3.186*
आणिकांचे कानीं	तुका 734	*5.464*
आंत हरि बाहेर हरि	तुका गाथा 123	*11.224*
आतां उपायवनवसंतु	अमृ 2.1	*10.193; 16.327*
आतां कोण पाहे	तुका 139	**13**.387
आतां दया ते ऐसी	ज्ञाने 16.154	*10.213*
आतां दिवस चारी	तुका 848	**11**.200; **13**.139
आतां नव्हे माझा भाव	तुका 263	**11**.219
आतां विश्वात्मकें देवें	ज्ञाने 18.1793	*10.171*; **20**.10
आतिवाहिकाः तत्	ब्रसू 4.3.4	**4**.200
आ ते कारो	ऋसा 3.3.12	**1**.245
आत्मदीपो भव	बुद्ध	**7**.123; **14**.222; **15**.194
आत्मध्यानादपि	श्रीधर	**3**.265
आत्मनि ... आत्मानं	गी 13.24	*5.283*
आत्मनि सर्वेंद्रियाणि	छां 168	**19**.139
आत्मनैवात्म-दमनं	विनोबा	**7**.2
आत्मनो हिताय	विवेकानंद	**4**.357; **6**.20; **14**.280; **19**.423
आत्मन्येवात्मना	गी 2.55	*3.325*
आत्म-प्रतीतिरस्माद्	गुबो 2.5.2	**11**.246
आत्मप्रतीतेरभेदः	सासू 65	**3**.298
आत्मभावस्थः	गी 10.11	**20**.248
आत्मवत् सर्वभूतेषु		**8**.177; **13**.315;*16.3*
आत्मशक्तेर् भानात्	सासू 72	**3**.233, *242-43*,299; **16**.141
आत्मसंस्थं मनः	गी 6.25	**3**.265
आत्मस्तुति परनिंदा	मराठी कविता	16.105
आत्मानमरणिं	कैवल्य 8	**1**.319
आत्मानं रथिनं विद्धि	कठ 52	**4**.12
आत्मा नाम स्वरूपं		*5.23*
आत्मा राणीव करी	अमृ 7.268	**10**.194
आत्मार्थे पृथिवीं	महाभारत	**11**.391
आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः	बृह 118	*2.330, 423*;**4**.307; **6**.142; **20**.28
आत्मेच्छा व्यवसीयतां	गुबो 5.11.1	**5**.68
आदरः परिचर्यायां	भासा 19.11	*5.441*
आदित्य उद्गीथः	छांदो 1.5.1	**2**.495
आदित्यवत् ज्ञानं	गी 5.16	**1**.387; **2**.443
आदि सचु जुगादि	जपुजीमंत्र	**9**.5
आदि-सत्ययुगे	नाघो 470	*9.356*
आदौ अंते च मध्ये	भासा 19.6	*5.436*
आदौ अंतो नास्ति	न्यायशास्त्र	**4**.264
आ द्राभ्यां	ऋसा 2.3.1	**1**.167
आधारावांचूनि	तुका 583	**13**.424
आधीं कळस मग	ज्ञानदेव	**18**.308
आधीं कष्ट मग फळ	दास 11.10.20	**11**.384
आधीं तें करावें	–	*1.381*
आधीं होता ग्रामजोशी	तुकाराम	**11**.225
आधीं होता संतसंग	तुकाराम	*3.32*; **4**.357; *11.225*
आनंदं ब्रह्मणो विद्वान्	तैत्ति 11	**11**.182
आनंदाचे डोहीं	तुका 828	*11.225*, 242; **13**.412,429;**14**.341;**20**.278
आनंदाच्या कोटी	तुका 843	**19**.184
आनंदात् हि एव	तैत्ति 23	*2.396*; **12**.179
आनंदें भरीन	ज्ञाभ 99	**3**.145
आनंदो ब्रह्मेति	तैत्ति 23	**2**.395
आ निधातोः	ऋसा 1.9.6	**5**.243
आ नो भद्राः	ऋसा 1.14.1	**1**.230; **17**.3,321
आंधळेया गरुडाचे	ज्ञाने 9.306	*10.152*

आपण यथेष्ट जेवणें	राबो 321	**11**.413; **12**.336
आपणां बधां कामोनुं	गांधीजी	**19**.222
आपणासारिखें करिती		**13**.181
आपणे तो सेवा	गांधीजी	**19**.222
आप मुए पीछे	कबीर	**9**.448,453; **14**.49
आप सहित न आपनो	विन 137	**9**.151,454
आपुन कुशल चात्रा	नाघो 434	**9**.353
आपुन नामक बहुतर	नाघो 102	*9.311*
आपुन नामर महिमाक	नाघो 415	**9**.228
आपुलाचि वाद	तुका 401	**13**.278
आपुला तूं गळा	तुका 70	**3**.189;*11.225*
आपुलालें चित्त	तुका 533	**11**.265
आपुली च दारा	एक 147	**10**.348
आपुलें केलें आपण	तुका 727	*11.225;* **13**.2
आपुलें मरण पाहिलें	तुका 855	**5**.76,216; *11.226;* **13**.109,406; **15**.163
आपुल्या कार्यास	दास 19.4.22	**11**.414
आपुल्याचा कळवळा	तुका 544	**4**.54;**11**.226
आपूर्यमाणं	गी 2.70	*3.396*
आपो भूयिष्ठा	ऋसा 1.22.8	**20**.356
आप्तस्तु यथार्थवक्ता		**4**.403
आप्रायणात्	सासू 40	**3**.295
आबालसुबोधें	ज्ञाने 18.1742	*10.213*
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः	गी 8.16	*5.86;* **20**.340
आभासेषु (एव चैष)जीवः	ब्रसूभा 2.3.50	**4**.309
आमचा स्वदेश भुवन-	तुका 841	*5.69;* **6**.60; **11**.209, 226; **12**.301; **14**.467; **20**.11,16
आमन्तु बिल्लाहि	कुरान	**8**.396
आमासु पक्वम्	ऋसा 2.8.8	**4**.56
आमिओ अंश तोमार	नाघो 75	**9**.226
आमि जत जीव	नाघो 129	*9.312*
आमुचा विनोद	तुका 178	*13.435*
आम्हां घरीं धन	तुका 323	**4**.5; *11.227*
आम्हां जन्ममरण नाहीं	तुका 852	*11.227*
आम्ही काय कुणाचें	राभ 197	**11**.414; **16**.374
आम्ही न देखों	तुका 786	**11**.227
आम्ही बिघडलों	तुका 863	*11.228*
आम्ही वैकुंठवासी	तुका 670	**10**.357; *11.211,228*
आम्ही हरीचे भूषावया-	ज्ञाने 9.362	**8**.226; **10**.214
आ यन्मा वेना	ऋसा 8.12.3	**1**.260; *12.22*
आयुः सत्त्वबलारोग्य	गी 17.8	*5.142; 6.238*
आयुष्य हे चि रत्न	राबो 36	**11**.395
आरंभीं कीर्तन करी	तुका 37	**11**.222
आरंभींच म्हणती देव	रामदास	**12**.285
आरंभीं देवाचें नांव	कुसा1 (फातिहा)	**8**.245; **13**.186
आरंभे तदनुध्यानं	कुसासू	**8**.220,222
आरोढुमिच्छेत्	सासू 25	**3**.293
आर्तत्राणाय	कालिदास	**12**.139; **18**.215
आर्या व्रता	ऋसा 10.8.6	**1**.267; *17.300;* **19**.381
आळसें दंभें भावें	तुका 475	**9**.167; *11.229*
आलस्यं हि मनुष्याणां	भर्तृहरि	**13**.209
आली उर्मी साहे	तुका 648	**11**.245
आवडीचा मंत्र	तुका 41	**11**.207
आवडीचें दान देतो	तुका 747	**4**.412; **10**.452; *11.228*
आवडे ज्या हरि	तुका 455	**11**.228,261
आवत प्रेमके डोल	मीराबाई	**14**.257
आवा चालिली पंढरपुरा	तुका 587	*11.228*

आ विबाध्या ऋसा 2.4.3 **1**.239
आविरकर् भुवनं ऋसा 7.6.7 **1**.154
आवृत्तिरसकृद् उपदेशात् ब्रसू 4.1.1 *2.494-95*
आ वो रुवण्यु ऋसा 1.19.5 **1**.235
आ शर्म पर्वतानां ऋग्वेद 8.31.10 **1**.306; **13**.231
आशीत्या नवत्या ऋसा 2.3.3 **1**.167
आश्चर्यवत् पश्यति गी 2.29 **19**.442
आश्चर्यो वक्ता कठ 31 **13**.108
आश्रममृगोऽयं कालिदास *12.138; 14.145;* **16**.91; *17.184*
आ सिंधोः आ परावतः ऋसा 10.21.2 **20**.41
आसीत मत्परः गी 2.61 **3**.423
आहारशुद्धौ सासू 97 **3**.301
आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः छां 120 *3.361;* **4**.481; *5.295;* **7**.314; **9**.228; **14**.181; **16**.375; **17**.343; **20**.336
आहे ऐसा देव तुका 800 *2.355; 11.228; 19.95;* **20**.258
इकदू जीभौ लख जपुजी 32 *9.431*
इच्छाद्वेषसमुत्थेन गी 7.27 *5.93*
इच्छिती तयांसी तुका 263 *11.218*
इट इज ईझियर ख्रिस्त 12.5.9 *8.193*
इट इज फिनिश्ड् ख्रिस्त 15.4.16 **8**.171
इट ब्लेसेथ हिम शेक्सपीयर **12**.218; **14**.418
इंडिया इज ए गॉड लिन यू टांग **5**.397
इति गुह्यतमं गी 15.20 **3**.167,456
इतिहासप्रदीपेन व्यास *12.103*
इत्तरै मीदिनिले भारतियार *11.494*
इत्येतदेकपुत्र छांदो 1.5.2 **2**.495
इत्येतदेकपुत्र ब्रसूभा 4.1.2 **2**.495
इदमद्य मया लब्धं गी 16.13 **17**.19
इदमित्थं कहि जाइ तुरा बाल 121 **6**.107
इदं च नास्ति **17**.235
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषाम् ऋसा 1.18.2 **4**.299
इदय कोविल् माणिक्क **11**.475
इदु अवन् तिरुवुरु कुरल *11.479*
इदे अंतरंग शुद्धि बसवेश्वर *11.501*
इन दि बिगिनिंग ख्रिस्त 18.1.1 **1**.117; *8.210*
इंद्र प्रतर्दन कौ 9-13 **1**.363
इंद्रं वृणानः ऋसा 10.17.8 **1**.272
इंद्रसाधारणस्तु वेद **8**.234
(इंद्र साधारणस्त्वम् – ऋसा 8.8.7)
इंद्राय इदं न मम **14**.448; **18**.98
इंद्राय तक्षकाय **3**.207; **12**.*121*,422; **18**.25,443; **19**.103,435
इंद्रियगण भूत प्राण नाघो 192 **9**.226
इंद्रियजय योसू 2.41 **7**.322-23
इंद्रियस्येंद्रियस्यार्थे गी 3.34 *5.52*
इंद्रियाणां तु सर्वेषां मनु 2.26 *14.426*
इंद्रियाणां हि गी 2.67 *3.383*
इंद्रियाणि परा गी 3.42 **3**.337
इंद्रियाणि प्रमाथीनि गी 2.60 **11**.389
इंद्रियाणि मनो गी 3.40 *3.365; 5.234*
इंद्रियानुचरं मनः प्रा 25 **3**.316
इंद्रियैरिन्द्रियार्थेषु भासा 11.6 *5.415*
इंद्रो अस्माँ ऋग्वेद 3.33.6 **1**.244
इंद्रो दधीचो ऋसा 1.13.6 **1**.164; **4**.241
इंद्रो मायाभिः ऋसा 6.6.16 **1**.252
इन्निशै माणिक्क **11**.474
इन्शा अल्लाह मुहम्मद पै. **6**.49; **8**.226,365; **15**.29
इप्पोळुदे मुक्ति **11**.494
इमा या गावः ऋसा 6.4.13 **1**.187; *15.399;* **18**.396; *20.364*
इमावेव गोतम बृह 37 *2.420*
इमे मे देवाः ऋसा 10.8.1 **14**.274

इयं वै पूषा	बृह 19	**2**.302
इलमुल् यकीन		**8**.374
इवन् अवन्	कुरल	**11**.479
इवलेंसें रोप	ज्ञाभ 103	**10**.184, *206;* **18**.451
इवळ् शेप्पुम् मोळि	भारतियार *6.12;*	**11**.497
इष्कृतिर् नाम	ऋसा 10.14.3	**1**.213
इहदिनस् सिरातल्	कुसा 1	**1**.296; *8.381*
इह मे सधस्थम्	ऋसा 10.8.1	**14**.274
इहैव तैर्जितः सर्गो	गी 5.19	**3**.235; **6**.7
ईभै बीठलु	नाम 296	**10**.313,321
ईशते देव एकः	श्वे 8	**2**.434; **8**.218
ईशावास्यं इदं सर्वम्	ईश 1	**1**.305; *2.278, 344;* **4**.176; *14.445;* **15**.119; **16**.9; **18**.28,81; **20**.137
ईश्वरः सर्वभूतानां	गी 18.61	**3**.378
ईश्वरप्रणिधानाद् वा	योसू 1.23	**3**.455; **4**.194,239; **7**.309-10
ईश्वरस्तु पर्जन्यवत्	ब्रसूभा 2.1.34	**5**.60; **10**.354
ईश्वरस्येव ज्ञानिनो	प्रा 36	**3**.316
ईश्वरे कर्तृताबुद्धि	यामुन मुनि	*4.420*
ईश्वरे तदधीनेषु	भासा 3.2	*5.388*
ईश्वरें मोठें सूत्र	राबो 390	*11.414*
ईश्वरो गुरुरात्मेति		**5**.384
ईश्वरोऽहमहम्	गी 16.14	*5.292;* **12**.311
ईस्वर अंस जीव	तुरा उत्तर 117	**20**.311
उक्ता ते उपनिषद्	केन 20	*2.370*
उगा च वणवण	राबो 445	**11**.397
उग्रं नोऽवः	ऋसा 6.4.10	**1**.252
उघडा मंत्र श्रीराम	दिनकर कवि	*11.414*
उजवे हातींचा पदार्थ	एकनाथ	**8**.189; *10.452*
उंच निंच कांहीं नेणे	तुका 755	**11**.251
उत त्वः पश्यन्	ऋसा 10.9.4	**13**.94; *20.359*
उतेमाहुर्नैषो	ऋसा 2.2.5	**1**.371
उत्क्रमिष्यत एवं भावात्	ब्रसू 1.4.21	**2**.479
उत्तमातें धरिजे	ज्ञाने 12.145	*10.217*
उत्तरोत्तर-सुलभ	प्रा 6	**3**.316
उत्थाय उत्थाय		**13**.302
उत्पतति आर्यः		**11**.390
उत्पत्ति-हेतु मी काम	गीताई 10.28	**13**.362
उत्प्रेक्षते पुनर्जन्म	विनोबा	**19**.35
उन्-बिंदुना कुशाग्रेन	गौड़पाद	**7**.321
उदंड उपासनेचीं	राबो 458	**11**.386
उदंड जाहालें पाणी	रा स्फुट 58.36	**11**.423
उदरनिमित्तम्		**12**.309
उदरभरण नोहे	वामन पंडित	**3**.193; **17**.20
उदाराः सर्व	गी 7.18	*5.92*
उदीर्ध्वं जीवो	ऋसा 1.18.7	*20.364*
उद्गीथाक्षराणि	छां 1	*1.331*
उद्धरेदात्मनात्मानं	गी 6.5	*3.56*,460; *5.78;* **11**.157; **14**.64; **16**.97; **19**.240,515
उद्धारासी काय	तुका 217	*11.229; 15.184; 17.429;* **18**.239,*286*
उद्योगाची धांव बैसली	तुका838	*3.47;* **13**.166
उद्योगिनं पुरुष		*18.92*
उद् वयं तमसस्परि	ऋसा 1.10.16	**1**.230,387
उन्मदिता मौनेयेन	ऋसा 10.20.9	**1**.274
उन्मार्गप्रवृत्ति निवारणं	शंकराचार्य	**4**.433
उपक्रमोपसंहारौ	पूर्वमीमांसा	*6.138*
उपद्रष्टानुमंता च	गी 13.22	*3.151; 5.119;* **12**.23
उपनिषदं भो ब्रूहीति		*2.370*
उपशांतोऽयमात्मा	उपनिषद	**1**.343; *2.356;* **10**.224

उपाये अधिको यत्नः तै भाष्य 1.11 **1**.134; **11**.165
उपासनोपदिष्टेयं कुसासू *8.225*
उपासा-त्रैविध्यात् ब्रसू 1.1.31 **4**.191
उपेंद्रो वामनः प्रांशुः विसना 17 **12**.136
उभयोर् विन्दते गी 5.4 *5.72*
उभा ता बस्त्रि नश्यतः ऋसा 1.19.4 **6**.127
उभारोनि बाहे, विठो तुका 691 **3**.149; **11**.229
उमा हैमवती केन 15–18 **1**.318
उंबरांतील कीटका तुका 817 *11.229*
उम्मतुकुम् उम्मतन् कुसा 194 **6**.367; *8.390; 19.18*
उम्मुल किताब **8**.376
उम्मुल कुरान *1.289;* **8**.402
उरलों उपकारापुरता तुका 857 **3**.407; **4**.70; **11**.200
उर्वश्यामभयं ऋसा 2.5.3 **1**.111,240
उलट भई मोरे नयनन मीराबाई *3.390;* **4**.60; *9.460*
उलटा नामु जपत तुरा अयो 194 **9**.188; **13**.311; **14**.89
उलहमेंगुम् भारतियार **11**.495
उळ्दुण्डु वाळ्वारे कुरल **1**.202; *11.480;* **12**.86
उळ्ळवरु शिवालयव बसवेश्वर *11.502*
उषा अजीगर् भुवनानि ऋसा 1.18.3 **1**.154
उषा वा अश्वस्य बृहद् 1.1.1 **2**.427
उष्ण पांघुरावें ज्ञाने 12.65 **10**.213
ऊधो! कर्मनकी गति सूरदास *9.461;* **16**.104
ऊनषोडशवर्षो मे रामो वारा बाल 20.1 *9.211; 17.217*
ऊरुणि नीर् कुरल *11.478*
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः विसना 102 *6.372*
ऊर्ध्वं गच्छन्ति गी 14.18 *5.287*
ऊर्ध्वं प्राणा हि मनु 2.45 *6.331*
ऊर्ध्वो नः ऋसा 1.9.1 **1**.228
ऋक् साम यजुरेव च **1**.277,322
ऋचं वाचं यजु 36.1 **1**.280,346
ऋचांनीं अर्चिती नमो 2 **12**.126
ऋचो अक्षरे परमे ऋसा 1.23.12 **1**.185-86,321; **2**.309; **12**.384
ऋजुनीति नो ऋग्वेद 1.90.1 **1**.306,357
ऋजुबुद्धेस्तु सासू 4 **3**.291
ऋतं च सत्यं ऋसा 10.24.7 **1**.217
ऋतस्य श्लोको ऋसा 4.2.6 **1**.247
ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः – **9**.401
ऋषयो दीर्घ-संध्यत्वात् मनु 4.46 **6**.147,*334;* **20**.185
ऋषिः पश्यन् अबोधत **12**.305
ऋषिभिः वसिष्ठादिभिः गीशांभा 13.4 **5**.207
ऋषिभिर् बहुधा गीतं गी 13.4 **1**.186; **10**.167
ऋषिं प्रसूतं श्वे 55 *2.441,490*
ऋषिर् दर्शनात् *1.158*
ऋषिर् द्रष्टा **15**.176
एक ॐकार सतिनामु जपुजी मंत्र **5**.146; **9**.428,438
एक अनेक विआपक नाम 295 **10**.321
एक एका साह्य करूं तुका 627 **2**.313; **11**.214,*230*,243
एक एवाद्वितीयश्च कुसासू *8.223*
एकः अनेकः विसना 78 **19**.92
एकः कृतार्थो **5**.246
एकः शब्दः सम्यक् पतंजलि **12**.27,41; **16**.259
एकचि सकळ तुका 399 **14**.482
एक त्राजवे सौ संसारी नमे *9.471*

एक बार प्रभु सुख तुरा अरण्य 14 *9.199*
एकमेकांस बोधिती गीताई 10.9 **13**.290
एकमेवाद्वितीयं छां 79 *2.435; 8.217;* **11**.172; *19.91;* **20**.138
एकं ब्रह्म च शून्यं च विनोबा **3**.431; *5.182;* **7**.111
एकं सद् विप्रा बहुधा ऋसा 1.23.16 **1**.142, 144,186,286,292,295,301; *2.315,436; 5.3,4;* **6**.64; **8**.402,*404; 9.1; 10.315;* **12**.443; **14**.476; **19**.92; **20**.138,337
एकं सांख्यं च गी 5.5 **3**.52; **11**.380
एकला चलो रवींद्रनाथ **12**.202; **13**.188,*430;* **15**.71,295; **19**.278
एकला चि जसा सूर्य गीताई 13.33 **13**.175
एकविध भाव अन्न 9 *14.313*
एक शेर अन्ना चाड तुका 526 **11**.230
एकस्यैव ममांशस्य भासा 11.4 *5.414*
एकही साधे सब सधे कबीर 5.404; *9.450;* **18**.146,392
एकाकी पौरुषं कुर्यात् **13**.249,422; **20**.384
एकाग्रतया सासू 26 **3**.293
एकाग्रं च समग्रं च सासू 59 **3**.297
एका जनार्दनी जनीं एक 246 **10**.337
एका देहाचे अवयव तुका 813 *11.230*
एकांत भकतसवे नाघो 180 *9.317*
एकांतिक अहिंसेत विगी 19 **12**.125
एका बोलिलें होय ज्ञानदेव **10**.170; **12**.64
एके ठायीं भल्या विगी 3 **12**.124
एकेन द्वाभ्यां श्वे 69 *2.443*
एकै पाथर कीजै नाम 298 *10.309*
एको चरे खग्ग बौद्ध साहित्य *7.120*
एको देवः सर्व श्वे 77 **2**.435; **8**.218
एको बहूनां यो श्वेता 6.13 **2**.435; **8**.218
एको हि रुद्रो श्वे 29 *2.435-36;* **8**.218
ए टाइप ऑफ दि वर्ड्स्वर्थ *3.232;* **10**.441; *12.214*
ए टुथ फॉर ए टुथ ख्रिस्त 4.4.1 *8.196*
एतत् (द्) अनुशासनं तैत्ति 7 **15**.273; **17**.229; **19**.331-32
एतदेव हि विज्ञानं भासा 19.5 *5.435*
एतद्देश-प्रसूतस्य मनु 2.10 *6.324;* **20**.37
एतद्बुद्ध्वा गी 15.20 **17**.36
एतद् वै परमं बृह 131 *2.426-27; 11.389;* **13**.26
एतां दिशं गंधाराः छां 93 *20.331*
एतावदरे खलु बृह 125 **11**.160
एतावदेवाहं एतत् प्रश्न 17 **11**.160
एतावानस्य महिमा ऋसा 10.13.3 **1**.211; *4.250;* **20**.359
एतावान् सर्ववेदार्थः भागवत **1**.127
एते पंचदशानर्था भासा 18.3 **18**.151
एतेषां पुरुषाणां कौ 15 *2.449*
एतो मतो हमारो विन 106 **9**.156
एथ अविद्यानाशु ज्ञाने 18.1243 **10**.153
एथ वडिल जें जें ज्ञाने 3.158 **4**.83; **10**.214
एनगु आणे पुरंदरदास **19**.189
एनस्वी सप्तकं जपेत् मनुस्मृति 11.255 **8**.222
एन्नुडैय अन्बे माणिक्क *11.475*
एन्बिलादान वेयिल् माणिक्क *11.476*
एप्पोरुळ् ऐत्तन कुरल *11.479*
ए प्रॉफेट इज नॉट ख्रिस्त 9.5.5 **8**.208
एमंत सामंत नाही उडिया भजन **13**.248
एमपेरुमान् पळ्ळि माणिक्क **11**.474
ए रसनो स्वाद नमे *2.393; 9.470*
एव्हवीं सोपें योगासारिखें ज्ञाने 6.363 **10**.182

एवं मनुः राजा अभवत्		**6**.322
एवं लोकं परं	भासा 4.3	*5.400*
एवं विरक्तः शयन	भासा 11.8	*5.416*
एवा रात्र्युषसे	ऋसा 1.18.2	**1**.154
एवा रे अमे एवा रे	नमे	**9**.472
एवा हि ते	ऋसा 1.2.6	**1**.225
एषः विशेषो विदुषाम्		**11**.241
एष गीता-शास्त्रस्य	गीशांभा 18.17	**4**.418
एष देवो विश्वकर्मा	श्वे 51	*1.340;* **2**.440
एष पंथाः		**15**.144
एष योगस्य	शंकराचार्य	**3**.265
एष सर्वेश्वरः	बृह 109	**2**.303
एष स्वयं-ज्योतिः	भासा 28.12	*5.479*
एष ह देवः प्रदिशो	श्वे 26	**2**.434; **8**.218
एष हि एव एनं	कौ 14	*2.449; 8.217*
एषा अस्य परमा	बृह 108	**2**.312
एषा दिवो दुहिता	सासू 88	**3**.301
एषा ब्राह्मी स्थितिः	गी2.72	*3.424;* **11**.172
एषो एव समृद्धिर्	छां 3	*1.334*
एषोऽस्य परमानंदः	बृह 108	*2.422;* **11**.158
एहु रस माधव	नाघो 500	**9**.222,360
ऐकाग्र्य-	योसू 2.41	**7**.319
ऐकिल्याविण कळेना	दास 7.8.19	**11**.423
ऐलीच थडी सरलें	ज्ञाने 7.97	**14**.296
ऐश्वर्य भोगर मदे	नाघो 227	*9.324*
ऐश्वर्यस्य समग्रस्य		**4**.470; **5**.307
ऐसा पुरुष तो पहावा	रामदास	**3**.200; *11.415*
ऐंसी अनवच्छित्र	ज्ञाने 2.298	**10**.213
ऐसे ऐसियानें	तुका 420	**10**.359
ऐसे कैसियानें	एक 151	**10**.359
ऐसें जिणें, जें	ज्ञाने 16.174	**4**.338; **10**.214
ऐसें जें कांहीं	ज्ञाने 18.1420	**10**.178
ऐसें भाग्य कई	तुका 270	*11.230*
ओरिजिनल सिन्		**8**.198
ओरे भीरु तोमार हाते	रवींद्रनाथ	*20.384*
ओ षु स्वसारः	ऋसा 3.3.11	**1**.245
औट हात तुझा जागा	तुका 526	**6**.12; **11**.231; **12**.301; **14**.467
और काहि माँगिये	विन 26	*9.151*
औषध मानूनि	अन्न 48	**5**.295; **6**.85; **14**.438
औषधं जाह्नवीतोयं		*12.400;* **13**.26; **19**.193
औषधवत् अशनमाचरेत्	आरुणिक।	*2.462;* **5**.295; **6**.85; **14**.438
कंसीं तूं कळवळलासी	मोरोपंत	**4**.32
कः किं यत्तत्	विसना 78	**6**.357
कछु बरनि न जाई	तुलसीदास	*9.151*,403
कटावरी ठेवूनि हात	ज्ञाभ 79	**11**.271
कटुक वचन मत	कबीर	**9**.147; **14**.361
कट्रारै यान् वेंडेन्	माणिक्क	*11.465*
कट्वम्ललवणात्युष्ण-	गी 17.9	*6.239*
कडलुम् मलैयुम्	भारतियार	**11**.496
कतनो अमोघ अपराध	नाघो 77	**9**.343
कतबा करिलो आया	नाघो 162	**9**.356
कत महादुखे पुण्य	नाघो 103	**8**.232; *9.311*
कथा पुराण ऐकतां	तुका596	*3.60; 11.231*
कनक-कांता न ये चित्ता	एक 45	**10**.340,*426*
कन्यापुत्रेंविण मंगल	तुका 256	*11.231*
कपिलः	विसना57,96	*6.373*
कबीरा खड़ा बाजारमें	कबीर	*9.448*
कं च तु खं च	छां 54	**1**.369
कर गुजरान गरीबीमें	कबीर	*9.450*
करणं च पृथग्विधम्	गी 18.14	**16**.363-64; **19**.292
करणें कां न करणें	ज्ञाने 12.118	*3.409;* *10.214*

करियो कृपा जेन	नाघो 178	**9**.225
करिष्ये वचनं तव	गी 18.73	**9**.306
करीं तुजसी		*3.100;* **11**.235
करीं मस्तक ठेंगणा	तुका 734	*1.320;* **11**.231
करीमा बबख्शा		**11**.401
करुणानिम्नं साम्य-	विनोबा	**7**.347
करूं भजन भोजन	तुका 143	**10**.436; **11**.232
करोति कर्म क्रियते	भासा 28.7	*5.473*
कर्ण-पथे भकतर	नाघो 190	*5.441; 9.321;* **17**.287
कर्तृत्वं कारकापेक्षं	शंकराचार्य	**14**.284
कर्मणां परिणामित्वात्	भासा 19.8	*5.439*
कर्मणा शुद्धिः		**3**.31
कर्मणैव हि संसिद्धि	गी 3.20	**1**.383; *5.227*
कर्मण्यकर्म यः	गी 4.18	**3**.232; *5.61,239;* **12**.215; **19**.243
कर्मण्येवाधिकारस्ते	गी 2.47	*3.393*,459; *5.31;* **7**.442; **12**.430
कर्मत बिश्वास जार	नाघो 182	*9.319,349*
कर्मभिः निःश्रेयसम्		**1**.383; *3.250*,284; **12**.411
कर्ममातृकमकर्म	सासू 17	**3**.*249*,251,292
कर्मयोग ओघे	ज्ञानदेव	**10**.215
कर्मयोगें सकळ	राबो 39	**11**.399
कर्मयोगोऽनंतफलः	सासू 11	**3**.291
कर्मण्यारभमाणानां	भासा 4.1	*5.398*
कर्मांत जो अनासक्त	गीताई 6.4	**13**.111
कर्मांत हि मोकळा	गीताई 4.14	**13**.304
कर्मातिशेषेण	छां 168	**17**.200
कर्मेति प्रतिष्ठा	केन 20	**1**.357
कलन्दु नडन्दु	माणिक्क	*11.475*
कळशवय्य	बसवेश्वर	**11**.502

कलीलागिं झाला	मश 124	*7.126;* **11**.270,*410*
कलौ खलु भविष्यन्ति	भासा 6.9	*5.482;* **9**.352; *16.201*
कलौ तत् हरिकीर्तनात्	भाग 12.3.52	*14.76*
कलौ दानं च नाम च		*9.120*
कलौ नर्मदा स्मृता		**12**.351
कलौ नास्त्येव नास्त्येव	नारद	**11**.179
कल्पविकल्प-शून्यः	शंकराचार्य	*15.453*
कल्याणकारी, शक्तिशाली	विनोबा	*18.284; 20.402*
कल्लु हिजबिग	कुसा	**8**.386
कविः क्रांतदर्शी		*1.263;* **12**.11,21; **17**.429
कवियिल् शिरन्दवन्		**11**.492
कष्टचि नाहीं तें	दास 11.10.20	**11**.394
कस्य नूनं	ऋसा 1.5.1	**1**.227; *12.292*
कहुं पट कहुं निषंग	तुरा अयो 240	**17**.162
कहेउँ नाम बड़	तुरा बाल 23	**9**.400
कहे कबीर सुनो	कबीर	**9**.448
कहे नानक पूरा पाया	नानक	**1**.261
कहें बिनु रहा न कोई	तुरा बाल 13	**20**.241
कां कमलकंदा	ज्ञाने 9.58	*10.215*
काक्कै कुरुवि	भारतियार	*11.496*
कांक्षन्तः कर्मणाम्	गी 4.12	**12**.400
काचे रे तांतणे रे	मीराबाई	*9.459; 15.170; 17.429; 18.272*
काजु कहा नरतनु	विन 126	**9**.163
कां जें यया मनाचें	ज्ञाने 6.420	**10**.215
काणि निलम् वेण्डुम्	भारतियार	*11.497*
कांडत्रयनिरूपिणी	ज्ञाने 18.1450	**4**.422; **10**.236
कांडात् कांडात्	नारा 7	**2**.454
कानडा हो विठ्ठल	ज्ञाभ 60	*10.202*

काम-कौतुकं	तुरा बाल 84	**5**.224; **14**.432
काम क्रोध अरु लोभ		**9**.9,438
काम क्रोध आड	तुका 861	**3**.39
काम क्रोध आम्हीं	तुका 139	*3.93; 11.232;* **12**.417
काम-क्रोध-मोह-	नाभसू 44	**3**.365
काम जानामि ते		**4**.147
काम नाहीं काम नाहीं	तुका 846	*17.370*
कामं दहन्ति कृतिनो	भागवत	*5.486; 19.511*
कामस्तदग्रे समवर्तत	ऋसा 10.19.4	**12**.308
कामात् कुतश्चित्	शंकराचार्य	**3**.355
कामात् क्रोधोऽभिजायते	गी 2.62	*10.456;* **18**.258
का मे जननी	गुबो 1.4.11	**11**.171
कामैस्तैस्तैर्	गी 7.20	*5.91*
काम्यते इति कामाः		**3**.397
काम्यं क्षम्यं	सासू 34	**3**.294
कायकवे कैलास	बसवेश्वर	*11.500*
काय झालें सांगों	तुका 828	**6**.126
काय तें करावें	एक 109	**10**.363
काय या जनाशीं	तुका 354	**2**.422; **11**.232
काय या संतांचें	तुका 425	**11**.232
का या वा	नारा 11	**2**.455
काया ही पंढरी	एक 223	**10**.454; **11**.214
कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्	भासा 2.4	*5.381*
कारुण्यासक्ति	सावृ 80.24	*3.270*
कां रे प्रेमें मातलासी	तुका 510	**3**.23; *11.233*
काल आत्माऽऽगमो	भासा 24.4	*5.463*
काल करे सो आज	आभ 92	*9.480;* **20**.241,244
कालक्षपणहेतवः		**6**.356
कालजारणं	नारा 32 (विनोबा)	

काल व्याल ज्यों	नानक	**6**.380
काळाचा जिरला वेग	नमो 9	**12**.127
कालात्म-युक्तानि	श्वे 3	**2**.434; **8**.218
काळी घोंगडी		**12**.270
कालोऽस्मि लोकक्षय	गी 11.32	**12**.336, *467;* **15**.392
का वै वरणा	जाबाल 2	*2.457*
काव्यं यशसेऽर्थकृते		*12.91*
काव्यं रसात्मकम्		**12**.32
काव्यशास्त्रविनोदेन	सुभाषित	**12**.372
काष्ठेव निष्ठा	सासू 106	**3**.302
कासया गुणदोष	तुका 325	**3**.61; **11**.233; **12**.269; **19**.365
कां सवंगाचि विकणें	ज्ञाने 18.881	**10**.173
कां साळीचा कणु म्हणे	ज्ञाने 18.1287	**13**.408
कांहीं गलबला कांहीं	राबो 455	*11.415; 13.184*
कांहीं पाठ केलीं	तुका 37	**11**.222
कांहीं मिळेना मिळेना	रामदासी वेचे 29	*11.415; 18.49*
काहू नहिं हरिभजन	विन 152	*9.140*
किएहुँ कुबेषु	तुरा बाल 7	**9**.152
किताबें डाल पानीमें	मन्सूर	*8.376,391*
किती प्रपंची जन	दास 19.8.2	**11**.428
किमत्र पश्यसि	छां 91	**6**.187
किमासीत	गी 2.54	**3**.423
किं कर्म किमकर्मेति	गी 4.16	**1**.353; **11**.179
किं कारणं ब्रह्म	श्वे 1	**2**.428
किं परपक्षनिराकरणेन	ब्रसूभा 2.2.1	*2.495*
किं प्रजया करिष्यामः	बृह 109	**2**.422; **11**.157
किंबहुना कृषी जिणें	ज्ञाने 18.881	**10**.173
किंबहुना तुमचें	ज्ञाने 18.1792	*10.154-55*
किं बालवत्	ब्रसूभा 3.4.50	**2**.481

किव सचिआरा	जपुजी ।	**9**.5,428
कीर्तन करी, कान धरी	नामदेव	**10**.318
कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां	गी 10.34	**16**.338; **17**.68; **20**.61
कीर्तिपरिहारेण	सावृ 80.25	*3.270*
कुकथा पाषंड संबाद	नाघो 411	**9**.350
कुक्कुटमिश्रपादः		**3**.297
कुटुंबे शुचौ देशे	छां 168	*2.413;* **4**.141; **19**.139
कुद्दूसु	कुरान	**6**.360
कुपुत्रो जायेत	गुबो 4.6.2	**11**.171; **17**.247
कुमुदिनी काय जाणे	तुका 326	**11**.244
कुरंग-मातंग-पतंग	शंकराचार्य	*6.230*
कुरु कर्मैव तस्मात्	गी 4.15	**2**.268
कुरैयाहि निरैयाहि	नम्मालवार	**11**.491
कुर्वन्तं हि ईश्वरः		**8**.217
कुर्वन्नेवेह कर्माणि	ईश 2	**1**.217,357; *2.280,346,481*
कुळ एकोतेर	नमे	**9**.469
कुलालचक्रवत्		**15**.162
कूर्मोऽगानीव	गी 2.58	*9.150*
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्	ऋसा 9.3.3	**1**.261; **17**.300
कृत-कारित-अनुमोदित	योसू 2.34	**7**.344
कृतं संपद्यते चरन्	वेद	**1**.306; **13**.387; **15**.68
कृतांत-कटकामल-	मोरो केका 41	**11**.455
कृत्स्नं न कामयेत्	सासू 55	**3**.297
कृपणाः फलहेतवः	गी 2.49	*12.399*
कृपणु ऐसा आनु नाहीं	ज्ञाने 18.1457	*10.141*
कृशं धमनिसंततं	धम्म 18.13	**4**.397; **7**.123
कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं	गी 18.44	**1**.187;

कृष्ण करुणामय	रैदास	*9.466*
कृष्ण-पाद-पद्म भैल	नाघो 286	**9**.330
कृष्णं वन्दे जगद्गुरुं	गीताध्यान	*5.493*
कृष्णर परम बल्लभ	नाघो 467	**9**.356
कृष्णसखयोश्च	सासू 64	**3**.298
कृष्णस्तु भगवान्		**9**.6
कृष्णांजनें झाले	तुका 835	**10**.184
क्लृप्त-केश-नख-श्मश्रुः	मनु 4.55	**2**.310
केतुं कृण्वन्न	ऋसा 1.2.3	**1**.224
केते आखहि आखणि	जपुजी 26	*9.431*
केनेषितं पतति	केन ।	**1**.347; *2.370;* **11**.163
केनेषितां वाचमिमां	केन ।	**5**.480
केला मातीचा	तुका 683	**3**.293
केलें ज्ञानदेवें गीते	ज्ञाने 18.1805	*10.157,159*
केलें महा खटाटोपें	गीताई 18.24	**13**.98
केल्यानें होत आहे	रा स्फुट 30.4	*11.415*
केवल भकति पुरुषक	नाघो 230	*9.324*
केवलाघो भवति	ऋसा 10.16.6	**4**.79
केशव! कहि न जाइ	विन 53	**2**.480; *9.137*
केशव तो नामा	नाम 275	**10**.365
केशवाय नमः	संध्या	**6**.353,381; **17**.93
केशवासी नामदेव	नाम 151	*10.318*
केषां अमोघ-वचनं	गुबो 2.2.6	*12.16; 14.491; 17.312*
केषु केषु च	गी 10.17	*5.263*
कैसे बोलों पंडिना	गोरखनाथ	**9**.9
कैसें येथें कैसें तेथें	तुका गाथा3281	**11**.265
को अद्धा वेद	ऋसा 10.19.6	**1**.215; **2**.480; **9**.137
कोउ कह सत्य	विन 53	**6**.119; **9**.19,137

कोठें कांहीं, एक आहे तुका 634 **11**.233
कोण नाहीं दक्ष तुका 353 **11**.233
कोणास कांहींच दास 19.6.11 **11**.386
कोणाही जिवाचा न तुका 813 **11**.233
को नु हासो किमानंदो धम्म 8.8 **7**.122
को नो मह्या ऋसा 1.5.1 **1**.337
को भवान् गी 11.31 **5**.494
कोरा कागज काली कबीर *9.449*
कोऽरुक् कोऽरुक् वाग्भट *6.26*
कोऽहम् **17**.187
को हि भगवत्-प्रियः गुबो 2.2.4 **5**.275
कोह्येवान्यात् तैत्ति 15 **1**.371
कौपीनवन्तः खलु गुबो 5.6.1 **10**.212; *13.133;* **18**.302
कौमारे आचरेत् भाग 7.6.1 **4**.182; *5.488;* **6**.43; **11**.379
क्रमेण प्रतिपत्तिः सासू 49 **3**.296
क्रिया कीर न साहे ज्ञाने 18.1151 **10**.157,362
क्रियायोगः योसू 2.1 **7**.308
क्रियावान् एषः मुंडक 39 **1**.357; *2.383;* **14**.75,384
क्रियाविशेषानपेक्षः सासू 45 **3**.296
क्रियोपरमे वीर्यवत्तरं सासू 103 *3.283, 288*,302;*14.118,125*.346;*19.318*
क्रिश्चॅनिटी इज नॉट **8**.180
क्रोधात् भवति संमोहः गी 2.63 **3**.*358*,365
क्लिष्ट-जीवितं च सासू 69 **3**.299
क्लेशः अधिकतरः गी 12.5 **3**.248
क्लेशः फलेन हि कालिदास *12.136, 211;* **15**.349
क्लेश-कर्म-विपाकाशयैः योसू 1.24 *19.93*
क्लैब्यं मा स्म गमः गी 2.3 **3**.459; *5.187*
क्वः स्वित् एकाकी वेद **15**.71; **19**.278
क्वचित् [illegible] [illegible] 13.7.11 **7**.393

क्षत्रस्य क्षत्रम् बृह 20 **2**.419
क्षमस्व भगवन् मोरो केका 37 **11**.433
क्षमा द्वंद्व-सहिष्णुता महा वन 313.88 **4**.286,339,488
क्षमा वीरस्य भूषणं सुभाषित **16**.332
क्षमाशस्त्रं करे यस्य वृद्धचाणक्यशतकं 3.30 **4**.490; **8**.191
क्षरं त्वविद्या श्वे 54 **2**.296
क्षिप्रं भवति धर्मात्मा गी 9.31 *3.350*
क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं गी 9.21 **3**.166; **16**.148
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं गी 2.3 **19**.426
क्षुद्रविषयेषु सावृ 27.9 **17**.364
क्षुद्व्याधिश्च गुबो 5.11.4 **2**.462; *3.236; 14.438*
क्षुरस्य धारा निशिता कठ 61 **2**.378; **3**.89; **5**.381
क्षेत्र-क्षेत्रज्ञयोर् ज्ञानं गी 13.2 *5.277*
खणं जाणइ महावीर *7.387*
खं ब्रह्म छां 53 **1**.368-69
खरें बोले तरी तुका 550 *11.234*
खरें शोधितां शोधितां मश 151 *9.160*
खल मंडलीं तुरा सुंदर 45 **4**.397
खातिमुन् नबीयुन् *8.396*
खुले नैन पहिचानौं कबीर **2**.430; **4**.69,224; **6**.365; **7**.395; **9**.6,445-46; **11**.262; **20**.283
ख्यापनेन अनुतापेन मनु 9.4 *6.337*
गई न निज-पर-बुद्धि विन 125 **9**.19,142
गगन में थाल नानक *9.432*
गगनविहारी सत्याची अत्र 9 **14**.313
गंगे गोदे यमुने **11**.396
गंगे च यमुने चैव **5**.264
गजबजा सांडिलिया ज्ञाने 18.1022 **10**.216; **13**.72

गणितं सहकारि	सासू 28	3.277,294; 20.276
गणेश नमूं तरी	नाम 108	10.315
गतं तदैव मे भयं	शंकराचार्य	6.207; 12.352
गतं न शोच्यम्		13.304
गताः कलाः	मुंडक 51	2.310
गतागतं कामकामा	गी 9.21	1.267
गफ्फार	कुरान	6.360
गमती मज ते	विनोबा	12.129
गमन गंभीर	नाघो 433	9.353
गंभीर तूं श्रीरामा	ज्ञाने 11.563	10.183
गरभबास दस मास	विन 103	9.140
गर्व-शून्य संतसवर	नाघो 101	9.310
गर्भे नु सन्	ऋसा 4.2.14	1.172,311
गहकारक दिट्ठो	धम्म 13.2	7.126
गाईची तृषा हरूं	ज्ञाने 12.147	10.216
गॉड अॅप्रूव्हज्	वर्ड्स्वर्थ	6.117; 12.216
गॉड इज लव्ह		7.87; 8.190
गॉड मेड द कंट्री		20.299
गॉड सेड लेट देअर	बाइबिल	5.145
गाणीं मी गाइलों	नाम 229	7.328; 10.318
गाती पुढें त्यांचें	तुका 37	11.222
गायत्रं प्रातःसवनं	छां 30	2.400
गायन्ति देवाः किल	शंकरदेव	9.328
गायन्ति यं सामगाः	आभ पृष्ठ 22	4.13
गारो भोट यवने	नाघो 297	9.224
गार्त्समदम्	–	1.165
गाव इव ग्रामं	ऋसा 10.21.18	1.189; 18.397; 20.23
गाँव गाँव अस होइ	तुरा अयो 122	9.153; 16.209; 17.386
गीता भागवत करिती	तुका 416	5.315; 11.234
गीता सुगीता कर्तव्या	गीता माहात्म्य	5.210
गीता हे सप्तशती	ज्ञाने 18.1666	10.217
गीते भवद्वेषिणीम्	गीताध्यान	20.138
गीर्वाणशब्द	मोरोपंत	11.432
गुड-भक्षण-जं सुखम्	गुबो 2.5.2	9.444; 11.246
गुण-दोष-दूषिर्	भासा 16.12	5.483; 11.168
गुण भोगूनि निर्गुण	गीताई 13.14	13.431
गुणाः सृजन्ति कर्माणि	भासा 24.1	5.461
गुणा गुणेषु	गी 3.28	6.30
गुणाधिकैः हि	गीशांभा उपो	5.194
गुणेषु चाविशत् चित्तं	भासा 13.2	5.427
गुणेष्वाविशते चेतो	भासा 13.1	5.426
गुप्त तें चि प्रगटवावें	राबो 111	10.202
गुंफिलीं कां मोकळीं	ज्ञाने 18.1740	11.278
गुरमुखि नादं	जपुजी 5	1.300; 9.377,428; 17.188
गुरु-उपदेश-लब्ध	नाघो 254	9.326
गुरु-कृपांजन पायो	एक 262	6.161
गुरुकृपास्नेहसलिलीं	ज्ञाने 13.398	10.453
गुरु केला साधन	एकनाथ	10.453
गुरु गुड़ दीया मीठा	कबीर	6.381; 15.92
गुरुदास्यें कृशु	ज्ञाने 13.443	10.217
गुरु बिन कौन बतावे	कबीर	10.358
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर् विष्णुः		9.377
गुरु-लिंग जंगम	ज्ञाभ 15	10.198
गुरोः कर्मातिशेषेण	छां 168	2.414; 17.13
गुह्यतमम्	गी 15.20	8.176
गूळ्हं ज्योतिः	ऋसा 7.6.10	1.105,255
गृहिणोपसंहारः	विनोबा (छां) 168	2.413; 19.139

गेटिंग ॲण्ड स्पेन्डिंग वर्ड्स्वर्थ **4**.482; **12**.216
गेयं गीता-नामसहस्त्रं गुबो 1.3.9 *5.210*; **6**.210,233,*354*; *15.76*; **19**.339
गेले मेले काय सांगाल ज्ञाभ 11 *10.135*
गोड तुझी चरण सेवा तुकाराम **3**.122
गोधनें राखोनि वर्तणें ज्ञाने 18.881 *10.173*
गोपांत गोप भासे मोरोपंत **10**.442; *11.453*
गोपिका त्या ताकटी तुका गाथा3281 **11**.264
गोपिकावल्लभं शंकराचार्य **6**.6
गोपीजनप्रिय द्रौपदी **17**.252
गोभक्तः विनोबा **19**.34
गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां ऋसा 10.6.3 **1**.188, 265; **10**.174; *18.377*; *19.161*
गोमान् अयम् पाणिनि **18**.387
गोमायुरेको ऋसा 7.8.6 **1**.174,256
गो विथ हिम ख्रिस्त 4.4.4 *8.188*
गोविंद गोविंद, मना तुका 61 **11**.205
गोविंदर प्रेम अमृतर नाघो 439 **9**.353
गोहितो गोपतिर् विसना 63 **18**.392
गौरव-स्वरूपयोर् प्रा 31 **3**.316
गौरसि वीर गव्यते ऋसा 6.6.6 **1**.252; **11**.218; **12**.386
ग्रामे इष्टापूर्ते छां 70 **2**.*402*,405
ग्रामे ग्रामे सभा मालवीयजी *16.206*; **18**.402,453
ग्रासांबुवृष्ट्या श्वे 64 **2**.442
ग्रीष्म इन्नु रंत्यो साम 6.4.2 **5**.245
ग्रेटेस्ट गुड ऑफ दि **15**.483; **18**.253
घट घटमें वह सांईं कबीर **4**.235; *6.231*; *9.147*,428,*447*; **12**.44
घड़ीऐ सबदु जपुजी 38 **12**.48
घर की चक्की कबीर *9.450*; **10**.310
घरा येवो पां स्वर्ग ज्ञाने 14.358 **3**.111; **10**.217
घूंघट का पट खोल कबीर **11**.223
घृतकुल्या मधुकुल्या वेद **4**.51
घृतं मे चक्षुः ऋसा 3.2.8 **12**.43
घृतस्य धारा अभि ऋसा 4.5.8 **3**.65
घृतात् परं मंडमिवाति श्वे 50 **2**.439
घेऊनी वामनरूप विनोबा **12**.*131*,419
घेणें देणें सुखचि ज्ञाने 12.16 **10**.165,171
घे रे घे रे नाम्या नाम 276 **10**.308
घोंटवीन लाळ तुका 87 *11.205*
घ्या रे भाई घ्या तुका 721 *6.171*; *11.234*
घ्यावी तरी घ्यावी तुका 161 **13**.21
चक्रिं विश्वानि ऋसा 1.2.7 **1**.225; *14.458*; *18.284*
चचाल वसुधा कृत्स्ना वारा बाल 21.4 **9**.212
चंचलं हि मनः गी 6.34 **11**.163
चतुरश्चिद् ददमानात् ऋसा 1.9.6 **1**.228
चतुर्विधा भजन्ते मां गी 7.16 **1**.385; **5**.92
चतुश्चत्वारिंशदक्षरा छां 31 **2**.400
चतुष्पर्वाण्युत्तरोत्तरं सासू 90 **3**.301
चत्वारि शृंगा ऋसा 4.5.6 **1**.112, 248,311; *3.94*; **13**.6; **20**.355
चंद्रमा मनसो जातः ऋसा 10.13.9 **1**.212, 309; **4**.199; **6**.389; **11**.167; *12.349*
चर-अचर ही सृष्टि विनोबा **12**.129
चराचर मायार कल्पित नाघो 24 **9**.226
चॅरिटी बिलीवेथ ख्रिस्त अ 28 *8.183*
चरैवेति चरैवेति ऐ ब्रा **1**.306; *5.276*; **7**.91; *12.207*; *13.256*; **15**.290,*501*; **20**.279,373
चर्मर निर्मित पानैजुड़ि नाघो 334 **9**.334
चलन कुपंथ तुरा बाल 12 **9**.98
चलता मुसाफिर दुखायल **15**.308

चातुर्वर्ण्यम्	बृह 17–19	**1**.365-66
चातुर्वर्ण्यं मया	गी 4.13	*5.237*
चारित्र्याणि परिपाल-		**7**.327
चाल केलासी मोकळा	तुका 489	*3.100; 11.235*
चाल घरा उभा राहें	तुका 188	*3.96*
चिंचेच्या पानावर	ज्ञानदेव	*10.157*
चिनयन्तः पर्वणापर्वणा	ऋसा 1.16.1	**1**.233; **15**.2
चित्त शुद्ध तरी	तुका 80	**10**.186; *11.235*
चित्तस्य परशरीरावेशः	योसू 3.38	*7.347*; **20**.404
चित्तीं नाम		**19**.407
चित्रकूटको चरित्र	विन 165	**9**.146
चित्रकूट गये हौं	विप 266	*9.146*
चित्रं देवानां	ऋसा 1.18.12	**1**.234
चित्रया धिया		**7**.445
चिदानंदरूपः शिवोऽहं	गुबो 5.7.1	**9**.3
चिंतनासी नलगे वेळ	तुका 713	**4**.412; *11.235*
चिंतनें चिंतनें	तुका 810	**2**.360; **9**.160; **13**.82
चिंता करितों विश्वाची	समर्थप्रताप 2.22	**11**.416
चेतनावर्गु आघवा	ज्ञाने 8.210	**4**.417; **10**.222
चेहरा भी चमक दिखलाता		**4**.41
चैतन्य-आदित्य हृदय	नाघो 431	*7.425*; **9**.352
चैतन्य-ईश्वर-आदित्य	नाघो 430	*9.352*
चोविसनामी सहस्रनामी	राबो 284	**6**.362; *11.416*
छंदसि बहुलं	सासू 5	*3.274,291*
छंदांसि यस्य पर्णाणि	गी 15.1	*3.177*
छिद्यन्ते सर्वसंशयाः	मुंडक 33	**1**.365
छोरिबेको महाराज	विन 161	**9**.155
जइं विश्व समस्त	विनोबा	**12**.128
जगद्रूपेण भासते		*2.321*
जगन्मिथ्या	शंकराचार्य	**12**.308
जगाचिये नेत्रीं	एक 21	**10**.339,442
जगाच्या कल्याणा	तुका 424	**19**.502
जगामधें जगमित्र	राबो 424	**11**.416
जंगलमां मंगल करी	नरसिंह मेहता	**9**.473; **13**.144
जज् नॉट्	ख्रिस्त 6.1.1	**8**.188; **9**.394; **20**.247
जडवत् लोके आचरेत्	मनु 2.55	*6.332*; **9**.335
जड़हिं बिबेक	विन 103	**9**.140
जत उग्र तप ज्ञान	नाघो 352	*9.341*
जत जीव-राशि फुरे	नाघो 287	*9.331*
जतन करावा		**13**.189
जतु पाहारा	जपुजी 38	**5**.258; **9**.431
जद्यपि मीन-पतंग	विन 38	**9**.167
जन-कृपानैष्ठुर्यम्	गुबो 5.11.4	**13**.351
जनको जनक इति		**4**.83
जनगणमन	रवींद्रनाथ	**12**.176
जनताघविप्लवः		**10**.430; **20**.25
जन ते चि जनार्दन	एक 45	**10**.337
जननी जन्मभूमिश्च	रामचंद्र	**6**.325; *9.176*; **11**.210; **17**.246
जननी तोमार करुण	रवींद्रनाथ	**9**.226
जन नोहे अवघा हा	एक 286	**10**.337
जन विजन झालें	तुका 839	**11**.247
जन-संगति वर्जावी	विगी 11	**12**.124
जनाचा लालची	राबो 414	**11**.384, 416; *15.413*
जनांत वनांत मनांत		**13**.411
जनार्दनें मज	एक 93	**10**.360
जनीं जनार्दन प्रत्यक्ष	एक 187	**10**.337
जनीं जनार्दन	एकनाथ	**10**.337-38
जनैः अर्च्यते		**10**.338

जन्म-मरणाची चिंता एक 4 10.455
जन्म-मृत्यु-जरा गी 13.8 5.253
जन्म हाचि विषम दास 3.1.10 *11.377*
जन्माद्यस्य यतः ब्रसू 1.1.2 4.297
जन्माद्यस्य यतो भागवत 5.316
जपतपादि साधनें तुका 317 11.244; 13.405; 19.505
जप्येनैव तु संसिद्ध्येत् मनु 2.36 *6.330*
जब चाहों तब खोलों 7.323-24
जय जय कृपामय नाघो 82 *9.308*
जय जय जगजननि विन 2 *9.133*
जय जय रघुवीर 11.404
जयांचिये लीलेमाजीं ज्ञानदेव 12.418
जयांची क्रिया ढाळेंढाळें ज्ञाने 15.287 *3.287*; 10.151
जयाचे मनीं आलस्य ज्ञाने 13.518 *10.217*
जयातें इंद्रियें ज्ञाने 6.368 10.182
जयापरतें आणिक ज्ञाने 6.368 5.199; 10.182
जयास वाटे सुख चि राबो 43 10.361; 11.378
जयासि श्रीराम रामदास 3.248
जरामरणमोक्ष गी 7.29 *5.253*
जरी देव नेऊनि एक 128 10.337
जरी मंत्रेंचि वैरी मरे ज्ञाने 4.222 10.186
जरी मी पतित नव्हतों तुका 247 *11.236*
जळो ते जाणीव तुका 658 11.222,253
जस काछिय तस तुरा अयो 127 9.156
जहं जहं डोलौं कबीर 7.396
जहँ तहँ देख धरें अयो 131 *9.156*; 14.177
जहि शत्रुं महाबाहो गी 3.43 1.228; *5.55*
जह्याम्यसून् व्रतकृशान् भागवत 10.52.43 *5.490*; 9.456
जाउं कहां तजि चरन विन 44 13.416
जागा परी निजला एक 253 4.313
जागिए रघुनाथ कुंवर तुलसीदास *3.99*; *9.157*; 13.227; 14.424; 19.395
जागु, जागु, जीव जड़ विन 19 *9.157*
जाणतें लेंकरूं तुका 310 3.203; 11.*236*,253
जाणोनि अंतर तुका 75 3.22; *11.215*
जाणोनि नेणतें करीं तुका 775 2.420; 7.442; *11.236-37*; 12.430
जातीचें वाणी मी तुका 222 *11.214*
जाना निष्ठि नाघो 351 9.341
जानामि धर्मं दुर्योधन 5.52; 12.123
जानिया भजियो भाई नाघो 500 9.360
जायमानो वै ब्राह्मणस् *11.395*
जाळीन सर्व मी पापें गीताई 18.66 13.408
जासों सब नातो विन 117 *1.302*
जिक्रुल्लाहु(हि) अकबर कुरान *3.443*; 8.*375*,401; 10.312; 14.337
जिजने एकांत चित्ते नाघो 390 *9.346*
जिजीविषेत् शतं ईश 2 2.347-48, 400; 20.362
जितं सर्वं जिते भासा 6.8 5.247,295; 20.237
जितांतरायस्य सासू 13 3.292
जितुकें कांहीं आपणासी राबो 463 *6.216*; *11.384,417*
जितेंद्रियस्य प्रा 19 3.316
जिन नैनों से नींद कमाल 13.91
जिन्ह कें रही भावना तुरा बाल 241 9.157
जिन्ह के श्रवन समुद्र तुरा अयो 128 *7.324*; *9.157*; 11.474; 14.430; 17.8
जिमि कुठार चंदन तुरा उत्तर 37 *9.158*
जिवलग जिव घेती रा करुणा 11.248, *417*; 13.263

जीभ फिरे मुख मांही	कबीर	6.392
जीव जीवांत घालावा	राबो 361	3.19; 11.199; 13.139
जीव दरिद्री असंख्यात	राबो 9	11.395
जीव देतां तरी	तुका73	*11.237*; 16.78
जीवनावेगळी मासोळी	तुका 146	11.210
जीवनेर मरणेर	रवींद्रनाथ	12.202
जीव विठ्ठल आत्मा	नाम 122	10.318
जीव सकल संतापके	विन 88	9.171
जीवाचें जीवन	तुका 772	6.363; 11.237
जीवान् नो अभि	ऋसा 8.8.11	1.259
जीवेत् ब्राह्मण-जीविकां	मनु 4.10	4.107
जीवो जीवस्य जीवनं		12.312
जे एकोत्तरेयाचिया	ज्ञाने 9.54	10.218
जे कां रंजले गांजले	तुका 429	11.*237*, 255; 17.370; 19.503
जें कांहीं करितो तें	तुका 398	11.237; 13.120
जे जनमे कलिकाल	तुरा बाल 12	*9.98,390*
जें जें आचरितो श्रेष्ठ	गीताई 3.21	6.391
जें जें बोला, तें तें साजे	तुका 634	6.235
जें जें बोले तैसा	एक 143	10.357
जें जें भेटे भूत	ज्ञाने 10.118	10.218
जे तुझ्याविखीं मूढ	ज्ञाने 17.4	10.219
जेथ जेथ संपत्ति	ज्ञाने 10.307	10.175
जेथें गीता कीर्तन	विनोबा	4.412
जेथें जातों तेथें	तुका 791	1.370; *11.237*; 13.254; 15.296; 19.502
जेथें जेथें मन	एक 195	*7.357*; 10.453
जेथें नाहीं नित्य श्रवण	राबो 184	*11.424*
जेथें नाहीं श्रवणस्वार्थ	राबो 185	5.441; 11.424
जेन केन बिधि दीन्हें	तुरा उत्तर 103	*9.175*;
जेवे शिष्यसवे महा	नाघो 256	*9.327*
जेव्हां द्राक्षीं दूध	ज्ञाने 15.592	10.219; 18.380
जेहि बांध्यो सोइ छोरै	विन 45	*9.158*
जै जै जगत-अधारा	रैदास	9.466-67
जैशी कारंज्याची कळा	तुका 554	*11.238*; 15.404; 19.444
जैसा वरणीय प्रभु	अवेस्ता	1.299; 8.416
जैसी नाव थडिये	ज्ञाने 2.349	*4.68*
जैसे पंडित बेद बिहीना	नानक	1.300; 9.434
जो अविद्याराती	ज्ञाने 16.2	10.228
जो घर फूंके आपना	कबीर	6.385
जो जाणेल भगवंत	राबो 107	4.32,424
जो जेहि कला कुसल	विन 100	9.159
जो जेहि भावहि	तुलसीदासजी	4.102
जो जो प्रयत्न	राभ 65	*11.393*
जोडोनियां धन	तुका 520	11.379
जोतिये सुडरे	माणिक्क	*11.469*
जो त्रिविधतापें पोळला	राबो 84	6.42; *11.417*
जो प्रेरी भूत-मात्रास	गीताई 18.46	13.438
जो सुख सुरपुर	विन 125	9.141
जौ राजु देहि	नाम 298	10.321
ज्ञातयः पर्युपासते	छां 94	*2.410*
ज्ञानदेवस्य विशिष्टा	प्रा 26	3.316
ज्ञानदेवा मौन	ज्ञाभ 26	10.183,*200*
ज्ञानबळें उपासना	राबो 139	10.362
ज्ञानं च लोके	महाभारत	*2.468*; 3.256; 12.122
ज्ञानं निर्ग्रंथं	सावृ 4.11	*2.463*
ज्ञानं वस्तुतंत्रम्	शंकराचार्य	*17.58*
ज्ञानं विशुद्धं विपुलं	भासा 19.1	*5.432*
ज्ञानं वृद्धोपसेवया	महावन 313.48	4.18; *5.502*; *12.108*; *17.173*
ज्ञानं समरसं	सासू 86	3.301

ज्ञानेन तु तदज्ञानं गी 5.16 **2**.290
ज्ञाने बा अज्ञाने नाघो 261 **9**.360
ज्ञानेश्वरीपाठीं एक (ज्ञाने 18. अंतिम 5) **10**.344
ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी गी 5.3 *5.243*
ज्ञेयं यत् तत् गी 13.12 *5.118*
ज्याचें जया ध्यान तुका 62 **6**.101
ज्या ज्या आम्हांपाशीं तुका 847 *6.369;* **10**.322; *11.238*
ज्यूज रिक्वायर ख्रिस्त 25.1.1 **8**.180
ज्येष्ठ आह चमसा ऋसा 4.3.1 **1**.247,385
ज्यों की त्यों धरि दीनी कबीर **3**.193; *14.443*
ज्योतिषां ज्योतिः मुंडक 34 **4**.299
ज्यों सर्करा मिलै विन 100 *9.159*
झंडा ऊंचा रहे झंडागीत **9**.196
झाला विचख्नु विगी 2 **12**.124
झालिया दर्शन करीन तुका 267 *3.174;* *11.238;* **13**.42; *17.354;* **20**.306
झालीं जीं जीं हि गीताई 7.26 **6**.389
झाली झडपणी तुका 4 *11.239*
झाली संध्या संदेह एक 286 **10**.428,*454*
झीनी झीनी बिनी कबीर *1.249;* **3**.96; **9**.3,*442-43;* **14**.443
टू हूम इट इज ईसा **19**.133
ट्री ऑफ नॉलेज **8**.212
ठाकला तो कांहीं तुका 37 **11**.223
ठाकुर तुम शरणाई नानक *9.434; 15.87*
ठावोचि झाला पंथु अमृ 9.34 *10.191*
डर्ट इज मॅटर **4**.24
डिबियामें काला नाग मीराबाई **9**.459
डिस्ट्रक्शन ऑफ डिफेन्सलेस **18**.260
ढालतरवारे गुंतले तुका 593 **11**.239
ढोल गवाँर सूद्र तुरा सुंदर 59 *9.111*
त इमे सत्याः छां 127 **4**.194,239,267,335; *6.173;* **7**.309,310, 339; **9**.376
तज्जलान् छां 29 **2**.399; **8**.216
तज्यो पिता प्रहलाद विन 106 **9**.156
तटस्थ नें ध्यान तुका 133 *1.194;* **11**.*239*,254,271
ततः किम् गुबो 2.1.1 **14**.32; **17**.17
ततः पुनः शांतोदितौ योसू 3.12 **15**.138
ततः प्रज्ञालाभः सासू 10 **3**.291
ततः शासनमुक्तिः सासू 71 **3**.233, *240*,243,299; *16.141*
ततः स्फोटः सासू 15 **3**.292
तत् चिंतनं गुबो 6.1.5 **14**.333; **17**.320
तत्तु सच्चित्सुखं प्रा 24 **3**.316
तत्तु समन्वयात् ब्रसू 1.1.4 *2.467*
तत्त्वज्ञानेन निगमनं प्रा 27 **3**.316
तत्त्वमसि छां 89 **2**.*328-29,* 333,407,*409;***3**.*145,237*,241,248,299, 420; **4**.131,206,301; **5**.296; **6**.6,89,132; **7**.444; **12**.50,308,421,424;**14**.287,345;**19**.21;**20**.152
तत्त्वान्यत्वाभ्यां ब्रसूभा 2.1.14 **2**.407
तत्पुरुषाय विद्महे **1**.385
तत्प्रसादात् परां शांतिं गी 18.62 **8**.395
तत् बुद्धयस्तदात्मानस् गी 5.17 **1**.387
तत्र तिष्ठामि नारद **9**.471
तत्र भागवतान् धर्मान् भासा 4.5 *5.403*
तत्र लक्ष्मीर् निहितो वेद **12**.29
तत्र श्रीर् विजयो विनोबा **14**.420
तत्-सत् – **1**.376
तत् सत्यमित्याचक्षते तैत्ति 14 *1.377*
तत्सदिति ऐसें एक 111 **10**.353
तत् सवितुर् वरेण्यम् ऋसा 3.6.7 **1**.171, 189,387; *7.423;* **19**.231
तत् सूर्यस्य देवत्वम् ऋसा 1.18.15

तदधिगमे उत्तर-	ब्रसू 4.1.13	*2.481*,**6**.87
तदपश्यत्	नारा 34	**2**.456
तदर्थं त्रिविधिः	सासू 95	**3**.301
तदर्थाविष्करणाय	गीशांभा उपो	*5.175, 192; 6.237*
तदहं भक्त्युपहृतम्	गी 9.26	**1**.361
तदा गन्तासि निर्वेदं	गी 2.52	**1**.138
तदा द्रष्टुः स्वरूपे	योसू 1.3	**3**.320, 455; **5**.38; **7**.309,329,402
तदुद्धाय तमेव	धम्म 4.26	**7**.122
तदुपर्यपि बादरायणः	ब्रसू 1.3.26	*2.478; 6.94*
तदेजति तन्नैजति	ईश 5	*2.286,354;* **4**.298
तदेतत् इति	कठ 86	*1.376*
तद् इदं गीताशास्त्रं	गीशांभा उपो	**5**.192
तद्गुणसारत्वात्	ब्रसू 2.3.29	**2**.282, 480; **4**.65
तद्धाम परमं मम	गी 8.21; 15.6	**1**.227
तद्धैतत्पश्यन्	ब्रसूभा 1.1.30	**4**.73
तद् ब्रह्म निष्कलमहं	गुबो 5.1.1	**19**.473
तद् ब्रह्मोपनिषत् परम्	श्वेता 14	*2.432*
तद्भावभावितः	सासू 38	**3**.295
तद् य इमे वीणायां	छां 10	*1.329;* **20**.358
तद्यथापि हिरण्यनिधिं	छां 128	*2.412*
तद् वचनादाम्नायस्य	वैशेषिक	**1**.134
तद्विज्ञानार्थं स	मुंडक 16	**6**.82
तद्विद्धि प्रणिपातेन	गी 4.34	*5.68,240; 14.109*
तद् विवरणे यत्नः	गीशांभा उपो	**5**.175,192; **6**.237
तद् विष्णोः परमं	ऋसा 1.4.5	**1**.226; **11**.173
तद् विष्णोः परमं	कठ 56	**1**.342
तनियोरुवनुक्कु	भारतियार	*11.494*
तनूरेव तन्वो	ऋसा 10.14.8	**19**.381
तनूस विटवी	त्रिगी 18	**12**.125
तंतुषु पटवत्	गीशांभा 7.7	**4**.170
तंद्रितं कुर्वतः	बुद्ध	*15.359*
तन् नम इत्युपासीत	तैत्ति 24	**12**.386
तप एव द्वितीयः	छां 23	**4**.171,433
तपः प्रभावाद्	श्वे 85	*2.444*
तपः श्रद्धे ये	मुंडक 15	*2.403-4*
तपः संन्यासमुच्यते		**4**.136
तपश्च स्वाध्याय	तैत्ति 5	**17**.11
तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व	तैत्ति 19	*2.394-95* **4**.336; **5**.406; **7**.275; **9**.149
तपसो वा अपि	मुंडक 48	**4**.336
तपस्तीर्थदान	यामुन मुनि	*4.422*
तपो दानं आर्जवं	छां 34	**7**.275
तपो ब्रह्मेति	तैत्ति 19	**4**.336
तपो विद्या च	मनु 10.28	**2**.296; *6.338*
तमेतं वेदानुवचनेन	बृह 109	**2**.422; *5.222;* **11**.152
तमेव शरणं गच्छ	गी 18.62	**8**.395; **11**.180; *19.431;* **20**.72
तं मा भगवान्	छां 96	**2**.327
तं विद्याद् दुःख-	गी 6.23	**7**.308
तयां ऐलीच थडी	ज्ञाने 7.97	**10**.219
तयाची क्रिया	ज्ञानदेव	*3.287*
तयांची विनय हेचि	ज्ञाने 9.226	**10**.141
तया ज्ञान हें अन्न	मशा 159	**11**.410
तया झोडितों दास	सरामा सुंदर20	**11**.417
तयातें ओळखावया	ज्ञाने 10.311	**10**.219; **19**.111
तयालागीं जीव	तुका 455	**11**.257
तया स सुकरः	सासू 83	**3**.300

तर्कं पठ कृषिं कुरु विद्यारण्य **19**.424
तर्कशास्त्र-महाब्याघ्री नाघो 214 *9.323*
तर्काप्रतिष्ठानात् ब्रसू 2.1.11 **15**.338
तऱ्ही अद्वैतीं भक्ति ज्ञाने 18.1151 **10**.157
तळमळी चित्त तुका 304 **10**.358
तळमळीं ... लाहीचिया तुका 99 **10**.358
तल्लितंड्रुलु भंगि पोतना *11.504; 15.47*
तवास्सौ बिल हक कुसा 238-39 *8.374*
तवेदिंद्राह ऋसा 8.9.13 **1**.260
तस्मात् त्वमुद्धवोत्सृज्य भासा 27.9 *5.468*
तस्मात् त्वं गी 3.41 *5.54*
तस्मात् न्यासमेषां नारा 26 *2.455*
तस्मात् ब्राह्मणः पांडित्यं बृह 56 *2.420*
तस्मात् य इह मनुष्याणां छां 101 *2.411*
तस्मात् सर्वेषु कालेषु गी 8.7 **2**.313; **3**.85,460; *5.100,188,257*
तस्मादुद्धव मा भुंक्ष्व भासा 22.6 *5.459*
तस्माद् गुरुं प्रपद्येत भासा 4.4 *5.401*
तस्माद्यस्य महाबाहो गी 2.68 *3.388*
तस्मान् मोक्षणमीहते विनोबा **19**.35
तस्मिन् विश्वमिदं छांदो 3.15.1 **1**.351
तस्य उत् इति नाम छां 6 **1**.387
तस्य कार्यं न गी 3.17 *5.227*
तस्य पुत्रा उपनिषद **10**.437
तस्य वाचकः प्रणवः योसू 1.27 **3**.455; **4**.194,239,364; *7.309-10*
(तस्य) वेदा अवेदाः बृह 102 **1**.107
तस्याभिध्यानात् श्वे 9 *2.428*
तस्याश्च शास्त्रीयो प्रा 29 **3**.316
तस्याहं सुलभः गी 8.14 **11**.165
तस्यै तपो दमः केन 20 *2.371*
ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा मुक्ताबाई **10**.348
तात परे दुखी नाहि नाघो 407 **9**.346
तातस्य कूपोऽयं *8.401*
ताप-त्रयेणाभिहतस्य भासा 19.2 *5.433*
तार आर काक भय नाघो 489 **9**.359
तार पाछे पाछे धान्त नामघोषा *1.303*
तार्किकांचा टाका संग तुका 667 *11.239*
ताला कुंजी हमें गुरु कबीर *7.324; 9.453;* **19**.399
ता वा एता भूतमात्रा कौ 13 *2.447*
तावान् अस्य महिमा छां 26 **9**.422
तितिक्षन्ते अभिशस्तिं ऋसा 3.3.1 **8**.174
तिथें मी पाहतों नित्य गीताई 18.78 **13**.203
तिन्नवरुम् पुलि भारतियार *2.431; 3.281; 11.496*
तिन्ह कहँ सुखद हास तुरा बाल 9 **9**.165
तिन्ह महँ प्रथम रेख तुरा बाल 12 **9**.99,390
तिन्ही लोक जेथूनि मश 179 *9.408;* **11**.410
तिरुवारूर तेरळहु **11**.487
तिलेषु तैलं श्वे 13 *2.432*
तिष्ठन्तमासीनमुत व्रजन्तं भासा 28.8 *5.475*
तिष्ठन्नपि निज-सदने गुबो 2.4.1 *6.214*
तीन शिरे सहा हात रामदास **13**.391
तीरथि नावा जपुजी 6 **15**.103
तीव्रसंवेगानां योसू 1.21 **7**.118,341
तुकडा शिळाहि खावा मोरोपंत **11**.454
तुका आकाशाएवढा तुका 857 **1**.172,364
तुका पंढरीसी गेला तुका 512 **11**.240
तुका म्हणे आतां तुका857 *3.407;* **10**.188
तुका म्हणे आम्हां, जन्म तुका 491 **11**.244
तुका म्हणे एका देहाचे तुका 813 *15.333*
तुका म्हणे ऐशा नरा तुकागाथा 755 *11.240*
तुका म्हणे काळांतरीं तुका 208 **11**.250
तुका म्हणे गर्भवासीं तुका 213 **11**.240
तुका म्हणे चवी आलें तुका 496 *3.98;* **5**.451; *11.240*

तुका म्हणे धन, आम्हां तुका 73 11.214, 242; 14.251,341; 16.78; 17.325;18.378
तुका म्हणे नेणें युक्तीची तुका 65 10.188
तुका म्हणे फार, थोडा तुका 734 11.242
तुका म्हणे भावाविण तुका गाथा 3281 11.265
तुका म्हणे मज आठवा तुका 90 11.243
तुका म्हणे मना पाहिजे तुका 674 11.243
तुका म्हणे माझी पुरवी तुका 270 11.243
तुका म्हणे ...माझें तोंड तुका 236 10.139
तुका म्हणे मुक्ति तुका 848 3.404; 11.293
तुका म्हणे सार धरीं तुकाराम 11.243
तुका म्हणे सोपें आहे तुका 492 3.295
तुज ऐसा कोणी न तुका 158 9.401; 11.186,243
तुज सगुण म्हणों ज्ञाभ 68 1.323
तुझें आहे तुजपाशीं तुका 12 11.244; 12.264; 18.460
तुझे थोर थोर, भक्त तुका 317 11.244; 19.505
तुझेया नामाची समाधि ज्ञाभ 18 10.199
तुझ्या तीरीं नीरीं मोरोपंत 6.62; 11.456
तुझ्या नामाचा महिमा तुका 491 9.228; 11.244
तुंजेतुंजे य उत्तरे ऋसा 1.2.5 1.224
तुन्बमे इयर्क्कैयेनुम् भारतियार 11.495
तुम कारन तप संयम आभ 86 3.170; 9.480
तुमची तलवार कां एक 75 10.454
तुम-से सुचि सुहृद विन 103 9.140
तुमि आमादेर पिता रवींद्रनाथ 6.369; 9.226
तुमि गुणनियंता माधवदेव 4.298
तुमि जाक पाला नाघो 130 9.313
तुमि नित्य निरंजन नाघो 75 9.308
तुमि पुन प्रभु सहज नाघो 132 9.314
तुरीयं त्रिकोणं सासू 107 3.302; 4.213
तुलसिदास कह चिद- विन 66 9.160
तुलसिदास यह अवसर विन 125 9.142
तुलसी कहूं न राम से तुरा बाल 29 5.496; 9.159
तुलसीके अवलंब विन 141 9.159
तुलसी तव तीर तीर विन 3 9.105,159; 19.516
तुलसी प्रभु सुभाव विन 145 9.17
तुल्यनिंदास्तुतिर् गी 12.19 5.276
तुल्यं तु सासू 60 3.298
तुल्यं तु दर्शनं ब्रसू 3.4.9 5.180
तुवां येथें यावें नाम 196 10.319
तुष्टिः पुष्टिः क्षुदपायो भासा 2.10 4.270
तुष्यन्ति च रमन्ति च गी 10.9 3.404; 15.153,403; 19.312,336
तुही तुही दादू 3.217
तूं कृष्ण मी रुक्मिणी नाम 144 10.321
तूं तो मी गा मी तो ज्ञाभ 145 2.481; 4.302; 6.107; 10.206
तू तो राम सुमर कबीर 9.449
तूप कासया घुसळावें ज्ञाने 10.314 10.219
तूं माउलीहून मायाळ तुका 51 11.217
तूं माझी माउली नाम 186 6.382
तूर्णं यतेत न पतेत् भासा 9.7 5.482; 6.43
तू ही एक मेरा 3.150
तृण तरु शिला नाघो 299 9.226
तृणादपि सुनीचेन चैतन्य 6.363; 9.474; 12.206; 20.304
तेज परी शीतळ ज्ञाने 16.115 10.220
तेजस्वि नावधीतमस्तु कठ शांतिमंत्र 17.21
तेडि आंडाय् माणिक्क 11.472
तेथ इंदुवंशविलासु ज्ञाने 18.1804 10.220
तेथ प्रियाची परम ज्ञाने 16.443

नें दिसे आम्हांस	तुका 774	10.135; 19.445
ते ध्यायिनः साततिकाः	धम्म 9.3	7.116
तेन एष पूर्णः	तैत्ति 13	2.305
तेन त्यक्तेन भुंजीथाः	ईश 1	2.318, 339, 345; 12.313,430; 14.180; 16.363; 18.105; 19.14,292
तेन् आहि अमुद	माणिक्क	11.466
तेनाहि अमुदाहि	नम्मालवार	11.490
तेन्नाड उडैय	माणिक्क	11.474
ते मेघाचियापरी	ज्ञाने 10.126	10.185
तेळ्ळेणं पोन्नूशल	माणिक्क	11.474
तेंवि उन्मत्तें जगें	ज्ञाने 12.166	10.140
तेषामहं समुद्धर्ता	गी 12.7	5.245, 269; 11.179; 14.64
तेषामादित्यवत्	गी 5.16	5.75
तेषामेवानुकंपार्थं	गी 10.11	7.117
तेषां सततयुक्तानां	गी 10.10	2.371; 7.117
ते समाधौ उपसर्गा	योसू 3.37	7.332, 334,337
ते हि नो दिवसा गताः	उरा 1.19	13.190
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो	गी 3.12	5.46.226
तैसी आत्मलाभें	ज्ञाने 15.287	10.151
तैसीं प्राप्तेंही पुरुषें	ज्ञाने 2.350	4.68; 5.473
तैसें तुज ठावें	तुका 326	11.244
तैसें तोडावया संदेह	ज्ञाने 16.118	10.171
तैसें सत्कर्माचे उपखे	ज्ञाने 9.306	10.153
तैस् तैर् अतुष्ट-हृदयः	भासा 9.6	5.482
तो एके ठायीं बैसला	तुकाराम	13.166
तो करी तेतुली पूजा	ज्ञाने 18.1181	6.88; 10.220
तोंडनुक्कु तोंडनुक्कु	नम्मालवार	11.489
तोंडर् तोंडर् तोंडर्	नम्मालवार	9.228
तौ ह यदूचतुः	बृह 54	1.380
त्यक्तकामस्तुष्टः	प्रा 4	3.316
त्यक्तसर्वपरिग्रहः	गी 4.21	5.64; 14.450; 16.395; 17.223
त्यक्तेन भुंजीथाः (तेन)	ईश 1	1.164; 2.339; 7.442; 20.26
त्यज धर्ममधर्मं च	महाभारत	11.160
त्याग न टके	निष्कुलानंद	2.458
त्यागप्रक्रिया	प्रा 5	3.316
त्यागात् शांतिः	गी 12.12	5.165
त्या गुप्त कल्पना	दास 19.8.18	11.417
त्यागेनैके अमृतत्वमानशुः	कैवल्य 3	2.463
त्यागें भोग माझ्या येतील	तुका 333	3.207; 11.244
त्याचें कर्तव्य	गीताई 3.17	19.337
त्याज्यं दोषवदित्येके	गी 18.3	5.150; 10.169
त्यातें चि सर्व-भावें	गीताई 18.62	13.366
त्यांस शीघ्र चि मी स्वयें	गीताई 12.7	6.393
त्या सौभद्रावरि	मोरोपंत	11.451
त्रयं एकत्र संयमः	योसू 3.4	12.466
त्रयाणां अपि	यामुन मुनि	4.422
त्रयाणां धूर्ताणां		15.366
त्रायते कामनास्वपि	प्रा 13	3.316
त्राहि, तिहूँ ताप	विन 109	9.167
त्रिः सप्त नामाघ्न्या	ऋसा 7.7.12	20.364
त्रिकर्मकृत् तरति	कठो 1.17	1.357
त्रिगुणातीत फिरत	आभ	19.472
त्रिधा बद्धो वृषभो	ऋसा 4.5.6	1.333
त्रिभुवन-विभव-हेतवे	भासा 3.9	5.396
त्रिभुवनाची चाड	तुकाराम	11.214
त्रिवृत्करण	छांदो अ 6	1.372
त्रीणि पदा वि चक्रमे	ऋसा 1.4.3	1.226,342
त्रैगुण्यविषयावेदाः	गी 2.45	10.141

त्वगास्थिमांसं प्रलयं	बुद्ध	13.104
त्वमेव माता च पिता		1.282; 6.382; 17.246; 19.82
त्वं त्राता तरणे	ऋसा 6.1.2	1.251
त्वं नो असि भारत	ऋसा 2.1.13	1.147,237
त्वं नो अस्या अमतेरुत	ऋसा 8.8.9	1.200; 17.182-83
त्वं नो गोपाः पथिकृद्	ऋसा 2.4.6	1.239
त्वं माता शतक्रतो	ऋसा 8.11.7	9.226; 20.359
त्वं स्त्री त्वं पुमानसि	श्वे 42	2.438; 11.183; 17.243
त्वयार्ध-मयार्धम्		12.309
त्वरेत कल्याणं	बुद्ध	15.310; 20.397
त्वां जनाः मम	ऋसा 10.6.2	1.204
थापिआ न जाइ	जपुजी 5	6.77
थोडा तरी परउपकार	तुका 734	11.420
थोडें आहे थोडें आहे	तुका 649	11.245
दंड जतिन्ह कर	तुरा उत्तर 22	9.160; 16.72
दंड मी दमवंतांचा	गीताई 10.38	14.265
दंडं धर्मं विदुर्बुधाः	मनु 7.41	6.254-55, 337; 16.60
दंड समान भयउ जस	तुरा बाल 17	9.196
दंडो दमयतामस्मि	गी 10.38	14.265
द द द	बृह 126–28	1.343
ददातु वीरं	ऋसा 2.5.18	1.168
ददामि बुद्धियोगं	गी 10.10	11.179; 14.267
दधि दुग्ध घृत	नाघो 185	9.228
दमेदमे सप्त	ऋसा 5.1.3	1.249
दंभं च लोभं च	विनोबा	4.265
दंभस्फीति भलत्या	तुका 208	11.250
दंभास लोभास	विनोबा	4.265
दया करणें जे पुत्रासी	तुका 429	9.451;
दयादक्ष नो साक्षिनें	मश 174	4.12; 9.426; 11.410
दया धरम का मूल	तुलसीदास	9.161, 430; 15.100
दया राखि धरम को	कबीर	9.451
दरिद्रान् भर कौंतेय	महाभारत	12.120; 18.296,298
दर्शयतश्चैवम्	ब्रसू 4.4.20	2.483
दशकं धर्म-लक्षणं	मनु 6.37	4.482
दशयंत्रा सोमाः	वेद	18.319; 20.359
दश वर्षाणि ताडयेत्	मनुस्मृति	6.328
दशानामेकं	ऋसा 10.4.10	1.264; 4.240
दशास्यां पुत्रान्	वेद	17.278; 20.360
दष्टं जनं संपनितं	भासा 19.3	5.433
दाउ शॅल नॉट स्टील	ख्रिस्त	12.37
दानं तवम् इरण्डुम्	कुरल	11.481
दानं भोगो नाशः	भर्तृहरि	15.43; 18.156
दानं संविभागः	गीशांभा 10.5	3.276; 5.138; 6.240; 12.52; 14.291; 15.44,57, 62,509; 18.97,295,298
दानं स्वधर्मो नियमो	भासा 23.5	5.460
दानात् देवः		15.89; 18.82
दाम्यत दत्त दयध्वं	बृह 126–28	2.424-25
दाय विल बी डन्	ख्रिस्त 5.2.6	8.166
दाय सोल लाइक	वर्ड्स्वर्थ	4.288; 12.216
दास डोंगरीं राहतो	राभ 18	11.420; 20.349
दास तुलसिहिं	विन 132	9.162
दास पाया नलवा	नाघो 85	9.308
दासर दास तान दास	नाघो 106	9.229,312
दास हुया तजु सेवा	नाघो 132	9.313
दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानंत-	भर्तृहरि	4.38
दि पुअर यू हॅव	ख्रिस्त 13.1.6	17.427
दि लास्ट शॅल बी	ख्रिस्त	8.186; 12.178

दिव्यं ददामि ते चक्षुः	गी 11.8	*10.180*
दि सम आफ दि	यूक्लिड	**1**.118
दिसामाजि कांहीं तरी	रामदास	**13**.158
दिसो परतत्त्व डोळां	ज्ञाने 13.1162	**6**.173
दीक्षा बरी मैत्री बरी	दास 19.6.17	**11**.386
दीन की त्रापु	तुलसीदासजी	**11**.434
दीन भंगी की	गांधीजी	**12**.386
दीन्हि मोहि सिख	तुरा अयो 71	**3**.132
दीप बानि नहिं टारन	तुरा अयो 59	**9**.190
(न)दीपस्यान्य दीपेच्छा	गुबो 7.1.9	**5**.479
दीपें दीपु लाविला	ज्ञाने 18.1422	**10**.179
दीर्घ तंतुषु पटवत्	शंकराचार्य	**5**.251
दुःखबांदवडी आहे	तुका 740	*11.245; 13.68*
दुःखमेव सर्वम्	योसू 2.15	**4**.224; **7**.343
दुःखेन साध्वी लभते	महाभारत	*12.119*
दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः	गी 2.56	*3.330*
दुःसंग सर्वथैव	नाभसू	**3**.365
दुःस्वप्न-नाशन इटो	नाघो 388	*9.345*
दुःस्वप्ने आतंके	रवींद्रनाथ	**7**.399
दुख जहां तहां पीर	मीराबाई	**19**.472
दुग्ध भैल महा गीतामृत	नाघो 304	*9.332*
दुग्धं गीतामृतं	गीतामाहात्म्य	**18**.399; **20**.301
दुडीवरी दुडी	तुका 205	**11**.246
दुरात्मसु चिन्त्यं तदेव	सासू 54	*2.431;* **3**.*281*,297
दुर्लभ चराचरीं सद्वासना	ज्ञाने 2.239	*10.221; 13.417*
दुर्लभं भारते जन्म		**12**.145,*333;* **19**.46;**20**.8,36
दुष्काळें आटिलें	तुका 37	**11**.221
दुहिता पंडिता जायते	ब्राह्मण-ग्रंथ	*6.232; 17.248*
दूरतः पर्वता रम्याः		**13**.207
दूरेदृशं गृहपतिम्	ऋसा 7.1.1	
दृढ विटे मन-मुळीं	ज्ञाभ 102	*10.206*
दृप्तो धर्मं अतिक्रामति		**4**.341
दृश्यते त्वग्र्यया	कठ 59	**4**.404
दृष्टं विनष्टमतिलोल-	भासा 13.6	**6**.198
दृष्टादृष्ट	ज्ञाने 18.1800	*10.221*
दृष्टार्था च विद्या	ब्रसूभा 3.4.38	**2**.492; **4**.407
दृष्टेः द्रष्टारम्	बृह 55	**8**.216,224
दृष्ट्वेदं मानुषं	गी 11.51	*5.112*
देअर इज ए टाइड	शेक्सपीयर	**12**.217
देअर इज नो रॉयल रोड	यूक्लिड	**5**.407; **18.70**
दे आल्सो सर्व	मिल्टन	**3**.242; *12.219*
देखण्याच्या तीन जाती	तुका687	*6.24;* **11**.246
देखे आपुलिया	ज्ञाने 5.85	**4**.134; **10**.232
देव आहे सुकाळ	तुका 802	**3**.113; **11**.246
देवकीनंदनः	विसना 106	*6.371*
देव घ्या कोणी	तुका 760	*11.246*
देव घ्या फुका	तुका 760	**11**.246
देव जोडे तरी करावा	तुका 547	**1**.328; **4**.371;*11.246;* **14**.158
देव देऊळ परिवारु	अमृ 9.43	*3.176;* **4**.256; *6.113;* **10**.*158,192*,354
देव नलगे देव	तुका 760	**11**.246
देव भक्तालागीं करूं	तुका 768	*11.247; 13.188*
देवर्षि-भूताप्त-नृणां	भासा 27.8	*5.468*
देव सारावे परते	तुका 636	*5.390; 11.247;* **12**.292
देवस्य पश्य काव्यं	ऋसा 10.7.6	**20**.364
देव होसी तरी	तुका 700	*11.247;* **17**.369
देवाचिये द्वारीं	ज्ञाभ 25	**10**.200
देवाची ते खूण	तुका 763	**11**.203

देवाच्या सख्यत्वासाठीं	राबो 58	11.418
देवाच्या संबंधें	तुका 743	11.247
देवानां ऋषीणां	बृह 16	2.467
देवानां प्रिय पशुः	उपनिषद	14.117
देवा वै मृत्योर्	छां 5	1.319
देवाश्चिन् ते	ऋसा 2.4.2	1.239
देवास आयन्	ऋसा 10.4.11	1.265
देवेभ्यः स्वाहा	नारायण 67.1	2.426
देशबंधश् चित्तस्य	योसू 3.1	1.339; 7.307,345
देशीकार लेणें	ज्ञाने 18.1805	10.157,159
देशे काले च पात्रे च	गी 17.20	3.93; 12.418,420; 19.192
देह आणि देहसंबंधें	तुका 642	3.19; 11.248
देह धन जन अर्थ	नाघो 464	9.223, 343,355
देहं च नश्वरं	भासा 13.8	5.483; 10.223
देहस्थोऽपि न देहस्थो	भासा 11.5	5.414
देह हा काळाचा	एक 4	10.455; 15.402; 19.337
देह हें काळाचें	तुका 522	4.237
देहावेगळी पूजा	राबो 409	10.233; 11.418; 19.18
देहि सतसंग	विन 13	9.18,162; 14.268
देहींचा अग्नि जरी	ज्ञाने 8.215	4.417; 10.221
देहीं वाढे जों जों	एक 72	10.349
देहे दुःख हें सूख	मश 10	20.94
देहेन स्वधर्मः	सासू 6	3.291
देहेंद्रियप्राणमनोधियां	भासा 3.5	5.393
दैवाधीने शरीरेऽस्मिन्	भासा 11.7	5.416
[illegible]		
दौडतो दिवशीं मासीं	नमो 8	12.127
दौर्मनस्य	योसू 1.31	7.317
द्यावाभूमी जनयन्	श्वे 30	2.435, 437; 8.218
द्यूतं छलयतामस्मि	गी 10.36	6.101
द्यौः शांतिरंतरिक्षं	वाज 36.17	1.350-51
द्रव्य पात्र विचारोन	तुका 616	11.266
द्रष्टव्यः श्रोतव्यो	बृह 118	12.444
द्रौपदीकी लाज राखी	मीराबाई	6.393
द्वारका पंढरी देव-यात्रा	एक 27	10.454
द्वाविमौ पुरुषौ	गी 15.16	5.131
द्वाविमौ वातौ वातः	ऋसा 10.21.2	1.274; 20.15
द्वा सुपर्णा सयुजा	ऋसा 1.23.8 (मुंडक 36)	1.236; 20.363
द्विःशरं नाभिसंधत्ते	वाल्मीकि	2.365; 4.242; 9.208
द्वितीयाद् वै भयं	बृह 11	2.418; 11.154
द्वितीयेन, तृतीयेन	उपनिषद	10.224
द्विपदश्चतुष्पदः	श्वे 47	2.439
द्विरूपं तु	सासू 18	3.252,292
द्विविधा निष्ठा	गी 3.3	1.385
द्वे वाव ब्रह्मणो	बृह 38	9.227
द्वे विद्ये वेदितव्ये	मुंडक 2	2.382; 17.14
द्वैत अद्वैत सरिसे	ज्ञानदेव	10.210; 12.57
द्वैत न मोडितां	ज्ञाने 18.1421	10.179
द्वैताद्वैत तेचि निकुंभ	ज्ञाने 1.17	10.209
द्वैताद्वैत-विवर्जिते	गुबो 7.8.2	6.8.231
द्वौ एतौ सूर्यमंडल		4.45
धकाधकीचा मामला	दास 19.10.22	11.418
धन कण घरोघरीं	तुका 357	6.330; 11.248
धनवंत आणि दयाळु	नाम 98	10.319
धन्य कलि-युग	नाघो 427	9.352
[illegible]		

धरूनि धीर बुद्धीनें गीताई 6.25 *13.140*
धर्मक जानोहो मइ नाघो 21 *9.306*
धर्मक्षेत्रे पटनाक्षेत्रे **15**.269
धर्मगुप् विसना 51 **5**.236;**6**.373
धर्म जागो निवृत्तीचा ज्ञाभ 150 **19**.250
धर्मनिष्ठा, सहिष्णुत्वं कुसासृ **8**.228
धर्म रक्षावयासाठीं तुका 377 **11**.180
धर्मलब्धं मितं महावीर **4**.143; *7.284*
धर्मवे जयवेंब पुरंदरदास *11.499*
धर्मस् तिष्ठति केवलः मनु 4.71 *5.400;* **6**.335
धर्मस्य तत्त्वं महाभारत वन **4**.235
धर्मस्य त्वरिता गतिः महाभारत *12.107;* **15**.347
धर्मस्य प्रभुरच्युतः **10**.366; **19**.41
धर्मादर्थश्च कामश्च महाभारत **12**.97,442; **14**.208
धर्मार्थकामाः सममेव *15.523-24*
धर्माविरुद्धो भूतेषु गी 7.11 **3**.326,329; *5.53;* **19**.137
धर्मे च अर्थे च **15**.453
धर्मोऽपि इह मुमुक्षो **12**.114
धर्मोऽयं सार्व-वर्णिकः भासा 17.1 **19**.159
धर्मो वृषः महाभारत **9**.385; *12.123*
धर्म्यामृतमिदं गी 12.20 **3**.298
धातु-साम्यं आरोग्यम् **16**.297
धारणात् धर्मः **5**.8; **12**.118; **19**.13
धार्मिकान् विदधन् छां 168 **19**.139
धावन् निमील्य वा भासा 2.3 **9**.340
धियो यो नः प्रचोदयात् ऋसा 3.6.7 **4**.404
धिस इज दि बेसिस **8**.189
धींग धरमध्वज तुरा बाल 12 **9**.390
धीमतां दरिद्राणां गीशांभा 6.42 **6**.220; **12**.85
धीमहि गायत्री मंत्र **14**.322
धुरू लेंकरूं बापुडें मश 117 **11**.390
धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं मनु 6.37 **4**.482; **5**.223; *6.327;* **14**.428; **19**.43
धृत्युत्साहसमन्वितः गी 18.26 *5.301;* **13**.237; **15**.289; **17**.311; **19**.309
धेनूनामस्मि कामधुक् गी 10.28 **1**.187
धोपट मार्गा सोडूं नको अनंतफंदी *3.57*
धौलु धरमु दइआ का जपुजी 16 **9**.429
ध्यानात् कर्म-फलत्यागः गी 12.12 *15.414; 19.80*
ध्यानानें पाहती कोणी गीताई 13.24 *13.124*
ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति गी 13.14 *1.375*
ध्यायतो विषयान् पुंसः गी 2.62 **3**.*354*, 365; *14.433*
ध्येयः सदा सवितृ **5**.217
ध्रुवतारे पर रहत अखा **19**.178
ध्वनिल आह्वान रवींद्रनाथ **12**.147

न अविद्वान् छां 72 **17**.5
न ऋते श्रांतस्य सख्याय ऋसा 4.3.3 **1**.194
न करीं शस्त्र धरी **4**.11
न कर्मणा न प्रजया कैवल्य 3 *2.463; 6.219*
न कर्मणामनारंभात् गी 3.4 *5.44;* **11**.387
न काका नाकाधीश्वर जगन्नाथ पंडित **19**.470
न काम-कर्म-बीजानां भासा 3.6 *5.394*
न किंकरो नायमृणी भास 27.8 **4**.405
न किंचिदपि चिंतयेत् गी 6.25 *3.59; 7.358*
न कुर्यान्न वदेत् भासा 11.14 *5.422*
न कृषि देवमातृका महाभारत **12**.107
नको गुंफों भोगीं तुका 714 **4**.368; **8**.184; *11.248-49;* **13**.277,432
नको पुनवेची मिरवणूक विनोबा **13**.429
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री विसना 47 **15**.404
नखशिख रुचिर तुलसीदास **9**.172
न गफलत से रहो आभ 149 **14**.341
न गृहं गृहमुच्यते **4**.470

न च मां योऽभ्यसूयति	गी 18.67	**9**.347
न च श्रेयोऽनुपश्यामि	गी 1.31	*5.185*
न जातु कामः कामानां	महाभारत	**12**.120
नट इव कपट	तुरा लंका 72	**9**.162
नटला विश्व-वेषें	विगी 16	**12**.124
न तत् कर्म येन	शंकराचार्य	**5**.51; **6**.228
न तत्र चक्षुर् गच्छति	केन 3	**2**.392; **11**.166
न तथा बध्यते	भासा 11.9	*5.417*
न तथारूपेण		**5**.435
न तद् अश्नाति	बृह 69	**1**.355
न तद् भासयते सूर्यो	गी 15.6	**11**.166; **12**.432
न तमंहो न दुरितं	ऋसा 2.4.5	**1**.239
न तस्य प्रतिमा अस्ति	श्वे 53	**1**.114; *2.440*
न त्वहं कामये राज्यं		**10**.169; *14.141*; **16**.18,89; **17**.399
न त्वहं तेषु ते मयि	गी 7.12	**1**.373
नदीमुखेन समुद्रमाविशत्	कालिदास	**4**.400
नदी वेगेन शुद्ध्यति		**3**.202
न देवा दंडमादाय	शंकराचार्य	*5.193*; *6.216*
न धरीं शस्त्र करीं मी		**10**.179
न नग्गचरिया	धम्म 18.14	**7**.123
न निकेते रमन्ति ते	धम्म 17.2	**7**.92
न नौ एतत् सजने	बृह 54	*1.379*
नन्रे शेयवाय्	माणिक्क	**11**.476
न पवतां जयातें	ज्ञाने 18.1419	**10**.178
न पापे प्रतिपापः		**14**.179
न प्राणेन नापाने	कठ 74	*2.378*
न बुद्धिभेदं जनयेत्	गी 3.26	*5.230*
नभासारिखें रूप	मश 197	**1**.370; **11**.411; **12**.439
न भूतो न भविष्यति		**18**.31
न भूमिः स्यात्	जैमिनी	*16.199*

नमः शांताय तेजसे	भर्तृहरि	*12.342*
नमः शिवाय		**4**.405
नमः सोमाय च	–	*1.333*
नमनीं न मनीं	विनोबा	**12**.128
नमयतीव गतिर्	भवभूति	**17**.9
न मरे यास्तव नेला	मोरोपंत	**11**.455; *17.66*
न मागे तयाची रमा	रामदास	**3**.27
न मा तमन्न श्रमन्नोत	ऋसा 2.5.16	**1**.241,341
न मां कर्माणि	गी 4.14	**2**.281
नमिला गजमुख	मोरोपंत	**6**.58
न मृगयाभिरतिः	रघुवंश 9.7	**9**.213; *12.135*
न मे पार्थास्ति	गी 3.22	**5**.498
न मे भक्तः प्रणश्यति	गी 9.31	**11**.179
न मे स्तेनो जनपदे	छां 72	*2.405*; **12**.179; *15.84*; **16**.33,83; *17.292*; **18**.82
नमो दाधार पृथिवीं	ऋसा 6.7.10	**20**.138
नमो नमः स्तेनानां	तैसं 4.5.3.1	**1**.279; **3**.115
नम्म कूडलसंगम	बसवेश्वर	*11.501*
नम्यो हो रेंगे क्यो	जापानी मंत्र	*7.128*; **11**.270-71
नम्र झाला भूतां	तुका 541	**10**.228; *11.249*; **12**.131; *13.441*
न म्हणे कोणासी		**12**.430
न यस्य जन्म-कर्मभ्यां	भासा 3.7	*5.394*
न यस्य स्वः पर इति	भासा 3.8	*5.395*
न यावज्जीवं कर्तव्यत्व-		**19**.514; **20**.266
न ये नेत्रां जळ	तुका 585	*11.249*; **12**.18
नये बोलों परि	तुका 37	**11**.220
न येषु जिह्ममनृतं	प्रश्नो 1.16	**1**.358
नरदेह हा स्वाधीन	राबो 19	**4**.314; **11**.419
नरदेहाचेनि साधनें		**3**.20

नराणां च नराधिपम् गी 10.27 12.440
न राहतयातें राहवी ज्ञाने 6.169 10.222; 14.269
नरो वा कुंजरो वा 15.252
नलगे द्यावा जीव तुका 529 11.249
न लगे मुक्ति धन तुका 213 11.250; 14.141; 15.404; 20.8
नव गयंदु रघुबीर तुरा अयो 51 9.162
नवजीवन रस ढाले रवींद्रनाथ 12.212; 15.377
नवतरं कल्याणतरं बृह 95 4.31; 15.378
नवद्वारे पुरे गी 5.13 17.147; 19.75
नव वर्षाणि पंच च वाराअयो 39.35 9.214
नववी माझी ओवी तुका 806 11.252
न वा उ ते ऋसा 10.3.2 1.264
न वा उ देवाः ऋसा 10.16.1 1.272
न विजानीमः केन 3 17.36
न विटे साधनीं विगी 20 12.125
न वित्तेन तर्पणीयः कठ 24 2.376; 12.313
न वृद्धाः सेविता महाभारत 4.17; 12.112
न वेगान् धारयेत् वाग्भट 3.300
नवैकादश पंच त्रीन् भासा 19.4 5.434
न वै देवा अश्नन्ति छांदो 3.10.1 2.415; 4.215; 9.422; 19.168
न वै सशरीरस्य छां 161 4.131
न वै सोम्य अस्मत् छां 78 2.407
न वै स्त्रैणानि ऋसा 10.14.1 1.270
नवोनवो भवति ऋसा 10.12.2 1.269; 7.387; 15.378
नव्हे पिंडज्ञानें मश 153 11.411
न शोभते ज्ञानं भागवत 4.409
न श्रेयः सततं तेजो महाभारत 4.489
नष्टो मोहः गी 18.73 3.363, 447; 5.305; 14.10
नसे तरी मनीं नसो तुका 208 4.94; 11.250; 12.409; 13.155
नसे राम तें धाम मश 44 13.95
न स्तुवीत न निंदेत भासा 11.13 5.422
न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति मनुस्मृति 9.3 6.326
न हन्ति, न हन्यते गी 2.19 5.23,215; 14.405
न हन् नफ्स 8.386; 20.113
न हन्यते गी 2.20 12.457
न हि कल्याणकृत् गी 6.40 3.67; 14.311
न हि ज्ञानेन सदृशं गी 4.38 12.485
न हि देहभृता शक्यं गी 18.11 2.281; 5.44
नहि मे अस्त्यघ्न्या ऋसा 8.12.9 1.261; 12.117
नहि वचनस्य ब्रसूशांभा 1.111; 5.466
न हि वरघाताय ब्रसूशांभा 4.1.2 6.173; 9.15
न हि वेरेन वेरानि धम्म 1.5 1.296; 7.88
न हि शशकविषाणं 17.31
न हि श्रुति शतमपि गीशांभा 18.66 1.137; 5.195; 6.217; 15.512
न हि सत्यात् परो 7.274
नह नु अक्रबु कुसा 33 5.195; 8.389
न ह्या लोकीं गीताई 6.40 19.381
नाइकणें तें कानचि ज्ञाने 14.209 4.313; 10.222
ना को बैरी नाहि नानक 5.421; 9.432-33
नातपस्कस्य आत्मज्ञाने मैत्रा 20 2.453
नात्मानं अवमन्येत मनु 4.40 4.316; 6.334; 13.282
नाथ गरीब-निवाज हैं विन86 9.163; 13.367
नाथ तवाहं न मामकीनस् गुबो 4.1.3 6.8
नानक पूरा पाया नानक 16.377

नाना मतें पाखंड	एक 142	*10.354*
नानाविधानि दिव्यानि	गी 11.5	**8**.225
नान्यः पंथा विद्यते	श्वे 35	**11**.388
नान्यदस्तीतिवादिनः	गी 2.42	*3.23*
नान् यार् एन उळ्ळम्	माणिक्क	*11.466*
नान्या स्पृहा रघुपते	तुरा सुंदर 2	**7**.434; **19**.378
नाप्नोति किल्बिषं	गी 4.21	**2**.376; *5.239*
नाप्नोति किल्बिषं	गी 18.47	**12**.313
नाभाव उपलब्धेः	ब्रसू 2.2.28	*19.44*
नाभिनंदति न द्वेष्टि	गी 2.57	**3**.423
नाभिनंदेत मरणं	मनु 6.14	**4**.70; *6.336;* **15**.401; **19**.336
नाम उधारे अमित	तुरा बाल 24	**9**.187,355; **19**.392
नामघोषगौरवें	ज्ञाने 9.203	**10**.172
नामदेव कीर्तन करी		**10**.307,319
नामदेवें केलें	तुका 42	*11.207*
नाम-धन दिया मोके	नाघो 85	**9**.308
नाम बरवें रूप बरवें	नाम 110	*10.307*
नामयाचें प्रेम	नाम275	**10**.240,307
नाम यार् कुम्	अप्पर स्वामी	*11.462*
नामरूप हारपो	ज्ञाने 13.198	**10**.199
नामामृत-गोडी वैष्णवां	ज्ञाभ 49	*3.201; 10.201*
नामा म्हणे ग्रंथ श्रेष्ठ	नाम 102	*2.488;* **10**.320
नामा म्हणे भेटी झाली	नाम 108	**10**.315
नामुत्र हि सहायार्थं	मनु 4.71	*6.335;* **19**.61
नामु राम को कलपतरु	तुरा बाल 26	*9.99*
नामूलं लिख्यते किंचित्	मल्लीनाथ	**4**.7,379
नाम्ना सादगुण्यं	सासू 99	**3**.*244–46*, 301; **14**.84
नायमात्मा प्रवचनेन	कठ 47	**2**.*377*,
नायं हन्ति न हन्यते	गी 2.19	**1**.343,355; **12**.332,495
नारदवत् स्थूला	प्रा 18	**3**.316
नारायण असे विश्वीं	राबो 371	**11**.403,*419*
नारायणः परोऽव्यक्तात्	गीशांभा उपो	**2**.320; **4**.421; **5**.193
नारायण करुणामय	गुबो 4.1.7	**6**.210; **7**.86; **9**.225; **12**.154
नारायणं नमस्कृत्य	महाभारत	**5**.21
नार्यमणं पुष्यति	ऋसा 10.16.6	**4**.241
नाविरतो दुश्चरितान्	कठ 48	**1**.358
नाविशेषात्	ब्रसू 3.4.13,14	*2.481*
नासदासीन्नो सदासीत्	ऋसा 10.19.1	**1**.215; *9.395*
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य	गी 2.66	*3.372*
नास्य पापं	कौषीतकि 3.1	**1**.354,363; **2**.477
नाहं अतः अदत्तं	कौ 8	*2.446*
नाहं जानामि केयूरे	वारा किष्किं6.22	*14.430*
नाहं तंतुं न वि	ऋसा 6.2.5	*20.357*
नाहं तं वेद	ऋसा 10.15.6	**1**.271
नाहं बिभेमि	प्रह्लाद, भागवत	**4**.242; *5.489;* **15**.483
नाहं वसामि वैकुंठे	भागवत	*5.486;* **11**.187; **12**.204
नाहं वेदैर् न तपसा	गी 11.53	**11**.152
नाहीं अधिकार	तुका 318	**11**.204
नाहीं गा श्रुतीपरौती	ज्ञाने 16.462	**10**.155, 224
नाहीं तयाविण	तुका 737	**11**.250
नाहीं देवापाशीं मोक्षाचें	तुका 56	*11.250; 13.81*
नाहीं देहाचा भरंवसा	दास 19.6.25	**11**.385
नाहीं पुराणाची प्रीति	तुका 610	*11.251*

निगम नीति कहुँ ते तुरा अयो 72 **9**.196
नि ग्रामासो अविक्षत ऋसा 10.18.9 **1**.273
निजगृहात् तूर्णम् गुबो 5.11.1 **13**.389
निज दास हुया सेवाक नाघो 150 **9**.313
निजों तरी जागे – **1**.341
नित सेवा नित कीर्तन नरसिंह मेहता **3**.456; **9**.470; **16**.316
नि ते नंसै ऋसा 3.3.12 **1**.171, 245; **19**.302
नित्यदा ह्यंग भासा 22.2 *5.455*
नित्यं जातं नित्यं गी 2.26 *5.216; 7.129*
नित्यशुद्धबुद्धमुक्त शंकराचार्य **9**.7
नित्यानित्यवस्तुविवेकः ब्रसूभा 1.1.1 **4**.407; **9**.146
नित्यार्तिदिन वित्तेन भासा 4.2 *5.399*
नित्यो नित्यानां कठ 85 *2.380*
निदिध्यासितव्यः बृह 118 **1**.384
निद्रा समाधि-स्थितिः गुबो 5.12.1 *3.264*; **4**.111; *7.397*; **13**.40
निधानं धर्माणां गंगालहरी *6.40*
निधि चाल सुखमा त्यागराज **8**.200; *11.503*; **16**.376
निन्दसि यज्ञविधेरहहः गीतगोविंद *7.126*
निंदा न करे केनी नरसिंह मेहता **9**.468; **14**.314,*492*; **16**.299
नि पर्वतस्य मूर्धनि ऋसा 7.6.1 **1**.255, 297; *6.85*
निमित्तमात्रं भव गी 11.33 *5.268; 12.429*
नियतं कुरु कर्म गी 3.8 **3**.460
नियोक नाथ जगाइ नाघो 97 **9**.*309*,345
निरंजन-वना गेलियें ज्ञाभ 142 **6**.77
निरपेक्षं मुनिं शांतं भासा 14.4 **10**.451
निरभउ निरवैरु जपुजी मंत्र
निरोधाचें मज न साहे तुका 382 **11**.251
निर्गुण नेलें संदेहानें राबो 349 **10**.363
निर्दोषं हि समं गी 5.19 *15.546*
निर्बलके बल राम सूरदास **9**.463; **20**.295
निर्ममो निरहंकारः गी 12.13 **3**.407; *5.273*
निर्माण चित्तान् योसू 4.4 *7.308*
निर्वाणं भेषजं विसना 62 **6**.357
निर्वाणीं गोविंद तुका 449 **11**.251
निर्विचार-वैशारद्ये योसू 1.47 *7.343*
निर्वैरः सर्वभूतेषु गी 11.55 **7**.101
निर्वैरता सुशीलत्वं विनोबा **7**.2
निवातस्थो दीपः गी 6.19 *5.81*
निवृत्ति गुरु माझा ज्ञाभ150 **10**.206; **20**.330
निश्चयाचें बळ रामदास **11**.388
नि षसाद धृतव्रतः ऋसा 1.6.10 **1**.156
निषेक-गर्भ-जन्मानि भासा 22.4 *5.458*
निष्काम निश्चळ तुका 715 **4**.296; *11.251*
निष्कामाश्चतुर्विधाः सासू 35 **3**.295
नीचन निदरि सो विन 165 **9**.146
नीट रेखा अहिंसेची विगी 8 **12**.124
नीये एल्लाम् अप्पर स्वामी *11.463*
नुसतें वैराग्य राबो 304 **11**.382
नूतन करे नूतन प्राते रवींद्रनाथ *2.421*; **5**.456
नृणामेको गम्यः शिवमहिम्न **15**.422
नृमेधः अतिथिपूजनं **4**.478
नेटके लिहितां येना रामदास **13**.94
नेति नेति **4**.244; **5**.118,144
नेमस्तपणें राजकारण दास 11.6.4 **11**.388
नेय्युणोम् पालुण्णोम् आंडाल **11**.460
नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति गी 2.40 **13**.406
नैको मुनिर् यस्य **9**.165; **18**.320
नैतान् विहाय कृपणान् भागवत 7.9.44 **1**.337; **5**.489; **9**.222; **11**.165; *17.263*

नैव वाचा न मनसा	कठ 95	**2**.392; **11**.166
नैव स्त्री न पुमानेषः	श्वे 63	**2**.438
नैषा तर्केण मतिरापनेया	कठ 33	*2.377;* **11**.179,188
नैष्कर्म्यमप्यच्युत-	भागवत	**11**.167,394
नोक्कुम् तिशैयेल्	भारतियार	**11**.497
नौमि नारायणं	विप 60	**7**.444; *9.148*
न्यासमेषां तपसां	नारा 26	*15.542;* **18**.172
न्यू कमांडमेंट	ख्रिस्त 20.2.2	**8**.176; **14**.358; **15**.333
न्यून तें पुरतें	ज्ञाने 1.80	*10.142*
पंसुकूलधरं	धम्म 18.13	**7**.123
पग घुंघरु बांध	मीराबाई	*9.457-58*
पंगुं लंघयते		**15**.345
पंच कृष्टीः	ऋसा 10.24.2	**1**.202; *3.259;* **12**.86
पंच जना मम	ऋसा 10.6.16	**1**.205
पंच परवाण	जपुजी 16	**19**.23
पंचमेऽहनि षष्ठे	महाभारत	**6**.26; **12**.119
पंचरत्न्यधिकरणं	प्राअ 4	**3**.316,372
पंचवृत्तिर् मनोवद्	ब्रसू 2.4.12	**5**.206
पंच सूना गृहस्थस्य	मनु 3.6	**4**.110
पटे पटत्वम्		**14**.360
पडतां रडतां घेई	गीताई	**13**.49
पडिलें द्वारकेचिये वाटे	ज्ञाने 18.369	**10**.222
पडिलें वळण इंद्रियां	तुका 133	*3.125*
पडै रुचि	कुरल	*11.479*
पंडिताः समदर्शिनः	गी 5.18	**3**.414; **11**.387; **20**.182
पंडिता गृहकार्य-	शंकराचार्य	**6**.232; **17**.248
पतन-अभ्युदय-बंधुर	रवींद्रनाथ	*12.147*
पतन्ति पितरो	गी 1.42	*5.213*
पतित पतित, परि मी	तुका 321	*11.251*
पत्युरसामंजस्यात्	ब्रसू 2.2.37	**20**.161
पत्रं पुष्पं फलं तोयं	गी 9.26	**2**.415; **3**.101,296; **5**.*104*,467; **10**.233; **11**.187; **13**.11; **15**.63; *19.18.168*
पथ आमारे शुधाय	रवींद्रनाथ	**15**.307
पथ की आमार	रवींद्रनाथ	**15**.308
पथां विसर्गे धरुणेषु	ऋसा 10.1.5	**1**.263, 299; **9**.383
पथिकृद् विचक्षणः	ऋसा 2.4.6	**1**.239; *17.185*
पथ्ये सति गदार्तस्य	आयुर्वेद	**6**.172; **18**.417
पदवीः कवीनां	ऋसा 9.5.8	**2**.291; **6**.187
पब्बतट्ठो व भुम्मट्ठे	धम्म 9.6	*1.297;* **6**.85; *7.121;* **12**.24
पमादो मच्चुनो पदं	धम्म 9.1	*3.158;* **6**.186
पर-उपकार सार	विन 126	*9.163*
परतंत्र प्रज्ञास्तु प्रायेण	शंकराचार्य	**6**.237; **15**.178; **16**.171
पर दुःखे उपकार करे	नमे	**9**.468
परदोष रेणुसम	तुलसीदास	**14**.93
परधन नव झाले	नमे	**9**.469
परपीडक तो	तुका गाथा 755	*11.217*,240
परपीडेवरी नसावें	राबो 278	**11**.385
परम आनंद-समुद्रे	नाघो 469	**9**.356
परम ईश्वर देव	नाघो 211	*9.323*
परम चतुर सिसि	नाघो 389	*9.345*
परम निर्मल बैकुंठ	नाघो 468	**9**.356
परमममृतं निर्मितवतः	शिवमहिम्न	**1**.302; **9**.351
परमं गुह्यं	गी 11.1	**3**.456
परमार्थे साधे सहज	एक 20	**10**.339

परस्परें उभारावें	राबो 345	*11.420; 13.410;* **19**.251;*20.349*
परस्य उद्धरणं	मैत्रा 18	**2**.453
परस्य दंडं नोद्यच्छेत्	मनु 4.61	*6.254*
परहित निरत	तुरा अयो 219	**9**.164
परहित बस जिन्ह के	तुरा अरण्य 31	*9.163;* **11**.484; **19**.462
परा... अपरा	मुंडक 2	**1**.320
परांचि खानि	कठ 63	*2.377;* **11**.390
परा दुःष्वप्न्यं सुव	ऋसा 5.5.12	**1**.251; **3**.157; **7**.399; **12**.212
पराधीन व्हावें	एकनाथ	*10.438*
पराधीन सपनेहुं	तुरा बाल 102	**18**.400; **19**.260
परा मे यन्ति धीतयः	ऋसा 1.6.16	**1**.181
परां शांतिः	गी 18.62	*5.303*
पराविया नारी	तुका521	**9**.469; **19**.138
परा हि मे विमन्यवः	ऋसा 1.6.4	**1**.180
परिणामाधिकरणं	प्राअ 3	**3**.316,354
परित्राणाय साधूनां	गी 4.8	*5.236;* **6**.390
परिपक्व-मानसानां	गुबो 7.4.6	*9.414*
परि फळपाकीं	ज्ञाने 15.592	**10**.219
परिभूः स्वयंभूः	ईश 8	**2**.482; **9**.377
परिव्राट् योगयुक्तः	ब्रसू 1.3.26–33	**4**.45
परि शीवें कां श्रीवल्लभें	अमृ 3.18	**10**.194
परिसें गे सुनेबाई	तुका 587	**11**.228
परी अंतरीं पाहिजे	मश 202	**3**.385
परी अंतरीं सज्जना	मश 8	**13**.382
पॅरेलल् लाईन्स		**6**.117
परेषु आत्मवत्	मैत्रायणि 18	*2.453*
परैः असंसर्गः	योसू 2.40	**7**.313
परोक्षप्रिया इव हि	ऐत 6	*1.316; 2.398; 9.209;* **12**.35;**14**.421
परोक्षवादो वेदोऽयं	भासा 21.2	*5.446*

पळ्ळि एळुच्चि	माणिक्क	**11**.474
पश्यति इति पशुः		**1**.263; **15**.505
पश्यन् उदासीनतया	गुबो 7.7.1	*7.411*
पश्यन्तो अंधं	ऋसा 1.20.5	**1**.235
पश्यन् शृण्वन्	गी 5.8	*5.50*
पश्येम शरदः शतं	ऋसा7.5.9	**1**.255; **20**.362
पहिली माझी ओवी	तुका 806	*11.252*
पहैवनुक्कु अरुळ्वाय्	भारतियार	*11.496*
पाछली खट घडी	नरसिंह मेहता	*14.184*
पाणियाचा मासा	एक 299	**10**.442
पाणियावरी मकरी	अमृ 10.17	**10**.195
पांडवानां धनंजयः	गी 10.37	*3.117*
पांडित्यं निर्विद्य	बृह 56	**1**.352; *2.481;* **11**.182
पात्तूण् पहिरन्दू	कुरल	**11**.479
पादोऽस्य विश्वा भूतानि	ऋसा 10.13.3	**5**.397; **11**.177; **12**.429
पानी बाढो नावमें	कबीर	*9.445; 16.204; 18.95,254*
पापयोनयः	गी 9.32	*5.203*
पापें पुण्यें हि	नमो 10	**12**.127
पापोऽहं पापकर्मा		**17**.33; **19**.398
पार्वतीपरमेश्वरौ	कालिदास	**12**.132
पाहतां या डोळां	ज्ञाभ 63	*10.203*
पाहें तिकडे बापमाय	तुका 839	**13**.416
पाहें पां दूध पवित्र	ज्ञाने 9.57	**10**.218
पिकलिया सेंद	तुका 853	*11.206; 13.136*
पिंडे वाय्वग्नि-संशुद्धे	भासा 27.1	*5.464*
पितरस्तासां केवलं	रघुवंश	**12**.137; **16**.118
पिता अपिता	बृह 102	**1**.*128,* 327; **2**.464
पिता नोऽसि पिता नो	वेद	**9**.226; **20**.359
पितामह म्हणे	विगी 1	**12**.123

पिरसवम्	माणिक्क	**11**.473
पिसें नेसलें कां नागवें	ज्ञाने 18.439	**3**.43; **10**.223; **13**.401
पुजूनि देवो पाहिजे	ज्ञाने 16.148	**10**.223
पुट ऑन द न्यू मॅन	ख्रिस्त 36.2.3	**2**.422; *8.195;* **14**.307
पुढें गेले त्यांचा शोधीत	तुका 497	**4**.103, 303; *11.252;* **13**.310
पुणर्चि उणर्चि	कुरल	**11**.484
पुंडलीकाचे भेटी	नाम 151	**6**.230; **11**.272
पुण्यस्य फलमिच्छन्ति		**11**.383
पुण्यें पोशिलीं असाधारणें	ज्ञाने 16.33	**4**.98; **10**.226
पुण्यो गंधः पृथिव्यां	गी 7.9	**3**.266; **12**.371
पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः	विसना 99	**7**.399; **12**.212
पुण्यो वै पुण्येन	बृह 54	**1**.380
पुत्रमनुशिष्टं	बृह 28	*2.419-20*
पुत्रशव (शोकु) संकल्पा	ज्ञाने 6.375	*10.223*
पुत्रादपि धनभाजां	गुबो 1.1.3	*6.231*
पुत्रेति तन्मयतया	भागवत	**12**.15
पुत्रोऽहं पृथिव्याः	अथर्व 12.1.12	**19**.46
पुनः समव्यद् विततं	ऋसा 2.8.4	**1**.165,241
पुनु पुनु नर-तनु	नाघो 162	*9.316*
पुमांश्चरति निस्पृहः	गी 2.71	**3**.423; **15**.502
पुमान् पुमांसं	ऋसा 6.9.9	**1**.253
पुरः आविशत्	बृह 2.5.18	**2**.305
पुरमेकादशद्वारम्	कठ 69	*19.75*
पुरिशयः	बृह 2.5.18	**2**.305
पुरीतति शेते	बृह 33	**2**.305
पुरुषकारात् भक्तिरभिन्ना	सासू 82	**3**.300; *14.63*
पुरुष-ख्याति	योसू 1.16	**7**.308
पूज्यता डोळां न	ज्ञाने 13.189	**10**.352
पूतात्मा परमात्मा च	विसना 2	*8.209*
पूरा प्रभु आराधिया	नानक	**9**.434
पूर्णं अदः पूर्णं इदं	ईश शांतिमंत्र	**18**.170
पूर्णमदः पूर्णमिदम्	ईश शांतिमंत्र	**2**.277, 315, *342*, 344; **5**.501; **14**.60; **16**.98, 377; *17.37*
पूर्णं इदम्	ईश शांतिमंत्र	**11**.397
पूर्णात् पूर्णं	ईश शांतिमंत्र	**17**.37
पूर्वः पूर्वो यजमानो	ऋसा 5.5.4	**1**.251
पूर्वजातिज्ञानं	योसू 3.18	*7.346*
पूर्वं औषत्	बृह 10	**2**.305
पूर्वं गृहीतं गुणकर्म	भासा 28.10	*5.477*
पूर्वेषां अपि गुरुः	योसू 1.26	**13**.313
पूषन्नेकर्षे यम सूर्य	ईश 16	*2.303, 337; 7.427*
पृच्छ इमं पांसुल-	पातंजल महाभाष्य	**4**.469
पृच्छामि त्वा परमन्तं	ऋग्वेद 1.164.34	**1**.184
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढ-	गी 2.7	*3.363*
पृथक्त्वेन तु	गी 18.21	*5.198*
पृथगात्मनः न किंचित्	शंकराचार्य	**1**.117
पृथिव्यां सर्व-मानवाः	मनु 2.10	**15**.154
पृश्न्याः पतरं चितयन्तं	ऋसा 2.1.5	**1**.237; *3.233*
पृष्ठेव तष्ट्यामयी	वेद	*17.137;* **20**.359
पेदै गुणं	माणिक्क	**11**.473
पैं अहितापासूनि काढिती	ज्ञाने 16.462	*1.99; 10.224*
पैं गुरुशिष्यांचिया	ज्ञाने 10.126	*10.185*
पैल तो गे काऊ	ज्ञाभ 90	**10**.205
पैं शून्य जैं दावावें	ज्ञाने 13.888	*10.224*
प्रकट पातकसम	तुलसीदास	**9**.98
प्र काव्यं उशनेव	ऋसा 9.5.10	**1**.177; **4**.248

प्रकृतेरेवमात्मानं भासा 22.5 *5.458*
प्रगट गुह्य बोले रामाजनार्दन *10.156,185*
प्रच्छन्न बौद्धः **12**.521
प्रजया न रत्या **12**.133
प्रजहाति यदा गी 2.55 **3**.323-24,397,405
प्रजानां विनयाधानात् कालिदास (रघुवंश) *9.198; 12.137; 15.479; 16.118;* **17.9**
प्रजायै गृहमेधिनाम् कालिदास **12**.133
प्रज्ञानं ब्रह्म ऐत 9 **2**.333; **3**.299; **6**.89; **12**.424
प्रज्ञावादांश्च गी 2.11 *5.186*
प्रणय-रशनया भासा 3.11 **12**.178
प्रणवः सर्ववेदेषु गी 7.8 **1**.277,322
प्रणवो धनुः मुंडक 28 **1**.319
प्रति गृभ्णीत मानवं ऋसा 10.8.2 **1**.208
प्रतिदिनं भिक्षौषधं गुबो 5.11.4 **14**.438
प्रतिपक्षभावनं योसू 2.33 **3**.445; *7.344,355*
प्रतिबध्नाति हि रघुवंश 1.7.9 **4.25**
प्रतिबोध-विदितं केन 13 *2.370*
प्रतिमा तो देव तुका 564 **11**.224
प्रतिषिध्य वेद **1**.127
प्रत्यक्षानुमाने ब्रसू 4.4.20 **2**.483,486
प्रत्यक्षावगमं गी 9.2 **3**.88,455
प्रथम पाउली ज्ञानदेव *19.11*
प्रपंच परमार्थ एकरूप एक 20 **10**.442
प्रपंच परमार्थ संपादीन तुका 709 **10**.357; *11.252*
प्रपंचीं पाहिजे राबो 273 **5**.434; **11**.420
प्र पर्वतानामुशती ऋसा 3.3.9 **1**.244
प्रभाते करदर्शनं सुभाषित **1**.207; *3.177*
प्रभाते मलदर्शनं विनोबा **7**.311
प्रमाण-प्रमेय-संशय न्यायसूत्र *2.340; 5.242*
प्रमाणं भवाब्धेरिदं शंकराचार्य *6.230*
प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन कठ 30 **2**.301
प्रयत्न-शैथिल्य- योसू 2.47 *7.347*
प्रयोजनवत्त्वात् सासू 3 **3**.290
प्रवाहपतितं कर्म (स्वभावनियतं कर्म) गी18.47 **15**.272
प्रवृत्तिनिरोधें निवृत्ति ज्ञानदेव **10**.224
प्रवृत्ती अथवा निवृत्ती दास 7.8.18 **11**.394
प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते गी 1.20 **5**.500
प्रशांतात्मा गी 6.14 *5.79*
प्रश्नाकारावलोकनं प्रा 41 **3**.316
प्रसन्नचेतसो ह्याशु गी 2.65 *3.369.* 371; *5.225; 7.320,354,378,445*
प्रसन्नतां या न तुरा अयो श्लो2 *3.367; 9.165*
प्रसादपरिणामः प्रा 20 **3**.316
प्रसादे सर्वदुःखानां गी 2.65 *3.368;* **6**.187
प्र ह षोडशं वर्षशतं छां 33 **2**.400
प्रह्लाद-नारद-पराशर भक्तमाला **4**.235, 240; **11**.271-72; **15**.482
प्रांशुलभ्ये फले रघुवंश **6**.363; **12**.136
प्राकृत-संस्कृत-मिश्रित मोरोपंत **11**.432
प्राक्कर्म प्रविलाप्यतां गुबो 5.11.5 **2**.481
प्राक्शरीर-विमोक्षणात् गी 5.23 *5.76, 243;* **11**.171
प्राज्ञाधिकरणं प्राअ 1 **3**.316-17
प्राणः प्रजानां – *1.151*
प्राण जाहुं बरु वचनु न तुरा अयो 28 **15**.387
प्राणदः विसना 8,35 **6**.372
प्राणं च हास्मै छांदो 4.10.5 **1**.369
प्राणश्रैष्ठ्यम् छां 60–68 **1**.335
प्राणाय स्वाहा छां 74 **2**.407; **4**.329; *14.436*

प्राणो ब्रह्म कं ब्रह्म छां 53 1.369,371
प्राणो ब्रह्मेति तैत्ति 20 2.395; 7.403,417; 12.480
प्रातःकाळीं उठावें दास 11.3.15 11.421
प्रातः स्मरामि हृदि गुबो 5.1.1 9.412
प्रातिभं, चेश्वरादेशो कुसासू 8.235
प्रात्यक्षिकी सासू 41 3.295
प्राधान्येन व्यपदेशः 4.359; 11.390; 12.176
प्राप्तं प्राप्तं उपासीत महाभारत 12.123; 18.311; 19.494
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे मनुस्मृति 6.329; 17.216; 19.201
प्राप्तेनापि पुरुषेण 5.473; 10.225
प्राप्तेंही पुरुषें (तैसीं) ज्ञाने 2.350 3.385; 10.225
प्रायेण देवमुनयः भागवत (प्रह्लाद) 7.9.44 5.489; 7.403; 12.316; 15.482
प्रायेण श्रीमतां लोके व्यास 12.120
प्रायेप्राये जिगीवांसः ऋसा 2.3.5 1.164, 324; 9.465
प्रारब्ध-कर्मणां वेदांत 19.442
प्रारब्ध क्रियमाण तुका 444 11.253
प्रियं उपासीत बृह 14,76 2.302,418
प्रियं ब्रह्म उपनिषद 11.193;12.454
प्रिवेन्शन इज बेटर – 1.213
प्रीति-प्रतीति जहाँ विन 140 9.143
प्रीयमाणाय गी 10.1 3.457
प्रेतस्य शरीरं छां 149 1.358
प्रेमनगरमें रहनि कबीर 9.453
प्रेमाची शिदोरी नाम 275 10.308
प्रेयः पुत्रात् बृह 14 12.158
फना फिल्लाह् 4.308; 8.404
फ मँय्यअ्मल् कुसा 381 8.391
फस्तबिकुल् खैरात कुसा 197 8.382
फांकलिया इंदीवरा ज्ञाने 13.362 10.225
फाकली पालवी नमो 5 12.126
फॉलो मी अॅण्ड ख्रिस्त 2.4.3 8.198
फुरा महंत सकले नामघोषा 9.310
फेडित पापताप ज्ञाने 16.199 10.216; 12.355
फेन्स इज ए टेम्पटेशन वॉशिंग्टन जॉर्ज 18.83
बक़ा बिल्लाह् 4.308; 8.404
बघति सगळे थेंबें थेंबें विनोबा 12.129
बंचक भगत तुरा बाल 12 9.99
बत्तिस भयऊ तुरा सुंदर 2 9.204
बद्धो मुक्त इति व्याख्या भासा 11.1 5.410
बंदौं राम-लखन विन 171 9.13; 19.355
बयरु न कर काहू सन तुरा उत्तर 20 9.153; 16.91,209; 17.386
बरनि न जाहिं तुरा अयो 57 9.130
बरबस राज सुतहि तुरा बाल 143 9.176
बरषा हिम मारुत तुलसीदास 9.165; 20.411
बरा देवा कुणबी तुका 336 11.220, 253; 12.323
बरें झालें देवा निघालें तुका 39 11.225
बरेपणें राजकारण दास 12.2.29 11.388
बरें फावे देवा तुका 580 11.255
बलं बलवतां चाहं गी 7.11 5.251; 9.200
बलं वाव विज्ञानाद् छां 103 19.155
बलवान् इंद्रियग्रामो मनु 2.49 11.390
बलि-पूजा चाहत नहीं विन 49 9.17
बश्शिरिस् साबिरीन् कुसा 157 8.383; 15.277
बसत गज गीध विन 132 9.162
बहिरंतश्च भूतानां गी 13.15 2.287,354
बहुजनसुखाय बुद्ध 6.20

बहुतां सुकृतांची जोडी ज्ञाभ 57 **3**.*104*,296
बहुप्रजा निर्ऋतिमा ऋसा 1.23.10 **1**.236; *18.261*
बहु भितों जाणपणा तुका 445 *3.203*; **10**.356; *11.253*
बहु मत मुनि बहु विन 105 *9.165*
बहु मेळवूनि बल्लव मोरोपंत **4**.12; **11**.456
बहु रोग वियोगन्हि तुरा उत्तर 14 *9.165*
बहुविध-प्रेरणैः सासू 12 **3**.292
बहूतां दिसां आपुली मश 201 **5**.381; *7.438*; **11**.279,*411*
बहूनां जन्मनामन्ते गी 7.19 **11**.158
बहूनि मे अकृता कर्त्वानि ऋसा 4.2.4 **1**.173, 247,364
बाइल मेली मुक्त झाली तुका 337 **3**.351; **11**.253; **19**.197
बा एकनाथा दयाळूंत मोरोपंत **10**.344; **11**.453
बाधकं तदप्यमर्यादं सासू 62 **3**.298
बानि बिसारनसील विन 6 **6**.363; **9**.166
बापजी पाप में कवण नमे (आभ 110) *3.215*; *9.471*
बापा, जया आथी ज्ञाने 16.455 **10**.226
बाबाजी आपुलें तुका 40 **9**.476; **11**.207
बालके करोक बहुमान नाघो 353 *9.342*
बालपणींच सर्वज्ञता ज्ञाने 6.453 *3.67*; **4**.98; **10**.*226*,343
बालवत् सासू 30 **3**.294
बालादपि सुभाषितं मनु **17**.463
बाळा दुधा कोण करितें तुका 524 **11**.233
बालोन्मत्त पिशाच शंकराचार्य **4**.126
बाहिरत संग नाघो 335 *19.178*
बाहिरे भितरे तुमि नाघो 64 **9**.307
बि गैरी हिसाब कुरान **14**.328
बिनु गुण कीते नानक **7**.369.423
बिनु सतसंग तुरा बाल 3 **19**.390
बिंदुदेवतादिवत् सासू 22 **3**.293
बिभेति अल्पश्रुतात् **1**.102,107; **13**.364
बिभ्रद् वपुः सकल-सुंदर भासा 31.1 *5.481*; **11**.188
बिषय-संबंध-सुख नाघो 199 **9**.322
बिष्णु-पादोदक गंगा नाघो 188 *9.320*
बिष्णुर सहस्र-नाम नाघो 349 **6**.13, 359; *9.340*
बिसर गई सब तात नानक *9.432*; **12**.188; **19**.497
बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् कुसा 1 **8**.246, 401; **9**.371
बीजं अव्ययम् गी 9.18 **15**.6
बी यी परफेक्ट बाइबिल **9**.394
बुडतयातें सकरुणु ज्ञाने 16.143 **10**.226
बुडतां हे जन तुका गाथा 2946 **11**.254
बुद्धं शरणं गच्छामि *3.130*,*246-47*; **4**.405; **5**.304,469; **7**.*107*,108,284; **8**.163,180,404; *16.400*
बुद्धि करावी स्वाधीन राभ 199 *7.415*; *11.421*; **14**.299
बुद्धिगुण-संबंधेन ब्रसूभा 2.3.29 **4**.65
बुद्धिग्राह्यं गी 6.21 **10**.182
बुद्धिनाशात् प्रणश्यति गी 2.63 **3**.360,372
बुद्धिं तु सारथिं कठ 52 *1.191*
बुद्धिस्तु मा गान् चाणक्य **3**.332; **5**.220
बुद्धीतें भ्रमु न गिळी ज्ञाने 8.209 **4**.417; **10**.221
बुद्धेः परतस्तु सः गी 3.42 *5.199*
बुद्धौ शरणं अन्विच्छ गी 2.49 **5**.199,*220*
बुद्ध्या एव इंद्रिय- गीशांभा 6.21 **5**.198

बूझत बूझत बूझै	विन 66	**9**.160; **13**.*141*,220:**14**.*56*.334
बूड्यो मृग-बारि	विन 19	**9**.18
बृहत् साम	ऋग्वेद 6.46.1	**4**.246
बृहत्साम तथा साम्नाम्	गी 10.35	*1.277*
बेअरेथ ऑल थिंग्ज	खिस्त 28.1.7	**19**.19
बेद कह्यो बुध	विन 117	*1.302*
बेदागम आदि करि	नाघो 344	*9.339*
बैकुंठ प्रकाशे हरि-नाम	नाघो 438	*9.353*
बैल तूं देवा भारवाही	तुका गाथा 1215	**6**.364,392; **11**.217,241
बैल तो चिरला	विगी 4	**12**.124
बोधयन्तः परस्परं	गी 10.9	**1**.219; *5.262;* **6**.92;**10**.169; **13**.291,353; **17**.320
बोधाईयो	एक 180	**11**.270
बोध्यं रामानुजयोर्	सासू 63	**3**.298
बोल बोलतां वाटे	तुका 446	*11.254*
बोलविसी तैसें	तुका 256	**11**.254; **14**.342
बोलाचीच कढी	तुका 567	**11**.254; **13**.239
बोलाची वालीफ	ज्ञाने 6.25	**10**.231
बोला बुद्धीसी (ही) अटक	ज्ञाने 18.1420	*7.436; 10.177; 19.376*
बोलावें सस्मित	मोरोपंत	**11**.456
बोले तैसा चाले	तुका 860	**10**.357; **19**.464
बौद्धावतारे		**7**.87,88,104; **19**.168
ब्यास निगदति	नाघो 340	*9.336*
ब्रवीषितुर्निरंकुशत्वात्	शंकराचार्य	**13**.225
ब्रह्मचर्यमहिंसा च	गी 17.14	*14.422;* **18**.380
ब्रह्मचर्यं अहिंसां च	आरुणि 1	*2.462*
ब्रह्मचर्यमेव तत्	छां 134	**5**.225
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक		**19**.515
ब्रह्मज्ञान नव्हे लेकराच्या	तुकाराम	**5**.178; *11.254*
ब्रह्मणस्पति	बृहदा 1.3.21	**1**.333,348
ब्रह्मणस्पते	ऋसा 2.4.7	**1**.239
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि	गी 5.10	**3**.460
ब्रह्म तं परादात्	बृह 119	**2**.424
ब्रह्म दाशा ब्रह्म दासा	तैसं 4.5.3.1	**3**.115; *14.330*
ब्रह्मनिर्वाणं	प्रा 43	**3**.316
ब्रह्मपरा ब्रह्मनिष्ठाः	प्रश्न 1	*2.327,382*
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा	गी 18.54	**7**.316
ब्रह्मभूत काया	तुका 87	**11**.155
ब्रह्मभूयाय कल्पते	गी 14.26	**7**.325
ब्रह्म वर्म ममांतरं	ऋसा 6.9.10	*1.254*
ब्रह्मवादिनो वदन्ति	श्वेता 1	*2.428*
ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे	गीता-संकल्पवाक्य	*5.10,163;* **7**.308
ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या	गुबो 7.3.1	**2**.331; **6**.6; **9**.413
ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः	विनोबा	**2**.369; **14**.399
ब्रह्मसूत्रपदैः	गी 13.4	*5.205; 10.230*
ब्रह्मात्मधीः		**11**.250
ब्रह्मा देवानां पदवीः	ऋसा 9.5.8	**1**.262; **12**.24
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविः	गी 4.24	**3**.460; **14**.209
ब्रह्मावलोकधिषणं	भासा 9.6	**8**.232; *14.4; 17.303*
ब्रह्मैव तेन	गी 4.24	*5.240*
ब्राह्मणपरिव्राजकन्याय		**3**.403
ब्राह्मणमंडळ्या	दास 19.6.14	**11**.386
ब्राह्मणस्य हि देहो		**5**.487
ब्राह्मणासो अतिरात्रे	ऋसा 7.8.7	**1**.256
ब्राह्मणु हिंडतां बरा	रा स्फुट 1.3	**11**.421

भक्तातें प्रतिबोधिलीस	गीताई-ध्यान	**4**.413
भक्तालागीं न बैसे	तुकाराम	**11**.*254*,271
भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः	गी 12.20	**11**.187
भक्तिः स्वतंत्रा	प्रा 12	**3**.316
भक्तिचेन योगें देव	राबो 1	**11**.384
भक्तिज्ञानाविरहित	एक 126	**10**.425
भक्तिपंथ बहु सोपा	तुका 691	**6**.138
भक्ति-प्रेमाविण ज्ञान	एक 217	**10**.454
भक्तिमान् मे प्रियो	गी 12.19	**11**.187
भक्तिमान् यः स मे	गी 12.17	**11**.187
भक्तियोगः पुरैवोक्तः	भासा 19.9	**5**.440
भक्तिरसं लब्ध्वा	सासू 33	**3**.294
भक्तिरेव गरीयसी	शंकराचार्य	**14**.321
भक्तिर् विरक्तिर्	भासा 2.11	**4**.270
भक्त्या मां अभिजानाति	गी 18.55	**9**.398
भक्त्यैव तु निस्तारः	सासू 81	**3**.*270*, 272,274,300
भगति सुतंत्र अवलंब	तुरा अरण्य 16	*3.329;* **9**.*166*,224
भगवतो विष्णोः	मैत्रा 16	*2.452*
भगवंत ईश्वरर गुण	नाघो 393	*9.346*
भगवंताचें, अधिष्ठान	राबो 482	**11**.394
भज गाविंदं	गुबो 1.1.1	**2**.471; **5**.424
भणे नरसैंयो	आभ 107	*9.472*
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम	ऋसा 1.14.5	**1**.232
भद्रं भद्रमिति	मनु 4.36	**11**.377
भयकृत् भयनाशनः	विसना 89	*19.94*
भयद्वेषिणी		**20**.138
भय बिनु होइ न	तुरा सुंदर 57	**19**.201
भयं द्वितीयाभिनिवेशतः	भासा 2.5	*5.383;* **11**.154
भयादस्याग्निस् तपति	कठ 76	**11**.172
भयानां भयम्		**19**.93
भयो भाई सावधान	माधवदेव	**3**.295

भलि भारत भूमि	तुलसीदासजी	*9.148;* **20**.9
भलुं थयुं भांगी जंजाळ	नमे	*9.473*
भलो जो है	विन 14	**9**.97
भव-जलाब्धिचा अंत	ज्ञाभ 79	**10**.204
भवदंघ्रि निरादर	तुरा उत्तर 14	**9**.165
भव दुस्तर घोर	विनोबा	**12**.128
भवभयमपहन्तुं	भासा 31.10	*5.481*
भवभयासि भडकाविलें	दास 5.9.41	**11**.395
भव-भाव-विरहितु	ज्ञाभ 63	**10**.203
भवभ्रमाचा आकार	तुका 857	**10**.188
भव-रोगासी ओखद	एक 104	**10**.455
भवानीशंकरौ वन्दे	तुरा बाल श्लोक2	**9**.166
भागलासी मायबापा	तुका 515	**10**.319
भानुबिंब	ज्ञाने 4.100	**10**.441
भायँ कुभायँ अनख	तुरा बाल 28	*9.167*
भारतनाडु पेरियनाडु	भारतियार	**20**.20
भारत भूमित	नाघो 278	**9**.230,*328*
भारत रत्नर द्वीप	नाघो 407	**9**.230,*349*
भारभृत् कथितः	विसना 91	**6**.364,*370;* **11**.241
भार्गवी वारुणी विद्या	तैत्ति 23	**4**.239
भाल कथा शुनि आछि	नाघो 145	**8**.223; **9**.*315*,326,349
भावना-केंद्रिता	प्रा 21	**3**.316
भावनापरिणतिः	प्रा 23	**3**.316
भावबळें कैसा झालासी	तुका 197	**4**.270; *11.254;* **13**.177
भावावस्थेयं	प्रा 32	**3**.316
भावें गावें गीत	तुका 734	**11**.222,*255*
भिक्षाचर्यं चरन्ति	बृह 109	**4**.26
भिक्षापात्र अवलंबणें	तुका 576	**11**.242;*14.341*
भिक्षा म्हणजे कामधेनु	दास 14.2.12	*11.402*
भिक्षौषधं भुज्यताम्	गुबो 5.11.4	*11.401;* **13**.170

भिया देयम्	तैत्ति 7	**16**.274
भीष्म-द्रोण-विदुर	सूरदास	**12**.111, 115; **17**.89
भुकेपुरतें अन्न	अन्न 89	*6.143*
भुगति गिआनु	जपुजी 29	**9**.430
भुंजते ते त्वघं	गी 3.13	**1**.214
भुवन-मनमोहिनी	रवींद्रनाथ	**15**.446
भुवनस्य पत्नीः	ऋसा 10.5.1	**20**.196
भुवनाकारम्		**14**.121
भूः भुवः स्वः	नारा 17	*2.455;* **4**.46
भूः भुवः स्वः	गायत्री मंत्र	**4**.218
भूत-दयां विस्तारय	गुबो 4.1.1	**6**.7,*221;* **7**.86; **12**.154
भूतप्रिय हितेहा च		*19.159*
भूतमात्रीं हरीविण	–	**1**.276,322
भूतस्य जातः	ऋसा 10.17.1	**2**.435; **19**.91
भूतानि यान्ति भूतेज्या	गी 9.25	**17**.107
भूतानुकूल्यं भजते		**19**.36
भूतां परस्परें पडो	ज्ञाने 18.1794	**10**.*172*,186
भूदानं च स्वाध्याय		**19**.338
भूय एव तपसा	प्रश्न 2	**2**.382
भूरिति वा ऋचः	तैत्ति 4	**1**.351
भूरिति वै प्राणः	तैत्तिरीय 5	**1**.351
भूर्भुवः सुवः	तैत्ति 4	**1**.350
भेटो कोणी येक नर	रा करुणा 163	**11**.403
भेदाचा मडघा	दास 5.9.39	**11**.395
भेदूनि अभेद	ज्ञाभ 120	**4**.256
भेदो वैरं अविश्वासः	भासा 18.2	**18**.151
भैक्षचर्यं चरन्तः		*14.328*
भैलोहो स्वतंत्र	नाघो 130	**9**.306
भोग करिबाक	नाघो 353	**9**.324
भोग द्यावे देवा	तुका 680	**11**.212,255
भोग मे योगत्तिन्	कुरल	*11.485*

भौतिकं चित्तम्		**18**.35
भ्रम हा भोंवरा	नाम 26	**13**.185
भ्राजिष्णुः	विसना 16	**6**.372
भ्रामयन् सर्वभूतानि	गी 18.61	**2**.449; **8**.217
भ्रुवोर् मध्ये प्राण	गी 8.10	**7**.340
मइ मंदमति भैलो	नाघो 151	**9**.228
मऊ मेणाहून आम्ही	तुका 392	**12**.302; *13.154*
मग तया सुखा	तुका 270	**3**.77
मग समुद्रापैलीकडील	ज्ञाने 6.269	**10**.227
मग सांवळा सकंकणु	ज्ञाने 18.1418	*10.178*
मंगलं भगवान् विष्णुः		**5**.144; **6**.379
मंगळावांचूनि उमटेना	तुका 399	*11.256;* **13**.131
मच्चित्ता मद्गतप्राणा	गी 10.9	**14**.282
मज पामरा हें काय	तुका 65	*10.188*
मढें झांकूनियां	तुका 707	*11.256*
मतामतांचा गलबला	राबो 266	**11**.421
मत्कथा-श्रवणे श्रद्धा	भासा 27.4	*5.466*
मत्कर्मकृन्मत्परमो	गी 11.55	**3**.*123*, 297,460; *5.194; 6.238;* **10**.181
मत्कर्मादौ तात्पर्यं	सासू 58	**3**.297
मत्प्रसादात् तरिष्यसि	गी 18.58	**11**.179
मदधीनं कर्मिणां	गीशांभा अ15 उपोद्घात	**5**.193
मदपराधानुगुणं ईश्वर-	रामानुज	*6.248*
मदर्थेष्वंगचेष्टा च	भासा 19.12	*5.442*
मदालस्य हा सर्व	मश 70	**11**.411
मदिरा-मांस मिष्टान्नें	विगी 14	**12**.124
मद्भक्तः	गी 13.18	**3**.456
मद्भावम्	गी 14.19	**9**.20
मद्रेषु अवसाम	बृह 57	*2.421*
मधु वाता ऋतायते	ऋसा 1.14.8	**6**.383
मधुसूदन	विसना 8	*10.366*

मन लागो मेरो यार	कबीर	**9**.454
मनवाचातीत तुझें	तुका 157	**8**.218; **9**.398; *11.166,257*
मनसः ईष्टे इति मनीषी		*2.292*
मनसः समाधिः	भासा 23.5	**3**.236; **15**.532
मनसा वाचा हस्ताभ्यां	नारा 12	**2**.455
मना गूज रे तूज हें	मश 202	**3**.385; *11.411*
मनाचें मोहन	ज्ञाभ 147	**10**.204
मना, सज्जना	मश 2	**11**.401; **17**.93
मना सत्य तें सत्य	मश 19	**1**.365; **11**.412
मनि जीतै जगु जीतु	जपुजी 28	**9**.431
मनुज करितो कर्मे	विनोबा	**12**.129
मनुर् वै यत्किंचित्		*6.252,326*
मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं	गुबो 11.1.1	**14**.28; *17.376*
मनुष्य-योनिर कर्मे	नाघो 161	*9.316*
मनुष्याणां सहस्रेषु	गी 7.3	*2.414*; **19**.137,471
मनुष्याधिकारत्वात्		**4**.46
मनो-गतिं न विसृजेत्	भासा 20.10	**4**.142
मनोजवं मारुततुल्य	रामरक्षा	**5**.251; **9**.*202*,204
मनोधी-योगः	श्वे उपशीर्षक 4	*2.432*
मनोपुब्बंगमा धम्मा	धम्म 1.1	**7**.122; **9**.2
मनोबुद्ध्यहंकार-चित्तानि	शंकराचार्य	**6**.381
मनो ब्रह्मेति	तैत्ति 21	**2**.395
मनोमयः प्राणशरीरो	मैत्रा 8	**2**.451
मनोहरो जितक्रोधो	विसना 49	**19**.515
मंतव्यः	बृह 118	**1**.384
मंत्रवर्णाच्च	ब्रसू 2.3.44	**2**.471
मंनै पावहि मोखु	जपुजी 15	**7**.122; **9**.2
मंनै मगु न चलै पंथु	जपुजी 14	*1.299*;
मम, न मम	महाभारत	**12**.119; **20**.288
मम भवतु कृष्णोऽक्षि	गुबो 4.2.1	**9**.3
मम वर्त्मानुवर्तन्ते	गी 3.23	**11**.157; **15**.422
मम सत्यं युद्धं	(यास्काचार्य भाष्य) ऋसा 10.6.2	**1**.204; **14**.405; **16**.260
मम साधर्म्यम्	गी 14.2	**9**.19
मम हृदय भवन	विन 67	*9.137*
ममाग्ने वर्चो विहवेषु	ऋसा 10.18.10	**1**.273; **12**.133; *17.9*
ममैवांशो जीवलोके	गी 15.7	*5.289; 9.19*
मयि सर्वाणि कर्माणि	गी 3.30	**3**.460
मय्यखंडसुखांभोधौ	गुबो 13.6.1	*7.410*
मय्यासक्तमनाः पार्थ	गी 7.1	*3.134; 5.250; 13.150*
मय्येव मन आधत्स्व	गी 12.8	**3**.460; *5.114*
मरका गुरु रडका चेला	एकनाथ	**3**.135; **10**.455; **15**.402
मरण ऐकतां	एक 1	**10**.455
मरण माझें मरोन	तुका 856	*11.257*; **19**.336
मरण मुक्ति वाराणसी	तुका 516	**11**.257
मरणं प्रकृतिः	कालिदास	*12.26,138*
मरणाही आधीं	तुका गाथा 318	**11**.226
मरे एक त्याचा दुजा	मश 16	*11.412*; **19**.337
मर्ता अमर्त्यस्य ते	ऋसा 8.2.8	**1**.257; *12.385*
मर्दनं गुणवर्धनं		**6**.366; *7.440*; **15**.320
मऱ्हाठियेचिया नगरीं	ज्ञाने 12.16	*10.165*
मल्लिंग-मद्भक्तजन	भासा 27.3	*5.465*
महतो महीयान्	कठ 44	**19**.469
महद् देवानां असुरत्व	ऋसा 3.5.3	**1**.246; **6**.361
महंत सकले फुरा	नाघो	**9**.329

महानुभूतिः सकलानु- भासा 28.12 *7.372;* **9**.210; *12.15;* **19**.458
महापुरुषसंश्रयः ब्रसूभा **10**.131
महामना अनूचानमानी छां 78 **2**.407; **14**.363
महामनाः स्यात् छां 21 *2.399*
महामोह-रावन विन 109 *9.167*
महावाक्यमनुचिंतयेत् सासू70 **3**.*237*,243,299
महाशनः गी 3.37 *5.53*
महेशे बोलन्त नाघो 187 **9**.320
महोदधिमधें काष्ठें महाभारत **20**.304
मह्यं नमन्तां **17**.10
माउली आत्मा ज्ञाने 16.443 **6**.194; **10**.150
मा गंगां मा कुरून् मनु 7.28 **6**.337; **19**.49
मागणें लई नाहीं तुकाराम **11**.257
मा गामनागामदितिं ऋसा 8.12.8 **13**.7; **20**.355
मा गृधः कस्यस्विद् ईश 1 **2**.346; *6.236;* **8**.232; **18**.*82*,85
मागें पुढें उभा राहे तुका 140 **4**.4
माझा मराठाचि बोलु ज्ञाने 6.14 *10.164, 170;* **19**.436
माझिया सत्यवादाचें ज्ञाने 16.32 **1**.170; **4**.98,337; **10**.226
माझिये जातीचें तुका 455 *11.257*
माझिये सहज स्थिती ज्ञाने 18.1113 **10**.187
माझी उरों नेदीं कीर्ति ज्ञाभ 18 *10.199*
माझी कोणी न धरूं तुका 83 *11.213*
माझी ही त्रिगुणी दैवी गीताई 7.14 **6**.383
माझे अन्याय अगणित राभ 42 **11**.422
माझें असतेपण लोपो ज्ञाने 13.198 **10**.199, 202,437; **20**.211
माझें तोंड खवळिलें तुका 236 **11**.217
माझें … नामरूप लोपो ज्ञाने 13.198 **2**.308;
माझे लेखीं देव मेला तुकाराम **5**.254; *11.258*
माझ्या अनुभवें तुका 481 **11**.210
माझ्या विठोबाचा कैसा तुका 140 **11**.259
मा तंतुश्छेदि वयतो ऋसा 2.5.8 **1**.166; **7**.445
मातप्रेम तातप्रेम नानालाल *9.479;* **19**.151
माता पिता बंधु नाम 234 **10**.320
माता पुत्रं ऋसा 10.3.16 **1**.264
माता भूमिः पुत्रोऽहं अथ 12.1.92 **1**.284; **16**.362
माता वांटून कृपाळु राबो 477 **11**.263
मातु छोड़ि पिता छोड्या मीराबाई **1**.272; **6**.232; **9**.455; **17**.267
मातृदेवो भव तैत्ति 7 **2**.390; *3.106;* **4**.358; **17**.246; **18**.402; **19**.487
मातृपितृसहस्रेभ्यो शंकराचार्य **1**.100
मातृमान् पितृमान् बृह 75–80 **2**.421; **16**.68; **17**.37,62,117,246
मातृमुखेन शिक्षणम् विनोबा **17**.64, 278,280,284
मातृवत् परदारेषु **11**.192
मातृहस्तेन भोजनं श्रीकृष्ण *5.492;* **17**.64,278,284
मातेचिये खांदीं तुका 714 *11.259*
माते! षष्ठ्यधिकारिणी गीताईध्यान **4**.421
मा ते संगोऽस्त्व गी 2.47 **3**.*24*,213
मात्रास्पर्शास्तु कौंतेय गी 2.14 **3**.459
मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा मनु 2.49 **3**.338, 341; *6.331*
माधवजू मो-सम मंद विन 38 **6**.175; **9**.167
माधवर नाम बत्स-प्राय नाघो 425 *9.351*
माधवर रांगा दुइ नाघो 285 *9.330*
माधवे बोलन्त मोक नाघो 382 **9**.344
माधवे बोलन्त श्रुति नाघो 351 *9.341*

मानवी-भावना-शून्य विगी 6 12.124
मा नस्तोके ऋसा 1.18.11 1.233
मानाचा मज ओस नाम 258 5.275; 10.320; 19.510
मानुषं सौम्यं सासू 51 2.431; 3.280,296
मा नो महान्तमुत ऋसा 1.18.10 18.397
मा फलेषु कदाचन गी 2.47 3.393; 5.219; 11.166; 15.268; 17.19
मा भैर् जरे भासा 31.3 5.481, 501: 12.166
मामनुस्मर युध्य च गी 8.7 2.268; 3.64, 134; 6.80; 7.116; 8.235; 11.185; 12.436; 14.327
मामप्राप्य एव गी 16.20 2.283
मामयं प्रहरिष्यति 13.364
मामाश्रित्य यतन्ति गी 7.29 11.185
मामुपेत्य तु कौंतेय गी 8.16 11.179
मामेकमेव शरणं भासा 27.10 5.469; 10.451
मामेकं शरणं व्रज गी 18.66 1.385; 5.153,211,469; 7.107; 8.395; 12.461; 20.72
मामेव विजानीहि कौषीतकि 10 4.73
मां प्रति माम् वेद 1.151
मां भजन्ति गुणाः सर्वे भासा 13.12 5.428
मां विधत्तेऽभिधत्ते मां भासा 21.5 1.125; 5.451
मां स भक्षयितामुत्र मनु 5.7 1.334; 7.314
माय फादर्स हाउस ख्रिस्त 20.3.2 8.178
मायबापहि टाकिले मोरोपंत 11.454; 13.198
मायबापाचीं लाडकीं तुका 841 11.226
माय वोळली राभ 154 11.422
मा यात पांथाः 11.493
मायिनो ग्रहणेन सासू 32 3.294
मारां नयणांनी आळस गुजराती गरबी 6.390
मारिलाद माक्करुणै माणिक्क 11.476
मारीचश्च सुबाहुश्च वारा बाल 20.26 11.393
मारी नाड तमारे हाथे केशव 3.150
मारे एक डगलुं आभ 15.272
मार्हळित् तिंगळ् आंडाळ 11.459
माला तो करमें फिरे कबीर 6.90; 7.382; 9.451
मालिकी यौमिद्दीन कुसा 1 8.384
माळियें जेउतें नेलें ज्ञाने 12.120 3.150; 10.227
मावळवीत विश्वाभासु ज्ञाने 16.1 6.127; 10.227
मा विद्विषावहै उप शांतिमंत्र 14.454
माशियां जैसें मोहळ ज्ञाने 16.168 10.227
मा शुचः संपदम् गी 16.5 5.291
मास्तर मारेये 15.14,354
माहं ...अन्यकृतेन ऋसा 2.5.12 1.166
मित्रद्रोहे च पातकम् गी 1.38 19.506
मित्रं हुवे पूतदक्षं ऋसा 1.1.10 1.113
मित्रस्य मा चक्षुषा यजु वाज 36.18 1.196, 281,296,355; 7.93; 14.241; 20.13
मित्रो जनान् यातयति ऋसा 3.6.2 1.150, 247; 3.108
मिथिलायां प्रदीप्तायां जनक 19.486
मिथ्यात्व दियो त्यज 19.336
मिनल् जिन्नति वन्नास् कुसा 85 8.401
मिम्मा रजक्नाहुम् कुसा 2 8.385,392
मिरि आसम कछारी नाघो 444 9.224
मिळतां प्रत्ययाचे राबो 486 11.269; 13.439
मिळेना कदा मश 54 11.412
मिस्काल जर्रतीन कुसा 381 4.160; 8.391
मी देह भक्त देहातीत एक 238 10.355
मीपण अहंकारें राभ 167 1.364

मुक्तसंगोऽनहंवादी गी 18.26 **2.**417; *14.41;* **15.**329; **19.**410
मुक्तस्वरूपनिर्धारणं प्रा 39 **3.**316
मुक्तातें निर्धारितां ज्ञाने 18.397 *3.418;* *10.228*
मुक्तात्मा सासू 7 **3.**291
मुक्तित निस्पृह नाघो । **4.**प्रास्ता 14; **9.**222,302,305; **15.**404
मुखमस्तीति वक्तव्यम् **13.**225; **18.**236
मुखिआ मुखु सो तुरा अयो 315 *9.168*
मुखीं नाम मनीं भाव नमो 3 **12.**126
मुखीं राम त्या काम मश 87 **9.**156
मुखीं विद्या भुजीं वीर्य नमो 6 **12.**126
मुख्य हरिकथा निरूपण राबो 274 **11.**387,402
मुंगी आणि राव तुका 74 **11.**214
मुद मंगलमय संत तुरा बाल 2 **3.**318; **9.**109; **20.**58
मुदमाप देवः भासा 9.6 **14.**4
मुनयो वातरशनाः ऋसा 10.20.8 **1.**274,298; *7.269;* **13.**233
मुनिः प्रसन्न-गंभीरः भासा 7.4 **15.**269
मुनि मुक्त झाले तुका 397 *11.164,259*
मुनीन्द्रैः *6.230*
मुरारेस् तृतीयः पंथः **3.**395; **5.**175
मुलें लेंकरें घरदार तुका 587 **11.**228
मुहूर्तं ज्वलितं श्रेयः भागवत **19.**512
मूकं करोति वाचालम् **9.**378; **13.**424
मूरख मूरख राजे सूरदास **9.**461
मूरख हृदय न चेत तुलसीदास *9.168*
मूर्खस्य शरीरं **3.**300
मूर्खामाजीं परम मूर्ख राबो 32 **11.**399,*422*
मूर्तिं च नावजानाति विनोबा **9.**227; **13.**343; **19.**35,57
मूर्धा ते विपतिष्यति बृहदा 6.4.20 **5.**197
मृज्जलाभ्यां बाह्यशुद्धिः **14.**460
मृति-स्मृतिः शुद्धये सासू 37 *3.278,* 295; **19.**335
मृत्तिके हर मे नारायण 9 *2.454*
मृत्यु मी आणि मी गीताई 9.19 *13.104*
मृत्युर्धावति पंचमः कठ 76 **18.**48
मृषा गीर् धीर् भासा 22.3 **2.**422
मेघ पडों भीती तुका 673 *11.259*
मेघ वर्षे निर्मळ जळ एक 9 **10.**354
मेघवृष्टीनें करावा तुका 725 *11.208;* **13.**302
मे ... जनपदे छां 72 **17.**292
मेत्ता-विहार **7.**93
मेन मे कम् टेनीसन **13.**254
मेनी मॅन्शन्स ख्रिस्त 20.3.2 **8.**178
मेरे तो गिरिधर गोपाल मीराबाई **6.**383,393; *9.454;* **11.**223; **15.**140
मेरे तो मुख राम-नाम **16.**85
मेरे राणाजी मैं मीराबाई *9.460;* **14.**95; **17.**47
मेरो कह्यो सुनि विन 165 *9.145*
मैं अरु मोर तोर तुरा अरण्य 15 **6.**69; **9.**168,199
मैं तो गिरधर आगे मीराबाई **9.**460
मैं तोहिं अब जान्यो विन116 *9.169;* **13.**279
मैत्रः करुण एव च गी 12.13 **7.**93
मैत्री-करुणा-मुदितो- योसू 1.33 **5.**389; **7.**89,*342,356;* **13.**113; *16.150*
मैं पतित तुम पतित- विन 95 **9.**17
मैया कबहुँ बढ़ेगी सूरदास **1.**124; **5.**447; **9.**462
मैया मैं नहिं माखन सूरदास *5.308,* *485; 9.463;* **18.**398
मैं हरि पतित-पावन विन 95 **6.**389
मोक्ष देऊनि उदार ज्ञाने 12.173 **10.**353

मोठा खादाड पापिष्ठ	गीताई 3.37	6.390
मोर भक्तियुक्त योगीरो	नाघो 229	9.324
मोराआंगीं अशेषें	ज्ञाने 13.836	10.194
मोलें घातलें रडाया	तुका 569	11.259
मो सम कौन कुटिल	सूरदास	9.462; 14.64; 20.150
मोहजनित मल	विन 28	9.136
मोहरी कांदा ऊंस	तुका 811	3.409; 10.214
मोहि तो सावनके	तुलसीदासजी	1.302
मोहिं लगत राज-	विन 105	9.165
मोहोऽयं विगतो मम	गी 11.1	5.267
मौनमाश्रये	शंकराचार्य	6.6
म्लेंच्छ संहार झाला	रा स्फुट 58.33	11.423; 15.168; 16.316; 19.288
म्हणसी होऊनी	तुका 531	11.260; 13.47
म्हणोनि अनुभवसुखचि	ज्ञाने 6.420	10.215
म्हणोनि तो दैवागळा	ज्ञाने 13.1079	10.162
म्हणोनि थोरपण पऱ्हां	ज्ञाने 9.378	10.228
म्हणोनि माझी वैखरी	अमृ 10.17	12.12
म्हणोनिया बापा	ज्ञानदेव	6.229
म्हणोनियां माप भक्ति	तुका 157	9.398
म्हणोनि वानावे	ज्ञाने 18.400	10.135
म्हणौनि ब्रह्मेंसीं मेळवी	ज्ञाने 16.463	10.224
म्हांने चाकर राखोजी	मीराबाई	6.385
य इह मनुष्याणां	छां 101	7.331, 352,382
य ईशे अस्य	श्वे 47	2.439
य एको जालवान्	श्वे 28	2.434; 8.218
य एकोऽवर्णो	श्वे 40	2.435; 8.218
य एवं वेद	बृह 16	1.363
यः अर्थे शुचिः	मनु 5.9	6.336; 14.452; 17.20

यज्ञ इज्यो	विसना 48	6.373
यज्ञमुखें खोडी काढी	तुका गाथा3281	11.265
यज्ञात् भवति पर्जन्यः	गी 3.14	1.203
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि	गी 10.25	13.166
यज्ञायाचरतः कर्म	गी 4.23	5.65
यज्ञार्थात् कर्मणो	गी 3.9	3.460
यज्ञेन यज्ञमयजन्त	ऋसा 1.23.19	1.186, 236; 19.17
यज्जातीयो यादृशो	कूरत्तालवार	11.492
यज्ज्ञात्वा न पुनर्	गी 4.35	11.172
यततो ह्यपि कौंतेय	गी 2.60	3.338
यतन्तश्च दृढव्रताः	गी 9.14	5.257; 14.77
यतेमहि स्वराज्ये	ऋसा 5.4.11	1.196, 197; 12.46; 14.421; 16.18,89; 17.399; 20.9
यतो यतो निश्चरति	गी 6.26	1.382
यतो वाचो निवर्तन्ते	तैत्ति 11	2.392; 7.436; 10.177; 11.166; 19.376
यत्करोषि यदश्नासि	गी 9.27	3.97, 202, 460; 5.104,135; 16.363; 20.338
यत्किंच भूतं	भासा 2.9	13.349
यत् क्रतुर् भवति	बृह 96	2.309
यत् न इह अस्ति	महाभारत	3.289
यत्नः क्रियते मया	गीशांभा उपो	2.474
यत्र अरे ब्राह्मणस्य	छां 39	2.401
यत्र त्यागः	–	14.26
यत्र मुरारिः उद्‌गाता		13.252
यत्र यत्र इलेक्शनम्	विनोबा	16.106
यत्र योगेश्वरः	गी 18.78	5.306; 6.19,382; 11.418
यत्र श्रमः तत्र लक्ष्मीः		15.468; 18.14
यत्रानंदाश्च मोदाश्च	ऋसा 9.6.17	1.263; 14.375
यत्रोपरमते चित्तं	गी 6.20	10.182
यत् सांख्यैः प्राप्यते	गी 5.5	5.73

यथा खनन् खनित्रेण मनु 2.50 *6.332*
यथा दीपो निवातस्थो गी 6.19 **2**.433; *7.129*
यथा न पूर्वमपरो ऋसा 10.3.14 **1**.264
यथा पंडितानां शंकराचार्य **11**.469
यथा पिंडे तथा **6**.129; **11**.397; **20**.335
यथा पुष्करपलाशे छां 57 **2**.402; **4**.125
यथाभिमतध्यानाद् योसू 1.39 **1**.382; **7**.342-43
यथा मातृमान् पितृमान् बृह 75 **9**.425
यथा यथाऽऽत्मा भासा 14.11 **6**.137
यथा राजा तथा प्रजा **15**.206
यथा सुदीप्तात् मुंडक 18 **13**.254
यथा स्वदेहस्य शंकराचार्य *5.195*
यथा हि भानोरुदयो भासा 28.11 *5.478*
यथेच्छसि तथा कुरु गी 18.63 **1**.329; *5.303;* **9**.155; **12**.461
यथैव बिंबं मृदयोपलिप्तं श्वे 24 **2**.454
यदग्ने स्यामहं त्वं ऋसा 8.7.4 **1**.258
यदश्नासि गी 9.27 3.457
यदहरेव विरजेत् जाबाल 3 *2.458;* **11**.260; **13**.47
यदह्ना पापमकार्षम् नारा 12 *1.361*
यदाऽतमस् श्वे 52 *2.440*
यदाऽऽत्मन्यर्पितं भासा 19.14 *5.444*
यदाप्नोति यदादत्ते महाआदि देवबोध **2**.288
यदा यदा हि धर्मस्य गी 4.7 *5.58,236;* **6**.373
यदा वै करोति छां 110 **1**.357
यदा संहरते चायं गी 2.58 **3**.*332*,388
यदा हि नेंद्रियार्थेषु गी 6.4 **13**.111
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य गी 8.11 *5.257;* **14**.179
यदि ब्रूयात् शीतः गीशांभा 18.66 **1**.137
यदि स्म पश्यत्यसद् भासा 28.9 *5.476*
यदि ह्यहं न वर्तेयं गी 3.23 **1**.257; 3.264; **7**.118
यद् गत्वा न गी 15.6 *1.341;* **11**.173; **14**.204; **19**.249
यद् दुस्तरं यद् दुरापं मनु 9.15 **6**.338
यद्धि एतद् छां 78 **14**.363
यद् भावि तद् भविष्यति महाभारत *5.497;***12**.118
यद्यत् कर्म गुबो 5.12.1 **13**.40
यद्यदिष्टतमं लोके भासा 27.5 *5.466*
यद् यदेव वदति बृह 26 **4**.471; **5**.297; **11**.393
यद् यद् आचरति श्रेष्ठः गी 3.21 *5.49;* **13**.305; **15**.444; **18**.268
यद् यद् विभूतिमत् गी 10.41 ***10**.175*
यद्यपि दुर्जन कलि नाघो 383 **9**.345
यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं **5**.463
यद्रः श्रांताय सुन्वते ऋसा 8.8.12 **1**.259
यद् वाव कं छां 54 **1**.369
यद् वै तत्र बृह 103 *2.431; 3.281*
यन्ति प्रमादमतंद्राः ऋसा 8.1.4 **1**.257
यन्ति प्रमादमतंद्राः सासू 77 **3**.*260–262*,300
यन् मे छिद्रं चक्षुषो यजु 36.2 **1**.280,347
यमनियमासनप्राणायाम- योसू 2.29 *7.326*
यमान् सेवेत सततं मनु 4.43 *6.334; 16.41*
यमाहु दानं परमं बुद्ध **3**.276; **6**.240; *7.120;* **12**.52; **15**.509; **18**.97
यमेवैष वृणुते कठ 47 **8**.216; **12**.189; **13**.438
यमो वैवस्वतो मनु 7.28 *6.336; 19.49*
यं कामये तंतमुग्रं ऋसा 10.18.5 **1**.179,273
यं स्मा पृच्छन्ति ऋसा 2.2.5 **1**.237; **4**.268
यया कया च तैत्ति 24 **18**.160
यल्लभसे निज-कर्मोपात्तं गुबो 1.1.2 **4**.107
यवाश्च मे तिलाश्च मे यजु 18.12.1 **1**.279; 3.315

यस्तं वेद स वेदवित् गी 15.1 **1**.116
यस्तु सर्वाणि भूतानि ईश 6 *2.287,356*
यस्मान् नोद्विजते गी 12.15 **2**.289, 399; **6**.21; **10**.139; **11**.153;**12**.420; **17**.468
यस्मिन्निदं सं च श्वे 46 *2.438*
यस्मिन् सर्वाणि भूतानि ईश 7 *2.289,358*
यस्य ज्ञानमयं तपः मुंडक 6 **4**.100; **6**.31
यस्य देवे परा भक्तिः श्वे 86 *2.445;* **17**.13
यस्य नाहंकृतो भावो गी 18.17 **1**.354,*362*
यस्य निश्वसितं वेदाः **10**.147
यस्य ब्रह्म च क्षत्रं कठ 49 **11**.177
यस्य स्मरणमात्रेण विसना *6.357,374*
यस्य स्युर् वीतसंकल्पाः भासा 11.11 *5.421*
यस्यात्मा हिंस्यते भासा 11.12 *5.421*
यह (कह) चिद-विलास विन 66 **2**.360
यह मरमु न जाना तुरा अरण्य 24 **9**.129
यह सुधि कोल तुरा अयो 135 **9**.169
या इष्टकाः कठ 15 **1**.372
या कल्पना कोणास दास 19.8.18 **13**.426
या कारणें सावधान दास 19.6.26 **11**.386
या चि जन्में येणें चि राबो 147 **4**.307; *5.166;* **9**.153; *11.379*
याचि देहीं याचि तुकाराम **4**.307; **10**.191, 359; **13**.70,393
या चौधांची तरी धरीं तुका 5 **10**.356
या जगमें कोऊ नहीं **9**.151,*453-54; 14.49*
याजसाठीं केला होता तुका 848 *3.60; 11.260*
याज्ञवल्क्य-गार्गी बृह 63–73 **1**.370
याती शूद्र वैश्य केला तुका 37 *11.220*
यानास्थाय नरो राजन् भासा 2.3 **3**.89; *5.381;* **14**.288; **17**.379
यानि अस्माकं तैत्ति 7 *2.391; 17.15*
यानि नामानि गौणानि विसना *6.361; 12.408*
या निशा सर्वभूतानां गी 2.69 **3**.389
यामरिन्द मोळिहळिले भारतियार *11.497*
या रे या रे लहान तुका 668 **3**.296; *11.260*
यावत् अधिकारं ब्रसू 3.3.32 **4**.261
यावत् स्याद् गुणवैषम्यं भासा 24.2 *5.462*
यावदस्यास्वतंत्रत्वं भासा 24.3 *5.463*
यावद् देहेंद्रियप्राणैर् भासा 28.1 *5.470*
यावद् ब्रह्म विष्ठितं ऋसा 10.15.13 **1**.271; *12.9,21*
यावन् न वाङ् मनसि छां 94 **2**.410
यावान् वा अयं आकाशः छां 123 **2**.332, *412;* **12**.184
यासां राजा वरुणो ऋसा 7.4.12 **1**.156, 254; **4**.241; **12**.352
यास्तेषां स्वैर भर्तृहरि **17**.36
यी कॅन नॉट सर्व ख्रिस्त 5.5.1 **8**.190
यी कास्ट नॉट ख्रिस्त **1**.118; **8**.165
यी लव् वन अनदर ख्रिस्त 20.2.2 **14**.358; **15**.333
यी वायपर्स ख्रिस्त **8**.165
यी हॅव दि पुअर ख्रिश्त 13.1.6 *8.188*
युआमिनून बिल् कुसा 2 *8.376*
युक्त आसीत मत्परः गी 2.61 **3**.441–45
युक्ताहारविहारस्य गी 6.17 **3**.278; *5.80,247*
युक्ति नाहीं बुद्धि नाहीं रामदास **6**.383
युक्तीचा आहार तुका 560 *11.260*
युक्त्या समन्वयः सासू 8 **3**.291
युगांतरे वह्निस्नाने रवींद्रनाथ **15**.379
युगें अठ्ठावीस नाम 151 *10.320*
युंजते मन उत युंजते ऋसा 5.5.9 **1**.251
युंजन्नेवं सदात्मानं गी 6.15 *5.246*
युध्यस्व इति अनुवादो गीशांभा 2.18 *6.238*
युध्यस्व विगतज्वरः गी 3.30 **11**.395

यूपादि योजनेसाठीं	विगी 13	12.124
यूयं गावो मेदयथा	ऋसा 6.4.14	1.188
ये अर्वाचस्ताँ उ पराच	ऋसा 1.23.7	1.235
ये के च सत्य	गुबो 2.2.6	14.491
ये च इमे अरण्ये	छां 69	2.404
येच क्षणीं मरोन	दास 3.10.50	11.378
ये च पुनः सत्य	गुबो 2.2.6	14.491
ये तु धर्म्यामृतमिदं	गी 12.20	3.124,456
येतो हिताचा कळवळा	तुका 692	11.265
येथ एकचि लीला तरले	ज्ञाने 7.97	3.69; 10.148,229
येथ (तेथ) प्रियाची	ज्ञाने 16.443	4.प्रास्ता 13
येन सूर्यस्तपति	वेद	4.258
येना नः पूर्वे पितरः	ऋसा 1.11.6	1.105, 230; 4.350; 14.328
येनास्य पितरो याताः	मनु 4.59	6.335
ये यथा मां प्रपद्यन्ते	गी 4.11	5.60; 9.20; 11.155
ये ये कामा दुर्लभा	कठ 22	3.397
येरा मान विधि	तुका 431	11.260
ये वै भगवता प्रोक्ता	भासा 2.2	5.380
ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य	गी 17.1	5.135; 13.10
येषां साम्ये स्थितं	गी 5.19	11.153
यो अस्याध्यक्षः	ऋसा 10.19.7	1.215, 299; 9.396
योगः कर्मसु कौशलं	गी 2.50	12.294
योगक्षेमं वहाम्यहं	गी 9.22	5.260; 11.176, 179,187,193
योगं युंजन् मदाश्रयः	गी 7.1	11.185
योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः	योसू 1.2	3.290, 320, 455;4.145,194,289; 5.7,38,77;7.307,309,329,402
योगस्थः कुरु कर्माणि	गी 2.48	3.460
योगस्य तपसश्चैव	भासा 27.7	5.467

योगियां साधली जीवन	ज्ञाभ 49	3.20
योगी युंजीत	गी 6.10	5.246
योगेन चित्तस्य पदेन	भर्तृहरि	7.304
योगेनांते तनुत्यजां	रघुवंश 1.8	6.68
योगेंवीण दावित	ज्ञाने 9.201	10.148,184
योगेश्वर जिथें कृष्ण	गीनाई 18.78	19.380
योगेश्वर समस्तर गुरु	नाघो 307	9.334
योगो भवति दुःखहा	गी 6.17	3.278
यो जागार तमृचः	ऋसा 5.3.9	1.195; 3.168; 17.10
यो देवो अग्नौ	श्वे 27	2.434; 8.218
योऽन्तः प्रविश्य मम	भागवत 4.9.6	5.488; 12.28
यो मद्भक्तः स मे	गी 12.14,16	11.187
यो योनिं योनिं	श्वे 46	2.435; 8.218
यो यो यां यां तनुं	गी 7.21	19.44
यो रायोऽवनिर्	ऋग्वेद 1.4.10	2.312
योऽर्थे शुचिः	मनु 5.9	17.20
यो वः शिवतमो रसः	ऋसा 10.2.2	1.263
यो वर्णाश्रम निष्ठावान्	विनोबा	13.434; 19.33-34.57
यो विश्वस्य प्रतिमानं	ऋसा 2.2.7	1.238; 11.171
यो विश्वाभि विपश्यति	ऋसा 10.24.5	1.297; 7.124,445
यो वै भूमा तत्सुखं	छां 112	2.327, 411; 15.74; 19.289
यो वै स धर्मः	बृह 20	1.366; 2.303
योऽसावादित्ये पुरुष	–	1.368
योऽसौ असौ पुरुषः	ईश 16	7.429-30
योऽहं सोऽसौ	ब्रसूभा 3.3.37	4.302
यौवने विषयैषिणां	कालिदास	12.134
रक्त श्वेत कृष्ण पीत	तुका 851	11.261
रघुकुल रीति सदा	तुरा अयो 28	9.169;

रघुपति-भगति करत	विन 100	**9**.169
रघुपति-भगति सुलभ	विन 76	**9**.169
रघुबरहिं कबहुँ	विन 138	**9**.170
रंकहूको रावहीको	विन 107	**9**.189
रंगले त्यांत ओतूनि	गीताई 5.17	**13**.220
रचनानुपपत्तेश्च	ब्रसू 2.2.1	**1**.215; **2**.479; **9**.19,137
रडलें मन रायाचें	विगी 5	**12**.124
रथांगपाणिः	विसना 107	**19**.491
रब्बुल् अल् अमीन	कुरान	**5**.380
रमध्वं मे वचसे सोम्याय	ऋसा 3.3.10	**1**.244
रंभेचेनी हि रूपें	ज्ञानदेव	**1**.250
रयिर् वा एतत्	प्रश्न 1.5	**2**.312
रवि नुगवे तों	तुका 818	**2**.463; *11.261*
रविमध्ये स्थितः	मैत्रा 19	**2**.453
रश्मिबहुत्व विज्ञानं	ब्रसूभा 4.1.2	**2**.495
रसना गोडावली	तुका 338	**11**.205
रसना-लोलुपीं	विगी 15	**12**.124
रसनिवृत्यधिकरणं	प्राअ 2	**3**.316
रसमय भकति	नाघो 1	**9**.360
रसात्मकं काव्यम्		**13**.218
रसानां रसतमः	छां 2	**3**.66
रसोऽप्यस्य परं	गी 2.59	**11**.185
रसो वै सः	तैत्ति 15	*2.393;* **13**.218; **20**.319
रहना नहिं देस बिराना	कबीर	**5**.484; *9.451;* **17**.370
रहबर राहे मुहब्बत	उर्दू शेर	**13**.89
रहमानुर् रहीम	कुरान	**7**.87; **9**.225; **19**.84
रहो या विनसो देह	सुंदरदासजी	**9**.464
राखावया जगीं संतां	गीताई 4.8	**6**.390
रागद्वेषवियुक्तैस्तु	गी 2.64	*3.366*
राजविद्या राज-	गी 9.2	**3**.*88*,455
राजसं चलमध्रुवं	गी 17.18	*3.159*
राजा कालस्य कारणं		**15**.206
राजान्नं नैव भक्षयेत्		**16**.136; **18**.233
राजा प्रकृति-रंजनात्	कालिदास	*1.160;* **4**.223; **6**.172; **12**.138
राजाऽसौ गच्छति	शंकराचार्य	**3**.290
राज्यान्ते नरकप्राप्तिः		*1.197;* **16**.58,129,177; **18**.233
राणा भेज्या जहर	मीराबाई	**9**.460
रात रहे पाछली	नमे	*9.473*
रात्रंदिवस करी	राबो 31	**11**.423
रात्रीदिवस आम्हां	तुका 343	**2**.314; *3.85;* **4**.43; **11**.261
रानींचें राउळा नेलिया	ज्ञाने 18.1625	**10**.229
राम अनंत अनंत	तुरा बाल 33	**6**.362
राम अनंत अनंत	तुरा उत्तर 52	*9.178*
रामकथा ब्रह्मांड	राबो 319	**11**.386
राम काजु कीन्हें बिनु	तुरा सुंदर 1	*9.170;* **15**.361
राम कृपा करि चितवा	तुरा लंका48	**3**.38;*9.170*
राम कृपा बिनु	तुरा बाल 3	**11**.189; **20**.239
राम कृष्ण गोविंद	ज्ञाभ 21	**10**.200
राम कृष्ण राम कृष्ण	नाघो 360	*9.342*
राम कृष्ण वासुदेव	एक 127	**10**.359
राम कृष्ण हरि	एक 82	**10**.359,*364*
राम चरण रति	तुरा अयो 129	**1**.301; **9**.2
राम तें अधिक नाम	विन 142	**9**.17; **20**.25
राम ते अधिक राम कर	तुरा उत्तर 120	**5**.307; *9.170*
राम-नाम घुषियोक	नाघो 488	**9**.359
राम नाम मनि दीप	तुरा बाल 21	**1**.229; *9.147;12.5,367,409*

राम बुलि तरे मिरि	नाघो 444	*9.354*
रामभद्र! मोहिं आपनो	विन 88	*9.171*
राम मात्र लघु नाम	तुरा बाल 282	**9**.198
रामं दशरथं विद्धि	वारा अयो 40.9	**9**.197; **20**.15
राम म्हणे ग्रासोग्रासीं	तुका 23	*11.261*
राम म्हणे वाट चाली	तुका 23	**11**.261
राम रामेति रामेति	रामरक्षा	**9**.338
राम शबदर 'रा' पद	नाघो 410	**9**.350
रामस्य चरितं महत्	वाल्मीकि	**9**.112
रामहि केवल प्रेमु	तुरा अयो 137	**9**.171
रामाय स्वस्ति		**18**.355
रामेति मधुरां वाणीं	वाराबाल 22.12	**3**.99; **9**.213
रामेंविण जे जे आस	दास 3.10.60	**11**.394
रामो द्विः शरं	वाल्मीकि	**12**.17
रामो द्विर्नाभिभाषते	वाराअयो 18.30	**9**.208
रामो विरामो विरजो	विसना 43	**6**.371
राहूनि आपुल्या स्थानीं	गीताई 1.11	**13**.447
रिघावें पोटांत	तुका गाथा 1005	**11**.262; **19**.224
रिपु रुज ... अहि	तुरा अरण्य 21	**14**.380
रीझे बस होत	विन 21	*9.171*
रुक्मांगद होता	राभ 17	**11**.424
रुक्मिणीनें एक्या	गिरिधर	*3.28; 5.490;* **6**.339
रूप पाहतां लोचनीं	ज्ञाभ 57	***10**.201*
रूप पाहतां सावळें		**10**.201
रेजिस्ट नॉट ईविल	ख्रिस्त	**16**.252, 265; **17**.406; **20**.324
रे शिर साटे नटवरने	ब्रह्मानंद	**16**.316
रैन बसेरा		**19**.387
रोग जाय दुधसाखरें	ज्ञाने 4.222	**3**.93; **10**.186; **11**.232
रोम (देह) वाहूनि रोमा	ज्ञाने 16.191	**5**.476
लज्जा वाटे जीवा	तुका 37	**11**.221
लड़ते हैं वीर	स्वामी रामतीर्थ	**17**.454
लब्ब बंदो चश्म बंदो	फारसी शेर	**2**.441; **5**.381; **20**.283
लवविलें तयासवें	तुका 459	**19**.509
लव्ह् दाय एनिमी	ख्रिस्त 4.5.2	*5.391*
लव्ह् दाय नेबर	ख्रिस्त 12.5.4	**7**.364; **8**.165, *171-72, 177; 15.312;* **17**.356, 445
लव्ह् दाय लॉर्ड		**8**.198;
लव्ह् यूवर एनिमी	ख्रिस्त 4.5.2	**5**.391; *8.173-74, 177*
लव्ह् वन अनदर	ख्रिस्त 20.2.2	*8.176-77*
लहानपण दे गा देवा	तुका 211	**11**.262
लाइक अ यंग मैन	ग्रिफिथ	**1**.234
ला इक्राह फिद्दीन्	कुसा 192	*8.368;* **19**.18
ला इलाह इल्लल्लाहु		**8**.235, *367*, 398; **14**.89; **20**.138
ला खौफुन अलैहिम	कुरान	**5**.469
ला तक्ल ली मय्		*8.388*
ला नुफर्रिकु बैन	कुसा 189	*8.362, 367*
लाभ कहा मानुष-तनु	विन 125	*9.140*
लाहे कारण मूल गंवायो	कबीर	**7**.391; **13**.200
लिंगाच्च	ब्रसू 4.1.2	**2**.494-95
लिंगादयः श्रूयमाणा	शंकराचार्य	*6.149*
लिम तकूलून	कुसा 212	*8.383*
लिव लाइ	जपुजी 26	**9**.152
लीड काइंडली लाईट	आभ	**8**.173
लीन दीन हेंचि सार	तुका गाथा 3832	**4**.339; *11.262; 17.308*
लीला-विनोदें संसार	ज्ञाभ 30	**4**.230
लुब्ध-मति मनुष्यर	नाघो 200	**9**.337
लेट दाइ विल् बी डन्	ख्रिस्त	**5**.16; **9**.374
लेट नॉट दाय लेफ्ट	ख्रिस्त 5.1.3	**8**.189; **10**.452

लोकर हितक चिंति	नाघो 472	**9**.304
लोकवत्तु लीलाकैवल्यं	ब्रसू 2.1.33	*2.479*
लोकविपरीता जीवन	प्रा 28	**3**.316
लोक-संग्रहार्थ	गीशांभा 3.20	**5**.197
लोकस्य उन्मार्गप्रवृत्ति-	गीशांभा 3.20	*5.48; 6.238;* **8**.229; **16**.391
लोका जानि न भूलो	कबीर	*9.443*
लोकाधिष्ठानं	विसना 95	*6.372*
लोकानां असंभेदाय	छां 131	**4**.433
लोके जडवत् (जडवत् लोके आचरेत्)	मनु 2.55	**5**.424-25
लोकेऽस्मिन् द्विविधा	गी 3.3	*5.226*
लोकोत्तराणां	भवभूति	**17**.384,420
लोखंडाची बेडी	एक 51	**6**.124
लोग कहैं मीरा	मीराबाई	**9**.458
लोपलें ज्ञान जगीं	रामाजनार्दन	**10**.153
लोभमूलानि पापानि		**19**.489
लोहित-शुक्ल-कृष्णां	श्वे 43	**8**.216
लौकिकापुरता नव्हे	एक 78	**10**.335
वक्त्यांचा तत्त्ववाद	गीताई 10.32	*6.84*
वक्रतुंड महाकाय		**12**.270
वजहुल्लाह	कुरान	*8.363,390-91;* **9**.7
वज्रादपि कठोराणि	भवभूति	**19**.475
वदना! वद नाम	विनोबा	**12**.127
वंदूं आचार्य शंकरु	एकनाथ	**10**.353
वन्दे मातरम्	बकिंमचंद्र	**3**.106; **12**.141,*344*
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ	तुरा बाल श्लो 4	*9.208*
वयमिह परितुष्टा	भर्तृहरि	**9**.331
वयं ब्रूमः	ब्रसूभा	**5**.175; **6**.123
व यू अतु ज् जकात	कुरान	**8**.392
वयें पोर ते थोर	रामदास	**3**.107; *11.425*
वरि कांहीं तरों ये	ज्ञाने 7.91	**10**.148

वषड्वषळित्यूर्ध्वासो	ऋसा 10.15.16	**1**.272
वसनरूप भये	सूरदास	**14**.63
वसंत इन्नु रंत्यो	साम 6.4.2	**1**.283; **19**.351; **20**.300
वसंतवत् लोकहितम्	गुबो 11.4.1	**6**.5
वसिष्ठं तर्पयामि	–	**1**.174
वसुधैव कुटुंबम्		**15**.149; **16**.197; **17**.*90*,99,266; **20**.10
वसु वायु पहा रुद्र	गीताई 11.6	*13.339*
वसूनां पावकश्चास्मि	गी 10.23	*19.52*
वस्‌जुदूलिल्ला	कुसा 20	*8.362*
वस्तुशून्यः	योसू 1.9	**7**.371
वस्त्रा पुत्राय मातरो	ऋसा 5.3.13	**1**.250; *17.292*
वस्त्रेव भद्रा सुकृता	ऋसा 5.2.1	**1**.249; **3**.96
वस्याँ इंद्रासि मे पितुः	ऋसा 8.1.2	**1**.257; **2**.390; *17.246*
वस्सलामु	कुसा 329	*6.128; 8.394*
वह्निशिखा	नारा 3	**2**.454
वाइज मेन ऑफ ईस्ट	ख्रिस्त	**8**.168
वाक्कायमानसः	गी 18.52	**9**.469
वाक् विसर्ग	भागवत	*5.487*
वागर्थाविव संपृक्तौ	कालिदास	*12.132*
वाग्मी	विसना 29	**1**.309
वाग् वैखरी शब्द-झरी	गुबो 11.6.2	**6**.6
वाच ऋग् रसः	छां 2	**1**.104
वाच काछ	नमे	**9**.469
वाचस्पतिं विश्वकर्माणं	ऋसा 10.11.5	**1**.269,356
वाचा एकोबाचा		**5**.315
वाचारंभणं विकारो	छां 78	*2.407; 6.117;* **9**.391; **17**.30
वाचा सत्यत्वें सोवळी	एक 45	**10**.330, 425; **13**.296
वाचास्तेनं शरव ऋच्छन्तु	ऋसा 10.12.4	

वाणी संत-कृपा की	विनोबा	**19**.359
वातस्येव प्रजवो	ऋसा 7.3.10	**1**.174,341
वातीति वायुः	–	**1**.157
वादः परित्यज्यतां	गुबो 5.11.3	*5.266*
वादः प्रवदतामहं	गी 10.32	**6**.84
वादो नावलंब्यः	नाभसू	**5**.266; **6**.84
वानाहि मण्णाहि	माणिक्क	*11.469-70*
वामदेववत्	ब्रसू 1.1.30	**2**.485
वामंवामं वो दिव्याय	ऋसा 10.10.5	**1**.268
वायुनाऽऽनीयते मेघः	गुबो 9.4.1	**5**.411
वायुरनिलममृतमथेदं	ईश 17	**1**.368; *2.307*
वायुर् यथैको	कठ 82	*2.379*
वायूसि एके ठायीं	ज्ञाने 12.211	*3.406; 10.229*
वाय् एल्लाम् तित्तिक्कुम्	कुरल	*11.486*
वारांगनैव नृपनीति		**18**.141
वाराणसी-यात्रे जाईन	ज्ञाभ 82	*10.204*
वाल्मीकिच्या जन	मोरोपंत	**11**.453
वाश्रा इव धेनवः	ऋसा 1.8.4	**1**.227; *3.109;* **18**.397
वासना ईश्वरे	प्रा 14	**3**.316
वासुदेवः सर्वम्	गी 7.19	**11**.163;**20**.137
वासुदेवस्तु उभयोः	महाभारत	**4**.26
वासो यथा परिकृतं	भासा 13.8	*3.353;* **10**.223
वाहोनि रोमा वाहणें नेणें	ज्ञाने 16.191	**5**.476; **10**.229
विंशत्या	सासू 74	**3**.299
विकर्मणा संधानं	सासू 14	**3**.292
विकल्पाचा केला	दास 5.9.40	**11**.395
विगतेच्छाभयक्रोधो	गी 5.28	**6**.7
विचरे प्राणवृत्ति जनीं	ज्ञाने 12.208	**2**.446
विचरे विश्व होऊनि	ज्ञाने 2.367	**3**.406; **5**.276,305; *6.210;* **7**.121; **10**.172;
विज्ञेषु (सूज्ञेषु) किं बहुना		**13**.248
विठो तुझें माझें राज्य	तुका 337	**13**.300
विठ्ठलवरने वरी	मीराबाई	**17**.92
विठ्ठल सुखा विठ्ठल दुःखा	तुका 137	*2.357; 11.195,262;* **13**.288; **20**.309
विठ्ठल हा कानडा	ज्ञानदेव	**10**.364
विणु गुण कीते भगति	जपुजी 21	**5**.403; **7**.369,423; *9.430;* **17**.48
वितर्कविचारानंदास्मिता-	योसू 1.17	**2**.318;*7.341*
वित्ते रमस्व बहु	ऋसा 10.5.7	**10**.173
विद्ध्येनमिह वैरिणं	गी 3.37	**8**.227
विद्या उदंड सिकला	दास 12.2.30	**11**.425
विद्यां चाविद्यां च	ईश 11	*2.295, 366;* **6**.338; **11**.394
विद्यावतां भागवते परीक्षा		**2**.331; **5**.316
विद्याविद्ये ईशते	श्वे 54	**2**.294
विद्याविद्ये मम तनू	भासा 11.3	*5.413*
विद्या सामर्थ्यात्		**7**.339
विद्वांसमपि कर्षति	मनु 2.49	*3.341*
विधि-यज्ञात् जप-यज्ञः	मनु 2.35	**4**.239
विधिवशात् प्राप्तेन	गुबो 5.11.4	**14**.439
विधी निर्मितां लीहितो	मश 175	**9**.408; **11**.410
विधीनें सेवन	तुका 679	**11**.197-98
विनम्र व्रतनिष्ठा	विनोबा	**11**.413
विना हरेर्गुणपीयूषपानात्	भागवत	**7**.324
विपदः सन्तु नः शश्वत्	महाभारत	**5**.397,*492;* **6**.391-92; **12**.118
विपापो विरजो	बृह 111	**1**.358
विप्राद् द्विषड्गुण	भागवत	**19**.117
विप्रा बहुधा वदन्ति	ऋसा 1.23.16	**8**.404
विप्रासो न मन्मभिः	ऋसा 10.10.6	**1**.268; **7**.445
विमुक्ति-बहु-साधनें	मोरो केका 93	**10**.350

विवरणाधिकरणम् प्राअ 6 3.316,410
विवरलें चि मागुतें राबो 282 11.394
विविक्तदेशसेवित्वं गी 13.10 5.281; 12.215; 14.282
विविध रचना करी नमे (आभ 106) 9.473
विविधाश्च पृथक् गी 18.14 16.364
विवेक आणि वैराग्य दास 12.4.20 11.382
विवेकधैर्याश्रय वल्लभाचार्य 4.63
विवेकनिम्नं कैवल्यप्राग्भारं योसू 4.26 7.347
विवेकभ्रष्टानां भवति भर्तृहरि 14.202
विवेकासहित वैराग्याचें तुका 270 3.153; 11.263
विवेकासारखा नाहीं गुरु मुक्तेश्वर 4.8; 5.402; 10.358
विशुद्धात्मा गी 5.7 5.74
विश्व-जीवन हे गंगाधर मेहेर 9.480
विश्व झांकलें कीं ज्ञाने 14.122(?) 10.230
विश्वतश्चक्षुः श्वे 30 2.437
विश्वतश्चक्षुरुत ऋसा 10.11.3 1.268; 3.122; 17.360
विश्वभेषजीः वेद 12.354
विश्वमानुषः ऋसा 8.7.9 1.100,199; 4.211;11.204; 12.145,346;15.399; 16.169, 174,244;17.46;19.46;20.11,37,44,123
विश्वमूर्तिः विसना 77 6.367
विश्वम् विसना 1 4.236; 6.365; 9.446
विश्वं, जीवं, परात्मानं कुसासू 8.236
विश्वं तद् भद्रं ऋसा 2.4.7 1.240, 333; 3.63; 7.359
विश्वं पुष्टं ग्रामे ऋसा 1.18.8 1.182; 15.399,443; 16.242; 18.267,455;19.381
विश्व विकासी काशी तुलसीदास 9.172; 20.19
विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं श्वेता 3.7 2.435;
विश्वामित्रेभिरिध्यते ऋसा 3.1.2 1.171
विश्वीं विश्वंभर तुका 830 11.217
विषय-संबंध-सुख नाघो 199 9.322
विषयाची शंका मनीं ज्ञाने 2.320 13.387
विषयांत सदा विनोबा 12.128
विषया विनिवर्तन्ते गी 2.59 3.336; 5.222; 11.185
विषाचेही आगर ज्ञाने 18.235 10.173
विषाणककुभ्याम् 17.160
विष्टभ्याहमिदं गी 10.42 11.176
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यम् 12.345
विष्णुमय जग तुका 813 11.263
विष्णुर् सहस्रनाम नाघो 349 6.359
विष्णोः कर्माणि पश्यत ऋसा 1.4.4 20.355
विहाय कामान् सर्वान् गी 2.71 3.397,403
विहारवाचकश् प्रा 34 3.316
विहाराधिकरणं प्राअ 5 3.316,389
वी आर् सेवन वर्ड्स्वर्थ 12.33,217
वीक्षणं बुद्ध-बौद्धानां विनोबा 7.2
वीक्षमाणो गुरोर् मुखं मनु 2.74 4.359, 411; 6.333; 20.277
वीतरागभयक्रोधा गी 4.10 5.60
वी पुट मेडिसिन 6.22
वी प्रीच क्राइस्ट ख्रिस्त 25.1.2 8.180
वीर विठ्ठलाचे गाढे तुका 461 11.264
वीरहा विसना 18 6.368
वीरों की यह बाट दुखायल 13.242
वीर्यवन्तौ सुशिक्षितौ वाराबाल 20.26 9.211; 19.340;20.185
वुई प्रीच क्राइस्ट ख्रिस्त 25.1.2 14.125
वृक्ष इव तिष्ठासेत् 12.207; 13.328; 14.411
वृक्ष इव स्तब्धः श्वे 36 2.437
वृक्षवल्ली आम्हां सोयरीं तुका 401 2.364; 11.264

वृष्टीचिया असावें ज्ञाने 12.65 10.213
वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि गी 10.37 5.17; 10.233
वेगस्य शमनं सासू 78 3.262, 265,300
वेत्थ नु त्वं बृह 57 14.186
वेद अनंत बोलिला तुका 402 1.303; 3.89; 6.138; 11.264; 12.384; 13.7; 20.355
वेदः, वेदवित्, वेदांगः विसना 14 1.309
वेद नान्गिनुम् ज्ञानसंबंधर् 12.384
वेद-वेदांत-गीतानां विनोबा 1.101; 2.332,369; 4.404; 6.7,114; 20.363
वेदा अवेदाः बृह 102 1.107; 2.472
वेदाचा तो अर्थ तुका 403 1.303; 2.486; 3.177; 11.211; 12.384
वेदानपि संन्यस्यति नारद 1.128; 2.463; 5.454; 6.38
वेदानां वेदं छां 96 2.411; 5.9
वेदानां सामवेदोऽस्मि गी 10.22 1.277,322
वेदानुवचनेन बृह 109 4.271
वेदान् उद्धरते गीतगोविंद 1.310
वेदांतकृद्वेद गी 15.15 3.456
वेदांतो विज्ञानं विनोबा 12.493; 15.462; 16.145; 19.329
वेदारण्यम् विळक्कु 11.487
वेदींचें बृहत्साम ज्ञाने 13.68 5.209; 10.230
वेदैश्च सर्वैरहमेव गी 15.15 13.7; 20.355
वेदोक्तमेव कुर्वाणो भासा 21.3 5.447
वेदोऽखिलो धर्म-मूलं मनु 2.5 6.330; 19.50
वेदो नित्यमधीयतां गुबो 5.11.1 1.101, 128; 2.463,471
वेल न पाईआ जपुजी 21 1.299
वैद्यो नारायणो 18.326; 20.357
वैश्वानरः प्रविशति कठ 7 14.371
वैष्णव जन तो तेने नरसिंह मेहता 9.467; 14.314,492; 17.443
वोव् अण्टु यू ख्रिस्त 14.2.1 8.165; 14.418
व्यक्तलिंगमेकं सासू 19 3.252,292
व्यचिष्ठे बहुपाय्ये ऋसा 5.4.11 1.197
व्यतिहारो ब्रसू 3.3.37 2.481
व्यभिचारेण वर्णानां मनुस्मृति 10.24 4.85; 6.339
व्याघ्रो वा सिंहो वा छां 89 7.398
व्याघ्रो व्याकरणस्य 6.9
व्याजिघ्रतीति व्याघ्रः पाणिनि 3.110; 6.9
व्याधाहातोनि सुटला ज्ञाने 12.181 10.231
व्यापकत्वात् सासू 46 3.296
व्यायामानिलसेवनात् 18.379
व्यासोच्छिष्टं जगत् सर्वं 12.99
व्यूह रश्मीन् समूह तेजः ईश 16 2.337
व्रजं कृणध्वं स ऋसा 10.14.10 20.359
व्हाइ शुड ऑल लाइफ टेनिसन 12.163
व्हावें तृणाहूनि सान चैतन्य-विनोबा 20.304
व्हावें लहानाहूनि तुका 211 11.264
व्हेअर ऑफ, इफ ख्रिस्त 27.4.2 19.161
व्हेअर टू ऑर थ्री ख्रिस्त 10.4.3 8.189
शक्तिं अनतिक्रम्य शंकराचार्य 15.454; 17.349
शक्नोतीहैव यः सोढुं गी 5.23 6.7
शंकरे भकति प्रकाशिला 9.233
शंकरो वर्णसंकरः 12.521
शंख-चक्र-गदा-पद्म मीराबाई 6.393
शंखभृन् नंदकी विसना 107 19.491
शतमिन्नु शरदो ऋसा 1.14.6 1.232
शतं जीव शरदो ऋसा 10.23.2 1.216; 6.387
शतं पुरः अदारीत् – 1.153
शतं वैखानसाः – 1.175

शब्दतत्त्वसारज्ञा पैं	ज्ञाने 13.1129	**10**.229,*231*; **12**.17
शब्द-ब्रह्मणि निष्णातो	भासा 21.6	*5.454*
शब्द-ब्रह्म सुदुर्बोधं	भासा 21.4	*5.449*
शब्द-शक्तेर् अचिं-	शंकराचार्य	*15.178*
शब्दातिगः शब्दसहः	विसना 97	*1.290*; **6**.362,370; **8**.183; **9**.7; **12**.410
शब्दानां सूक्ष्मार्था	प्रा 17	**3**.316
शब्देनैव अशब्दं	मैत्रा 12	*2.451*
शब्देंवीण संवादिजे	ज्ञाने 1.58	**10**.231
शब्दो नित्यः		**17**.387
शमदमदयाश्रद्धादि-	गीशांभा अ 13	*5.194*
शंनारगदे		*19.327*
शं नो भव द्विपदे	ऋसा 7.4.14	**1**.255
शराबे शौक	मंसूर	**18**.399
शरीरमाद्यं खलु		**15**.398
शरीरात् प्रवृहेत्	सासू 67	**3**.*282*,298
शहाणपणें वेद मुका	तुका गाथा3281	*11.264*
शहाणे ते जाणती	तुका गाथा3281	**11**.265
शांत आत्मा		**1**.340
शांतं शिवं अद्वैतं	मांडूक्य 7	**1**.333; **15**.260; **20**.403
शांताकारं भुजगशयनं	आभ पृ 8	**3**.39; **12**.266; **16**.75
शांता महांतो निव-	गुबो 11.4.1	*15.542*; **19**.150
शांति दया क्षमा	ज्ञाभ 18	*10.198*
शांतिमंत्र		**2**.480
शांतिस्तुष्टिः पुष्टिश्चास्तु		**12**.261; **13**.237; **15**.289; **19**.309
शांतैः अनन्यमतिभिः	गुबो 5.5.5	*6.231*
शांतोदितौ तुल्यप्रत्ययौ	योसू 3.12	*7.345*; **15**.138
शाबर-मंत्रजाल	तुरा बाल 15	**2**.335
शास्त्र-गुरु-उपदेश-	नाघो 253	**9**.326
शास्त्र-गुरु-उपदेशे	नाघो 252	**9**.326
शास्त्र-गुरुसवे	नाघो 255	**9**.327
शास्त्रदृष्ट्या तूपदेशो	ब्रसू 1.1.30	**1**.363-64; **2**.*477-78*,485
शास्त्रं ज्ञापकं न तु	शंकराचार्य	**5**.193; **6**.*197*,216; *15.395,512*
शास्त्रात् रूढिर् बलीयसी		**12**.371
शास्त्रीय-संयमेन	सासू 93	**3**.301
शिकवूनि बोल, केलें	तुका 406	**3**.प्रास्ता 16; *11.205*; *15.294*; **20**.390
शिक्षा व्याकरणं छंदो	शंकराचार्य	**6**.167
शिक्षा शचिष्ठ	ऋसा 8.8.9	**12**.6; *17.182*
शिणवील म्हणती म्हातारा	ज्ञाने 13.575	**6**.190
शिर साटे नटवर	ब्रह्मानंद	*9.470*
शिरावरी हात	नाम 276	*10.308*
शिरीं आहे रामराज	राभ 65	**11**.425
शिरीं शृंगारला	नमो 7	**12**.126
शिवतमो रसः	ऋसा 10.2.2	**4**.170-71
शिवपेरुमान्		**11**.490
शिवमाक्कि एनैयाण्ड	माणिक्क	*11.475*
शिवराजाचें आठवावें	रामदास	**11**.406
शिवराजाचें कैसें बोलणें	रामदास	**11**.406
शिवस्य हृदये	–	**1**.346
शिवो भूत्वा शिवं यजेत्		**11**.475; **15**.65;**18**.281
शिष्टाचारः निरामिषम्	विनोबा (ख्रिस्त सूत्र 27.4)	**19**.161
शिष्यापराधे		*17.189*
शीत वेढावें	ज्ञाने 12.65	**10**.213
शील संकोच सनेही	तुलसीदास	**4**.338
शुकजनकयोरेकः पंथाः	सासू 23	**3**.*254*, 293; **5**.*183*,445; **19**.350
शुको मुक्तो वामदेवो वा		**4**.105

शुचौ देशे मैत्रा 17 *2.452*
शुं थयुं स्नान पूजा नमे (आभ 107) **9**.472
शुद्धं अपापविद्धं ई श 8 **1**.361
शुनःशेपो ह्यह्वद् ऋसा 1.5.9 **1**.227
शुनियो पार्बति नाघो 343 *9.338*
शुभं शनैः सासू 36 **3**.295
शुभस्य शीघ्रम् **20**.244
शुभाशुभफलैरेवं गी 9.28 **3**.460; **11**.179
शुभास्ते पंथानः **13**.302
शूद्राः पचेरन् **4**.391
शून्यः विसना 79 **19**.92
शून्यमदः शून्यमिदम् **14**.60
शूरग्रामः सर्ववीरः ऋसा 9.5.3 **1**.262; **19**.381
शृंगाराच्या माथां ज्ञाने 13.1156 *10.165*
शृण्वतु भव्यमतयो व्यास **9**.337
शेवटचा दिस गोड तुका 848 **10**.190
शेवटची विनवणी तुका 466 **11**.265
शेवाळीं पावुनि जन्म विनोबा **12**.131,419
शेविक्कु उणवु कुरल *11.483*
शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां रघुवंश 1.8 *6.68; 12.132*
शोकः श्लोकत्वमागतः वाल्मीकि *9.209*; **12**.15
शोकमोहौ सुखं दुःखं भासा 11.2 *5.412*
शोक-हर्ष-भय-क्रोध- भासा 28.3 *5.471*
शोल्लुक्कडंगावे **19**.89
शौचं तपस् तितिक्षां च भासा 4.7 *5.406*
शौच-संतोष-तपः- योसू 2.32 **7**.326
शौचात् स्वांग-जुगुप्सा योसू 2.40 *7.310-11*; **11**.170; *13.139*
शौद्रं वर्णं असृजत बृह 19 *19.116*
शौर्यं श्वापदचेष्टितं कालिदास **12**.136; **20**.244
श्रत्ते दधामि ऋसा 10.21.16 **1**.275
श्रद्धत्स्व सोम्येति छां 91 **2**.*330*, 409; **3**.239; **4**.269; *6.40*; *20.327*
श्रद्धयोपहृतं प्रेष्ठं भासा 27.6 *5.467*

श्रद्धां प्रातर् हवामहे ऋसा 10.22.2 **1**.216; **19**.461
श्रद्धां भागवते शास्त्रे भासा 4.9 *5.409*
श्रद्धावान् लभते ज्ञानं गी 4.39 **2**.394; *5.71,241*
श्रद्धाविश्वासरूपिणौ बाल श्लो 2 **9**.166-67
श्रद्धा-वीर्य-स्मृति- योसू 1.20 *3.320; 7.329*
श्रम-संजात-वारिणा सासू 76 **3**.*258*, 260, 262, 299
श्रवण केलियाचें राबो 2 **11**.424
श्रवणं कीर्तनं भासा 4.10 **9**.382; **11**.158
श्राद्धान्नं न भक्षयेत् **16**.395
श्रीगणेशाय नमः **7**.281
श्रीगुरु पद नख मनि तुरा बाल 1 **9**.340
श्रीनारदमुनिचें जें मोरोपंत **10**.241
श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य **6**.114
श्रीमद् ऊर्जितम् गी 10.41 *5.267*
श्रीमद्रमारमण गोविंदो **13**.258
श्रीमंत सुंदर गुणनिधि नाघो 91 **9**.309
श्रीमुकुंदर नाम-गुण- नाघो 347 *9.339*
श्रीराम जय राम **4**.405
श्रीरामचरित करितें मोरोपंत **11**.453
श्रीराम-नाम मल- नाघो 409 *9.350*
श्रीरामा आतां देखतसें ज्ञाने 11.510 *10.183*
श्री व्यासाचा हा थोरु ज्ञाने 18.1707 **4**.248; **10**.231
श्रीशाय जनतात्मने निलकजी **20**.11
श्रुतं हरति पापानि **8**.393; **10**.450
श्रुतिः प्रत्यक्षम् भासा 19.7 *5.437*
श्रुतिमातृकः विनोबा **19**.34
श्रुतिर्न्याय्या न लक्षणा – **1**.140
श्रुति लिंगवाक्य पूर्वमीमांसा *6.138*
श्रुतिविप्रतिपन्ना गी 2.53 *5.220-21*
श्रुतिस्मृतिपुराणानां **6**.211; **10**.138;

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः गी 3.35 3.11; 5.29,52,200; 13.25
श्रेयान् स्वधर्मो गी 18.47 3.11
श्रेयो हि ज्ञानं गी 12.12 5.269
श्रेष्ठै रूपैस्त्वं ऋसा 10.15.10 1.271
श्रोतव्यो मंतव्यो बृह 118 1.384; 2.424; 9.382,384,393; 17.7
श्रोता आणि वक्ता एक 124 14.373
श्रोता बकता तुरा बाल 30 9.171
श्वास श्वास पै कबीर 5.256; 15.401; 19.337
श्वेतकेतु छां 78 20.363
श्वोभावा मर्त्यस्य कठ 23 2.374
षड्जं रौति सावृ 53.21 3.113
षष्ठांशमुर्व्या इव कालिदास 12.135
स एकधा भवति छां 119 2.412; 12.422
स एव अग्निः सलिले श्वे 79 15.186; 16.269
स एवाद्य स उ श्वः कठ 68 2.376; 3.202; 9.410; 12.313
स एष पूर्वेषामपि योसू 1.26 7.339, 342; 17.4
स एषोऽश्माखणः छांदो 1.2.8 2.415; 12.447
संयतेन स्वैरम् सासू 94 3.301; 14.381; 16.328; 20.310
संयमः सुलभतमो प्रा 7 3.316
संयमस्य पूर्णता प्रा 8 3.316
संवसारें जालों तुका 37 11.221
संवाद-युक्तिः शब्दात् प्रा 44 3.316
संशयात्मा विनश्यति गी 4.40 2.340; 5.242; 12.487; 14.67
संसय-संदेह न जाई विन 63 6.161; 9.172
संसार-कांतार अति विन 174 5.433; 9.172
संसार ब्रह्म-स्फूर्ति एक 255 6.136; 10.339,455
संसार मिथ्या ऐसा राबो 354 10.361

संन्यासयोगयुक्तात्मा गी 9.28 5.105; 11.381
संन्यासिले अवगुणु ज्ञाने 13.272 10.171
सः अहं अस्मि ईश 16 3.237
सकल अंग पद-बिमुख विन 178 9.189
सकळ शास्त्रें स्वयंभें ज्ञाने 6.454 3.67; 4.98
सकळांच्या पायां माझें तुका 533 11.265
सकलानुभूतिः भासा 28.12 2.444
सकळांसी आहे 12.337
सकले निगमे कल्पतरु नाघो 341 9.337
सकले संपत्ति जाना नाघो 334 9.334
सकले संपूर्ण नाघो 105 9.311
सकाम होवय वा नामघोषा 3.294
सकामासी नावडे गीता रामदास 5.166; 11.425
स कारणं करणाधिपाधिपो श्वे 75 2.435; 8.218
सकृदुचित हितोक्तिः शंकराचार्य 5.266; 6.84,224,251
सक्तुमिव तितउना ऋसा 10.9.2 1.209; 12.29
सखया, तूझेनि दोसें चांग 24 10.197
सगुण निर्गुण नाहीं तुका 7 11.248; 14.318
सगुणं साधकं सासू 61 3.298
सगुनहि अगुनहि तुरा बाल 16 20.280
स ग्रामाद् ग्रामं छां 93 2.410; 20.331
संकर साखि जो विन 140 9.144
संकल्प उन्मूलय गुबो 7.7.1 7.411
संकल्पः क्रतुर् ऐत 8 2.309
संकल्पन-स्पर्शन श्वे 64 2.441
संकोचोनि काय झालासी तुका 60 11.265; 13.331
संग-स्मयाकरणं योसू 3.51 1.386; 7.347
संगात् संजायते गी 2.62 3.397
संगादि-त्रिकं प्रा 15 3.316
संघशक्तिः कलौ युगे 13.175; 16.170
संघ शरणं बौद्धमंत्र 17.453
स च मे प्रियः गी 12.15 11.187

सजन कसाया विकूं लागे तुका 755 3.92; 11.266
संचित प्रारब्ध तुकाराम 13.146
संजानाना उप सीदन् ऋसा 1.12.6 1.113, 230
सततं कीर्तयन्तो गी 9.14 3.413; 5.102; 14.77,164
स तत्र तपसा प्रश्न 11 1.324
स तपोऽतप्यत तैत्ति14 2.392; 11.389
सतरंज को सो राज विन 153 9.172
सतसंगत मुद मंगल तुरा बाल 3 6.9
सतां मार्गं (र्गः) मनु 4.59 4.103
सतां हि संदेह-पदेषु शाकुं 1.23 13.217,386
सति संपद्य न विदुः छां 89 2.408
स तु दीर्घकाल- योसू 1.14 6.126,137; 7.341
सतु संतोख विचारु गुरु अर्जुन 9.378
सत्कर्मयोगें वय रामदास 1.359
सत् चित् आनंद 2.333
सत्त्वपुरुषयोः शुद्धिसाम्ये योसू 3.55 7.315
सत्त्वं जयेत् सावृ 80.21 3.269
सत्त्वशुद्धिः योसू 2.41 7.314
सत्त्वस्य सत्त्वेन सासू 80 3.268,300
सत्य असत्यर जड़ नाघो 232 9.325
सत्यकामः सत्यसंकल्पः छां 141 2.412; 5.62; 14.127
सत्यधर्माय दृष्टये ईश 15 1.289
सत्य-धीरो, वदेद् कुसासू 8.229
सत्यधृतिः कठ 33 16.259
सत्यपि भेदापगमे गुबो 4.1.3 1.133; 2.320; 6.222; 19.39
सत्यमायतनं केन 20 1.358
सत्यमेव जयते मुंडक 41 1.358; 2.386; 4.248; 16.179
सत्यं च स्वाध्याय तैत्ति 5 19.338
सत्यं ब्रूयात् मनु 4.35 4.352; 6.334; 15.276; 20.19
सत्यं वद, धर्मं चर तैत्ति 7 2.331, 390; 11.192; 12.296,367; 14.423; 15.273; 17.11,229
सत्यं शिवं सुंदरम् 9.314,395
सत्यं हि इंद्रः कौषीतकि 10 1.363
सत्य शाश्वत ती वस्तु अन्न 15 6.32
सत्यश्रुताः कवयो 20.360
सत्यसंकल्पाचा दाता तुका 770 11.264
सत्यसंयमाभ्याम् 14.460
सत्यानृतं तु मनुस्मृति 1.365
सत्यानृते मिथुनीकृत्य ब्रसू भाष्य 1.353
सत्याय मितभाषिणां रघु 1.7 5.276; 12.26,132; 14.404
सत्येन उत्तभिता ऋसा 10.12.1 1.150
सत्येन लभ्यस् तपसा मुंडक 40 2.327,383; 7.424; 14.429
सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितम् नारा 19 1.367
सदद्वये परे ब्रह्मणि 11.264
स दर्शतश्रीः ऋसा 10.13.11 4.469-70
सदसच्चाहमर्जुन गी 9.19 2.355; 3.412
सदसती पस्पृधाते सासू 89 3.301
सदा जनानां हृदये श्वे 51 4.211
सदा त्यांत चि रंगला गीताई 8.6 3.85
सदाशुचिः कारुहस्तः मनुस्मृति 6.338
सदा सेवि आरण्य मश 54 4.182; 6.43; 11.412
सदृशं चेष्टते गी 3.33 5.51
सदेव सोम्य इदमग्रे छां 79 6.132
सदोंतदिति सूत्रितं प्रा 40 3.316
सद्भावे साधुभावे च गी 17.26 1.378
स नः पर्षदति ऋसा 1.16.7 1.233; 20.13
स नः पितेव ऋसा 1.1.9 1.224

सनाद् युवा ऋसा 2.2.16 **1**.306; **5**.254; **11**.258
स नो वृष्टिं दिवस्परि ऋसा 2.1.11 **1**.237; **19**.282,351
संत आधीं देव मग एक 130 **10**.337
सन्तः विसना 99 *6.365*
संत जे माझीं रूपडीं ज्ञाने 18.1356 **10**.187
संत-द्वारीं कुतरा एक 169 **10**.455
संत परम हितकारी आभ **19**.472
संत सदा सीस मीराबाई **17**.466
संत हंस गुन गहहिं तुरा बाल 6 **7**.442; **12**.430
संतांचिये गांवीं प्रेमाचा तुका 471 **10**.187; *11.266*
संतांचें सेविलें तुका 37 **11**.223
संतां वाचोनियां एक 157 **10**.340
संता ब्रह्मरूप तुका 170 **11**.256
संध्या-उपासना नाघो 431 **7**.425
संनद्धः कवची खड्गी रामरक्षा स्तोत्र **3**.295
संनद्धश्च सासू 39 **3**.295
सन्त्राप्यसन्त्राप्युभया- गुबो 11.8.2 **2**.494; **6**.225
संनियम्येंद्रियग्रामं गी 12.4 **3**.454
संन्यासिले अवगुणु ज्ञाने 13.272 **10**.171
सन्मार्गे प्रज्ञा – **1**.367
स परस्यैव ब्रह्मस्फूर्ति **10**.455
स पर्यगात् ईश 8 *2.291,360*
सपिता विसना 104 *6.369*
स पूर्वेषामपि गुरुः योसू 1.26 **7**.339, 342; **17**.4
सप्त ऋषयः बृह 35–37 **4**.228
सप्तकं, सारतत्त्वं कुसासू *8.222*
सप्तद्वीपा वसुमती शंकराचार्य **3**.290
स(सा)प्तपदेन सख्यं **5**.287
सप्तान्नानि मेधया बृह 23 *2.419*

442; **7**.437; **13**.316; *14.82.221;* **15**.190,405; **19**.76,374,488
सबसे ऊंची प्रेम सगाई सूरदास *9.460;* **13**.89
सब हमारा प्रभु तुरा अयो 136 **9**.169
सबार पीछे रवींद्रनाथ **12**.179
सबारो सुहृद नाघो 413 *9.350*
स बुद्धिमान् मनुष्येषु गी 4.18 *3.285;* **12**.412
सबै भूमि गोपाल की **15**.123
स ब्राह्मणः स श्रमणः धम्म 18.15 *6.146*
सभा-समाजांश्च **13**.195
स भूरिति व्याहरत् तैब्रा **1**.350; **11**.393
सभै घट रामु नाम 300 **10**.320
समः सर्वेषु भूतेषु गी 18.54 **3**.प्रा13-14
समजले आणि वर्तले रामदास **11**.425
समत्वमाराधनमच्युतस्य भागवत **1**.276; **6**.394; **13**.407; **19**.384
समत्वं योग उच्यते गी 2.48 **5**.*220*,461; **10**.211
सम, दम, दया विन 126 *9.172;* **14**.74
समदुःखसुखः स्वस्थः गी 14.24 **7**.325
समं पश्यन् हि गी 13.28 **7**.111;*14.225*
समं समेन आयुर्वेद **5**.446
समर्पणेन योगः सासू 44 **3**.296
समलोष्टाश्मकांचनः गी 6.8 *3.235;* **12**.421
समस्तः संप्रसन्नः छां 157 **2**.413; **19**.511
समस्ते तीर्थत स्नान नाघो 381 **9**.344
समस्ते धर्मर उपरे नाघो 489 *9.360*
स महात्मा सुदुर्लभः गी 7.19 **18**.32
समादरः **8**.183
समाधिस्थो वृत्तिशून्यः प्रा 2 **3**.316
समाधौ क्रियमाणे गुबो 10.3.1 **6**.100
समानं मनः ऋसा 10.24.12 **14**.304
समानी व आकूतिः ऋसा 10.24.13 **1**.221; **17**.358

समुझइ खग खगही — तुरा उत्तर 62 — **9**.119
समुझत नहिं समुझाये — विन 125 — **9**.142
समुदय रचे — विनोबा — **12**.129
समुद्र इव गांभीर्ये — वारा बाल 1.17 — **4**.240; **9**.207; **10**.184
समुद्रवसने देवी — आभ — **4**.255
समुद्रस्येव महिमा गभीरः — ऋसा 7.3.10 — **1**.174,254,341
समुद्रादर्णवादधि — ऋसा 10.24.8 — **1**.217
समुद्रादूर्मिर् मधुमाँ — ऋसा 4.5.4 — **1**.247; **3**.65; **12**.42
समूलो वा एष — प्रश्न 14 — **2**.302,*365*
समोऽहं सर्वभूतेषु — गी 9.29 — **1**.386; **9**.426; **11**.177
संपति सब सघुपति कै — तुरा अयो 186 — *9.193,* 215; **18**.64,105; **19**.120
संपद्य चात्मानमथ — भासा 12.8 — **4**.162
संबंधेन — सासू 2 — **3**.290
संभूतिं च विनाशं च — ईश 14 — *2.299,368*
संभूय समुत्थान — **4**.11
संमोहाद्युत्तररूपं — प्रा 16 — **3**.316
स यदा बली भवति — छां 103 — *2.275*
सरसइ ब्रह्म बिचार — तुरा बाल 2 — *9.173*
सरस्वति त्वमस्माँ — ऋसा 2.5.17 — **1**.241; *13.232*
सर्प जाणोन डंखूं आला — राबो 249 — *6.116; 11.426*
सर्ब-श्रुति-शिरोरत्न — नाघो 215 — *9.324*
सर्वः शर्वः शिवः — विसना 4 — **6**.53
सर्वकर्तव्यताहानिः — ब्रसूभा 1.1.4 — **3**.284; **5**.70; **14**.346
सर्वकर्माण्यपिनिषिद्धा- — शंकराचार्य — **3**.399
सर्वकामप्रवेशो — प्रा 30 — **3**.316
सर्वचि जेथें पूर्वपक्ष — रामदास — **11**.426
सर्वतो मनसोऽसंगं — भासा 4.6 — *5.403*
सर्व धर्म हरिचे पाय — तुका 546 — **1**.299; **5**.305; **11**.266
सर्वधर्माणां धर्मः — **12**.408
सर्वधर्मान् परित्यज्य — गी 18.66 — **1**.*290,* 328; **2**.326; **3**.460; **5**.469; *6.210;* **8**.180, 404; **9**.155, 374; **10**.178; **11**. 159-60,187, 198, 247; *13.110; 15.152;* **19**.515
सर्वभूतस्थमात्मानं — गी 6.29 — **2**.287; *5.248*
सर्वभूतहिते रताः — गी 5.25 — **6**.170,*238; 14.406*
सर्वभूतहिते रताः — गी 12.4 — *5.269;* **8**.187; **12**.316; **15**.11,484; **16**.7
सर्वभूतेभ्यः अभयं — मैत्रायणि 2 — **14**.180
सर्वभूतेषु गूढः — श्वे 49 — **2**.439
सर्व-भूतेषु यः पश्येत् — भासा 3.1 — *5.387*
सर्व खलु इदं ब्रह्म — छां 29 — **1**.323, *330;* **6**.89,*117*
सर्वलक्षणलक्षण्यः — विसना 39 — *6.364;* **11**.241
सर्व-व्यापक सर्व देहीं — ज्ञाभ 39 — **10**.200; **14**.375
सर्वशक्तिः स्वतंत्रेच्छो — कुरान-सूत्र — *8.223*
सर्व सुखाचें आगर — ज्ञाभ 57 — *1.371*
सर्वा आशा मम मित्रं — अथ 19.15.5 — **1**.285
सर्वाइवल ऑफ दि — **12**.186; **18**.3
सर्वागमानां आचारः — **12**.408
सर्वांगीं सुवास परि — एक 140 — *10.444*
सर्वात्मकपण, माझें — तुका 346 — **3**.24; **11**.*266*,271
सर्वादि सर्व-साक्षी — ज्ञाभ 65 — **10**.204
सर्वापेक्षा अनपेक्षा — ब्रसूभा 3.4.26 — **2**.482
सर्वाभूतीं देख — रामदास — **11**.387
सर्वां भूतीं द्यावें अन्न — तुका 616 — **11**.266
सर्वां मुखीं मंगल — रामदास — **11**.426
सर्वांलागीं द्यावें — नामदेव — **11**.493

सर्वे मनोनिग्रहलक्षणान्ताः भासा 23.5 3.234; 13.175
सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति कठ 39 1.114, 126, 185,364; 5.451; 6.138,247; 11.264; 12.384; 13.6,7; 20.355
सर्वेषामविरोधेन सासू 98 3.301; 14.213; 15.236,515; 17.20; 19.264
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म – 1.288,327; 20.374
सर्वेषां यः सुहृत् महाभारत 1.199; 12.119
सर्वोपनिषदो गावो गीतामाहात्म्य 5.210; 18.398
सवंगाचि विकणें ज्ञाने 18.881 10.173-74
स वाग्विसर्गो भागवत 12.10,24,94
सविता प्रसविता – 1.187
सवितृमंडल मध्यवर्ती 4.236
स विश्वस्य करुणे- वेद 11.476
स संन्यासी च गी 6.1 7.113
स सर्वविद् भजति गी 15.19 3.176; 11.269; 13.425
स सर्व-समतां एत्य मनु 10.43 14.291
सस्तु माता सस्तु पिता ऋसा 7.4.17 1.255
सहचित्तमेषां ऋसा 10.24.12 1.218; 14.304
सहज कर्में झालीं तीं एक 286 10.428
सहज बोलणें हित तुका425 3.45; 10.453
सहजं कर्म कौंतेय गी 18.48 10.342; 16.330
सहज सनेही रामसों विन 117 9.138
सहज समाध भली कबीर 5.37; 7.395
सहज सरल सुनि तुरा अयो 126 9.131
सहज सहज ऐशा एक 248 6.121; 9.446; 10.455; 14.270
सहनाववतु उप शांतिमंत्र 3 11.479; 13.15
सह वीर्य करवावहै उप शांतिमंत्र 14.374
सहस्रं तु पितॄन् माता मनु 2.79 6.326; 17.382
सहस्रं वसुरोचिषः – 1.176
सहस्र-युग तों दिन गीताई 8.17 6.167
सहस्रशीर्षा पुरुषः ऋसा 10.13.1 1.211; 13.448; 20.386
सांसारिकाणि प्रा 11 3.316
साकर दिसे परी गोडी एक 277 6.51; 7.393; 10.337,428,445
सा काष्ठा सा परा गतिः कठ 58 10.207
सांख्ये वेदांते गीशांभा 18.13 5.208
सांगेल गूज हें थोर गीताई 18.68 13.50
सांगे वडिलांची कीर्ती दास 2.1.12 11.426; 12.332
सांगों जाणती शकुन तुका 410 11.216; 13.322
साच आणि मवाळ ज्ञाने 13.270 4.110; 10.170; 12.64
साचचि बोलाचें ज्ञाने 15.577 10.156
साजन के घर कबीर 9.448
सांडून राम आनंदघन राबो 42 11.399
सातत्येन सावृ 80.22 3.269
सातवी माझी ओवी तुका 806 19.188
सा तु कठिना प्रा 9 3.316
सात्त्विकं संपादयेत् सासू 96 3.301
साधकतमं करणं पाणिनि 4.483
साधनानां अनेकता तिलकजी 9.315; 19.415
साधारणा, मनुष्यास्तु कुसासू 8.234
साधु-कर्मा – 1.358
साधु दिसती वेगळाले राबो 166 11.380
साधु-संग अनुसरा नाघो 205 9.228
साधु संग बैठ बैठ मीराबाई 11.223
साधो सहज समाध कबीर 7.395; 9.445

सामर्थ्य आहे चळवळीचं	राबो 482	11.394, 427; 12.461
साम-व्रतानि	छां 21	2.398
सामांत मी बृहत्साम	गीताई 13.4	10.230
सा मा शांतिरेधि	वाज 36.1	1.352
साम्यं समाधानं	विनोबा	*5.248*
साम्येन मंगलम्	सासू 29	3.294
साम्ये समाधानम्		20.246-47
सार सार सार विठोबा	ज्ञाभ 32	10.200
सारीचे मित्र	रामदास	11.427
सारे जहांसे अच्छा	इकबाल	11.209; 13.437; 16.169
साऱ्या नीति-विचाराची	विगी 10	12.124
सॉल टर्नड् इन्टु पॉल		8.202
सॉल सॉल व्हाय	ख्रिस्त 22.1.4	8.201
साळीचा कणु म्हणे	ज्ञाने 18.1287	13.408
सा वै देवी (एषा दैवी वाक्)		14.491
सांस सांस पर राम	कबीर	*9.452*; 14.85; *20.343*
साहित्यसंगीत-कला	भर्तृहरि	12.372
साहिब मिले सबूरी में	कबीर	6.184; 15.277
सिंचन्ति नमसा	ऋसा 8.9.7	1.260
सिद्धानां कपिलो मुनिः	गी 10.26	1.265; 6.373
सिय राम प्रेम पियूष	तुरा अयो 326	*9.195*
सिर धुनि गिरा लगत	तुरा बाल 11	*9.174*; 12.29; 20.167
सीमा नाहीं तुझे दये	तुका 499	11.217
सीयराममय सब जग	तुरा बाल 8	13.315
सुकुमारा हि योगिनः	योसू व्यासभाष्य	*5.221*
सुखदायक गायक	राभ 183	*11.427*
सुख नाहीं कोठें	तुका 740	19.184
सुख निंदिया		3.98
सुख पाहतां जवापाडें	तुका 739	*10.446*
सुखं आत्यंतिकं	गी 6.21	*5.198*; 10.182
सुधरत पल लगै न आधु	विन 120	7.321-22
सुनीतिभिर्नयसि	ऋसा 2.4.4	1.239,357
सुनु कपि तोहि समान	तुरा सुंदर 32	20.98
सुनेरी मैंने निर्बल के	सूरदास	6.383; 15.26
सुंदरे किं न सुंदरम्		*9.121*
सुंदरे सुंदरी सीता		9.120
सुंदाची उपसुंदीं	मोरोपंत	*11.455*
सुप्रपाणं भवतु	ऋसा 5.6.3	1.188; 18.397
सुबासना दुर्बासना	नाघो 331	*9.334*
सुब्रमण्यमंगिरसो	ऋसा 10.8.2	1.208
सुमति कुमति सब कें	तुरा सुंदर 40	4.342; *9.174-75*; 13.296; 16.207; *18.15*; 19.383,402
सुमरन कर ले	नानक	3.443
सुरसा नाम अहिन्ह कै	तुरा सुंदर 2	*9.204*
सुरां पिबन्	छां 71	2.405
सुरूपकृत्नुमूतये	ऋसा 1.2.1	1.224; 11.188; 12.454
सुलभ सुखद जैसो	तुलसीदास	9.189
सुवर्णाचिया चंडिका	ज्ञाने 18.444	4.134; *10.231*
सुवर्णाचे मणी केले	ज्ञाने 7.32	4.170; 5.251; *10.232*
सुविज्ञानं चिकितुषे	ऋसा 7.8.8	1.256
सुसंपन्नोऽयं देशो	पाणिनि	*18.387*
सुसुखं कर्तुम्	सासू 42	3.295
सुसुखं कर्तुम्	गी 9.2	3.455; *5.101*
सूक्ष्मत्वात् तत्	भासा 22.2	4.299
सूक्ष्मातिसूक्ष्मं कलिलस्य	श्वे 48	2.439
सूचनात् सूत्रम्		*3.231*
सूत्रे मणिगणा इव	गी 7.7	*5.251*; 6.123; 16.391
सूर क्रूर इस लायक	सूरदास	19.360,373
सूरदास खल कारी	सूरदास	9.463
सूर श्याम मिलनेकी	सूरदास	9.462; 20.289

सूर्ये ज्योतिषि	नारा 13	**1**.150
सूर्यो देवीमुषसं	ऋसा 1.18.13	**1**.234
सूर्यो यथा सर्वलोकस्य	कठ 83	*2.380*
सृष्टीमध्यें बहु लोक	दास 19.8.1	**11**.428
सृष्टौ रम्यम्	सासू 52	**2**.431; **3**.281,297
सेनयोरुभयोर्मध्ये	गी 1.21	*5.213*
सेवन स्टेजेस्	शेक्सपीयर	**4**.36; **5**.458
सेवन्टी टाइम्स	ख्रिस्त 10.5.2	**8**.191; **15**.395
सेवाचोर पायांपाशीं	तुका 316	**9**.228
सेवाधर्म परम गहनो	भर्तृहरि	**14**.374; **18**.453
सेवितों हा रस	तुका 563	**11**.267
सेवेस देह लावावा	विगी 12	**12**.124
सेहिसे दिनक भाइ	नांघो 207	*9.323*
सेहि हरि नामे	नाघो 464	**9**.356
सैव भक्तिरनहंकृता	सासू 85	**3**.300
सैषा भार्गवी वारुणी	तैत्ति 23	*2.393*
सो अंग वेद	ऋसा 10.19.7	**1**.299
सो अस्नातृन्	ऋसा 2.2.14	**11**.396; **20**.359
सोंगें छंदें कांहीं	तुका 584	**11**.267
सोडिला संसार	तुका 757	**11**.267
सो धन धन्य प्रथम	तुरा उत्तर 127	*9.175*
सोनार बांगला	रवींद्रनाथ	**12**.145
सोनियाचा कलश	तुका 473	*11.267;* **12**.334
सोपें आहे सर्वांहूनि	तुका 492	**11**.179
सोऽयं दीपोऽर्चिषां	भासा 22.3	*1.270; 5.456*
सोऽयं पुमान् इति	भासा 22.3	**2**.421
सोऽयं यदंतरमलं	भागवत	**5**.486; **19**.511
सो राउर निज	तुरा अयो 131	**9**.131
सोऽविकंपेन	गी 10.7	*3.321; 5.166*

स्तवैरुच्चावचैः	भासा 27.2	*5.465*
स्तुति ने तुझी निंदा	ज्ञाभ 70	**6**.362; *10.204*
स्तुवन् नामसहस्रेण		**12**.408
स्तेन एव सः	गी 3.12	**1**.353; **14**.448
स्त्रियें पाटावाची चोळी	नामदेव	**10**.317
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्राः	गी 9.32	**10**.166
स्त्रियो हि दास आयुधानि	ऋसा 5.2.3	**1**.249
स्त्री-पुं-नपुंसकेति	मैत्रा 14	**1**.347
स्थावराणां हिमालयः	गी 10.25	*3.64;* **7**.396
स्थितः स्थितामुच्चलितः	रघुवंश	*12.135; 18.372*
स्थितप्रज्ञस्य का	गी 2.54	**3**.319
स्थितस्य गतिश्		**3**.373
स्थितोऽस्मि गतसंदेहः	गी 18.73	**3**.364
स्थिर-बुद्धि निराधार	गीताई 12.19	**6**.125
स्थिरबुद्धिरसंमूढो	गी 5.20	**3**.317
स्थिरमतिः	गी 12.19	**3**.317
स्थिरसुखमासनं	योसू 2.46	**6**.86; **7**.345
स्थूलात् सूक्ष्मं प्रपद्ये	सासू 50	**3**.296
स्थैर्ये च हिमवानिव	वारा बाल 1.17	**4**.240
स्नेहं दयां च सौख्यं	उत्तररामचरित्र	*9.180*
स्नेहेन सहजीवनम्	कुसासू	**19**.366,368
स्मृति परिशुद्धौ	योसू 1.43	*6.126*
स्याद् वा न स्याद् वा		**7**.442; **12**.430
स्रोतसामस्मि जाह्नवी	गी 10.31	**7**.396
स्लो टु बिगिन	वर्ड्स्वर्थ	**12**.217
स्वः पश्यन्तः उत्तरम्	यजुर्वेद	**1**.387
स्वकर्मणा तमभ्यर्च	गी 18.46	*5.302; 6.79;* **12**.199
स्वकर्मणि-समाधानं	विनोबा	**9**.8
स्वतः-प्रामाण्य	–	**1**.134
स्वतनोरपि अज्ञाने	गुबो 2.3.2	**14**.273
स्वतंत्रः कर्ता	पाणिनि	*5.8;*

स्वधर्मज्ञानवैराग्य	यामुन मुनि	4.421
स्वधर्मे निधनं श्रेयः	गी 3.35	14.182
स्वनुष्ठितात्	शंकराचार्य	5.203
स्वपर-हिताय उद्यतं	गुबो 2.2.2	20.293
स्वप्नींचियापरी	नाम 157	4.272
स्व-बोधे नान्य-बोधेच्छा	गुबो 7.1.9	5.479
स्वभावतो देव एकः	श्वे 76	2.435; 8.218
स्वभावनो विषय		11.389
स्वभावनियतं कर्म	गी 18.47	19.325
स्वभाव-वश हीं भूतें	गीताई 3.33	13.315
स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते	गी 8.3	1.379; 5.255
स्वमेव ब्राह्मणो भुंक्ते	मनु 1.22	6.330
स्वयं अकुरुत तस्मात्	तैत्ति 14	2.392; 16.65
स्वरसवाही विदुषो	योसू 2.9	4.134; 7.343
स्वराज्य मेरा	तिलकजी	19.405
स्वरांमाजी स्वर		4.प्रास्ता 12; 19.358
स्वरूपानुसंधान		14.322
स्वर्गे लोके ज्येये	केन 20	10.168
स्वल्प सोपें फुकाचें	मश 88	11.392
स्वल्पेनापि	सासू 48	3.296
स्वसिद्धांत व्यवस्थासु	मांका 3.17	2.388; 6.223,241; 14.226
स्वस्ति न इंद्रो वृद्धश्रवाः	ऋसा 1.14.4	1.231
स्वस्ति पंथामनु चरेम	ऋसा 5.3.16	1.250
स्वस्य परस्य वा	शंकराचार्य	18.82
स्व-स्वरूपानुसंधानम्	गुबो 11.3.1	5.272; 9.394
स्वाद्वन्नं न तु	गुबो 5.11.4	14.439
स्वादुक्षद्मा यो वसतौ	ऋसा 1.8.2	1.227; 10.349
स्वाध्याय-प्रवचने च	तैत्ति 5	2.389; 17.11
स्वाध्यायात् इष्टदेवता-	योसू 2.44	1.105, 141; 7.345
स्वाभाविकत्वात्	सासू 79	3.262-63,265,300
स्वामीची निद्रा मोडेल	ज्ञाने 13.257	7.319; 10.232
स्वाम्यादि परिहरेत्	सासू 92	3.301
स्वारथ औ परमारथ	विन 140	9.143
स्वास्थ्यं	गीशांभा 2.64	5.226
स्वाहाकारः वषट्कारः	बृह 129	2.425
स्वे महिम्नि यदि वा	छां 113	2.412; 9.422
स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः	गी 18.45	5.177; 19.38
स्वे स्वेऽधिकारे या	भासा 21.1	1.123; 5.429,445; 14.285
हक्कुल यकीन		8.374
हनो वा प्राप्स्यसि	गी 2.37	5.216-17; 15.157; 18.285; 19.66
हत्थसंयतो	धम्म 16.4	7.119-20
हन्ताहं पृथिवीं इमां	ऋसा 10.16.10	19.377
हरन्ति प्रसभं मनः	गी 2.60	3.341; 6.332
हरिक सतते स्मरा	नाघो 342	9.338
हरिकथा ... नेमस्तपणें	दास 11.6.4	11.387
हरिकथा ... बरेपणें	दास 12.2.29	11.387
हरि-कीर्तनर	नाघो 272	9.327
हरि-गुरु-पद-सेवा	नाघो 284	9.329
हरिचिया भक्ता नाहीं	तुका 474	11.267
हरि जेन आति कृपामय	नाघो 472	9.228,357
हरि ज्यांचा कैवारी	मोरोपंत	11.452; 13.2
हरि तैसे हरीचे दास	तुका 129	9.228
हरिना जन तो मुक्ति	नमे	9.469; 14.141; 15.404
हरि-नामे जत पाप	नाघो 445	9.354,356
हरिने भजतां हजी	नरसिंह मेहता	11.223
हरिनो मारग छे शूरानो	प्रीतम	9.463,479; 16.332; 20.295
हरि-भक्ति-दान दिया	नाघो 440	9.353

हरिर चरण नभजि नकरे नाघो 277 9.327
हरिर परम प्रियतम नाघो 269 9.327
हरि-हरा नाहीं भेद 16.344
हरि हरि बोला एक 108 10.456
हरिहि हरिता, बिधिहि विन 75 9.177,408
हरे राम हरे राम चैतन्य 9.476
हवनें तोषले देव नमो 1 12.126
हसत्यथो रोदिति भासा 2.8 6.155
हँसिबे जोग हँसें तुरा बाल 9 9.176
हस्तपादादिसंयुक्ता महाभारत 5.204; 12.122
हस्तसंयतो बुद्ध 17.116
हस्ते दात्रं चना ऋसा 8.9.13 15.22
हाथ दिये कर दान रे कबीर 9.452
हाथी चलत है कबीर 16.117
हारपलें आपणपें ज्ञाने 18.400 10.135
हिंसया दूयते चित्तम् विनोबा 12.346; 19.36
हिंसाय उन्मत्त पृथ्वी रवींद्रनाथ 12.185
हितभुक् मितभुक् वाग्भट 6.26
हिंदू पूजै देहुरा नाम 16 10.316
हिरण्मयेन पात्रेण ईश 15 2.300, 341,369; 7.363; 14.398; 17.70
हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे ऋसा 10.17.1 1.272
हिरा ठेवितां ऐरणीं तुका 476 11.267; 19.491
हीरा तो गया तेरा कबीर 9.452; 19.464
हीरा माणेक झवेर मीराबाई 9.460
हुकमि रजाई चलणा जपुजी 1 5.16; 9.428; 16.334
हुं करुं हुं करुं नमे (आभ 108) 9.470; 13.217,431; 15.268,349
हुं तो जाणती हती मीराबाई 9.458; 13.158; 17.240
हुवल्लाहु अहदुन् कुसा 14 8.385
हृदयग्रंथेर् विच्छेदकरं 5.281; 15.308; 19.324; 20.292
हृदयवृत्तीपुढां ज्ञाने 13.441 7.118; 9.203; 10.233
हृदयांत सेवा साने गुरुजी 13.440
हृदयामध्यें मी रामु ज्ञाने 9.60 10.184
हृदया हृदय येक ज्ञाने 18.1421 10.179
हृदयेन अपराजितः महाभारत 18.311
हृदयेन अभ्यनुज्ञातः 19.34
हृदि सर्वस्य गी 13.17 3.378
हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति गी 18.61 3.411
हे अनंत कोटि 19.188
हे आम्हासी कानडे ज्ञानदेव 10.202
(हे) कृष्ण गोपीजनप्रिय महाभारत 5.499; 17.252
हे कृष्ण पुत्र-पत्नी- नाघो 101 9.309-10
हे गोविंद राखो सूरदास 19.459
हेंचि थोर भक्ति तुका 645 11.267
हे चि भक्ति हें चि ज्ञान ज्ञाभ 71 3.176
हेंचि शूरत्वाचें अंग तुका 541 9.206; 11.268
हेतु-रहित अनुराग विन 46 9.154
हें तों माझ्या अनुभवें तुका 481 11.210
हे नम्रता के सम्राट गांधीजी 12.386
हे प्राण-प्रभु रघुपति नाघो 450 9.355
हे भगवंत गुरु नाघो 7 9.306
हेरि अहरह तोमारि रवींद्रनाथ 17.447
हें लाभे न बोलतांही ज्ञानदेव 10.162
हेवन लाइज विथ वर्ड्स्वर्थ 12.216
हें विश्वचि माझें घर ज्ञाने 12.213 3.406; 5.394; 10.164,172,230; 19.436
हे हरि! कवन दोष विन 59 9.159
है नीको मेरो देवता विन 49 9.17
होई न बिषय बिराग तुरा बाल 142 9.176
होईल तैसें बळ तुका 655 13.168
ह्रिया देयं, भिया देयं तैत्ति 7 15.85

विनोबाजी की पदयात्रा के पड़ावों की सूचि

तारीख	गांव	मील	जिला
8 मार्च 1951	वायगांव	13	वर्धा
9	राळेगांव	17	यवनमाल
10	सखीकृष्णपुर	14	,,
11	रुंझा	10	,,
12	पांढरकवड़ा	12	,,
13	पाटणबोरी	11	,,
14	अदिलाबाद	16	अदिलाबाद
15	कौंसल्यापुर	13	,,
16	मांडवी	11	,,
17	तलमडगु	15	,,
18	गुडीहतनूर	11	,,
19	इच्छोडा	8	,,
20	निरडगोंडी	11	,,
21	गोपाल पेठ	13	,,
22	निर्मल	5	,,
23	सुवर्णपुर	8	,,
24	बालकोंडा	11	निजामाबाद
25	आरमूर	10	,,
26	निजामाबाद	17	,,
27	डिचपल्ली	10	,,
28	कलवरल	11	,,
29	कामारेड्डी	11	,,
30	रामायम् पेठ	17	मेड़क
31	वडियारम्	9	,,
1.4.51	तूपरान	8	,,
2	कोचारम्	8	,,
3	मेडचल	8	हैदराबाद
4	बोलारम	7	,,
5	सिकंदराबाद	7	,,
6	हैदराबाद	5	,,
7 से 14	शिवरामपल्ली	5	,,
19	तंगलपल्ली		नलगोंडा
20	सरवेल		,,
21	वाविळापल्ली	13	,,
22	सिवन्नागुडा		,,
23	तिरगल्लापल्ली	11	,,
24	नागिल्ला		महबूबनगर
25	अजलापुरम्		,,
26	तुरपल्ली	12	नलगोंडा
27	देवरकोंडा		,,
28	निरडगोम		,,
29	पेदामुंगल		,,
30	ओटकापल्ली		,,
1.5.51	चलकूर्ति		,,
2	राजावरम्		,,
3	विरलापल्ली		,,
4	वाडेपल्ली		,,
5	पालखेड		,,
6	चिल्लेपल्ली		,,
7	मिरियालगुडा		,,
8	कामारेड्डीगुडा		,,
9	राजपेठ		,,
10	नलगोंडा		,,
11	पज्जोर		,,
12	चरकूपल्ली		,,
13	सूर्यपेठ		,,
14	चंदुपाटला		,,
15	नायकम्गुडा		वरंगल
16	मेडपल्ली	14	,,
17	चिरुमाधवरम्		,,
18	कान्हापुरम्	10	,,
19	कोदनूर		,,

24	बलपाला	13	वरंगल
25	महबूबाबाद		,,
26	मुकपाल	12	,,
27	कल्लाडी	13	,,
28-29	गविचिराला		,,
30	यल्कातूर्ति		करीमनगर
31	हुजूराबाद	8	,,
1.6.51	जम्मीकुंठा		,,
2	पोतकापल्ली		,,
3	कोलनूर		,,
4	पदोपल्ली		,,
5	इसमपेठ	14	,,
6–8	मंचेरिआल		अदिलाबाद
9	बेलमपल्ली	15	,,
10	रेबना	15	,,
11	आसफाबाद		,,
12	बांकडी		,,
13	देवड़ा		,,
14	राजुरा		,,
15	बल्लारपुर		चांदा
16	चांदा		,,
17	तडाली		,,
18	भांदक		,,
19	चंदनखेडा	15	,,
20	शेगांव		,,
21	वरोडा		,,
22	मांगली		,,
23	नांदुर		,,
24	हिंगनघाट		वर्धा
25	येसंबा		,,
26	सेवाग्राम		,,
27.6 से 11.9.51	परंधाम		,,
12	सेलडोह	14	,,
13	गुमगांव	20	नागपुर
14	नागपुर	10	,,

19	छिंदवाडा	15	छिंदवाड़ा
20	सिंगोड़ी	13	,,
21	अमरवाड़ा	12	,,
22	सुरलाखापा	13	,,
23	हरई	14	,,
24	कुंडाली	12	
25	नरसिंहपुर	16	
26	करेली	13	
27	बरमान	14	
28	तितरपानी	14	
29	देवरी	13	
30	गौरझामर	14	
1.10.51	सुरखी	10	सागर
2-3	सागर	18	,,
4	मेहेर	13	,,
5	रजवांस	13	,,
6	मालथोन	12	झांसी
7	विरधा	18	,,
8	ललितपुर	12	,,
9	खिंतवास	12	,,
10	महरौनी	12	टीकमगढ़
11	टीकमगढ़	13	,,
12	कुराई	14	,,
13	जेवरां	12	,,
14	पृथ्वीपुर	11	,,
15	निवाड़ी	12	झांसी
16	चिरगांव	18	,,
17	बड़ागांव	9	,,
18	झांसी	11	,,
19	दतिया	18	,,
20	उपराया	10	
21	डबरा	14	
22	जौरासी	14	
23	लश्कर	14	
24	बामोर	13	

29	आग्रा	9	आग्रा
30	रणकुता	14	
31	बरारी	14	
1-2.11.51	मथुरा	11	
3	सोनई	13	
4	हाथरस	11	
5	सासनी	7	-
6	अलीगढ़	14	अलीगड़
7	गभाना	13	
8	खुर्जा	17	
9	बुलंदशहर	11	
10	सिकंदराबाद	11	
11	दादरी	13	
12	गाजियाबाद	14	
13 से 23	दिल्ली (राजघाट)	14	
24	सिरोली	13	मेरठ
25	डौला	13	,,
26	जानी	13	,,
27	खरखौंदा	17	,,
28	मेरठ	12	,,
29	सरधना	14	,,
30	खतौली	14	मुजफ्फरनगर
1.12.51	मुजफ्फरनगर	16	,,
2	देवबंद	17	सहारनपुर
3	कोटा	17	,,
4	सहारनपुर	9	,,
5	बेहट	16	,,
6	बादशाहीबाग	12	,,
7	टिमली	8	देहरादून
8	कालसी	17	,,
9	भाऊवाला	15	,,
10	देहरादून	16	,,
11	डोईवाला	12	,,
12	ऋषीकेश	16	,,
13	हरिद्वार	15	सहारनपुर

18	नगीना	16	बिजनौर
19	धामपुर	12	,,
20	रतनगढ़	18	,,
21	चुचैला	10	मुरादाबाद
22	गजरौला	12	,,
23	अमरोहा	13	,,
24	चुहड़भर	12	,,
25	मुरादाबाद	13	,,
26-27	रामपुर	16	रामपुर
28	स्वार	15	,,
29	काशीपुर	16	नैनीताल
30	बाजपुर	13	,,
31	कालाडूंगी	15	,,
1.1.52	हल्दवानी	13	,,
2	लालकुआं	10	,,
3	कीछा	10	,,
4	बहेड़ी	11	बरेली
5	चमरोआ	12	,,
6	नवाबगंज	15	,,
7	पीलीभींत	14	पीलीभींत
8	कल्याणपुर	7	,,
9	माधवटांडा	15	,,
10	घुंघचाई	15	,,
11	देवरिया	11	,,
12	बिसलपुर	11	,,
13	बुधौली	11	बरेली
14	फरीदपुर	10	,,
15	बरेली	13	,,
16	बल्लिया	13	,,
17	आंवला	11	,,
18	कुंवरगांव	11	,,
19	बदायूं	10	बदायूं
20	उझानी	9	,,
21	नगरिया	13	,,
22	कासगंज	13	एटा

27	कुरावली	11	मैनपुरी
28	मैनपुरी	14	,,
29	करहल	17	इटावा
30	इटावा	16	,,
31	बरालोकपुर	15	,,
1.2.52	किशनी	9	मैनपुरी
2	बेवर	14	,,
3	मुहमदाबाद	11	फर्रुखाबाद
4	फर्रुखाबाद	13	,,
5	कमालगंज	11	,,
6	खसौरा	12	हरदोई
7	दुर्गागंज	16	,,
8	हरदोई	16	,,
9	सकाहा	11	,,
10	शहाबाद	11	,,
11	सेहरामऊ (दक्षिणी)	7	शहाजहांपुर
12	शहाजहांपुर	12	,,
13	कोरोकुंइयां	10	,,
14	पवांया	6	,,
15	खुटार	14	,,
16	मैलानी	12	लखीमपुर
17	छत्तीपुर	16	,,
18	गोलागोकर्णनाथ	8	,,
19	कैम्हरा	13	,,
20	लखीमपुर	10	,,
21	हरगांव	13	सीतापुर
22	सीतापुर	13	,,
23	परसेंडी	14	,,
24	बिसवां	14	,,
25	रेऊसा	14	,,
26	कोलैला	12	बहराइच
27	रमपुरवां	8	,,
28	बहराइच	13	,,
29	गिलौला	13	,,
1.3.52	इकौना	11	,,
2	श्रावस्ती	8	गोंडा
6	पिपरा	15	गोंडा
7	इटईरामपुर	16	,,
8	मसकिनवां	17	,,
9	बभनान	10	बस्ती
10	टिनिच	10	,,
11	बस्ती	11	,,
12	रुधौली	17	,,
13	बांसी	14	,,
14	धानी	17	गोरखपुर
15	फरेंदा	8	,,
16	पीपीगंज	12	,,
17-18	गोरखपुर (लच्छीपुर)	12+3	,,
19	चौरीचौरा	16	,,
20	देवरिया	16	देवरिया
21	गडेर	7	,,
22	बरहज	10	,,
23	घोसी	21	आजमगढ़
24	दोहरीघाट	13	,,
25	जियानपुर	16	,,
26	आजमगढ़	12	,,
27	मुहमदाबाद	15	,,
28	मऊ	13	,,
29	बिलौंझा	13	बलिया
30	सीयर	15	,,
31	नगरा	13	,,
1.4.52	रतसंड	14	,,
2	बलिया	14	,,
3	चितबडागांव	11	,,
4	नरही	7	गाजीपुर
5	कोटवानारायणपुर	11	,,
6	मुहमदाबाद	13	,,
7	गाजीपुर	13	,,
8	नंदगंज	13	,,
9	सैदपुर	11	,,
10	बलुआ	11	वाराणसी
11	[illegible]	[illegible]	

22	मड़ियाहू	9	जौनपुर
23	जौनपुर	14	,,
24	गोराबादशाहपुर	9	,,
25	मेहेरवां	13	,,
26	शाहगंज	14	,,
27	सुरहुरपुर	14	फैजाबाद
28	अकबरपुर	16	,,
29	गुसांईगंज	15	,,
30	पूरा बाजार	13	,,
1.5.52	फैजाबाद	13	,,
2	सुचितागंज	12	,,
3	शुजागंज	17	बाराबंकी
4	दर्याबाद	14	,,
5	सफ्दरगंज	14	,,
6	बाराबंकी	12	,,
7	चिनहट	11	लखनऊ
8-9	लखनऊ	9	,,
10	बंथरा	14	,,
11	नवाबगंज	12	उन्नाव
12	उन्नाव	13	,,
13-14	कानपुर	11	कानपुर
15	सचेंडी	14	,,
16	बारा	11	,,
17	डींग	10	,,
18	पुखरांया	5	,,
19	काल्पी	9	जालौन
20	आटा	12	,,
21	ओरइ	11	,,
22	डकोर	11	,,
23	इटैलिया	14	हमीरपुर
24	राठ	14	,,
25	पनवाड़ी	13	,,
26	कुलपहाड़	14	,,
27	महोबा	13	,,
28	कबरई	12	,,
2	शिवरामपुर	12	बांदा
3	पहाड़ी	14	,,
4	राजापुर	12	,,
5	सरधुवा	7	,,
6	कमासीन	13	,,
7	किशुनपुर	12	फतेहपुर
8	खागा	10	,,
9	बहरामपुर	11	,,
10	फतेहपुर	12	,,
11	मोजमाबाद	13	,,
12	लालगंज	12	रायबरेली
13	अटौरा बुजुर्ग	9	,,
14	रायबरेली	10	,,
15	टेकारी	10	,,
16	जायस	15	,,
17	गौरीगंज	10	सुलतानपुर
18	अमेठी	10	,,
19	धम्मोर	10	,,
20	सुलतानपुर	11	,,
21	त्रिसुण्डी	12	,,
22	प्रतापगढ़	14	प्रतापगढ़
23	छेत्रपालगढ़	16	,,
24	शिवगढ़	12	इलाहाबाद
25	इलाहाबाद	13	,,
26	करछना	16	,,
27	मेजारोड	12	,,
28	बामपुर	13	,,
29	विजयपुर	12	मिर्जापुर
30	मिर्जापुर	16	,,
1.7.52	मोहनपुर	10	,,
2	चुनार	14	,,
3	शेरपुर	10	,,
4.7 से 11.9.52	वाराणसी	13	वाराणसी
12	मुगलसराय	10	,,
13	सैयदराजा		,,

18	डेहरी	15	शाहाबाद
19	नासरीगंज	16	,,
20	विक्रमगंज	13	,,
21	नावानगर	12	,,
22	इटारही	12	,,
23-24	बक्सर	8	,,
25	डुमरांव	10	,,
26	ब्रह्मपुर	11	,,
27	बिहिया	12	,,
28	धमरा	10	,,
29	आरा	9	,,
30	अखगांव	10	,,
1.10.52	वागा	9	,,
2	पालीगंज	8	पटना
3	विक्रम	9	,,
4	बिहटा	8	,,
5	मनेर	7	,,
6	छपरा	18	सारन
7	माझी	8	,,
8	एकमा	8	,,
9	महराजगंज	10	,,
10	सिवान	10	,,
11	मीरगंज	10	,,
12	बडहरिया	9	,,
13	गोपालगंज	10	,,
14	बरौली	10	,,
15	गोरियाकोठी	10	,,
16	बसंतपुर	9	,,
17	मसरख	9	,,
18	देवरिया	9	,,
19	अमनौर	10	,,
20	परसा	9	,,
21	शीलपुर	9	,,
22	सोनपुर	10	,,
23–25	पटना	5	पटना
26	[illegible]	[illegible]	

30	बेला	7	गया
31	टेकारी	9	,,
1.11.52	राजपुर	9	,,
2	गया	8	,,
3	बोधगया	7	,,
4	शर्मा	14	,,
5	अमारुत	11	,,
6	शेरघाटी	10	,,
7	आमसा	10	,,
8	रानीगंज	10	,,
9	देव	10	,,
10	औरंगाबाद	8	,,
11	अंबा	10	,,
12	बभंडी	10	पलामू
13	छतरपुर	10	,,
14	नावा	11	,,
15	रजहारा	10	,,
16	डाल्टेनगंज	11	,,
17	लेस्लीगंज	11	,,
18	सतबरवा	10	,,
19	मनीका	9	,,
20	लातेहार	13	,,
21	सासन	11	,,
22	चंदवा	6	,,
23	बड़की चांपी	11	रांची
24	लोहरदग्गा	10	,,
25	कुरु	11	,,
26	ओपा	10	,,
27	मांडर	9	,,
28	रातु	9	,,
29	रांची	7	,,
30	तिरिल	7	,,
1.12.52	कालामाटी	10	,,
2	खूंटी	10	,,
3	मूरहू	10	,,
4	[illegible]		[illegible]

8	चक्रधरपुर	6	सिंहभूमि
9	खूंटपानी	8	,,
10	चाईबासा	8	,,
11	सरायकेला	14	,,
12	कालावेरा	10	,,
13	जमशेदपुर	12	,,
14	कांडरवेरा	11	मानभूमि
15.12 से 11.3.53	चांडिल	9	,,
12	नीमडी	7	,,
13	मालती	6	,,
14	बलरामपुर	7	,,
15	बड़ा उरमा	7	,,
16	कांटाडीह	7	,,
17	पुरुलिया	10	,,
18	लागदा	4	,,
19	सिंदरी	7	,,
20	गढ़जयपुर	8	,,
21	बेगुन कोदर	9	,,
22	झालदा	7	,,
23	महतो मारा	8	,,
24	वोरलंगा	10	हजारीबाग
25	गोला	8	,,
26	पेटरवार	10	,,
27	टेबु	8	,,
28	गोमिया	6	,,
29	बेरमो	10	,,
30	चपरी	9	,,
31	खुंटहा	10	,,
1.4.53	डुमरी	10	,,
2	छछंदो	10	,,
3	कठवारा	9	,,
4	गिरिडीह	10	,,
5	घर चांची	12	,,
6	मिर्जागंज	10	,,
7	कादंबरी	9	,,

12	कोड़रमा	8	हजारीबाग
13	दिवौर	12	,,
14	रजौली	8	गया
15	अकबरपुर	7	,,
16	नवादा	9	,,
17	मंडरा	9	,,
18	फुलडीहा	9	,,
19	कौआकौल	9	,,
20	गुलनी	9	,,
21	पकरीबरांवा	10	,,
22	वारसलीगंज	9	,,
23	ओढ़नपुर	10	,,
24	नादिरगंज	10	,,
25	हिसुआ	10	,,
26	खनवां	7	,,
27	सिरदला	7	,,
28	फतेहपुर	14	,,
29	तरवां	11	,,
30	मीरगंज	7	,,
1.5.53	भिंडस	8	,,
2-3	गया	7	,,
4	चेरकी	11	,,
5	गुरुआ	9	,,
6	बालासोत	9	,,
7	भलुहार	7	,,
8	इमामगंज	6	,,
9	मैंगरा	6	,,
10	बिकोपुर	7	,,
11	चक	11	पलामू
12	मनातु	7	,,
13	सिलदिलिया	14	,,
14	करार	7	,,
15	तरहसी	12	,,
16	किशुनपुर	8	,,
17	लामीपतरा	10	,,

22	विशुनपुरा	8	पलामू
23–27	नगर उटारी	10	,,
28	रंका	44	,,
29–31	डाल्टेनगंज	33	,,
1.6.53	कौड़िया सूईया	4	,,
2	केथकी	5	,,
3	पोखरी	5	,,
4	बरवाडीह	8	,,
5	छिपादोहर	8	,,
6	मुन्डू	8	,,
7	गारु	6	,,
8	मारोमार	7	,,
9	वोरसाल	7	,,
10	अकसी	8	,,
11	महुआडाड	8	,,
12	वराही	8	,,
13-14	नेतरहाट	8	,,
15	सालेमनावा टोली	8	रांची
16	बिसुनपुर	7	,,
17	आदर	9	,,
18	घाघरा	6	,,
19	टोटो	11	,,
20	गुमला	7	,,
21	बधिमा	7	,,
22	पालकोट	8	,,
23	सेमरा	7	,,
24	गुमला	8	,,
25	खोरा	8	,,
26	नागफेरी	7	,,
27	सिंसई	9	,,
28	भरमो	8	,,
29	बेड़ों	9	,,
30	नगड़ी	8	,,
1.7.53 से 7.7	रांची	9	,,
8	बूटी	5	,,

13	रामगढ़	13	हजारीबाग
14	कुज्जू	7	,,
15	मांडू	6	,,
16	चरही	6	,,
17	मोरागी	6	,,
18	हजारीबाग	9	,,
19	वोंगा	6	,,
20	इचाक	4	,,
21	दाउजीनगर	7	,,
22	पदमा	5	,,
23	खुराहर	7	,,
24	बरही	3	,,
25	पांडेवारा	6	,,
26	टूट्टी	6	,,
27	चौपारन	6	,,
28	दनुवा	7	,,
29	काहूदाग	7	गया
30	भदेया	6	,,
31	डोभी	6	,,
1.8.53	सहदेवखाप	6	,,
2	बोधगया	6	,,
3-4	गया	7	,,
5	सादीपुर	6	,,
6	सरैया	4	,,
7	खिजिरसराय	5	,,
8	बनवरिया	4	,,
9	हुलासगंज	6	,,
10	इसलामपुर	7	पटना
11	एकंगरसराय	5	,,
12	हिलसा	5	,,
13	भतहर	6	,,
14	नूरसराय	6	,,
15	सलेमपुर	6	,,
16	बिहारशरीफ	3	,,
17	नालंदा	5	,,

22	माउर	2	मुंगेर
23	फरीदपुर	5	,,
24	शेखपुरा	7	,,
25	कैथमा	7	,,
26	चेबारा	5	,,
27	तुरही	6	,,
28	सिकंदरा	5	,,
29	महादेव सिमरिया	5	,,
30	जमुई	6	,,
31	मलेपुर	5	,,
1.9.53	बरहट	3	,,
2–5	खादीग्राम	6	,,
6	कटौना	6	,,
7	परसंडा	7	,,
8	केशेपुर	4	,,
9	झाझा	5	,,
10	सोनो	7	,,
11	वटिया	7	,,
12	वामदह	7	,,
13	चकाई	5	,,
14	किया जोरी	6	,,
15	पुनासी	8	संथाल परगना
16	रोहिणी	10	,,
17	चंदाडीह	8	,,
18-19	देवघर	9	,,
20	पारडीह चनन	7	भागलपुर
21	इनारा वरन	7	,,
22	कटोरिया	7	,,
23	करझौसा	6	,,
24	जमदाहा	7	,,
25	जवरा	7	,,
26	मंदार विद्यापीठ	8	,,
27	वाराहाट	7	,,
28	वांका	8	,,
29	पुनसिया	7	,,

4	सवौर	6	भागलपुर
5	भागलपुर	8	,,
6	कजरैली	8	,,
7	अमरपुर, डुमरांवा	8	,,
8	मेढियानाथ	9	,,
9	शाहकुण्ड	8	,,
10	अकबरनगर	9	,,
11	सुलतानगंज	9	,,
12	असरगंज	8	मुंगेर
13	तारापुर	12	,,
14	गौंगाई	10	,,
15	संग्रामपुर	4	,,
16	मिल्की	9	,,
17	खड़गपुर	7	,,
18	वृंदावनगालीमपुर	7	,,
19	वरियारपुर	5	,,
20-21	मुंगेर	10	,,
22	जमालपुर	6	,,
23	शिवकुण्ड	9	,,
24	अमरपुर	6	,,
25	सूर्यगढ़ा	7	,,
26	रामचंद्रपुर	6	,,
27	लखीसराय	6	,,
28	बड़हिया	10	,,
29	मोकामा	10	पटना
30	तेघरा	4	उत्तर मुंगेर
31	बिहट	8	,,
1.11.53	बेगूसराय	7	,,
2	मझौल	10	,,
3	शकरपुरा	10	,,
4	गंगौर	8	,,
5	खगड़िया	8	,,
6	मानसी	5	,,
7	गोगरी	11	,,
8	नया गांव	8	,,

13	सदैपुर	8	उ. भागलपुर
14	कहलगांव	5	,,
15	इशीपुर	11	,,
16	शेरमारी बाजार	7	,,
17	कामतटोला	8	,,
18	रानी दियरा	5	,,
19	कुरसैला	6	पूर्णिया
20	टीकापट्टी	7	,,
21	ब्रह्मज्ञानी	8	,,
22	विष्तेपुर	8	,,
23	धमदाहा	5	,,
24	वरेटा	12	,,
25	कामाख्यास्थान	10	,,
26	काझा	6	,,
27-28	पूर्णिया	9	,,
29	कसवा	9	,,
30	जलालगढ़	7	,,
1.12.53	वागनगर	7	,,
2	अररिया	8	,,
3	छतियौना	7	,,
4	रानीगंज	8	,,
5	भटगावां	8	,,
6	जानकीनगर	9	,,
7	मुरलीगंज	8	सहरसा
8	वभनगामा	8	,,
9	किशुनगंज	8	,,
10	आलमनगर	12	,,
11	शाहजादपुर	9	,,
12	बड़गांव	9	,,
13	पतरघट	7	,,
14	मधेपुरा	8	,,
15	श्री नगर	12	,,
16	सहरसा	12	,,
17	चंद्रायण	5	,,
18	सुखपुर	10	,,

23	झंझारपुर	10	दरभंगा
24	कोईलख	10	,,
25	मधुबनी	10	,,
26	मकरमपुर	10	,,
27	नेहरा	10	,,
28	सोनकी	12	,,
29	दरभंगा	8	,,
30	सिंहवारा	13	,,
31	धनौर	10	मुजफ्फरपुर
1.1.54	उनसर	8	,,
2	सिमरा	10	,,
3	मुजफ्फरपुर	15	,,
4	भटौना	10	,,
5	सरैय्या	9	,,
6	लालगंज	14	,,
7	भगवानपुर	11	,,
8	कन्हौली	6	,,
9	हाजीपुर	12	,,
10-12	पटना	5	पटना
13	फतहपुर	11	,,
14	फतुहां	9	,,
15	खुशरूपुर	6	,,
16	बख्तियारपुर	9	,,
17	बाढ़	10	,,
18	सकसोहरा	7	,,
19	हरनौत	10	,,
20	चंड़ी	12	,,
21	नगरनौसा	5	,,
22	सिगियावां	7	,,
23	वीर	9	,,
24	केउरा हॉल्ट	8	,,
25	कियावां	8	,,
26	नौवतपुर	9	,,
27	ऐन खां सिंघारा	10	,,
28	सेहरा	8	,,

2	कुर्था	7	गया
3	लारी	6	,,
4	मउ	10	,,
5	खटांगी	7	,,
6	तुरुकतेलपा	6	,,
7	देवकुंड	8	,,
8	शहरतेलपा	5	,,
9	करपी	5	,,
10	बेलखरा	5	,,
11	अरवल	6	,,
12	वलिदाद	6	,,
13	बेलसार	6	,,
14	दाउदनगर	10	,,
15	हसपुरा	10	,,
16	गोह	11	,,
17	कोंच	10	,,
18–23	टेकारी	13	,,
24	परैया	8	,,
25	डबूर	8	,,
26	रफीगंज	6	,,
27	जाखिम	10	,,
28	मलवां	13	,,
1.3.54	ओबरा	7	,,
2	डिहरा	10	,,
3	बारुन	12	,,
4	बरेन	11	,,
5	नवीनगर	9	,,
6-7	हुसेनाबाद	8	पलामू
8	पोलडीह	10	,,
9	पिपरा	6	,,
10	हरिहरगंज	8	,,
11	कुटुंबा	8	गया
12	सुंदरगंज	9	,,
13	पोइयावां	8	,,
14	वार	8	,,
19	दूवा	5	गया
20	वरवां	7	,,
21	पूना	8	,,
22	पड़रिया	7	,,
23	बसाढ़ी	6	,,
24	जानी विगहा	7	,,
25	इसरवें	7	,,
26	चौमार	6	,,
27	कैंनार	6	,,
28	सहिया	8	,,
29	रसलपुर	8	,,
30से 2.4.54	गया	7	,,
3	अमवां	5	,,
4	पांका डीह	5	,,
5	सेलारू	5	,,
6	बजउरा	6	,,
7	शेरघाटी	11	,,
8	निसखा	10	,,
9–11	खजवती	15	,,
12–25	बोधगया	4	,,
26	मटिहानी	7	,,
27	कलंदरा कचहरी	6	,,
28	शेरघाटी	6	,,
29	सांबू	8	,,
30	नगमतिया	10	,,
1.5.54	कनबहरी	8	,,
2-3	औरंगाबाद	6	,,
4	सिरिस	8	,,
5	डालमियानगर	10	शाहाबाद
6	पटनवां	5	,,
7	तिलौथू	5	,,
8	धाहू ढाढ़	7	,,
9	सिकरिया	6	,,
10	दरियांव	5	,,
11	सदोखर	5	,,

16	अखलासपुर	8	शाहाबाद
17	मोहनिया	8	,,
18	लहुरीवारी	6	,,
19	सोहसा	7	,,
20	कोचस	7	,,
21	दिनारा	8	,,
22	नटवार	6	,,
23	सूर्यपुरा	6	,,
24	कोआथ	8	,,
25	पीरो	8	,,
26	जमुआंव	4	,,
27	जगदीशपुर	9	,,
28	बिमवां	8	,,
29	असनी	6	,,
30	आरा	6	,,
31	गुंडी	7	,,
1.6.54	गजियापुर	6	,,
2	सिताबदियारा	3	सारन
3	ताजपुर	5	,,
4	सिसवन	6	,,
5	मुरारपट्टी	7	,,
6	खुंजवा	5	,,
7	अर्कपुर	5	,,
8	जीरादेई	5	,,
9	फुलवरिया फार्म	6	,,
10	हथुआ	6	,,
11	जगरनाथा	6	,,
12	कुचायकोट	5	,,
13	विश्वंभरपुर	6	,,
14	बधना	6	चंपारण
15	पखनाहा	7	,,
16	बेतिया	8	,,
17	गुरबलिया	6	,,
18	पकरीहार	6	,,
19	लौरिया	6	,,

24	साठी	7	चंपारण
25	चनपटिया	7	,,
26	वृंदावन	7	,,
27	सरिसवा	7	,,
28	मझौलिया	7	,,
29	सुगौली	8	,,
30	कनछेदवा	9	,,
1.7.54	अरेराज	7	,,
2	मछरगांवा	7	,,
3	तुरकबलिया	6	,,
4	मोतीहारी	8	,,
5	भखरिया	7	,,
6	मधुबनी आश्रम	7	,,
7	ढाका	5	,,
8	बखरी	6	,,
9	चैता	7	,,
10	पिपरा स्टेशन	7	,,
11	चकिया	8	,,
12	बाकरपुर	8	,,
13	केसरिया	7	,,
14	साहेबगंज	8	मुजफ्फरपुर
15	मनाईन	7	,,
16	बरहिमा बाजार	8	,,
17	कथइया	7	,,
18	मोतीपुर	7	,,
19	नरियार कोठी	6	,,
20	भोलाईपुर	9	,,
21	सिरखिया मठ	9	,,
22	वैरिया	5	,,
23–30	मुजफ्फरपुर	6	,,
31	तुर्की	8	,,
1.8.54	कुढ़हनी	6	,,
2	सोंधो	7	,,
3	महुआ	7	,,
4	चकउमर	8	,,

9	बाजीदपुर	6	दरभंगा
10	दलसिंगसराय	7	,,
11	पतेली	8	,,
12	रुपौली	5	,,
13	समस्तीपुर	6	,,
14	हासा	3	,,
15	सिंधिया	8	,,
16	समरथा	6	,,
17	नरहन	6	,,
18	रोसड़ा	3	,,
19	सिंगियाथाना	11	,,
20	सुंभा वंगरहटा	6	,,
21	पोखराम	8	,,
22	बंदा	6	,,
23	हथौड़ी	6	,,
24	वारिसनगर	6	,,
25	बीरसिंहपुर	6	,,
26	बैनी (पूसा रोड)	6	,,
27	सादीपुर	5	,,
28	पातेपुर	7	मुजफ्फरपुर
29	सकरा	8	,,
30	रघुनाथपुर	10	,,
31	मुजफ्फरपुर	8	,,
1.9.54	भीषमपुर	6	,,
2	छपरा	8	,,
3	जनाढ़	7	,,
4	सैदपुर	6	,,
5	बेलसंड	10	,,
6	परसौनी	5	,,
7	शिवहर	8	,,
8	धनकौल	6	,,
9	रेवासी	5	,,
10	बभनगामा	7	,,
11	सीतामढ़ी	7	,,
12	वथनाहा	7	,,
17	पुपरी	7	मुजफ्फरपुर
18	दोघरा आश्रम	9	दरभंगा
19	कमतौल	8	,,
20	परसौनी	7	,,
21	धकजरी	7	,,
22	बेनीपट्टी	4	,,
23	साहरघाट	5	,,
24	खिरहर	7	,,
25	उमगांव	7	,,
26	छतौनी	7	,,
27	जयनगर	5	,,
28	पदमाग्रूप	6	,,
29	खजौली	8	,,
30	बाबू बरही	8	,,
1.10.54	खुटौना	9	,,
2	सिसवार	7	,,
3	नरहिया	6	,,
4	लौकही	6	,,
5	भरफोरी	6	,,
6	कुनौली बाजार	7	सहरसा
7	करजाइन बाजार	10	,,
8	दौलतपुर	6	,,
9	गनपतगंज	9	,,
10	पिपरा बाजार	9	,,
11	मौरा	9	,,
12	त्रिवेणीगंज	7	,,
13	कोरियापट्टी	6	,,
14	छातापुर	8	,,
15	जीवछपुर	8	,,
16	बलुवा बाजार	8	,,
17	नरपतगंज	8	पूर्णिया
18	कन्हौली	8	,,
19	फारबिसगंज	7	,,
20	कुशमाहा	6	,,
21	कपड़फोड़ा	6	,,

26	बहादुरगंज	6	पूर्णिया
27	कुंभिया हाट	8	,,
28	सुखानी	7	,,
29	ठाकुरगंज	9	,,
30	सोनापुर	9	,,
31	चोपड़ा	6	,,
1-2.11.54	इस्लामपुर	14	,,
3	कचनाहाट	8	,,
4	पांजीपाड़ा	6	,,
5	किशनगंज	6	,,
6	कानकी	9	,,
7	निचितपुर	8	,,
8	नवाबगंज पोखरिया	7	,,
9	कल्याणगांव	7	,,
10	वारसोईघाट	10	,,
11	सालमारी	6	,,
12	सोनौली	9	,,
13	चांदपुर	8	,,
14	भटगामा	5	,,
15	रानीपतरा	7	,,
16	बिनोदपुर	8	,,
17	कटिहार	9	,,
18	कुमारीपुर	8	,,
19	मनीहारी	8	,,
20	वाखरपुर दियारा	10	भागलपुर
21	साहेबगंज	11	संथाल परगना
22	मिर्जाचौकी	10	,,
23	चपरी	9	,,
24	बलबड्डा	9	,,
25	महगामा	8	,,
26	पत्थरगामा	7	,,
27	लोहरडीहा बाजार	9	,,
28	बाओरीजोर	8	,,
29	बोरियो	10	,,
30	वृंदावन	8	,,

5	शहरगामा	10	संथाल परगना
6	महेशपुर राज	9	,,
7	रौदीपुर	9	,,
8	पकुड़िया	8	,,
9	सरस डंगाल	9	,,
10	शिकारी पाड़ा	9	,,
11	गान्दो	8	,,
12	दुमका	8	,,
13	रानी घाघर	14	,,
14	फतेहपुर	12	,,
15	चित्रा	9	,,
16	करों	8	,,
17	पविया	11	,,
18	जामताड़ा	6	,,
19	गेरिया	8	,,
20	केवटजाली	9	,,
21	कुमारडूबी	10	मानभूमि
22	निरसा	6	,,
23	गोविंदपुर	12	,,
24	धनबाद	7	,,
25	राजगंज	10	,,
26	मालकेरा	9	,,
27	झरिया	11	,,
28	बलियापुर	7	,,
29	चोलियामा	9	,,
30	रघुनाथपुर	9	,,
31	ढेकसिला	11	,,

[बिहारयात्रा के कुल 5567 मील ऊपर बताये हैं लेकिन वे आंकड़े ठीक नहीं हैं – कुल मील 6940 होते हैं।]

1.1.55	शालतोड़ा		बांकुड़ा (बंगाल)
2	पाबड़ा		,,
3	मेजिया		,,
4	बन आशुरिया		,,
5	अमर कानन		,,

11	बांकादह	बांकुड़ा
12	गड़बेता	मेदिनीपुर
13	चंद्रकोना रोड	,,
14	शालबनि	,,
15	गोदापियाशाल	,,
16	मेदिनीपुर	,,
17	खड़गपुर	,,
18-19	बलरामपुर	,,
20	भेटिया	,,
21	खेजरा	,,
22	कुकाइ	,,
23	रसुलपुर	,,
24	नेकुड़सेनी	,,
25	दांतन	,,
26	लक्ष्मणनाथ रोड	उड़ीसा यात्रा आरंभ
27	नाम्पो	
28	बढ़ापाल	
29	जामसूलि	
30	मथानी	
31	रूपसा	
1.2.55	बैलिंगा	
2	माणित्री	
3	पूर्णा बारिपदा	
4	अयोध्या	
5	रेमुना	
6	बालेश्वर	
7	शेरगढ़	
8	बहानगांबाजार	
9	सोरो	
10	जामझाड़ी	
11	मैतापुर	
12	भद्रक	
13	गणीगंज	
14-15	हाटड़िही	
16	आनंदपुर	

21	सुजनपुर
22	रामचंद्रपुर
23	सैयदपुर
24	प्रीतिपुर
25	राधारमणपुर
26	मानापुर
27	राजकनिका
28	औल
1.3.55	पट्टामुंडई
2	बोधगांव
3	मधुसागर
4	ठाकुरपाटणा
5	एंडरा
6	असुरेश्वर
7	नियाकुंडा
8	कनकपुर
9	डीहसाही
10	तग्तंग
11	राणीपड़ा
12	बिरीबाटी
13	कटक
14	फुलनखरा
15	भुवनेश्वर
16	संगलेइ
17	दांडमुकुंदपुर
18	साक्षीगोपाल (सेवासदन)
19	चंदनपुर
20–31	पुरी
1.4.55	बेलदल
2	चंडीब्रह्मपुर
3	मलाग्राम
4	कोणार्क
5	बेगुनिया
6	निमापारा
7	रेखला

13	तारनोई	
14	खुर्दा	
15	सरुआ	
16	चकादा	
17-18	राजसुनाखला	
19	टांगासाही	
20-21	नयागढ़	
22	गोदीसाही	
23	नंदीघर	
24	ओड़गा	
25	रोहीबांक	
26	कराचुली	
27	कराड़बाड़ी	
28-29	बुगुड़ा	
30	बालीपदर	
1.5.55	भटनई	
2	आस्का	
3	पितल	
4-5	हिंजलीकाटु	
6		
7–11	ब्रह्मपुर	गंजाम
12	बालीपदा	,,
13	गोकर्णपुर	,,
14	दिगपहंडी	,,
15	पुड़ामारी	,,
16	तप्तपाणी	,,
17	लोहागुड़ी	,,
18	सिकुंडीपदर	,,
19	रानीखमा	,,
20	वाघमारी	,,
21	लुबारसिंगी	,,
22	छेलिगुड़ी	,,
23	सुंदरबा	,,
24	तुमन	,,
25	उदयगिरी	,,

30	जुंपापुर	कोरापुट
31	मेरिंग	,,
1.6.55	विक्रमपुर	,,
2-3	कुजेन्द्री	,,
4	चाकिंडा	,,
5	सूंटिढ़मिणि	,,
6	दुर्गी	,,
7	हजारीडांग	,,
8	विषमकटक	,,
9	कुटारागुड़ा	,,
10	डांगसुरुड़ा	,,
11	कुटारागुड़ा	,,
12	विषमकटक	,,
13	चाटिकोना	,,
14	भातपुर	,,
15	बुधुनी	,,
16	देवदल	,,
17	रायगड़ा	,,
18	जपाखाल	,,
19	गुमा	,,
20	कुंभी	,,
21	कुटली	,,
22	कुटिंगा	,,
23	लक्ष्मीपुर	,,
24	डुमरीपदर	,,
25	काकरीगुमा	,,
26	अंबिली अंबगुड़ा	,,
27	कोटागुड़ा	,,
28	डोंगरी	,,
29	कोरापुट	,,
30	देवदल	,,
1.7.55	जयपुर	,,
2	रेंडापल्ली	,,
3	बोरीगुम्मा	,,
4	कमरा	,,

9-10	डाबूगांव	कोरापुट
11	जपाखाल	,,
12	मखिआ	,,
13	तारागांव	,,
14	मिरगानगुड़ा	,,
15	नरसिंगुड़ा	,,
16	मिरगानगुड़ा	,,
17	आंवली	,,
18	आंचला	,,
19	फफुगांव	,,
20	रानीगुड़ा	,,
21	कोरापुट	,,
22	डुमरागुड़ा	,,
23-24	सुनाबेड़ा	,,
25	दलिआंब	,,
26	सेमिलीगुड़ा	,,
27	मातलपुर	,,
28	भीतरगुड़ा	,,
29	काकरीगुमा	,,
30	डुमरीपदर	,,
31	लक्ष्मीपुर	,,
1.8.55	पांगीपालुर	,,
2-3	नारायणपटना	,,
4	कुंभारी	,,
5	बंदगांव	,,
6	आलमोंडा	,,
7	राविकणा	श्रीकाकुलम् (आंध्र)
8	पार्वतीपुरम्	,,
9	कोटीपाम	,,
10	केरड़ा	कोरापुट
11	बड़राइसिंग	,,
12	पितामहल	,,
13	कत्तापेटा	,,
14	अटामुंडा	,,
15-16	सिकरपाई	,,

22	कुंभारढमिणी	कोरापुट
23	नानीरीगुड़ा	,,
24	हाटमुनीगुड़ा	,,
25	मुनिगुड़ा	,,
26	शिवपदर	,,
27-28	अंबादला	,,
29	जगदलपुर	,,
30	आगुलि	,,
31-1.9.55	डांगसुरुड़ा	,,
2-3	हनुमंतपुर	,,
4	जरापा	,,
5	यंकान्नागुड़ा	,,
6	बेलमगुड़ा	,,
7	श्रीगुड़ा	,,
8	गुड़ारी	,,
9	डेरीगांव	,,
10	बाभुनी	,,
11-12	गुणुपुर	,,
13	उकंबा	,,
14	पद्मपुर	,,
15	खिलिंगराई	,,
16	पेनकम्	,,
17	तुंबकोणा	,,
18	बड़मुलगा	,,
19	गरंडा	,,
20	निलमगुड़ा	,,
21-29	कुजेन्द्री	,,
30	जगन्नाथपुर	,,
1.10.55	वातीली	श्रीकाकुलम् (आंध्र)
2	भामिनी	,,
3	कोथुरु	,,
4	हीरामंडलम्	,,
5	नौथाला	,,
6	सर्वकोटा	,,
7	राणा	,,

12	चिल्कापालेम्		श्रीकाकुलम्
13	पोण्डुरु		,,
14	राजम्		,,
15	बोंडापाले		,,
16	चिपुरुपल्ली		,,
17	गरिविड़ी		,,
18	मोहदा		विशाखापट्टनम्
19	विजयनगरम्	8	,,
20	ढेंकाड़ा	6	,,
21	भोगपुरम्	6	,,
22	पोलेपल्ली	6	,,
23	भिमलीपट्टनम्	7	,,
24	परदेशीपालेम्	6	,,
25	येंडादा	6	,,
26	वॉल्टेयर	7	,,
27	विशाखापट्टनम्	3	,,
28	कानिथी	9	,,
29	पर्वदा	6	,,
30	अंकापल्ले	7	,,
31	तालापालेम्	9	,,
1.11.55	येल्लमनचिली	7	,,
2	इटिकोप्पक	8	,,
3	नक्कापल्ली	8	,,
4	गुंटापल्ली	8	,,
5	तुनी	10	पूर्व गोदावरी
6	अन्नवरम्	10	,,
7	कठिपुड़ी	8	,,
8	पिठापुरम्	10	,,
9	सामलकोटा	8	,,
10	काकिनाड़ा	8	,,
11	वेलंगी	10	,,
12	रामचंद्रपुरम्	8	,,
13	तापेश्वरम्	10	,,
14	काडियाम्	10	,,
15	राजमहेंद्री	8	,,

20	अमलापुरम्	9	पूर्व गोदावरी
21	नगरम् (मामिड़िकुडुरु)	8	,,
22	राजोलु	7	,,
23	पालाकोलु	9	पश्चिम गोदावरी
24	वीरवासरम्	7	,,
25	भीमावरम्	7	,,
26	केसवरम्	10	,,
27	ताड़ेपल्लीगुड़म्	11	,,
28	तालुकु	11	,,
29	कानुरु		,,
30	निदादावोलु	10	,,
1.12.55	नेलातुरु	10	,,
2	देवरपल्ली		,,
3	चिन्मयगुड़म्		,,
4	कोयालागुड़म्		,,
5	झांगरेड़ीगुड़म्		,,
6	बोरमपालेम्		,,
7	जीलाकुरगुड़म्		,,
8	भोगोलु		,,
9	पेड़ावेगी		,,
10	इलुरु		,,
11	हनुमान जंक्शन	8	कृष्णा
12	गोलापल्ली	9	,,
13	नुझविड़	6	,,
14	अमिरीपल्ली	8	,,
15	नुन्ना	9	,,
16–19	विजयवाड़ा	6	,,
20	मंगलगिरी		गुंटूर
21	नांबुरु		,,
22	गुंटूर		,,
23	लाम		,,
24	लामाले		,,
25	अमरावथी		,,
26	कंचिक चेरला		कृष्णा
27	जुझ्झुर		,,

1.1.56	तिरुवुर		कृष्णा
2	कालेर	9	खम्मामेठ
3	तल्लाड़ा	8	,,
4	एंकुर	8	,,
5	गुंडेपुडी	8	,,
6	सिरिपुरम्	9	,,
7	कोट्टेगुड़म्	6	,,
8	अंशतपल्लेयेल्लंडु	7	,,
9	टेकुलापले	7	,,
10	रगबिनगुडम्	9	,,
11	येल्लंडु	8	,,
12	स्तोक्कारापल्ली	8	,,
13	फुल्लुरु	8	,,
14	गारला	8	,,
15	राजोले	8	वारंगल
16	महबूबाबाद	8	,,
17	अय्यगुगरिपल्ली	7	,,
18	पुरुषोत्तमगुड़म्	8	,,
19	गुंडेपुडी	9	,,
20	येर्रपुड़ी	11	नलगोंडा
21	वेलुगुपल्ली	8	,,
22	जाजिरेड़ीगुड़ा	8	,,
23	येरुकुलापाडु	5	,,
24	वल्लाला	8	,,
25	काटंगुर	8	,,
26	नरकटपल्ली	9	,,
27	रामनापेट	9	,,
28	केलावरम्	8	,,
29	वेंकाममाडी	8	,,
30	पोचमपल्ली	6	,,
31	दातासिंगारम्	8	हैदराबाद
1.2.56	रापोल	8	,,
2	इब्राहिमपट्टम्	8	,,
3	तुर्कयामजाल	8	,,
4	सरुनगर	8	,,

10	नांदगांव	7	महबूबनगर
11	शादनगर	5	,,
12	मोगलगिड्डा	6	,,
13	कोंदुर्ग	6	,,
14	येलकिचेरला	8	,,
15	कुल्कचेरला	8	,,
16	वेंचेडु	8	,,
17	गुंडमाल	7	,,
18	मुड्डुर	7	,,
19	कोथाग	8	,,
20	धनवाड़ा	8	,,
21	मारिकल	6	,,
22	पहारदीपुर	7	,,
23	डेकुर	7	,,
24	मन्नेमकुडा	8	,,
25	महबूबनगर	8	,,
26	जड़चेरला	8	,,
27	अवांचा	8	,,
28	सिरसावड़ा	8	,,
29	सेपुर	8	,,
1.3.56	राहुपट्टीपेट	8	,,
2	मरिपल्ले	8	,,
3	तालकापल्ले	8	,,
4	पेड्डामुदनुर	8	,,
5	तिगापल्ली	8	,,
6	माधवरावपल्ली	8	,,
7	श्रीरंगपुरम्	8	,,
8	गुम्माडम्	8	,,
9	क्याथुर	8	,,
10	अलमपुर	8	,,
11-12	कुर्नूल	6	कुर्नूल
13	पेटापाडु	5	,,
14	नागलापुरम्	7	,,
15	अमदागुंटला	7	,,
16	कोंडुनूर	6	,,

21	कप्पाटा	6	कुर्नूल
22–24	अड़ोनी	6	,,
25	कान्नूरचेड्डु	8	,,
26	अलूर	8	,,
27	नागरिदोना	7	,,
28	चिप्पगिरी	6	,,
29	गुंटकल		अनंतपुर
30	कोनाकोंडला	5	,,
31	रघुलापाडु	8	,,
1.4.56	उर्वकोंडा	7	,,
2	पन्नोबालम्	8	,,
3	जल्लिपल्ली	7	,,
4	कोडेरु	8	,,
5	रातानुपल्ली	7	,,
6	अनंतपुर	8	,,
7	कोरापोडु	8	,,
8	बंदामिडीपले	6	,,
9	नयनपले	7	,,
10	मुट्चुकोटा	7	,,
11	तड़पात्री	8	,,
12	कोंडेपले	8	,,
13	दथापुरम्	7	कड़प्पा
14	गंदलुर	6	,,
15	खदेराबाद	7	,,
16	जम्मालमाडुगु	5	,,
17	देवगुड़ी	7	,,
18	प्रोड़ेतूर	8	,,
19	चापाड़	8	,,
20	आनंदाश्रम	5	,,
21	खाजीपेट	7	,,
22	चेन्नूर	8	,,
23	कड़प्पा	8	,,
24	कानमलोपले	8	,,
25	वोन्तिमिट्टा	7	,,
26	मंतापमपले	7	,,
27	गंडलुर	7	

1.5.56	कुडूर	9	कडप्पा
2	सेट्टिगुंटा	8	,,
3	मामंदुर	9	चित्तूर
4	करकमपाडु	7	,,
5	तिरुपति	8	,,
6	खयामपेट	7	,,
7	के.आर्. राजकुट्टला	6	,,
8	पुत्तूर	8	,,
9	नगरी	8	,,
10	नेल्लत्तूर	7	,,
11	अरकाडुकुप्पम्	8	,,
12	तिरुवलमगुडु, तिरुवांगुड़ी	7	,,
13	तिरुवल्लूर		चिंगलपेट (तमिलनाड़)
14			
15	आवड़ी		मद्रास
16	अंबत्तूर		,,
17–19	मद्रास		,,
20	मौलीवाकम्		,,
21			
22	पेरंबुदुर		चिंगलपेट
23	तिरुमंगलम्		,,
24	तेन्नेरी		,,
25	राजमपेठ		,,
26से 6.6.56	कांचीपुरम्		,,
7	कलकाटुर		,,
8	अवलूर		,,
9	किलपुत्तुर		,,
10	तमनूर		,,
11	कावाननु (दंडनूर)		,,
12	कल्यानकुलम्		,,
13	मारगल		,,
14	तिरुपुल्लिवनम्		,,
15	उत्तरमेरूर्		,,
16			
17	वयलूर		,,
18	[illegible]		

22			चिंगलपेट
23			,,
24	उलुथामंगलम्		,,
25	पुदुपट्टु		,,
26			,,
27	वेड़ाल		,,
28	चुनमपेट		द. अर्काट
29			,,
30			,,
1.7.56	ब्रह्मदेशम्		,,
2	गुरुवम्मापेट		,,
3	तिंडीवनम्		,,
4	उमकुर, ओमंदुर		,,
5	किलियापुर		,,
6	ओलिंडियमपट्टु		,,
7	इरंबाई		,,
8-9	पांडिचेरी		पांडिचेरी
10	इडयारपालयम्		द. अर्काट
10	किरुमम्बकम्		,,
11	कडलूर	7.4	,,
12	नेल्लिकुप्पम्	7	,,
12	मेल्लपट्टांबकम्	4.4	,,
13	पनरुती	5	,,
14	सेमाकोट्टाइ	4	,,
14	वीरपेरुमलनल्लूर	6.4	,,
15	थिरुनामनल्लूर	4	,,
15	पोदुर	6	,,
16	अलुन्दरपेट	7.2	,,
16	कुमारमंगलम्	4.4	,,
17	सेंबिमादेवी	5.6	,,
17	त्यागदुर्गम्	5	,,
18	कल्लकुरुचि	7.4	,,
18	उलगामकथान	3.7	,,
19	चित्रसेलम्	6.6	,,
19	वसुदेवानूर	3.4	,,

22	पडुनायकनपालयम्	सेलम
22	कोट्टावाड़ी	,,
23	वलपड़ी	,,
23	बेलूर	,,
24	कट्टाशुपट्टी	,,
24	अयोध्यापटनम्	,,
25	गांधीग्राम, सेलम	,,
26	सूर्यमंगल	,,
26	पागलपट्टी	,,
27	ओमलूर	,,
27	पुसारी	,,
28	कालयमपट्टी	,,
28	वडहमपट्टी	,,
29	कणवायपुदुर	,,
29	केतनायकम्	,,
30	वसागौंडनुर	,,
30	मेनासी	,,
31	रायमपट्टी	,,
31	चिंदनापाडी	,,
1.8.56	मोरप्परु	,,
2	मन्वेनल्लूर	,,
2	इसमात्तूर	,,
3	आर्यकुलम्	,,
3	धर्मपुरी	,,
4-5	धर्मपुरी (सर्वो. पुरम्)	,,
6	माटलामपट्टी	,,
6	करीमंगलम्	,,
7	अगारम्	,,
7	वेल्लामपट्टी	,,
8	थोगरापल्ली	,,
8	संतूर	,,
9	अंजूर	,,
9	कृष्णगिरि	,,
10	चिनिमुचुर	,,
10	कावेरीपट्टनम्	,,

13	मल्लपुरम्	सेलम
13	पालकोड्ड	,,
14	पापारपट्टी	,,
14	इंदूर	,,
15	सोगतुर	,,
15	नल्लमपल्ली	,,
16	पालयमपुदुर	,,
16	तोपुर	,,
17		
17	मेचेरी	,,
18	कोटैपट्टी	,,
18	वनवासी	,,
19	अलकंठपुरम्	,,
19	चिन्नूर	,,
20	कुल्लमपट्टी	,,
20	एडपाड़ी	,,
21		
22-23	भवानी	कोयम्बतूर
24	कावंडपाड़ी	,,
24	पेरियपुलिउरम्	,,
25		,,
26	धवलपेट	,,
27		
28	नेरिंजीपेट	,,
28	सिंगसपेट	,,
29	गुरुवरेड्डियार	,,
30		
31		
1.9.56	तुक्कनायकन्पालयम्	,,
1	एलुर	,,
2	काशीपालयम्	,,
2	सत्यमंगलम्	,,
3	माक्कानायकन्पालयम्	,,
3		
4	गोपिचेट्टीपालयम्	,,
5	कुगलुर	,,

8	कुलंदैपालयम्	कोयम्बतूर
8	कोप्पाम्पालयम्	,,
9	पुजयमपुलयमपट्टी	,,
9	पुलियापट्टी	,,
10	दोड्डामपालयम्	,,
10	राजन्नगर	
11	राजनगर	,,
11	पुद्दुकडनूर	,,
12	अम्मापालयम्	,,
12	चिनकल्लीपट्टी	,,
13	कणवुकराय	,,
13	पमूर	,,
14	मुंडीपालयम्	,,
14	सूरीपालयम्	,,
15	शैयूर	,,
15	पडूरपालयम्	,,
16	अविनाशी	,,
17	करुवलुर	,,
17	अन्नूर	,,
18	पुगलुर	,,
18	सिरुपुहईंपुदुर	,,
19	मेट्टुपालयम्	,,
20	कारमड़ै	,,
20	मेकपालयम्	,,
21	पेरिनायकम्पालयम्	,,
22		
22	कोविलपालयम्	,,
23	वेलाकिनारु	,,
24	चिन्नतडागम्	,,
24	अेड़यारपालयम्	,,
25	वीरकालयम्	,,
25	चूड़ापाणी	,,
26		,,
26	टोंडामुटुर	,,
27	अलंदुराई	,,

29	मधुकरै	कोयम्बतूर
30	कोड़ीपालयम्	,,
30	पालातुराई	,,
1-2.10.56	कोयम्बतूर	,,
3	पीलमेडु	,,
3	सिंगनल्लुर	,,
4	नंजूड़ापुरम्	,,
4	वेल्लालूर	,,
5	चेट्टीपाल्यम्	,,
5	कड्डापाल्यम्	,,
6	इरुकूर	,,
6	मुलुर	,,
7	लक्ष्मीनायकम्पालयम्	,,
7	अप्पनायकन्पट्टी	
8	चंद्रपुरम्	,,
8		
9	वदमचेरी	,,
9	मलैकौंडनपालयम्	,,
10	अनुप्पपट्टी	,,
10	पल्लडम्	,,
11	केथनुर	,,
11	वडुमपालयम्	,,
12	गंगनायकम्पालयम्	,,
13	नागलिंगपुरम्	,,
13	वेलायुधम्पालयम्	,,
14	काटुपालयम्	,,
14	अमरावतीपालयम्	,,
15	बजाजनगर (वीरपांडी)	,,
16	तिरुपुर	,,
17	गांधीनगर तिरुपुर	,,
18	निरुपुर	,,
19		,,
19	अंगिरीपालयम्	,,
20	वेलंपालयम्	,,
20	मेरटुपालयम्	,,

23	शेन्नीमलै	कोयम्बतूर
23	काशीपालयम्	,,
24	पेरुन्दुराई	,,
24	नसियानूर	,,
25	इरोड	,,
26	चिन्नीयमपालयम्	,,
26	इलमतुर	,,
27	सिवागिरि	,,
27	तांडम्पालयम्	,,
28	कस्तूरबाग्राम (कोइंबतूर)	,,
29	मलयकोटाई	,,
29	कुट्टेपालयम्	,,
30	चिन्नमत्तुर	,,
30	मेटुपालयम्	,,
31	वेल्लैकोविल्	,,
31	कण्णावरम्	,,
1.11.56	कंगयम्	,,
1	आरसम्पालयम्	,,
2	पोन्नन्कलीवलसु	,,
2	नेजलीकन्गोडन्पालयम्	,,
3	कुंडम्	,,
4–11	धारापुरम्	,,
12	तेरपट्टी	,,
13	दासनायकम्पट्टी	,,
14	कंदपनकोण्डवलयुर (कदप्पकोन्डनवलसु)	मदुरै
15	मुलियम्पालयम्	,,
16–22	पलनी	,,
23	कन्नालमपट्टी	,,
24	छत्रम्पट्टी	,,
25	ओडुमछत्रम्	,,
26	समलयपट्टी	,,
27	कोंडवनायकनपट्टी	,,
28	डिंडिगल	,,
29-30	गांधीग्राम	,,

5	कल्लुपट्टी		मदुरै
6	देवदानपट्टी		,,
7	पेरियकुळम्		,,
8	पुडुपट्टी		,,
9	तेनी		,,
10	बोड़ीनायकनूर		,,
11			,,
12	तेवारम्		,,
13	पट्टीवीरमपट्टी (उत्तमपालयम्)		,,
14	कन्नम्		,,
15	कागीलपुरम्		,,
16	चिन्नमनूर		,,
17	कलुतिलि		,,
18	कोडुविलारपुट्टी	7.1	,,
19	अरैपडिथेवनपट्टि	6	,,
20	आंडिपट्टी	6.4	,,
21	चेट्टियपट्टी	8.6	,,
22	उसिलमपट्टी	6	,,
23	चिंगकट्टले	9.1	,,
24	पेरिय्युर	8.7	,,
25-26	कल्लुपट्टी	6	,,
27	पुदुपट्टी	7	,,
28	तिरुमंगलम्	6.7	,,
29	तिरुपरंकुड्रम्	8.5	,,
30-31	मदुरै	7.5	,,
1.1.57	कुमारन्		,,
2	बेविडमनुडुर		,,
3	कल्लांदरी		,,
4	चिट्टामपट्टी		,,
5	तिरुवादऊर		,,
6	मेलूर		,,
7	वांजीनगरम्		,,
8	कुट्टमपट्टी		,,
9	पुरीलीपट्टी		,,
10	तोरंगकुरुनी		तिरुचिरापल्ली

15	कुलिनलै	तिरुचिरापल्ली
16	रामकृष्ण कोडिले	,,
17	श्रीरंगम्	,,
18	त्रिचनापल्ली	,,
19	तिरुवरमपुर	,,
20	कल्लनी	तंजावर
21	तिरुक्काटपल्ली	,,
22	तिरुवेय्यार	,,
23	तंजावर	,,
24	पुंडी	,,
25	उकडाई ओकड़े	,,
26	वलंजीमन	,,
27	कुंभकोणम्	,,
28	कोडावसल	,,
29	कोराडाचेरी	,,
30	तिरुवारूर	,,
31	तिरुक्कारवयले	,,
1.2.57	तिरुतुरायपुंडी	,,
2	करिपट्टिनम्	,,
3	वेदारण्यम्	,,
4	वैमुदु	,,
5	तिल्लैवलाहम्	,,
6	तंबीकोट्टै	,,
7	पट्टुकोट्टै	,,
8	तिरुचिरामवलम्	,,
9	कीरमंगलम्	
10	पुनैमावहर	
11	अरमृतांगी	
12	आवुडैयारकोविल्	
13	एम्बाल	
14	शाक्कोट्टै	रामनाड़
15	करैकुडी	,,
16	कुण्ड्रकुडी	,,
17	तिरुप्पुक्कुइ	,,
18	नेरकुप्पै	,,

23	सिरुगुड़ी		
24	काट्टुपुट्टी		
25	नत्तम्		
26	परली		
27	पलामडु		
28	पुदुपट्टी		
1.3.57	शोलवंदान		
2	विक्रमंगलम्		
3	सेवकानुराई		
4	कंडाई		
5	अप्पाकराई		
6	कोटापट्टाई		
7-8	सापटूर		
9	एम. कल्लुपट्टी		
10	कोट्टापट्टी		
11	पेरुनगमनालूर		
12	थीडीयन		
13	नट्टमपट्टी		
14	उत्तमनायकुर (कल्लुपट्टी)		
15	अरसमरथपट्टी		
16	शेलमपट्टी		मदुरै
17	ओरप्पनूर		,,
18	आचम्पट्टी		,,
19	पोपुनायकन्पट्टी	8	,,
20	अरसपट्टी	8	,,
21	गोपीनायकन्पट्टी	5	,,
22	पोत्तनदी	7	,,
23	पुलीअमपट्टी	7	,,
24	एस्. पी. नाथम्	7	,,
25	नेडुंकुलम्	5	,,
26	करियापट्टी	8	रामनाड
27	तिरुचूली	12	,,
28	एम. रेडिआपट्टी	9	,,
29	अरुपुकोट्टाई	12	,,
30	विरुधुनगर	10	,,
4	करिवलम्वन्दनलूर	12	तिरुनलवेली
5	शंकरन्कोविल्	7	,,
6	कळहुमलै	13	,,
7	तिरुमंगलकुरुची	11	,,
8		13	,,
9	तिरुनलवेली	13	,,
10	मुंदरादइप्पु	12	,,
11	नान्गुनेरी	7	,,
12	वळ्ळीयुर्	10	,,
13	अंबलवणपुरम्	12	,,
14-15	कन्याकुमारी	12	कन्याकुमारी
16	नागरकोविल्	13	,,
17	मुलक्कूमूडु	13	,,
1	पारशाल	12	त्रिवेंद्रम् (केरल)
19	नेय्यट्टिन्कारा	7	,,
20	काटक्कडा	8	,,
21	मलयाडी	12	,,
22	नेडुमंगाड	11	,,
23	त्रिवेंद्रम्	11	,,
24	कन्याकुलंगरा	12	,,
25	किलिमानूर	13	,,
26	अयूर	11	,,
27	काट्टारकरा	12	क्विलोन
28	अडूर	13	,,
29	अलंतूर	13	,,
30	चेंगन्नूर	10	,,
1.5.57	चंगनाचेरी	10	कोट्टायम्
2	कोट्टायम्	12	,,
3	कल्लारा	13	,,
4	वायकम्	13	,,
5	नड़क्काव	10	,,
6	अर्नाकुलम्	11	अर्नाकुलम्
7	आलवाय्	12	,,
8-13	कालड़ी	12	,,
14	करूकुट्टी	7	त्रिचूर

19	मुल्लूरकरा	8	त्रिचूर
20	चेल्लकरा	8	,,
21	मायन्नूर	11	,,
22	पलयन्नूर	10	,,
23	तरूर	11	पालघाट
24	अलतूर	10	,,
25	वड़क्कानचेरी	10	,,
26	नेम्मारा	12	,,
27	कोल्लंगोड	12	,,
28	चिट्टूर	12	,,
29	कोझिन्हान्पारा	11	,,
30	एलप्पुली	10	,,
31	पालघाट	9	,,
1.6.57	कोटुवायुर	8	,,
2	पेरुवेंबा	7	,,
3	कोड़वायुर		,,
4			,,
5	एरुमप्पेट्टी (एरीमयूर)		,,
6	कुत्तनूर	10	,,
7-8	परली	10	,,
9	कण्णंपरियारम्	8	,,
10	पेरूर	6	,,
11	कोंगाड	8	,,
12	कटंबझिपुरम्	8	,,
13	वल्लिनेल्लि	9	,,
14	कोतकुर्षी	8	,,
15	शोरनुर	13	,,
16	आरंगोट्टुकरा	10	,,
17	कूट्टनाड़	10	,,
18	पेरुंपिलाव	8	,,
19	कुन्नंकुलम्	6	,,
20	चावक्काड़	11	,,
21	पुन्नरयूरकुलम्	9	,,
22	पोन्नानी	11	,,
23	तवनूर	8	,,
24	[illegible]	[illegible]	

28	मंचेरी	12	कोझिकोड
29	तिरुवाली	7	,,
30	वाणियंबलम्	6	,,
1.7.57	पांडिक्काडु	8	,,
2	करुवारुकुंड	7	,,
3	पुल्लंगोड	8	,,
4	अमरंवलम्	9	,,
5	निलंबूर	9	,,
6	एड़वना	9	,,
7	अरिकोड	12	,,
8	कोंडोट्टी	9	,,
9	रामनाट्टुकरा	9	,,
10	चेरुवन्नूर	6	,,
11–14	कोझिकोड	5	,,
15	पारोपडी	6	,,
16	कुन्नमंगलम्	8	,,
17	कोडुवल्ली	6	,,
18	तामरश्शेरी	8	,,
19	उण्णिकुलम्	5	,,
20	बालुश्शेरी	7	,,
21	काकुर	6	,,
22	कक्कोटी	6	,,
23	एलत्तूर	8	,,
24	पोयिलकाव	6	,,
25	कोयिलांडी	4	,,
26	तेरियत्तुकडवु	5	,,
27	पेरांब्र	7	,,
28	पाक्कनारपुरम्	8	,,
29	मेलड़ी	6	,,
30	वटकरा	7	,,
31	विल्यापल्ली	6	,,
1.8.57	वट्टोली	7	,,
2	कायक्कोड़ी	6	,,
3	कुट्टिपुरम्	8	,,
4	हरंगन्नूर	7	,,
5	[illegible]	[illegible]	

9	एड़क्काड़	8	कण्णूर
10-11	कण्णूर	7	,,
12	पप्पिनिशेरी	7	,,
13	पलयंगाडी	11	,,
14	पय्यान्नूर	10	,,
15	करिवेल्लूर	6	,,
16	नीलेश्वरम्	8	,,
17	कान्हनगड	8	,,
18	पेरिया	7	,,
19	उडुम	9	,,
20	कासरगोड़	6	,,
21	कुंबला	9	,,
22	मंगलपाड़ी	6	,,
23	मंजेश्वरम्	8	,,
24	उल्लाल		मंगलूर (कर्नाटक)
25-26	मंगलूर		,,
27	फिरंगीपेट		,,
28	पाणे मंगलोर		,,
29	मणी		,,
30	पत्तुर		,,
31	कुंब्रा		,,
1.9.57	कनकमजलू		
2	सुलिया		
3	अरंतोडु		
4	संपाजे		
5	घाटपर–जंगल में		
6	मधे		
7	मड़िकेरी		
8	मुरनाड़		
9	विराजपेट		
10	हातुर		
11	पोनमपेट		
12	तितिमानी		
13	आनेचौकूर		
14	पेरियपट्टणम्		
15	कलहल्ली		

19		
20		
21–24	येलवाल	मैसूर
25–28	मैसूर	,,
29	श्रीरंगपट्टणम्	,,
30	पांडवपुरम्	,,
1.10.57	बेल्लाळ	,,
2	मेलकोटे	मंड्या
3	सोमनहळ्ळा	,,
4	दुद्दा	,,
5	मंड्या	,,
6	हनगेरे	,,
7	मद्दूर	,,
8	मत्तिकेरे	,,
9	चेत्रपट्टण	बंगलोर
10	रामनगर	,,
11	बिड़दी	,,
12		,,
13	नायनहल्ली	,,
14		,,
15–20	बंगलोर	,,
21	वेलामंगला	,,
22	महादेवपुरा	
23		
24–26	हेब्बूरु	
27	गुलूर	
28	सिद्धगंगामठ	तुमकुर
29	तुमकुर	,,
30	गोल्लाहल्ली	,,
31	गुब्बी	,,
1.11.57	कड़वा	,,
2	कल्लुरु	,,
3	मायसंद्रा	,,
4	तुरवेकेरे	,,
5	नोणवीणाकेरे	
6	तिपटूर	

13	मत्तीगट्टा		चिकमंगलूर
14	कडूर		
15	कुडलुर		
16	तरिकेरे		
17	वेरंदूर		
18	भद्रावती		
19	निड़िगे		
20	शिवमोगा		
21	अमनूर (अयावरम्)		
22	सावलेगा (सावलंगा)		
23	न्यामति		
24	होन्नाळी		
25	हरेकेरे		धारवाड
26	मेलेवेनूर		,,
27	बेल्लोड़ी		,,
28	हरिहर		,,
29-30	दावणगेरे		,,
1.12.57	हीरेमंगलगेरे		,,
2	कंचीकेरे		,,
3	अर्सीकेरे		,,
4	हरपनहल्ली		बेल्लारी
5	कानेहल्ली		,,
6	हलगल्ली		,,
7	हिरेहड़गली		,,
8	होलालु		,,
9	हावनूर		धारवाड़
10	होसरित्ति		,,
11	सिद्दापुर		,,
12	शिगली		,,
13	लक्ष्मेश्वर		,,
14	येलवगी		,,
15	सावनूर		,,
16	बंकापुर		,,
17	नरेगल		,,
18	संगूर		,,
19	हावेरी		,,
24	कोड़	8	धारवाड
25–27	हिरेकेरूर	7	,,
28	नागवनदे	6	,,
29	रट्टेहल्ली	7	,,
30	मासूर	6	,,
31	नेलबागिल्	7	,,
1.1.58	शिकारपुर	5	शिमोगा
2	कुक्कूर	8	,,
3	शिरालकोप्पा	7	,,
4	तोगरसी	7	,,
5	येण्णेकोप्प	7	,,
6	चिक्केरूरु	9	
7–9	हंसभावी	5	धारवाड़
10	सोंदगी	8	,,
11	मुड्डाडमल्लपुर	3	
12	तिलवल्ली	8	शिमोगा
13	कुसनुर	6	
14	आलूर	5	धारवाड
15	आडूर	8	,,
16	बेळंगालपेट	6	,,
17	बम्मनहल्ली	6	,,
18	हानगल	8	,,
19	परली (कामाक्षिकोप)	8	,,
20	मळगी	7	कारवार
21	कातूर	8	,,
22	मुंडगोड	8	,,
23	बम्मीगट्टी	8	,,
24	कलघटगी	8	धारवाड
25	मिश्रिकोटी	10	,,
26–30	हुबली	9	,,
31-1.2.58	धारवाड़		,,
2	तुमवाड़		,,
3	दास्तीकोप्प		,,
4	देपीकोप्प		,,
5	करवत्ती		,,
6	येल्लापुर		कारवार

पदयात्रा पड़ाव-सूचि

10	वासरे	कारवार
11	अंकोला	,,
12	गोकर्ण	,,
13	काठाल	,,
14	कुमठा	,,
15	होन्नावर	,,
16	चंदावर	,,
17	वड़ाल	,,
18		,,
19	दोड्डमने	,,
20	बिलगी	,,
21	हलगेरी	,,
22-23	जोग	,,
24	मनमने	,,
25	सिद्धापुर	,,
26	चंद्रगुत्ती	शिमोगा
27	बनवासी	,,
28	सुगावी	,,
1.3.58	शिरसी	कारवार
2	हुलगोळ, स्वादी	,,
3	मंचीकेरी	,,
4	सवणगेरी	,,
5	कण्णीगेरी	,,
6	भगवती	,,
7	सम्ब्राणी	,,
8	हल्याळ	,,
9	अळणावर	धारवाड
10	गोलीहल्ली	बेलगांव
11	नंदगड	,,
12	खानापुर	,,
13	देसूर	,,
14-15	बेलगांव	,,
16	कड़ोली	,,
17		,,
18		,,
19	यमकनमरड़ी	,,
23	खड़केवाड़ा	रत्नागिरी (महाराष्ट्र)
24	कापशी	,,
25	उत्तूर	,,
26	गड़हिंग्लज	,,
27	वायवण, भादवण	,,
28-29	आजरा	,,
30	दाभोळ	,,
31	घाटकरवाड़ी	,,
1.4.58	अंबोली	,,
2	दानोली	,,
3	बांदा	,,
4	सावंतवाड़ी	,,
5	माणगांव	,,
6	कसाल वेंतोरे	,,
7	कुड़ाळ	,,
8	कट्टा	,,
9		,,
10-11	गोपुरी (कणकवली)	,,
12	साबडांग	,,
13	हड़पड़	,,
14-15	खारेपाटण	,,
16	कोंड्ये	,,
17	राजापुर	,,
18	ओणी	,,
19	वाकेड़	,,
20	लांजे	,,
21		,,
22	हरचेरी	,,
23	रत्नागिरी	,,
24	हातखंबा	,,
25	आंबा	,,
26	देवळें	,,
27	साखरपा	
28		
29	आंबें	कोल्हापुर
30	मलकापुर	,,

4	केर्ली	कोल्हापुर
5-6	कोल्हापुर	,,
7	गुड़मुड़शिंगी	,,
8	रुकडी	,,
9	इचलकरंजी	,,
10	कुरुंदवाड	,,
11	जयसिंगपुर	,,
12-13	सांगली	सांगली
14	मिरज	,,
15	कवलापुर	,,
16	तासगांव	,,
17	सावर्डे	,,
18	मांजर्डे	,,
19	वायफळें	,,
20	नेलकरंजी	,,
21	करगणी	,,
22	आटपाडी	,,
23	दिधंची	,,
24	कटफल	
25	मोहूद	सोलापुर
26	सोनके	,,
27	गारेगांव	,,
28.5 से 3.6.58	पंढरपुर	,,
4	तुंगत	,,
5	पोखरापुर	,,
6	अर्जुनखोंड	,,
7	कोंडी	,,
8	सोलापुर	,,
9	उले	,,
10	मालडंबरा	उस्मानाबाद
11	तुळजापुर	,,
12	वड़गांव	,,
13	उस्मानाबाद	,,
14	उपले	,,
15	तेर	,,
16	मुराड़	,,

20	महापूर	बीड
21	रेणापुर	,,
22	पळशी	,,
23	सायगांव	,,
24	चनई	,,
25	आंबेजोगाई	,,
26	दिघोल-अंबा	,,
27	चंदनसावरगांव	,,
28	केज	,,
29	मस्साजोग	,,
30	यळंब	,,
1.7.58	उदंड वड़गांव	,,
2	वैधकिन्ही	,,
3	पाटोद	,,
4	थेरल	,,
5		,,
6	राजुरी	,,
7	बीड़	,,
8	हिरापुर	,,
9	गेवराइ	,,
10	शाहागड़	औरंगाबाद
11	वड़ी	,,
12	पाचोड़	,,
13	जामखेड़	,,
14	आडूळ	,,
15		,,
16	चिकलठाणा	,,
17-18	औरंगाबाद	,,
19	नक्षत्रवाड़ी	,,
20	बिड़किन्	,,
21	ढोरकिन्	,,
22	पिंपळवाडी	,,
23	पैठण	अहमदनगर
24	घोटण	,,
25	शेवगांव	,,
26	चिलखनवाड़ी	,,
27	भानस हिवरा	,,

31	वड़गांव	औरंगाबाद
1.8.58	लासूर	,,
2		,,
3	वेरूळ	,,
4	टापरगांव	,,
5	कन्नड़	,,
6	भांबुरवाड़ी	,,
7		
8-9	चाळीसगांव	धुलिया
10	उंबरखेडें	,,
11	कलमड़ू	,,
12	शिरूड़	,,
13	बोरविहीर	,,
14-15	धुलिया	,,
16	कापड़णें	,,
17		,,
18	बोरीस	,,
19	शिरधाने	,,
20	वर्धाने	,,
21	साक्री	,,
22	पिंपळनेर, कासारे	,,
23		,,
24	डांगशिरवाडे	,,
25	रोहड़	,,
26	धनेर	,,
27	पिंजार	,,
28	छड़वेल कोर्डे	,,
29	अष्टे	,,
30	नंदुरबार	,,
31	वड़गांव कोलदे	,,
1.9.58	प्रकाशे	,,
2	शहादे	,,
3	पाडलदे	,,
4	पाटिलवाड़ी	,,
5	घाटली	,,
6	खामले	,,
11		धुलिया
12		,,
13-14	अक्कलकुवा	,,
15	नटावद	,,
16	खांडबारा	,,
17		,,
18	चिंचपाड़ा	,,
19	नवापुर	,,
20		,,
21		,,
22	सोनगढ़	सूरत (गुजरात)
23	कीकाकुई कपूरा	,,
24	व्यारा	,,
25	वेड़छी	,,
26	बांकानेर	,,
27	बारडोली	,,
28	कटोदरा	,,
29	सूरत	,,
30	कठोर	,,
1.10.58	सियालज	,,
2	धमड़ोद	,,
3	अंकलेश्वर	भरुच
4	भरुच	,,
5	शुक्लतीर्थ	,,
6	राजपारड़ी	,,
7	नवाराजूवाड़िया	,,
8	ओरी	,,
9	राजपीपळा	,,
10	मांगरोळ	,,
11	डेकाई	,,
12	नारधा	बडौदा
13	गजलावाट	,,
14	काशीपुरा	,,
15	रंगपुर	,,
16	मोरांगणा	,,
17	छोटाउदेपुर	

22	ओरवाडा	पंचमहाल
23	गोधरा	,,
24	वेजलपुर	,,
25	कालोल	,,
26	सांडासाल	बड़ौदा
27	सावली	,,
28	सोखड़ा	,,
29	बड़ौदा	,,
30	रणोली	,,
31	वासद	खेड़ा
1.11.58	आणंद	,,
2	बोरसद	,,
3	बोचासण	,,
4	पेटलाद	,,
5	तारापुर	,,
6	खंभात	,,
7-8	भावनगर	भावनगर
9	वरतेज	गोहिलवाड़
10	सोनगढ़ (सिहोर)	,,
11	आंबला (सणोसरा)	,,
12	इंगोराळा	,,
13	मालपरा	,,
14	चावंड	,,
15	(चावंडा) कावरा	,,
16	कोरड़ा पीठा	,,
17	जसदण	,,
18	वीरनगर	,,
19	सतधार	,,
20	त्र्यंबा	राजकोट
21	राजकोट	,,
22	घंटेश्वर	,,
23	पड़धरी	,,
24	हड़मतिया	,,
25	जामवंथली	,,
26	अलियाबाड़ा	जामनगर

2	कुंताई	कच्छ
3	बागथला	
4	मोरबी	राजकोट
5	नीचीमांडल	
6	कड़ियाणा	
7	हळवद	
8	चूली	
9	धांगध्रा	
10	राजसीतापुर	
11	सुरेंद्रनगर-वढवाण	
12	अंकेवाळिया	
13	लिमड़ी	
14	पाणशीणा	
15	बरौल	
16	गूंदी	अमदाबाद
17	गांगड़	,,
18	बावळा	,,
19	सरखेज	,,
20	अमदाबाद	,,
21	साबरमती	,,
22	कोबा	,,
23	कलोल	महेसाणा
24	डोंगरवा	,,
25	जगुदण	,,
26	महेसाणा	,,
27	वालम	,,
28	ऊंझा	,,
29	सिद्धपुर	,,
30	नवासर	बनासकांठा
31	पालनपुर	,,
1.1.59	चित्रासणी	,,
2	धाणधा	,,
3	मोमनवास	साबरकांठा
4	नवावास	,,
5	सतलासणा	महेसाणा

11	भिलोड़ा		साबरकांठा
12	शामळाजी		,,
13	ईसरी		,,
14	कसाणा		,,
15	सीमरवाड़ा		बांसवाड़ा (राजस्थान)
16	लिखतिया	10	,,
17	गलियाकोट	10	,,
18	भूखिया, आनंदपुर	10	,,
19	अरथोना	10	,,
20	परतापुर	10	,,
21	सागवाड़ा	11	,,
22	टामटिया	9	,,
23	हडमतिया(जोगीवाड़ा)	10	,,
24	रघुनाथपुरा	11	,,
25	डूंगरपुर	11	,,
26	घोड़ी	9	उदयपुर
27	ऋषभदेव	10	,,
28	परसाद	10	,,
29	टीड़ी	10	,,
30	काया	10	,,
31	उदयपुर	10	,,
1.2.59	डबोक	12	,,
2	वल्लभनगर	10	,,
3	फतेहनगर	11	,,
4	भोपालसागर	9	,,
5	कपासन	7	चित्तौड़
6	घोसंडा (सिंहपुर)	10	,,
7	चित्तौड़	10	,,
8	चित्तौड़गढ़	6	,,
9	चेंदेरिया	10	,,
10	गंगरार	10	,,
11	हमीरगढ़	10	भीलवाड़ा
12	भीलवाड़ा	10	,,
13	सांगानेर (सुवाणा)	7	,,
14	बनेड़ा	9	,,
15	ढींकोला	10	,,

19	देवली	12	टोंक
20	सावर	9	अजमेर
21	पारा	9	,,
22	केकड़ी	9	,,
23	सरवाड़	12	,,
24	ठांठोनी	12	,,
25	नसीराबाद	10	,,
26	हटुण्डी	8	,,
27–1.3.59	अजमेर	7	,,
2	गगवाना	9	,,
3	किशनगढ़	10	,,
4	हरमाड़ा	11	,,
5	रूपनगर	10	,,
6	परबतसर	10	नागौर
7	मकराना	11	,,
8	कुचामनसीटी	12	,,
9	निमोद	8	,,
10	डरबड़ा	8	,,
11	लोसल	10	सीकर
12	खूड़	9	,,
13	कासीकाबास	9	,,
14	सीकर	8	,,
15	रसीदपुरा (खड़ी)	9	,,
16	लक्ष्मणगढ़	8	,,
17	हरसावा	8	,,
18	फतेहपुर	8	,,
19	होड़सर	7	,,
20	रामगढ़	7	,,
21	रतननगर	6	चूरू
22-23	चूरू	6	,,
24	बिसाऊ	8	,,
25	बिरमी	9	झुंझुनू
26	रिजानी	8	,,
27	झुंझुनू	5	,,
28	बगड़	8	,,
29	चिड़ावा	10	

3	कुड़ल	7	
4	जूई जुमली	8	
5	लोहानी	7	
6	भिवानी	9	
7	मिताथल	8	
8	बवानीखेड़ा	11	
9	मिलकपुर	7	
10	हांसी	5	
11	गमनखेड़ी	5	
12	नारनोद	7	
13	रामरई	7	संगरूर (पंजाब)
14	जिंद	7	
15	खाड़खर	8	
16	उछना	9	
17	नरवना	10	
18	उझाना	8	
19	खतौरी पक्की	9	
20	मोमिआन	9	पटियाला
21	मनहेर	9	,,
22	समाना	9	,,
23	ढेनथाल	6	,,
24	रणबीरपुरा	6	,,
25	पतियाला	6	,,
26	ढरेहरी	8	,,
27-28	राजपुरा	8	,,
29	भांकरपुर	9	अंबाला
30	चंडीगढ़	9	
1.5.59	मालोदा	6	
2	माजरी सैलवा	8	
3	महानपुर	8	
4	रापर R.S	4	
5	तेनसा	8	होशियारपुर
6	बलाचौरा	9	
7	बलाचौरा-महादपुर	8	
8	गढ़शंकर	7	
9	वांगीकला छावेवाल	8	

14	मुकरियां	10	
15	हर्शमनसार	7	
16	अंडोरा	9	कांगड़ा
17	कोठी	7	,,
18	जैसूर	6	,,
19	जंदाइल	7	,,
20-21	पठानकोट		
22	लखनपुर		जम्मू-कश्मीर
23	बसंतपुर		,,
24	थेन		,,
25	बसौली		,,
26	सबार		,,
27	पर्नाला		,,
28	बिलावर		,,
29	मांडली		,,
30	गुजरुनगरौटा		,,
31	रामकोट		,,
1.6.59	बिलासपुर		,,
2	मानसर		,,
3	नयीकल्डी		,,
4	सांबा		,,
5	रामगढ़		,,
6	अर्निया		,,
7	रणवीरसिंहपुरा		,,
8	मीरासाहिबा		,,
9-11	जम्मू		,,
12	दुमाना		,,
13	अखनुर		,,
14	गंधारवान		,,
15	चौकीचौरा		,,
16	खुरोट		,,
17	सुंदरबनी		,,
18	सियार		,,
19	बगनौटी		,,
20	नौशेरा		,,
21	नारियां		,,

26	डेरा की गली	जम्मू-कश्मीर
27	बफलियाज	,,
28	सूरनकोट	,,
29		,,
30–1.7.59	पूंच	,,
2	चांडक	,,
3–8	मंडी राजपुरा	,,
9-10	लोरेन	,,
11	मोलसर	,,
12	बोटपथरा	,,
13	तुंगन	,,
14	गोरबन	,,
15–19	गुलमर्ग	,,
20	बाबारेषि	,,
21	मागाम	,,
22	पट्टण	,,
23	दिलना	,,
24	बारामुल्ला	,,
25	बत्तरगाम	,,
26	हिंदवारा	,,
27	बूमे	,,
28	वटलब	,,
29	सोपोर	,,
30	हमेर	,,
31	सिंगपुरा	,,
1.8.59	शालटेंग	,,
2–6	श्रीनगर	,,
7	पामपुर	,,
8	अवंतीपुरा	,,
9	बीजबेहारा	,,
10	मार्तण्ड	,,
11	अक्कड़	,,
12	गनेशपुर	,,
13-14	पहलगांव	,,
15	बटकुट	,,
16	ऐशमुकाम	,,
22	बेरीनाग	जम्मू-कश्मीर
23	टटहार	,,
24	बनीहाल	,,
25	रामसू	,,
26	डिगड़ोल	,,
27	रामबन	,,
28	पीड़ा	,,
29	बटोत	,,
30	कूद	,,
31	चंपियाड़ी	,,
1.9.59	सस्मोली	,,
2-3	उधमपुर	,,
4	गढ़ी	,,
5	टिकारी	,,
6-7	कटरा	,,
8	दोमेल	,,
9	नगरौठा	,,
10-11	जम्मू	,,
12	भटिंडी	,,
13	बम्मनवाड़ी	,,
14	विजयपुर	,,
15	सांबा	,,
16	गगवाल	,,
17	हीरानगर	,,
18	हमीरपुर	,,
19-20	कठुवा	,,
21	सुजानपुर	पंजाब
22–24	पठानकोट	,,
25	बुधाला	,,
26	धारबंगला	,,
27	डुडेरा	,,
28	ककिरा	,,
29	नौशीखड़	,,
30	बनीखेत	,,
1.10.59	बाथरी-मनौला	,,
2	द्रढ़ा के बास	,,

9	चवाड़ी
10	परछोड़
11	टुंडी
12	स्योहनाट
13	चुलेल
14	द्रमण
15	
16	
17	
18	
19	
20	
21	
22	
23	भरवाईं
24	मुबारिकपुर
25	ओएल
26	दौलतपुर
27	भूल
28	रिह
29	
30	
31	
1.11.59	
2	
3	
4	
5	तारापुर
6	
7	
8	
9	
10	
11-12	अमृतसर
13	
14	तरनतारन

19	फिरोजपुर	
20		
21	ममरोट	
22	गुरुहरसहाय	
23		
24		
25	फाजलका	
26		
27	शिवपुर हैड	गंगानगर (राजस्थान)
28-29	गंगानगर	,,
30		,,
1.12.59		
2		
3		
4		
5	सरांवा बोदल	
6	मलोट	
7	मसभांवाला	
8	बादल	
9	डबवाली	
10	संगतमंडी	
11	भटिंडा	
12	शेरगढ़	
13	रामांमंडी	
14	कालांवाली	
15	बड़ागुड़ा	
16-17	सिरसा	
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25-26	संगरिया	राजस्थान
27	नगराना	,,

पदयात्रा पड़ाव-सूचि

1.1.60	तलवाड़ा झील	राजस्थान
2	एलनाबाद	पंजाब
3		
4		
5		
6		
7	निवारण	
8	केरांवाला	
9	डिंग	
10	चिट्टकलां	
11	फतेहाबाद	
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
29		
30		
31		
1.2.60		
2		
3		
4		
5-6	मोगा	
11	बिलगा	
12-15	फिल्लौर	
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26	करतारपुर	जालंधर
27		
28		
1.3.60		
2		
3		
4		
5-6	जालंधर शहर	
7	जालंदर छावनी	
8	फगवारा	
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		

27		
28		
29		
30		
31		
1.4.60		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8	बागपत	मेरठ
9	पिलाना	,,
10	बालेनी	,,
11	कालिंजरी	,,
12-13	मेरठ	,,
14	भूड़वराल	,,
15		,,
16		,,
17	हापुड़	,,
18	गुलावटी	बुलंदशहर
19		,,
20	बुलंदशहर	,,
21	रौड़ा	मेरठ
22		,,
23	अनूपशहर	बुलंदशहर
24	डिवाई	
25		
26	अतरौली	अलीगढ़
27	शाहपुर	,,
28	अलीगढ़	,,
29	पालिरजापुर	,,
30	सासनी	,,
1.5.60	हाथरस	,,
2	चंदवारा	,,

9	डोकी	आगरा
10	फतेहाबाद	,,
11	अन्नोटा	,,
12	पिनहट	,,
13	रछेड़	मुरैना
14-15	अंबाह	,,
16	पोरसा	,,
17	नगरा	,,
18	कनेरा	भिंड
19	कदोरा	,,
20	सुरपुरा	,,
21	उदीतपुरा	,,
22-23	भिंड	,,
24	कचोंगरा	
25	स्योंड़ा	
26	पांढरी	
27	नयागांव	
28	रेरुआ	
29	रेऊंझा	
30	अड़ोखर	
31	जरसेना	
1.6.60	वरहद	
2	छेमका	
3	तुकेड़ा	
4	बरेठा	
5	मुरार	
6-7	लश्कर	
8	नयागांव	
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		

21			
22	कस्बाथाना		राजस्थान
23	देवरी	8	
24	शाहबाद	7	
25	कलौनी	7	
26	समरानियां	7	
27	सीतावाड़ी	9	
28	भंवरगढ़	7	
29	किसनगंज	11	
30	बारां	10	
1.7.60	बामली	8	
2	बपावर	8	
3		7	
4	खानपुर	7	
5	लुकट	7	
6	मंडावर	7	
7	झालरापाटन	8	
8	बीदा	8	
9	सुवास	8	
10	सोयराकलां		शाजापुर (मध्य प्रदेश)
11	शाजापुर		,,
12			
13			
14	आगर		
15			
16			
17			
18			
19			
20			
21			
22			
23			
24.7 से 25.8.60	इंदौर		
26.8 से 1.9.60	कस्तूरबाग्राम		
2			

7		
8		
9		
10		
11	महेश्वर	
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28	इंदौर	
29		
30		
1.10.60		
2		
3		
4		
5		
6		
7	हरदा	
8	टिमरनी	9
9	टेमागांव	11
10	ढेकना	10
11	कुरसना	11.5
12	चिरायारला	6

17-18	बैंतूल	7	
19			
20			
21			
22			
23			
24			
25			
26			
27			
28			
29			
30	चोरगांव		
31	चोरइ		
1.11.60	फुलेरा		
2	सिवनी		
3			
4			
5			
6	लखनादौन		
7			
8			
9			
10			
11	जबलपुर		
12	,,		
13			
14			
15			
16			
17			
18			
19			
20			
21			
22			

27			
28			
29			
30			
1.12.60			
2			
3	हनुमाना		
4	ड्रामलगंज		
5	वरौधा		
6	लालगंज		
7	पथरौला		
8	मड़िहान		
9	कोटवा		उत्तर प्रदेश
10	मिर्जापुर		,,
11	कछवा		,,
12	सेवापुरी		,,
13			,,
14			,,
15–19	काशी		,,
20	मुगलसराय		,,
21			,,
22			,,
23			,,
24			,,
25	दुर्गावती	10	शाहाबाद(बिहार)
26	मोहनियां	9	,,
27	पुसौली	7	,,
28	कुवरा	7	,,
29	भद्रशीला	10	,,
30	सासाराम	8	,,
31	डेहरी	12	,,
1.1.61	जम्होर	10	गया
2	औरंगाबाद	9	,,
3	रानीगंज	11	,,
4	आमस	10	,,
5	शेरघाटी	10	,,

11	जमुआवां	9	गया
12	हिसुआ	9	,,
13	नवादा	9	,,
14	वारसलीगंज	12	,,
15	रोह		,,
16-17	सोखोदेवरा आश्रम	12	,,
18	अलीगंज	10	,,
19	धधौर	10	मुंगेर
20	जमुई	10	,,
21	खादीग्राम	9	,,
22	लक्ष्मीपुर	8	,,
23	वनहारा	8	,,
24	तारापुर		,,
25	बेंराई		,,
26	सुलतानगंज		भागलपुर
27	गौरीपुर-मकनपुर		,,
28	भागलपुर		,,
29	तुलसीपुर		,,
30	नौगछिया		,,
31	भौवाड्योढ़ी		पूर्णिया
1.2.61	बलिया		,,
2	कुकरौन		,,
3	सहरा		,,
4	रानीपतरा		,,
5	पूर्णिया		,,
6	लखना		,,
7	खरैया		,,
8	कांजिया		,,
9	किशनगंज		,,
10	इकरछाल		प.दिनाजपुर (बंगाल)
11	इसलामपुर		,,
12	रामगंज		,,
13	सोनारपुरहाट		,,
14	भीमभार		दार्जिलिंग
15	बागडोगरा		,,
16	सिलिगुड़ी		,,

20	मयनागुड़ी		जलपाइगुड़ी
21	हुजलुडांगा		,,
22	विद्याश्रम-धुपगुड़ी		,,
23	शालबाड़ी		,,
24	फालाकाटा		,,
25	शीलबाड़ी		,,
26	सोनापुर		,,
27	अलीपुरदुवार		,,
28	बानेश्वर		कुचबिहार
1-2.3.61	कुचबिहार		,,
3	मारुगंज		,,
4	तुफानगंज		,,
5	हालाकुरा	7	ग्वालपाड़ा (असम)
6	छत्रशाल	8	,,
7-8	गोलकगंज	9	,,
9	काछखाना	7	,,
10	धेपधेपि	9	,,
11	धर्मशाला	8	,,
12	धुबुरी	10	,,
13	आलमगंज	10.5	,,
14	बगरीवारी	11.5	,,
15	रेकारबाटा	10.5	,,
16	लक्ष्मीगंज	6	,,
17	कोकराझार	10	,,
18	दामोदरपुर	8	,,
19	शालकोचा	7	,,
20	चापर	8	,,
21	योगीघोपा	8	,,
22	ग्वालपाड़ा (नाव से)		,,
23	दोबापारा	6.5	,,
24	आगिया	10	,,
25	कृष्णाई	8	,,
26	दूधनै	8	,,
27	दरंगिरी	7	,,
28	शिमलीतला	11	,,
29	रंगजुलि	9	,,

3	कर्कापारा	7	कामरूप
4	छयगांव	7	,,
5	रामपुर	6	,,
6	पलाशबारी	6	,,
7	जालुकबारी	8	,,
8-9	गुवाहाटी	6	,,
10-11	गुवाहाटी शरणिया	2	,,
12	सातगांव	8	,,
13	सोनापुर	12	,,
14	खेत्री	7.5	,,
15-16	निबिरा	4	,,
17	जागीभकतगांव	9	नगांव
18	धरमतुल	9	,,
19	मरिगांव	10	,,
20	चराइबाही	8	,,
21	रहा	9	,,
22	डिमौं	7	,,
23	जाजरि	6.5	,,
24	बरदोवा	9	,,
25	नगांव	10	,,
26	रूपही	7	,,
27	पुरनिगुदाम	6	,,
28	रंगागड़ा	8	,,
29	कुंवरीटोल	10	,,
30	शिलघाट	8	,,
1.5.61	तेजपुर नाव से	13.5	दरंग
2	पाचमाइल	5	,,
3	जामुगुरि	9	,,
4	चतिया	7	,,
5	चारिआलि	7	,,
6	जिंजिया	9.5	,,
7	बिहाली		,,
8	जमिरि		,,
9	बुरंगाबारी		,,
10	गहपुर		,,
11	कलाबारी	41	,,

16	गोहांइबारी	5	उ.लखीमपुर
17	बिहुपुरिया	7	,,
18	बदति	6	,,
19	खोरा	8	,,
20	लालुक	7	,,
21	नाउबोइचा	6	,,
22	उ. लखीमपुर	8	,,
23–25	कमलाबोरिया	5	,,
26	पानीगांव	2	,,
27	आझाद	2	,,
28	बहादुरचुक	2	,,
29	उज्ज्वलपुर	6	,,
30	उ. लखीमपुर	5	,,
31	लक्ष्मौं	7	,,
1.6.61	सोनापुर	5	,,
2	फुलबारी	6	,,
3	लालुक	6	,,
4	दौलतपुर	5	,,
5	लाहलियाल	5	,,
6	धुनाबारी	3.5	,,
7-8	सांदहखोवा	3	,,
9	संतपुर	3.5	,,
10–15	खोरा	2	,,
16	जापजुप	7	,,
17-18	डूंगीबिल	5.5	,,
19-20	श्रीभुत्रां	8	,,
21-22	बरबाली	3	,,
23	पथालीपहाड़	2	,,
24	मधुपुर	6	,,
25	जराबारी	8	,,
26	तातिबहार	3.5	,,
27	रंगति	3.5	,,
28	चराइदलनि	4	,,
29	दुलियापथार	4	,,
30	पानबारी	6	,,
1.7.61	बदती	7	,,

6	भेरेकी दुलियागांव	3	उ.लखीमपुर
7	माजगांव	7	,,
8	महारा सत्र	7	,,
9	कदम	7	,,
10	बगीनदी	6	,,
11	आनंदबगान	7	,,
12	मइनापारा	6.5	,,(सुवर्णश्री)
13-14	बरदलनी	9	,,
15	माइचा	2.5	,,
16	चुनियाकारी	3.5	,,
17	पदुमनि	5	,,
18	घिलामारा	9	,,
19	शिंगिया	4	,,
20	बान्टांगांव	7.5	,,
21	बामुनगांव	2.5	,,
22	ढकुवाखाना	3.5	,,
23	मातमरा	6	,,
24	बकुलगुरि	6	,,
25	जियामुरिया	7	उ.लखीमपुर
26-31	गोविंदपुर	3	,,
1.8.61	माछखोवा	7	,,
2-3	बाटघरिया	6.5	,,
4-5	धेमाजी	8	,,
6	मोटिखोला	3	,,
7	बाउली		,,
8	चिचिमुख		,,
9	जोरकटा		,,
10	धेनुखना	20	,,
11	घांईगांव	3	,,
12	घुघुहा	6	,,
13	केकूरी	10	,,
14	नलनीपाम	5.5	,,
15-16	मरीढ़ोल	5.5	,,
17	चिचिबरगांव	5	,,
18	चापेखाटी	5	,,
19	देउरीघाट	4	,,

26	टेंगाघाट	9	दिब्रूगड़
27	चाबुवा	8.5	,,
28	आपनीमुरिया	10	,,
29	तिनसुखिया	6	,,
30	माकूम	5	,,
31	डुमडुमा	10	,,
1.9.61	पानीखोवा	9	,,
2	दिग्बोई	10	,,
3	बरजान	7	,,
4	भादैपांचआलि	7	,,
5	नाहरकटिया	10	,,
6	कुवरीगांव	9	,,
7	टिंग्खांग्	4	,,
8	राजगड़	10	,,
9	औफुलिया	7	,,
10	मरान	8	,,
11	हेनसुवा पुखुरी	10	,,
12	चेपन	12	शिवसागर
13	पाटचाको	6	,,
14	नेमुगुरि	5	,,
15	गड़गांव	8	,,
16	गेलेकि	12	,,
17	नामति	10	,,
18	आमुगुरि	8	,,
19	चारिंग्	7	,,
20	गौरीसागर	7	,,
21-22	जयसागर	5	,,
23-24	शिवसागर	3	,,
25	आखैफुतिया	5	,,
26-27	दिसांग्मुख	6	,,
28	बानमुख	5	,,
29	कोंवरपुर	7	,,
30	बोकाबिल	9	,,
1.10.61	दिखौमुख	4	,,
2	खनामुख	7	,,
3-7	जांजी	7	,,

14–16 दोलाखरिया	4	शिवसागर
17-18 मेजेंगा	3	,,
19 कहारगांव	4	,,
20–22 नाजिरा	6	,,
23 टेंगापुखुरी	6	,,
24 मथुरापुर	6	,,
25 दिचांगपानी	7	,,
26–28 बकटा आश्रम	8	,,
29 बरपियाल	6	,,
30 आरखैया	6	,,
31 काकतीबारी	11	,,
1.11.61 लंगपतिया	10	,,
2-3 चापेखाटी	5	,,
4 बरुवानगर	6.5	,,
5–15 बरहाट	9	,,
16-17 टियकिया	7.5	,,
18 बरहाट	7.5	,,
19–21 चापेखाटि	8.5	,,
22 कानुबारी	6	,,
23 बेंगनाबारी	7.5	,,
24 सोनारी	06	,,
25 चाफ्राई	5.5	,,
26 लाकुवा	6	,,
27 दलबागान	6.5	,,
28 गड़गांव	7.5	,,
29 मेटेका	8	,,
30 कालुगांव	5	,,
1.12.61 हातीबारी (चारिंग)	8.5	,,
2 हांहचरा	7	जोरहाट
3 टियक	4	,,
4 माइबेलिया	10	,,
5 मरियानी	9	,,
6 तिताबर	5	,,
7 माधवपुर	11	,,
8 नआलिढ़ेकियाजुली	8	,,
9 जोरहाट	8	,,

15–17 बामुनगांव	4	उ.लखीमपुर
18–20 करेगुरी (केकुरी)	6.5	,,
21–23 बेबेजिया	10	,,
24-25 बिलमुख	10	,,
26-27 देवलिया	6.5	,,
28 घटापारा	6.5	,,
29-30 दीघला	7	,,
31 बकुलगुरी	6	,,
1.1.62 मलिगांव	4	,,
2 मदारगुड़ी	6	,,
3-4 भोमाजारनी (जोगीखुटा)	5	,,
5 जोरकटा	5	,,
6-7 रोहा	6	,,
8 मूरतिया	6	,,
9–12 ढकुवाखाना	7	,,
13–16 गोविंदपुर	4	,,
17 देवलिया	10	,,
18 पदुमनि	11	,,
19 धेमाजी	11	,,
20 गरमरा	11	,,
21 माटिखोला	8	,,
22 बेंगनागड़ा	11	,,
23 गोविंदपुर	8	,,
24 बामुनगांव	8	,,
25 घांहीं गांव	10	,,
26 माइचा	12	,,
27 धेमाजी	11.5	,,
28 चिचिबरगांव	11	,,
29 मरिढ़ोल	5	,,
30 माटिखोला	8	,,
31 टंगनपड़ा	5	,,
1-2.2.62 बाटघरिया	7	,,
3 नरोवाथान	6	,,
4-5 घुघुहा	2.5	,,
6-7 पुवासाइकिया	6	,,
8 हाथीपाड़ा	5	,,

16-17 मरिढ़ोल	3	उ.लखीमपुर
18-19 रंगपुरिया	2	,,
20-21 चौखाम	3.5	,,
22-23 नौपाम	4	,,
24-25 माटिखोला	2	,,
26-28 धेमाजी	4.5	,,
1.3.62 माछखोवा	12	,,
2 जियामरिया	11	,,
3 बामुनगांव + बेबेजिया	11	,,
4 घामरा	12.5	,,
5-10 मैत्री आश्रम	8	,,
11 नौबोइचा	12	,,
12 डोंगीबिल	12	,,
13 माधवपुर	12	,,
14 डुबिया	11	तेजपुर
15 बालीजान	10	,,
16 बोटियामारी	12	,,
17 माजगांव	8	,,
18 विश्वनाथ चाराली	11	,,
19 चुतिया	8	,,
20 जामुगुरी	8	,,
21 तेजपुर	13	,,
22 पिथोखोवा	10	,,
23 ढेकियाजुली	12	,,
24 ओरांग	12	मंगलदै
25 रोवटा चाराली	8	,,
26 उदलगुरी	10	,,
27 कबिराली पुथिमारी	10	,,
28-29 कलैगांव	8	,,
30 राजघाट	8	,,
31 मंगलदै	6	,,
1.4.62 देवरमाई	11	,,
2 बुरीनागांव	6	,,
3 निज चराबारी	7	,,
4 खैराबारी	8	,,
5-6 गोरेश्वर	12	उ. कामरूप
12 बांहजानी	11.5	उ.कामरूप
13 दामोदरधाम	7	,,
14 घगरापारा		,,
15 रंगिया	7	,,
16 दुवारकुचि	8	,,
17 तामुलपुर	8	,,
18 धमधमा	8	,,
19 बरमा	8	,,
20 बरिमरवा	6	,,
21-24 गेरुवा आश्रम	11	,,
25 बरबरि	5	,,
26-27 मचलपुर	5	,,
28 चराहमारी	5	,,
29-30 जालाह	6	बरपेटा
1.5.62 बाघमारा	7	,,
2 नित्यानंद	7	,,
3 आठियाबारी	7	उ. कामरूप
4 बेन्नाबारी	5	,,
5 पोलुकटा	7	,,
6 जरतालुक	5	,,
7 कटाहबारी	5	,,
8-9 कुमरिकटा	8	,,
10 चंदनपुर	6	,,
11 नागरिजुलि	6	,,
12 कोचुबारी	5	,,
13 नाओकाटा	5	,,
14 मोहोरीपारा	3	,,
15 कारिपारा	1.5	,,
16 गोरेश्वर	3	,,
17 मुक्तापुर	6	,,
18 खटरा सत्र	8	मंगलदै
19 पकादलि	7	,,
20 सिमाझार	6	,,
21 आउलाचौका	9	,,
22 गधियापारा	6	,,
23 दलगांव	6	,,

29	उदाला	8	मंगलदै
30	हरिसिंगा	5	,,
31	छैबारी	7	,,
1.6.62	चमलाबारी	6	,,
2	औतोला	5	,,
3	टेंगाबारी	5	,,
4-5	निजबरमपुर	8	,,
6	बियासपारा	5	,,
7	हाजरिकापारा	6	,,
8	रंगामाटी	5	,,
9	गरुखुटि	6	,,
10	बिजुली बारी	6	,,
11	खास सोनापुर	5	,,
12	डुमनि चकि	3	,,
13	करारा	8	उ. कामरूप
14	कमलपुर	7	,,
15-16	बोरका	5	,,
17	उत्तर गुवाहाटी	9	,,
18	दलिबारी (आमीनगांव)	6	,,
19	चेचामुख	5	,,
20	हाजो	5	,,
21	सोवालकुचि	8	,,
22-23	बिजयनगर	3+ नाव	द. कामरूप
24	कुकुरमारा	6	,,
25-26	चौधुरीपारा	6.5	,,
27	बाटरहाट	6.5	,,
28-29	करकापारा	3	,,
30	आगचिया	4	,,
1.7.62	बाटाकुचि	6	,,
2	बको	4	,,
3-7	मौमान आश्रम	2.5	,,
8	रायपारा	4.5	,,
9	भालुकघाटा	4	,,
10	चिचापीठ	3.5	,,
11	खलिहा	5	,,
12	बंधापारा	7	,,

18	भेंहुआ	5	द.कामरूप
19	जुंगाखुली	8	,,
20	शांतिपुर	11	,,
21	कुलची	11	,,
22	लोहारघाट	5	,,
23	मनिहारी तिनिचुक	7	,,
24	बामुंडी	8	उ. कामरूप
25	रामदिया	5	,,
26	लाघपाड़ा	8+5 मील नाव में	,,
27	मुकालमुवा	7	,,
28	दौलाशाल	7	,,
29	चेंगा	6	बरपेटा
30	नगांव	4	,,
31	बरपेटा	10	,,
1.8.62	सुन्दरिदिया	2	,,
2	भवानीपुर	9	,,
3	सरुपेटा	2.5	,,
4	पाठशाला	8	,,
5	भकतरभिठा	7	,,
6	गिरीशविद्यापीठ	11	,,
7	गोवर्धना	5.5	,,
8	बरपेटा रोड़	6	,,
9	हाजली	5	,,
10	चकचका	7	,,
11	माणिकपुर	7	ग्वालपाड़ा
12	बिजनी	8	,,
13	पोपरगांव	11	,,
14	लाजुरीपारा	6.5	,,
15-16	सिदली	7	,,
17-20	बासुगांव	7	,,
21	क्षुद्र बासुगांव	7	,,
22-23	देबरगांव	5	,,
24	सिंबरगांव	7	,,
25	बनरगांव	3	,,
26	रामफलबिल	8.5	,,
27	दतमा	7	,,

1.9.62	टमारहाट	7	ग्वालपाड़ा
2	पागलाहाट	7	,,
3	गोलकगंज	10	,,
4	सोनारहाट	5	,,
	[पूर्व पाकिस्तान – बंगलादेश]		
5	भुरुंगामारी	8	रंगपुर
6	रायगंज	7	,,
7	नागेश्वरी	6	,,
8	भीतरबंद	7	,,
9	कुड़ीग्राम	8	,,
10	पांगा	9	,,
11	तिस्ता	9	,,
12	मीरबाग	8	,,
13	रंगपुर	8	,,
14	पगलापीर	7	,,
15	तारागंज	9	,,
16	सय्यदपुर	8	,,
17	आलोकदिहि	7	दिनाजपुर
18	खुशालपुर	10	,,
19	दिनाजपुर	9	,,
20	विरळ	6	,,
21.9.62	राधिकापुर	10	प. दिनाजपुर(बंगाल)
22	डालिमगांव	3	,,
23	कालियागंज	4	,,
24	हेमताबाद	8	,,
25	रायगंज	8	,,
26	दुर्गापुर	8	,,
27	इटाहारा	8	,,
28	पतिराजपुर	8	,,
29	कुशमंडी	9	,,
30	जोड़दीघी	6	,,
1.10.62	बंशीहारी	6	,,
2	गंगारामपुर	7	,,
3	रामपुर	10	,,
4	पतिराम	8	,,
5	बालुरघाट	8	,,
10	बुनियादपुर	5	प. दिनाजपुर
11	दौलतपुर	6	,,
12	देवनला	4	मालदा
13	गाजोल	8	,,
14	राणिपुर	06	,,
15	बामनगोला	6	,,
16	राहुताड़ा	8	,,
17	नकैल	8	,,
18	हबिपुर	5	,,
18	बुलबुलचंडी	4	,,
19	मालदा	10	,,
20	पुरातन मालदा	5	,,
21	रायग्राम	|	,,
22	शोभानगर	|	,,
23	मथुरापुर	20	,,
24-25	राजमहल		संथाल परगना (बिहार)
26	काजीगांव		,,
27	मंगलहाट		,,
28	सरकंडा		,,
29	महाराजपुर		,,
30	सकरीगली		,,
31	साहेबगंज		,,
1.11.62	नवाबगंज		पूर्णिया
2	मरंगी		,,
3	कटिहार		,,
4	बस्तौल		,,
5	भोगांव		,,
6	आजमनगर		,,
7	सीतलामणी		,,
8	आबादपुर		,,
9	बिशनपुर	4	,,
10–12	पिपला	8	मालदा (बंगाल)
13	भिंगोल	|	,,
14	मालिग्राम	|	,,
15	मालतीपुर	|	,,
16	सामसी	|	,,

20	कालिंद्री	6	मालदा
21	बांगीटोला	8	,,
22	बिरामपुर	8	,,
23	जलालपुर	7	,,
24	कालियाचक	6	,,
25	वैष्णवनगर	7	,,
26	फरक्का	5	,,
27	नयनसुख	6	,,
28	धुलियान	7	,,
29	औरंगाबाद	10	,,
30	नूरपुर	6	,,
1.12.62	गांगीन	5	,,
2	बंशबाटी	7	,,
3	जाजिग्राम	6	वीरभूमि
4	रघुनाथगंज		मुर्शिदाबाद
5	सम्मतिनगर-तेधरी		,,
6	खांदुवा		,,
7	लालगोला		,,
8	भगवानगोला		,,
9	जियागंज		,,
10	मुर्शिदाबाद		,,
11	बहरमपुर		,,
12	सारगाछी		,,
13	बेलडांगा		,,
14	दामपुर		,,
15-16	पलासी		नदिया
17	शक्तिपुर		मुर्शिदाबाद
18	आलुग्राम		,,
19-20	कान्दि		,,
21	खड़ग्राम		,,
22	नगर		,,
23	इंद्रानी		,,
24	पांचग्राम		,,
25	नवग्राम		,,
26	सागरदीघी		,,
27	बोखारा		,,
1.1.63	सोनारकुंडु	6	वीरभूमि
2	रामपुरहाट	6	,,
3	बसोया-बिष्णुपुर	7	,,
4	वीरचंद्रपुर	7	,,
5	तारापीठ	5	,,
6	मल्लारपुर	5	,,
7	भांडकाटा	6	,,
8	देवचा	5	,,
9	पटेलनगर	7	,,
10	सेवड़ाकुड़ि	6	,,
11	सिउड़ी	5	,,
12	पुरंदरपुर	5	,,
13	अविनाशपुर	5	,,
14	बेरुग्राम	6	,,
15-16	शांतिनिकेतन	5	,,
17	श्रीनिकेतन	2	,,
18	शियान		,,
19	नानुर		,,
20	कीर्नहार		,,
21	दासकलग्राम		,,
22	कांदरा	5	वर्धमान (बर्दवान)
23	आमगड़िया	6	,,
24	निरोल	6	,,
25	केतुग्राम	4	,,
26	गंगाटिकुटी	6	,,
27	काटोया	7	,,
28	श्रीखण्ड	5	,,
29	करजग्राम	5	,,
30	सिंगी+अग्रद्वीप	6	,,
31	पिंगला	6	,,
1.2.63	बिश्वराड़ा	5	,,
2	पूर्वस्थली	4	,,
3	विद्यानगर	5	,,
4-6	नवद्वीप	6	नदिया
7	बेलपुकुर	6	,,
8	नयापाड़ा	6	,,

13	पलाशीपाड़ा	6	नदिया
14	नेहइजुटिया	7	,,
15	सुरिया	6	,,
16	बड़ आंदुलिया	5	,,
17	चापड़ा	7	,,
18	दैयेर बाजार	7	,,
19	कृष्णनगर	8	,,
20	चित्रशाली	6	,,
21	बगुला	7	,,
22	मामजोयान	8	,,
23	बादकुल्ला	5	,,
24	दिगनगर	6	,,
25	फुलिया	8	,,
26	शांतिपुर	7	,,
27	कालना टाउन		वर्धमान (बर्दवान)
28	नोयारा गोयारा		,,
1.3.63	अकाल पौष		,,
2	वैद्यपुर		,,
3	सेनपुर		,,
4	सिमलोन		,,
5	धात्रीग्राम		,,
6	समुद्रगढ़		,,
7	नादनघाट		,,
8	काइग्राम		,,
9	मंतेश्वर		,,
10	काटाशाही		,,
11	मध्यमग्राम		,,
12	पारशाही (पाहरहटी)		,,
13	मेमारी		,,
14	कलानवग्राम		,,
15	बड़शूल		,,
16	काशीपाड़ा		,,
17	वर्धमान		,,
18	सोंचका		,,
19	गुलसी	7	,,
20	बुदबुदचरी	8	,,
25	एकषार	5	वर्धमान
26	नूतनहाट	6	,,
27	माजिग्राम	6	,,
28	चैतन्यपुर	5	,,
29	बलगुना	8	,,
30	भातार	5	,,
31	महाचारा	8	,,
1.4.63	साधनपुर	7	,,
2	पोलेमपुर	4	,,
3	श्रेहारा बाजार	7	,,
4	उचालन	6	,,
5	केन्दुर	5	,,
6	आकुइ	9	बांकुड़ा
7	शामपुर	5	,,
8	इन्दाम	4	,,
9	रसुलपुर	6	,,
10	हाटकृष्णनगर	5	,,
11	पात्रशायेर	4	,,
12	बालसी	4	,,
13	बांकिशोले	5	,,
14	हतिया	7	,,
15	रासग्राम	5	,,
16	कोतुलपुर	8	,,
17	जयरामबारी	7	,,
18	कामारपुकुर	4	हुगली
19	गोहाट	5	,,
20	बाली	9	,,
21	बड़डोंगल	3	,,
22	रामनगर	9	,,
23	राधानगर	3	,,
24	धामसा	8	,,
25–2.5.63	आरामबाग	8	,,
3	मुखाडांगा	5	,,
4	छांगरा	5	,,
5	जंगलपाड़ा	7	,,
6	राज बलहाट	8	,,

11	उत्तरपाड़ा	9	हुगली
12	कलकत्ता	9	कलकत्ता
13	ठाकुरपुकुर	8	24 परगना
14	उदयरामपुर	8	,,
15	फतेपुर	8	,,
16	सरिषा	6	,,
17	डायमंडहारबर	4	,,
18	हटुगंज	6	,,
19	कुल्पी	6	,,
20	केवडातला	9	,,
21	निश्चिंतपुर	5	,,
22	शिवकलीनगर	7	,,
23	काकद्वीप	5	,,
24	उकीलेरहाट, राजनगर	5	,,
25	बामनखाली	3	,,
26	रुद्रनगर	7	,,
27	गंगासागर	8	,,
28–30	रुद्रनगर	8	,,
31	बामनखाली		,,
1.6.63	काकद्वीप		,,
2-3	हारकुड़पॉइन्ट		,,
4-5	पाथर प्रतिमा (लांच से)		,,
6	रायदीघी		,,
7	काशीनगर	7	,,
8	जयनगर	8	,,
9	इसराला	8	,,
10	बारुइपुर	7	,,
11	नरेंद्रपुर	7	,,
12	यादवपुर	6	,,
13	कमला हाय. बालीगंज	6	कलकत्ता
14	खिदिरपुर	7	,,
15	हेयारस्कूल	7	,,
16	लेडीब्रेबॉर्न कॉलेज	5	,,
17	नारकेलडांगा	6	,,
18	महाजातिसदन	5	,,
19	ज्ञानभारती	6	,,
20	शाम बजार	4	

24	टालीगंज	8	कलकत्ता
25	जगत्सुधार गुरुद्वारा	5	,,
26	आशुतोष कॉलेज	4	,,
27	न्यूअलीपुर	5	,,
28	डॉ. विधानराय बाड़ी	6	,,
29	शिवपुर	9	हावड़ा
30	महियारी-आंटुल	7	,,
1.7.63	रानीहाटी	7	,,
2	जगत्पुर	6	,,
3–6	उलुबेड़िया	6	,,
7	कोलाघाट (मोटर से)	13	मेदिनीपुर
8	पाशकुड़ा	12	,,
9	नाहकुड़ी	12	,,
10	तमलुक	6	,,
11	नंदकुमार	6	,,
12	लक्ष्या	8	,,
13	सूताहाटा	7	,,
14	द्वारिबेनिया	5	,,
15	महिषादल	7	,,
16	कल्याणचक	9	,,
17	चंडीपुर	5	,,
18	ठाकुरनगर	7	,,
19	सुभाषपल्ली	3	,,
20	नाचिन्दा	9	,,
21	कांथी	7	,,
22	सातमाइल	7	,,
23	बालिघाई	6	,,
24	एगरा	5	,,
25	खतुइ	5	,,
26	ललाट	8	,,
27	खाकुड़दा	4	,,
28	बेलदा	7	,,
29	बाखराबाद	6	,,
30	नारायणगड़	6	,,
31	बेनापुर	9	,,
1.8.63	बलरामपुर	6	,,
2	[illegible]	8	

6	झाड़ग्राम	9	मेदिनीपुर
7	बीरिहांडी	8	,,
8	चंद्री	6	,,
9	चिचड़ा	5	,,
10	जयपुरा	4	सिंहभूमि (बिहार)
11	खंडामोदा	8	,,
12	बहरागोड़ा	4	,,
13	सिरसा	7	मयूरभंज (उड़ीसा)
14	राजालुका	6	,,
15	कुंभारमुंडकटा	4	,,
16	कुलीओना	6	,,
17	कुचेई	6	,,
18	बारीपदा	6	,,
19	रामनगर	7	,,
20	भालियाड़ीहा	7	,,
21	मोरड़ा	6	,,
22	रासगोविंदपुर	6	,,
23	नलगजा	7	,,
24	अमरदा	6	,,
25	बालियापाड़ा (बोट से)	21	बालेश्वर
26	सिंगला	8	,,
27	दरड़ा	5	,,
28	बहारड़ा	5	,,
29	रूपसी	7	,,
30	हळदीपदा	5	,,
31	बालेश्वर	9	,,
1.9.63	कुरुड़ा	5	,,
2	खंतापाडा	6	,,
3	बहानगा	6	,,
4	सोरो	7	,,
5	साबिरा	5	,,
6	मारकोणा	7	,,
7	राणीतोळा	5	,,
8	भद्रक	8	,,
9	भुदरड़ा	6	,,
10	भंडारी पोखरी	6	,,

15	जाजपुर रोड	7	कटक
16	दानगजि	5	,,
17	दुबुरि	8	,,
18	सुकिंड़ा	5	,,
19	मंगलपुर	5	,,
20	भुवन	6	ढेंकानल
21	गढ़नरसिंहप्रसाद	5	,,
22	मठका गोला	5	,,
23	बाहसिंगा	6	,,
24	कामाख्यानगर	5	,,
25	मुक्तापुर	9	,,
26	बरिहापुर	5	,,
27	परजंगा	5	,,
28-29	तालचेर	9	,,
30	दुमदुमा	8	,,
1.10.63	संबल	7	,,
2	सीलिंग	5	,,
3	कंटियापसी	6	,,
4	खमार	6	,,
5	बतीसीमा	9	,,
6	पाललहाड़ा	6	,,
7	बमपरडा	8	संबलपुर
8	बारकोटा	7	,,
9	कादोपाड़ा	8	,,
10	कसड़ा	11	सुंदरगढ़
11	केनभटा	5	,,
12	केनाइगड़	7	,,
13	लवणीपड़ा	6	,,
14	दर्जींग	7	,,
15	चांदीपोष	7	,,
16	बांकी	8	,,
17	जलदा	8	,,
18	राउरकेला	10	,,
19	वेदव्यास	7	,,
20	कांसबाहाल	9	,,
21	राजगंगपुर	8	,,

26	देवकरणपुर	8	सुंदरगढ़
27	करबड़ीहि	6	,,
28	सुंदरगढ़	5	,,
29	भेड़ाबहाल	7	,,
30	तालपटिया	8	संबलपुर
31	झारसुगुड़ा	7	,,
1.11.63	श्रीपुरा	8	,,
2	लपंगा	6	,,
3	रंगाली	7	,,
4	सासन	9	,,
5	संबलपुर	8	,,
6	हीराकुड	7	,,
7	कंटापाली बुरला	9	,,
8	गोड़भंगा	7	,,
9	अताबिरा	7	,,
10	कालापानी बुरला	7	,,
11	बरगढ़	8	,,
12	नीलेश्वर	7	,,
13	पानीमोरा	9	,,
14	बरपाली	11	,,
15	महादा	6	,,
16	डुंगापाली	6	बलांगीर
17	सालहाभाटा	5	,,
18	लुइसिंगा	9	,,
19	छटामखना	6	,,
20	बलांगीर	6	,,
21	झंकारपली	8	,,
22	चिड़ापाली	6	,,
23	भैंसा	7	,,
24	पटनागर	6	,,
25	परहेल	6	,,
26	लोहासिंहा	7	,,
27	दहित्स	6	संबलपुर
28	पदमपुर	7	,,
29	पलासाड़ा	9	,,
30	पुरेना	9	,,
1.12.63	[illegible]	8	

5	अंगाथी	8	संबलपुर
6	नरसिंहनाथ (पाइकमाल)	6	,,
7	बरटूंडा	9	,,
8	सुलेपारा	6	कलाहांडी
9	नूरपुरा (नवापाड़ा)	9	,,
10-11	खरिआर रोड	7	,,
12	कोमाखान	10	रायपुर (छत्तीसगढ़)
13	बागबहरा	9	,,
14	ओरांडबरी	9	,,
15	मामाभांजा	7	,,
16	महासमुंद	6	,,
17	बेलसोंडा	7	,,
18	आरंग	4.5	,,
19	(नबाबगंज) नवागांव	7	,,
20	समनडीह	7	,,
21–31	रायपुर	8	,,
1.1.64	रायपुर विवेकानंदाश्रम	4	,,
2	कुंभारी	6.5	दुर्ग
3	भिलाई	11.5	,,
4	सेलूद	12	,,
5	मर्रा	6	,,
6	भाठागांव	8	,,
7	अचौद	5	,,
8	हल्दी	9	,,
9	एंगरा	6	,,
10	बालौद	9.5	,,
11	दुधली	5.5	,,
12	डौंडी लोहारा	7	,,
13	अचौली	7.5	,,
14	रानीतलाई (जबरतला)	7.5	,,
15	राजनांदगांव	11	,,
16	सोमानी	7	,,
17	दुर्ग	11	,,
18	कोटेरा	6	,,
19	नंदकठी	8	,,
20	धमधा	11	,,
21	[illegible]	7	

25	खडुवा		रायपुर
26	विश्रामपुर		,,
27	टेमरी		दुर्ग
28	बैतलपुर		बिलासपुर
29	सरगांव		,,
30	बिल्हा		,,
31	चकरभाटा		,,
1-2.2.64	बिलासपुर		,,
3	कटाकना		,,
4	तखतपुर		,,
5	धरमपुर		,,
6	मुंगेली		,,
7	फॉस्टरपुर		,,
8	महलीसूरजपुरा		,,
9	पंडरिया		,,
10	पांडातराई		,,
11	बोड़ला		दुर्ग
12	पालक		,,
13	चिल्पी		,,
14	सूपरवार		बालाघाट
15	जैतपुरी		,,
16	गढ़ी	7	,,
17	मुक्की	12	,,
18	बैहर	9.5	,,
19	परसाटोला	7	,,
20	उकुवा	8.5	,,
21	लौंगुर	9	,,
22	टिकारी	10	,,
23	बालाघाट	7.5	,,
24	वारासिवनी	10	,,
25	मेंडकी	7	,,
26	नेबरगांवकला	11	,,
27	किरणापुर	7	,,
28	चंगेरा	9	,,
29	मोहझरी	8	,,
1.3.64	लांजी	9	,,

8	बोरगांव	8	भंडारा
9	मंगेझरी	8	,,
10	सुकळी	7	,,
11	तिरोड़ा	7	,,
12	बड़ेगांव	7	,,
13	करड़ी		,,
14	कोका		,,
15	रेंगेपार		,,
16	लाखनी		,,
17	धारगांव		,,
18	भंडारा		,,
19	दहेगांव		,,
20	तुमसर		,,
21	हर्दोली		,,
22	आंधळगांव		,,
23	कांद्री		,,
24	महादुला		नागपुर
25	रामटेक		,,
26	बनपूरी		,,
27	कन्हान		,,
28	भिलगांव		,,
29	नागपुर		,,
30	खापरी		,,
31	शिरूळ		,,
1.4.64	टाकळघाट		,,
2	सेलडोह		वर्धा
3	घोराड		,,
4	पवनार		,,
5	वर्धा		,,
6-7	सेवाग्राम		,,
8	महिलाश्रम	4	,,
9	गोपुरी	4	,,
10-20	परंधाम	5	,,
21	सुकळी	9	,,
22	झाड़गांव	7	,,
23	वायफड	7	,,

28	भिडी	6	वर्धा
29	इंझाळा	6	,,
30	दहेगांव धांदे	6	,,
1.5.64	पुलगांव	6	,,
2	सोनेगांवआबाजी	9	,,
3	सालोड हिरापुर	10	,,
4	बजाजवाडी, वर्धा	5	,,
5	दहेगांव मिस्किन्	8	,,
6	लोणसावळी	4	,,
7	कुरझडी	4	,,
8	मुरदगांव	5	,,
9	लोणी	8	,,
10	नाचणगांव	5	,,
11	सोरटा	6	,,
12	विरूळ	5	,,
13	धानोरी	8	,,
14	नांदोरा	5	,,
15	आर्वी	6	,,
16	कौंडण्यपुर	6	अमरावती
17	वरखेड	7	,,
18	भिष्णुर	4	वर्धा
19	सिरसोली	7	,,
20	आष्टी	7	,,
21	अंतोरा	7	,,
22	नांदोरा	6	,,
23	वडाळा		,,
24	लोणी		अमरावती
25	साहूर		वर्धा
26	तारासावंगा		,,
27	माणिकवाडा		,,
28	सुसुंद्रा		,,
29	नारा		,,
30	बाटोदा		,,
31	किन्हाळा		,,
1.6.64			,,
2	येनगांव		,,
3	[illegible]		

7			वर्धा
8			,,
9	वाढ़ोणा	3.5	,,
10	पिंपळखुटा	3.5	,,
11			,,
12	खरांगणा		,,
13	मांडवा		,,
14	पवनूर		,,
15	आंजी		,,
16	जामनी	3	,,
17	येळीकेळी	4	,,
18	पिपरी	2	,,
19.6से3.11.64	परंधाम	7	,,
4	गोपुरी	4.5	,,
5	राष्ट्रभाषा, वर्धा	2.5	,,
6-7	महिलाश्रम	2.5	,,
8	सेवाग्राम	4	,,
9	खरांगणा (गोडे)	3.5	,,
10	करंजी काजी	3	,,
11	मदनी	3	,,
12	भानखेडा	4	,,
13	सोनेगांव (स्टे.)	4	,,
14.11से9.7.65	ब्र.वि.मं. परंधाम		,,

मोटर यात्रा

10 से 26 विदर्भ (महाराष्ट्र)
27 चांदा
28 भद्रावती
29
30 यवतमाळ
31.7 से 2.8.65 विदर्भ (महाराष्ट्र)
3 मंगरूळपीर
4-5
6 चौहट्टा
7 से 11 मराठवाडा (महाराष्ट्र)
12 हिंगोली
[illegible]

30	कटनी	
31		
1.9.65	रीवा	
2		
3-4	इलाहाबाद	
5	पसना	
6	मिरजापुर	
7–10	काशी	
11-13	पटना	
14	मोकामा	
15	मुंगेर	
16	हवेली खड़गपुर	
17	जमुई–खादीग्राम	
18	झाझा	
19	लखीसराय	
20	खगड़िया	
21	बेगूसराय	
22	सिकंदरा (मुंगेर)	
23	सोखोदेवरा	
24	गया	
25	शेरघाटी	
26	आमस	
27	औरंगाबाद	
28	डाल्टेनगंज	
29	लातेहार	
30	रांची	
1.10.65	हजारीबाग	
2	चतरा	
3	हंटरगंज	
4-5	बोधगया	
6	रजौली	
7	झूमरीतलैया	
8	डोरंडा	
9	चकाई	
10	देवघर	
11	घोरमारा	
12	जामताड़ा	संथाल परगना

16	गोड्डा	,,
17	सरैयाहाट	संथाल परगना
18	बांका	भागलपुर
19	कमालपुर-मुलतानगंज	
20	नौगछिया	भागलपुर
21	पूर्णिया	
22	किशनगंज	
23	कटिहार	
24	रानीपतरा	
25	फारबीसगंज	पूर्णिया
26	रुपौली	,,
27	बनमनखी	,,
28	करजाइन बाजार	सहरसा
29	सहरसा	,,
30	सुपौल	,,
31	मधेपुरा	,,
1.11.65	कुरसैला	पूर्णिया
2	बिहिपुर	भागलपुर
3	बलिया	मुंगेर
4	रोसडा	दरभंगा
5	समस्तीपुर	,,
6	बहेड़ा	,,
7	केउटी	,,
8	जयनगर	,,
9	बेनीपट्टी	,,
10	मधुबनी	,,
11	लहेरियासराय	,,
12	नरसिंहपुर	मुजफ्फरपुर
13	सीतामढ़ी	,,
14	पुपरी	,,
15	मुजफ्फरपुर	
16	महेसी	चंपारण
17	धाका	,,
18	मोतिहारी	,,
19	रक्सौल	,,
20	वृंदावन आश्रम	,,
21	नरकटियागंज	,,

25	सरैया	मुजफ्फरपुर
26	बेलसर हाट	,,
27	हाजीपुर	,,
28	छपरा	सारन
29	शाहपुर सिंथबलिया	,,
30	गोरियाकोठी	,,
1.12.65	हथुवा	,,
2	भोरे	,,
3	मैरवा	,,
4	सीवान	,,
5	ताजपुर	,,
6	दानापुर	पटना
7	आरा	शहाबाद
8	पीरो	,,
9	विक्रमगंज	,,
10	बढ़पुर ब्रह्मपुर	,,
11	बक्सर	,,
12	सासाराम	,,
13	भभुआ	,,
14	डालमियानगर	
15	बाराचट्टी	गया
16	बगोदर	हजारीबाग
17	धनबाद	
18	चांडील	सिंहभूमि
19.12.65से 15.3.66	जमशेदपुर	
16 से 17		
18	पुरुलिया	
19		
20	जमुई	
21	बिहपुर	
22.3.66 से 3.5.66	रानीपतरा	
4	रोटाहाट	
5	आमौर	
6		
7	मनिहारी	
8 से 10		
11	किशनगंज	
12-13	किशनगंज + ठाकुरगंज	
14		
15.5.66–30.6.66	रानीपतरा	
1–14.7.66	बिहपुर	
15	गोगरी	
16	साहेबपुर कमाल	
17	दलसिंगसराय	
18–13.11.66	ल. पुरी पूसारोड़-वैनी	
14	सीहो	
15–30	मुजफ्फरपुर	
1.12.66	मुजफ्फरपुर	
2	लहेरियासराय-मधुबनी	
3.12.66 से 12.2.67	मधुबनी	
13.2 से 7.3.67		
8 .3.67 से 28.12.67	ल. पुरी वैनी	

(आगे की मोटरयात्रा (1968-69) का निश्चित विवरण उपलब्ध न होने से छोड़ दिया है।)

•

इस पदयात्रा पड़ाव-सूचि में काफी स्थान खाली छूटे हैं। काफी कोशिश करने पर भी पड़ावों के उन स्थानों के नाम नहीं मिल पाये। विशेषतया अक्तूबर 1959 से दिसंबर 1960 के बीच के काफी नाम छूटे हैं।

दूसरी बात नामों में भिन्नता। अलग-अलग ग्रंथों-पत्रिकाओं में अलग-अलग नाम मिलते हैं। कभी पूर्णतया अलग तो कभी स्पेलिंग में फर्क मिलता है। खासतौर से दक्षिण भारत के गांवों के नामों की शुद्धता के बारेमें कोशिश के बावजूद हमको समाधान नहीं हुआ है। वैसे ही जिलों के बारेमें भी। कई बार वह जानकारी उपलब्ध नहीं हो पायी। अब तो पचासों नये जिले बन चुके हैं, इसलिए वैसे भी उसकी उपयोगिता कम हो गयी है। पूरी कोशिश के

खंड 1 की अन्य वचन-सूचि

(खंड 1 में जिन वचनों की सूचि छूट गयी थी मात्र उनकी यह सूचि है)

		पृष्ठ
अकार चरणयुगुल	ज्ञाने 1.19	154,316
अग्ने नय सुपथा	ईश 18	147,296, 357,368
अणुरेणु या थोकडा	तुका 857	340
अतीताननुसंधानम्	गुबो 13.2.4	270
अत्र पिता अपिता	बृह 102	306
अथ यत् तपो	छां 34	358
अदितिर् द्यौरदितिर्	ऋसा 1.14.7	337
अद्यते अत्ति च	तैत्ति 9	334
अद्याद्या श्व:श्व:	ऋसा 8.8.4	294
अनंतपारं गंभीरम्	भागवत	106
अनंत वै मन:	–	142
अनंता वै वेदा:	–	140,276
अभयं न: करत्यंतरिक्षम्	अथ 19.15.5-6	355
अभयं वै जनक	बृह 81	354
अमध्यम:	–	195
अमंत्रमक्षरं नास्ति	–	369
अमृतांशूद्भव:	विसना 31	309
अम्रु हुम् शूरा	कुसा 160	219
अयं यज्ञो भुवनस्य	ऋसा 1.23.11	299
अर्थार्थी	गी 7.16	382
अर्वाग्बिलश्चमस	बृह 35	351
असतो मा सद्	बृह 9	257
असन्नेव स भवति	तैत्ति 13	379
असुराणां हि उपनिषत्	छां 149	358
अस्तीत्येके नायम्	कठ 17	238
अस्तीत्येवोपलब्धव्य:	कठ 96	377
अस्सद्धो अकतञ्ञू	धम्म 17.18	388
अहंकाराचा वारा	नाम 107	386
अहं भूमिमददामार्याय	ऋसा 4.2.13	172,339
अहं मनुरभवं	ऋसा 4.2.12	172,363
आकाशो ब्रह्मेति	छांदो 3.18.1	370
आचारहीनं न पुनन्ति	–	109

		पृष्ठ
इदंमय: अदोमय:	–	278
इन दि बिगिनिंग	बाइबिल	117
इयं वेदि: परो	ऋसा 1.23.11	299
इहदिनस् सिरातल्	कुसा 1	296
ईशावास्यं इदं	ईश 1	305
उतेमाहुर्नैषो	ऋसा 2.2.5	371
उद्गीथाक्षराण्युपासीत	छां 1	331
उद् वयं तमसस्परि	ऋसा 1.10.16	387
उपशांतोऽयमात्मा	बाध्व ऋषि	343
उपायेऽधिको यत्न:	तै भाष्य 1.11	134
उळुदुंडु वाळ्वारे	कुरल	202
ऊर्ध्वमूलमध:शाखम्	गी 15.1	351
ऋक् साम यजुरेव च	गी 9.17	277,322
ऋचं वाचं प्र	यजु 36.1	346
ऋचो अक्षरे	ऋसा 1.23.12	321
ऋजुनीति नो	ऋ 1.90.1	306,357
ऋषिभिर् बहुधा गीतं	गी 13.4	186
ऋषिर् दर्शनात्	–	158
एकं सत् विप्रा	ऋसा 1.23.16	142, 144,286-87,292,295,301
एतावान् सर्ववेदार्थ:	भागवत	127
एष देवो विश्वकर्मा	श्वे 51	340
एषो एव समृद्धिर्	छां 3	334
ॐक्रतो स्मर	ईश 17	368
ओमित्येतद्...अनुज्ञाक्षरं	छां 1,3	329
कं च तु खं च	छां 54	369
करम उपासना	तुलसीदास	302
कराग्रे वसते लक्ष्मी:	–	207
करीं मस्तक ठेंगणा	तुका 734	320
कर्मणैव हि संसिद्धिं	गी 3.20	383
कर्मभिर्नि:श्रेयसम्	–	383
कर्मेति प्रतिष्ठा	केन 20	357
कहे नानक पूरा पाया	नानक	261

कृषिगौरक्ष्य	गी 18.44	187
को नो मह्या	ऋसा 1.5.1	337
कोह्येवान्यात्	तैत्ति 15	371
क्रियावान एष	मुंडक 39	357
गणानां त्वा	ऋसा 2.4.1	333
गतागतं कामकामा	गी 9.21	267
गिआन खंड महि	जपु 36	300
गुरुमुखि नादं	नानक	300
चतुर्विधा भजन्ते मां	गी 7.16	385
छिद्यन्ते सर्व-संशया:	मुंडक 33	365
जहि शत्रुं महाबाहो	गी 3.43	228
जाकी रही भावना	तुरा 1.241	116
जासों सब नातो	विन 117	302
जेथें जातों तेथें	तुका 791	370
जैसा वरणीय प्रभु	–	299
जैसे पंडित बेद-बिहीना	नानक	300
ज्येष्ठ आह चमसा	ऋसा 4.3.1	385
झीनी झीनी बिनी	कबीर	249
तटस्थ तें ध्यान	तुका 133	194
तत्पुरुषाय विद्महे		385
तत् बुद्धयस्तदात्मानस्	गी 5.17	387
तत्-सत्	–	376
तत् सत्यमित्याचक्षते	तैत्ति 14	377
तत् सवितुर्वरेण्यं	ऋसा 3.6.7	171, 387
तदहं भक्त्युपहृतम्	गी 9.26	361
तदा गन्तासि निर्वेदं	गी 2.52	138
तदेतत् इति	कठ 86	376
तद्धाम परमं मम	गी 15.6	227
तद् य इमे वीणायां	छां 10	329
तद्वचनादाम्नायस्य	वैशेषिक	134
तस्मिन् विश्वमिदं	छां 3.15.1	351
तस्य उत् इति नाम	छां 6	387
(तस्य) वेदा अवेदा:	बृह 102	107
तार पाछे पाछे धान्त	माधवदेव	303
तुका आकाशाएवढा	तुका 857	172,364

तौं ह यदूचतु:	बृह 54	380
त्यक्तेन भुंजीथा:	ईश 1	164
त्रिकर्मकृत् तरति	कठो 1.17	357
त्रिधा बद्धो वृषभो	ऋसा 4.5.6	333
त्रीणि पदा वि	ऋसा 1.4.3	226,342
त्र्यंबकं यजामहे	ऋसा 7.5.3	175,345
त्वमेव माता च	–	282
दि सम आफ दि	यूक्लिड	118
देव जोडे तरी	तुका 547	328
देशबंधश् चित्तस्य	योसू 3.1	339
द्यौ: शांतिरंतरिक्षं		
वाजसनेयिसंहिता	361.17	350-51
द्विविधा निष्ठा	गी 3.3	385
धेनूनामस्मि कामधुक्	गीता 10.28	187
ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति	गी 13.24	375
न तद् अश्नाति	बृह 69	355
न तस्य प्रतिमा	श्वे 53	114
न त्वहं तेषु ते मयि	गी 7.12	373
न नौ एतत्	बृह 54	379
नभासारिखें रूप	मश 197	370
नम: सोमाय च	–	333
न मा तमत्	ऋसा 2.5.16	341
न येषु जिह्ममनृतं	प्रश्न 1.16	358
नहि वचनस्य	ब्रसूशांभा	111
न हि वेरेन	धम्म 1.5	296
न हि श्रुतिशतमपि	गीशांभा 18.66	137
नाना धर्माणां पृथिवीं	अथर्ववेद	113,286
नायं हन्ति न हन्यते	गी 2.19	343,355
नाविरतो दुश्चरितात्	कठ 48	358
नास्य पापम्	कौ 3.1	363
निजों तरी जागे	–	341
निदिध्यासितव्य:	बृह 118	384
नैतान् विहाय	प्रह्लाद	337
नैनं छिन्दन्ति	गी 2.23	370
पब्बट्ठो व भुम्मट्ठे	बुद्ध	297

पश्यति इति पशु:	–	263
पांडित्यं निर्विद्य	बृह 56	352
पिता अपिता भवति	बृह 102	128
पिपर्तु नो अदिती	–	337
पुण्यो वै पुण्येन	बृह 54	380
पृथगात्मन: न किंचित्	शंकराचार्य	117
पैं अहितापासूनि	ज्ञाने 16.462	99
प्रणव: सर्व-वेदेषु	गी 7.8	277,322
प्रणवो धनु: शरो	मुंडक 28	319
प्रतिषिध्य	वेद	127
प्रभाते करदर्शनम्	–	207
प्राणं च हास्मै	छांदो 4.10.5	369-70
प्राण: प्रजानां उदयति	–	151
प्राणो ब्रह्म	छांदो 53	369,371
प्राये प्राये जिगीवांस	ऋसा 2.3.5	164,324
प्रिवेन्शन इज बेटर	–	213
प्रेतस्य शरीरं	छां 149	358
फलवति अपूर्वे	पूर्व मीमांसा	121
बहूनि मे अकृता	ऋसा 4.2.4	173,364
बिभेत्यल्पश्रुतात् वेदो	–	102,107
बुद्धिं तु सारथिं	कठ 52	191
बुभुक्षमाण: रुद्ररूपेण	सायणाचार्य	281,333
बृहत्साम तथा साम्नाम्	गी 10.35	277
बेद कह्यो बुध	तुलसीदास	302
बोधयन्त: परस्परम्	गी 10.9	219
भरोसो जाहि दूसरो	विन 140	302
भिदां आस्थाय	–	127
भुंजते ते त्वघं	गी 3.13	214
भूतमात्रीं हरीविण	–	276,322
भूरिति वा ऋच:	तैत्ति 4	351
भूरिति वै प्राण:	तैत्तिरीय 5	351
मना सत्य तें	मश 19	365
मंतव्य:	बृह 118	384
मंनै मगु न चलै	जपु 14	299
मम सत्यम्	यास्काचार्य	204

माधुर्यें चंद्रिका	ज्ञाने 12.204	322
मामेकं शरणं व्रज	गी 18.66	385
माम् प्रति माम्	वेद	151
मां विधत्तेऽभिधत्ते	भासा 21.5	125
मां स भक्षयितामुत्र	मनु 5.7	334
मित्रस्य मा चक्षुषा	यजुवाज 36.18	196, 296,355
मीपण अहंकारें	राभ 167	364
मैया कबहुं बढ़ेगी चोटी	सूरदास	124
मोहि तो सावनके	तुलसीदास	302
य एवं वेद	बृह 16	363
यच्छेद् वाङ्मनसी	कठ 60	340
यज्ञात् भवति पर्जन्य:	गी 3.14	203
यतो यतो निश्चरति	गी 6.26	382
यथाभिमतध्यानाद्वा	योसू 1.39	382
यथेच्छसि तथा कुरु	गी 18.63	329
यदह्ना पापमकार्षम्	नारा 12	361
यदा वै करोति	छां 110	357
यदि ब्रूयात् शीत:	गीशांभा 18.66	137
यदि ह्यहं न वर्तेयं	गी 3.23	257
यदेष आकाश	तैत्ति 15	371
यद्गत्वा न निवर्तन्ते	गी 15.6	341
यद्वाव कं तदेव	छां 54	369
यन् मे छिद्रं	यजु 36.2	347
यश्च श्रोत्रियो...	बृहद् 4.3.39	364
यस्तं वेद स वेदवित्	गी 15.1	116
यस्य नाहंकृतो भावो	गी 18.17	354,362
या इष्टका: यथा	कठ 15	372
यान्यनवद्यानि कर्माणि	तैत्ति 7	358
या प्राणेन संभवति	कठो 4.7	336
यी कास्ट नॉट	बाइबिल	118
यो अस्याध्यक्ष:	ऋसा 10.19.7	299
यो वै स धर्म:	बृह 20	366
योऽसावादित्ये पुरुष:	–	368
रचनानुपपत्तेश्च	ब्रसू 2.2.1	215

राम चरण रति होउ	तुलसीदास	301
राम नाम मनि	तुलसीदास	229
लाइक अ यंग मैन	ग्रिफिथ	234
वसिष्ठं तर्पयामि	–	174
वाग्मी	विसना 29	309
वाच ऋग् रस:	छां 2	104
वाचस्पतिं विश्वकर्माणम्	ऋसा 10.11.5	356
वातस्येव प्रजवो	ऋसा 7.3.10	174,341
वायुरनिलममृतमथेदं	ईश 17	368
विपापो विरजो	बृह 111	358
विश्वमानुष:	ऋसा 8.7.9	100
विश्वं तद् भद्रं	ऋसा 2.4.7	333
विश्वामित्रेभिरिध्यते	ऋसा 3.1.2	171
वेद अनंत बोलिला	तुका 402	303
वेद: नित्यं अधीयताम्	शंकराचार्य	101,128
वेद:, वेदवित्, वेदांग:	विसना 14	309
वेद-वेदांत-गीतानां	विनोबा	101
वेदाचा तो अर्थ	तुका 403	303
वेदानां सामवेदोऽस्मि	गी 10.22	277,322
वेदान् अपि	नारद	128
वेदान् उद्धरते	गीतगोविंद	310
वेल न पाईआ	जपु 21	299
शतं पुर: अदारीत्	–	153
शब्दातिग: शब्दसह:	विसना 97	290
शांत आत्मा		340
शांतं शिवं अद्वैतं	मांडूक्य 7	333
शास्त्रदृष्ट्या तूपदेशो	ब्रसूभा 1.1.30	363-64
शिवस्य हृदये	–	346
श्रुतिर्न्याय्या न लक्षणा	–	140
संग-स्मयाकरणं	योसू 3.51	386
सच्च त्यच्चाभवत्	तैत्ति 14	377
स तत्र तपसा	प्रश्न 11	324
सत्कर्मयोगें वय	रामदास	359
सत्यधर्माय दृष्टये	ईश 15	289
सत्यपि भेदापगमे	शंकराचार्य	133
सत्यं हि इंद्र:	कौषीतकि 10	363
सत्यानृतं तु	मनुस्मृति	365
सत्यानृते मिथुनीकृत्य	ब्रसूभाष्य	353
सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितम्	नारा 19	367
सद्भावे साधुभावे च	गी 17.26	378
सनातनो नित्यनूतन:	यास्काचार्य	184
सन्मार्गे प्रज्ञा	–	367
स भूरिति व्याहरत्	तैब्रा	350
समत्वमाराधनं	भागवत	276
समुद्रस्येव महिमा	ऋसा 7.3.10	341
समोऽहं सर्वभूतेषु	गी 9.29	386
सर्व धर्म हरिचे	तुकाराम	299
सर्वधर्मान् परित्यज्य	गी 18.66	290,328
सर्वं खलु इदं	छां 29	323,330
सर्व सुखाचें आगर	ज्ञानदेव	371
सर्वेण समं तेन	–	276,322
सर्वे वेदा यत्	कठ 39	114,126, 185,364
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म	–	288,327
सर्वेषां य: सुहृत्	महाभारत	199
सविता प्रसविता	–	187
स ह षोडशं	छां 33	217
साधु-कर्मा	–	358
सानुको वृक:	ऋ 2.23.7	307,349
सा मा शांतिरेधि	वाज 36.17	352
सिद्धानां कपिलो मुनि:	गी 10.26	265
सुनीतिभिर्नयसि	ऋसा 2.4.4	357
सूर्य आत्मा जगतस्	ऋसा 1.18.12	125, 150,296
सूर्ये ज्योतिषि	नारा 13	150
सो अंग वेद	ऋसा 10.19.7	299
सोऽहमस्मि	ईश 16	187
स्तेन एव स:	गी 3.12	353
स्वत:-प्रामाण्य	–	134
स्व: पश्यन्त उत्तरम्	यजुर्वेद	387
स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते	गी 8.3	379

सूचियां

संक्षेप खुलासा	580
वचन-सूचि	582
नाम-सूचि	584
संदर्भ-सूचि	594

संक्षेप खुलासा

(20 खंडों की संकलित वचन-सूचि और 20 वे खंड की वचन-सूचि के लिए)

अथ	–	अथर्ववेद
अमृ	–	अमृतानुभव (ज्ञानदेवरचित)
अयो	–	तुलसीरामायण अयोध्याकांड
अव्र	–	अभंग-व्रतें विनोबाजीकृत (खंड 14)
आभ	–	आश्रम भजनावलि (नवजीवन प्रकाशन, अमदाबाद)
आरुणिक	–	आरुणिकोपनिषद (खंड 2)
ईश	–	ईशावास्योपनिषद (खंड 2)
ईशशांभा	–	ईशावास्योपनिषद शांकरभाष्य
ईसा	–	ख्रिस्तधर्म-सार (खंड 8)
उप शांतिमंत्र	–	उपनिषद शांतिमंत्र (खंड 2)
उरा	–	उत्तररामचरितम् (भवभूतिकृत)
ऋवे	–	ऋग्वेद
ऋ, ऋसा	–	ऋग्वेद-सार (खंड 1)
एक	–	एकनाथ (खंड 10)
ऐत	–	ऐतरेयोपनिषद (खंड 2)
ऐब्रा	–	ऐतरेय ब्राह्मण
कठ	–	कठोपनिषद (खंड 2)
कठशांभा	–	कठोपनिषद शांकरभाष्य
कठो	–	कठोपनिषद मूल
कुसा	–	कुरानसार (खंड 8)
कुसासू	–	कुरानसार के संस्कृतसूत्र (खंड 8)
केन	–	केनोपनिषद (खंड 2)
कैवल्य	–	कैवल्योपनिषद (खंड 2)
कौ	–	कौषीतकि उपनिषद (खंड 2)
कौषीतकि	–	कौषीतकि उपनिषद मूल
ख्रिस्त	–	ख्रिस्तधर्मसार (खंड 8)
गी	–	गीता
गीशांभा	–	गीताशांकरभाष्य
चैतन्य	–	चैतन्यमहाप्रभु
छां	–	छांदोग्योपनिषद (खंड 2)
छांदो	–	छांदोग्योपनिषद मूल
जाबाल	–	जाबालोपनिषद (खंड 2)
ज्ञा	–	ज्ञानदेवमहाराज
ज्ञाने	–	ज्ञानेश्वरी
ज्ञाभ	–	ज्ञानदेव के भजन (खंड 10)
तुका	–	तुकाराम के भजन (खंड 11)
तुकागाथा	–	तुकाराम की गाथा (चित्रशाळा 1925)
तुरा अयो	–	तुलसीरामायण अयोध्याकांड
तुरा अरण्य	–	तुलसीरामायण अरण्यकांड
तुरा उत्तर	–	तुलसीरामायण उत्तरकांड
तुरा किष्किं	–	तुलसीरामायण किष्किंधाकांड
तुरा बाल	–	तुलसीरामायण बालकांड
तुरा लंका	–	तुलसीरामायण लंकाकांड
तुरा सुंदर	–	तुलसीरामायण सुंदरकांड
तैत्ति	–	तैत्तिरीयोपनिषद (खंड 2)
तैत्तिरीय	–	तैत्तिरीयोपनिषद अनुवाकादि
तैब्रा	–	तैत्तिरीय ब्राह्मण
तैभा	–	तैत्तिरीयभाष्य
तैसं	–	तैत्तिरीय संहिता
दास, दासबो	–	दासबोध (रामदासकृत)
धम्म	–	धम्मपदं (खंड 7)
नमे, नरसी	–	नरसिंह मेहता
नमो	–	नमोदशक (भीष्मस्तवराज – महाभारत)
नाघो	–	नामघोषा-सार (खंड 9)
नाभसू	–	नारदभक्तिसूत्र
नाम	–	नामदेव (खंड 10)
नारा	–	नारायणोपनिषद (खंड 2)

प्रश्नो – प्रश्नोपनिषद मूल
प्रा – प्राज्ञसूत्राणि (स्थितप्रज्ञदर्शन पर सूत्र – खंड 3)
प्राअ – प्राज्ञसूत्र-अधिकरण (खंड 3)
प्रा, प्रास्ता – प्रास्ताविक
बाल – तुलसीरामायण बालकांड
ब्रह्मबिंदू – ब्रह्मबिंदू उपनिषद
ब्रसू – ब्रह्मसूत्र
ब्रसू उपो – ब्रह्मसूत्रभाष्य उपोद्घात
ब्रसूभा, ब्रसूशांभा – ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य
बृ, बृह – बृहदारण्यकोपनिषद (खंड 2)
बृहद्, बृहदा – बृहदारण्यकोपनिषद मूल
भाग – भागवत
भासा, भाग – भागवतधर्म-सार (खंड 5)
मना, मश – मनाची शतें (खंड 11)
मनु – मनुशासनम् (खंड 6)
मश, मना – मनाची शतें (खंड 11)
महाआदि – महाभारत आदिपर्व देवबोधटीका
महा वन – महाभारत वनपर्व
माणिक्क – माणिक्कवाचकर
मांका – मांडूक्यकारिका
मांडूक्य – मांडूक्योपनिषद (खंड 2)
मुंडक – मुंडकोपनिषद (खंड 2)
मैत्रा – मैत्रायणि उपनिषद (खंड 2)
मोरो केका – मोरोपंत केकाशतक (खंड 11)
यजु – यजुर्वेद
यजुवाज – यजुर्वेद वाजसनेयि संहिता
योगवा – योगवासिष्ठ
योसू – योगसूत्र
रघु – रघुवंश (कालिदासकृत)
रा करुणा – रामदास – करुणाष्टकें
राबो, बोध – रामदास बोधबिंदु (खंड 11)
राभ – रामदास के भजन (खंड 11)
रा स्फुट – रामदास स्फुट कविता
वाज – वाजसनेयि संहिता
वारा अयो – वाल्मीकिरामायण अयोध्याकांड
वारा किष्किं – वाल्मीकिरामायण किष्किंधाकांड
वारा बाल – वाल्मीकिरामायण बालकांड
विगी – विचख्नुगीता (खंड 12)
विन – विनयांजलि (खंड 9)
विप – विनयपत्रिका (तुलसीदासजीकृत)
विसना – विष्णुसहस्रनाम (खंड 6)
शाकुं – शाकुंतल (कालिदासकृत)
श्वे – श्वेताश्वतरोपनिषद (खंड 2)
श्वेता – श्वेताश्वतरोपनिषद मूल
संप्र – संतांचा प्रसाद (तुकाराम की प्रसादी – खंड 11)
सरामा सुंदर – समर्थ रामदासकृत रामायण सुंदरकांड
साम – सामवेद
सा, सासू – साम्यसूत्र – विनोबाजीकृत (खंड 3)
सावृ – साम्यसूत्रवृत्ति (खंड 3)
स्फुट – रामदास की स्फुट कविता

•

(20वें खंड में आये संदर्भ-सूचि आदि के संक्षेपों का खुलासा)

ग्रासेवृ – ग्रामसेवावृत्त (मराठी पत्रिका)
परि – परिशिष्ट
प्रेप – प्रेरकपत्रांश (सं. बालकोबाजी)
भूगं – भूदानगंगा
मवि – महाराष्ट्रांत विनोबा
मै – मैत्री (हिंदी मासिक पत्रिका)
रामरस – रामरस बरसे पुस्तक (सं. उषाबहन)
विचिं – विनोबा चिंतन

वचन-सूचि

(खंड 20)

ॐ तत् सत् श्री नारायण	विनोबा	135
ॐ नमो		138
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय		137.138
अग्निः पूर्वेभिर्	ऋसा 1.1.2	5
अग्निमीळे पुरोहितं	ऋसा 1.1.1	5,48
अघ्न्या	ऋसा 5.6.3	355
अंगुष्ठमात्रः पुरुषः	कठ 67	363
अति लघु रूप	तुरा सुंदर 2	219
अतोऽस्मि लोके	गी 15.18	138
अनिकेतः स्थिरमतिः	गी 12.19	263
अमृतं मे आसन्	ऋसा 3.2.8	357
अयोध्यां अटवीं	वारा अयो 40.9	15
अव स्म यस्य वेषणे	ऋसा 5.1.11	357
अव स्वराति गर्गरः	ऋसा 8.9.5	358
अवोदेवं उपरिमर्त्यम्	ऋसा 8.4.2	364
अव्यक्तलिंगाः	जाबाल 5	260
असुराणां हि एषा	छां 149	178
अहं ब्रह्मास्मि	बृह 16	152
आतां विश्वात्मकें देवें	ज्ञाने 18.1793	10
आत्मभावस्थः	गी 10.11	248
आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः	बृह 118	28
आनंदाचे डोहीं	तुका 828	278
आपो भूयिष्ठा	ऋसा 1.22.8	356
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः	गी 8.16	340
आमचा स्वदेश	तुका 841	11,16
आ सिंधोः आ परावतः	ऋसा 10.21.2	41
आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः	छां 120	336
आहे ऐसा देव	तुका 800	258
इमा या गावः	ऋसा 6.4.13	364
ईशावास्यमिदं	ईश 1	137
ईश्वर अंस जीव	तुरा उत्तर 117	311
ऋषयो दीर्घसंध्यत्वात्	मनु 4.46	185
एकमेवाद्वितीयम्	छां 79	138
एकं सत् विप्रा	ऋसा 1.23.16	138,337
एकाकी पौरुषं		384
एतद्देश प्रसूतस्य	मनु 2.10	37
एतां दिशं गंधाराः	छां 93	331
एतावानस्य महिमा	ऋसा 10.13.3	359
ओरे भीरु तोमार हाते	रवींद्रनाथ	384
कल्याणकारी शक्ति-	विनोबा	402
कहें बिनु रहा न कोई	तुरा बाल 13	241
काल करे सो आज	–	241,244
किये नगर-गत गामो	विन 142	25
कीर्तिः श्रीर्वाक् च	गी 10.34	61
क्षण क्षण क्षीण होतसे	–	370
खुले नैन पहिचानौं	कबीर	283
गणितं सहकारि	सासू 28	276
गॉड मेड द कंट्री	–	299
गाव इव ग्रामं	ऋसा 10.21.18	23
गीते भवद्वेषिणीम्	गीताध्यान	138
गृहेषु अतिथिवद् वसन्	भासा 17.5	317
चत्वारि शृंगा त्रयो	ऋसा 4.5.6	355
चरैवेति चरैवेति	ऐत ब्राह्मण	279,373
चित्तस्य परशरीरावेशः	योसू 3.38	404
जज् नॉट	ख्रिस्त 6.1.1	247
जनताघविप्लवः		25
जिजीविषेत् शतं	ईश 2	362
जितं सर्वं जिते रसे	भासा 6.8	237
झालिया दर्शन	तुका 267	306
तत्त्वमसि	छां 89	152
तद् य इमे वीणायां	छां 10	358
तमेव शरणं गच्छ	गी 18.62	72

त्रिः सप्त नामाघ्न्या	ऋसा 7.7.12	364
त्वं माता शतक्रतो	ऋसा 8.11.7	359
त्वरेतं कल्याणं	बुद्ध	397
दशयंत्रा सोमाः	वेद	359
दशास्यां पुत्रान् आदेहि	वेद	360
दास डोंगरीं राहतो	राभ 18	349
दुग्धं गीतामृतम्	गीतामाहात्म्य	301
दुर्लभं भारते जन्म		8,36
देवस्य पश्य काव्यं	ऋसा 10.7.6	364
देहे दुःख हें सूख	मश 10	94
द्वाविमौ वातौ	ऋसा 10.21.2	15
द्वा सुपर्णा	ऋसा 1.23.8 मुंडक 36	363
नमः शंभवाय च		138
नमो दाधार पृथिवीं	ऋसा6.7.10	138
न यावद् जीवं कर्तव्यत्व-		266
नर नारी बाळें	तुका 193	386
न हन् नफ्स	कुरान	113
नाना धर्माणां	अथर्ववेद	73
नाहं तंतुं न वि	ऋसा 6.2.5	357
निरभउ निरवैरु	नानक	316
निर्बल के बल राम	तुलसीदासजी	295
निवृत्ति गुरु माझा	ज्ञाभ 150	330
पंडिताः समदर्शिनः	गी 5.18	182
पत्युरसामंजस्यात्	ब्रसू 2.2.37	161
परस्परं भावयन्तः	गी 3.11	11
परस्परें उभारावें	राबो 345	349
पश्येम शरदः शतं	ऋसा 7.5.9	362
पिता नोऽसि पिता नो	वेद	359
पुरोहितं	ऋसा 1.1.1	364
पृष्ठेव तष्ट्यामयी	वेद	359
बरषा हिम मारुत	तुलसीदासजी	411
भयद्रेषिणी	गीताईध्यान	138
भरतखंड भूतळमां	नमे	9
भलि भारत भूमि	तुलसीदासजी	9

महोदधिमधें काष्ठें	महाभारत	304
मा गामनागामदितिं	ऋसा 8.12.8	355
माझें असतेपण लोपो	ज्ञाने 13.198	211
मित्रस्य मा चक्षुषा	यजु 36.18	13
मुद मंगलमय संत	तुरा बाल 2	58
मो सम कौन कुटिल	सूरदास	150
यतेमहि स्वराज्ये	ऋसा 5.4.11	9
यत्करोषि यदश्नासि	गी 9.27	338
यथा पिंडे तथा ब्रह्मांडे	–	335
यस्तन्न वेद	ऋसा 1.23.12	355
यूनानो मिस्र रूमा	इकबाल	5
रसो वै सः	तैत्ति 15	319
राम कृपा बिनु	तुरा बाल 3	239
राम तें अधिक नाम	विन 142	25
रामं दशरथं विद्धि	वारा अयो 40.9	15
रेजिस्ट नॉट ईविल	–	324
लब्ब बंदो चश्म बंदो	फारसी शेर	283
ला इलाह इल्लल्लाहु		138
वसंत इन्नु रंत्यो	साम 6.4.2	300
वसुधैव कुटुंबकम्		10
वासुदेवः सर्वम्	गी 7.19	137
विठ्ठल सुखा विठ्ठल	तुका 137	309
विश्वमानुषः	ऋसा 8.7.9	11, 37, 44, 123
विश्व विकासी काशी	तुलसीदासजी	19
विष्णोः कर्माणि पश्यत	ऋसा 1.4.4	355
वीक्षमाणो गुरोर् मुखं	मनु 2.74	277
वीर्यवन्तौ सुशिक्षितौ	वारा बाल 20.26	185
वृजनेन वृजिनान्	ऋसा 3.4.1	364
वेद अनंत बोलिला	तुका 402	355
वेद-वेदांत-गीतानां	विनोबा	363
वेदैश्च सर्वैरहमेव	गी 15.15	355
वैद्यो नारायणो हरिः		357
व्रजं कृणुध्वं स	ऋसा 10.14.10	359
व्हावें तृणाहूनि सान	चैतन्य-विनोबा	304

शौर्यं श्वापदचेष्टितं	कालिदास	224
श्रद्धत्स्व सोम्य	छां 91	327
श्रीशाय जनतात्मने	तिलकजी	11
संयतेन स्वैरम्	सासू 94	310
सगुनहि अगुनहि	तुरा बाल 116	280
स ग्रामाद् ग्रामं	छां 93	331
सत्यं ब्रूयात्	मनु 4.35	19
सत्यश्रुताः कवयो	ऋवे 5.57.8	360
स नः पर्षदति	ऋसा 1.16.7	13
सनातनो नित्यनूतनः	यास्काचार्य	5,178
सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति	कठ 39	355
सर्वेषां अविरोधेन		374
सहस्त्रशीर्षा पुरुषः	ऋसा 10.13.1	386
साम्ये समाधानम्	–	246-47
सांस सांस पर	कबीर	343
सिर धुनि गिरा	तुरा बाल 11	167
सुखं गच्छ	वारा	15
सुनु कपि तोहि समान	तुरा सुंदर 32	98
सूर श्याम मिलने की	सूरदास	289
सो अस्नातृन्	ऋसा 2.2.14	359
स्वदेशो भुवनत्रयम्	गुबो4.8.2	16
स्वपर-हिताय उद्यतं	गुबो2.2.2	293
हरिनो मारग छे	प्रीतम	295
हृदयग्रंथेर् विच्छेदकरं		292

नाम-सूचि

अक्राणी महाल 388
अगस्त्य ऋषि 116, 202
अग्नि 230, 253, 361-62
अघमर्षणसूक्त 143
अंग्रेज 6, 13, 23, 52, 72, 272, 299
अंग्रेजी 23, 33, 36, 39, 43–49, 52, 54, 56, 59 – 61, 64–76, 78, 84, 90-91, 95, 109, 144, 179, 207, 265, 284, 291, 300 (देखें इंग्लिश)
अथर्ववेद 73
अनंतनाग 111
अप्परस्वामी 34
अफगानिस्तान 124, 130-31
अफ्रीका 211
अमदाबाद 410
अमरनाथ 106
अमेरिका 23, 26, 30, 33, 48, 64, 70, 77, 118, 124, 157, 165, 191, 228, 271, 308
अयोध्या 15
अरबी 45, 53, 55, 70, 77, 92, 96, 169
अर्थशास्त्र 395
अर्धमागधी 84, 88, 92
अवेस्ता 86
अशोक चक्र 30
अशोक राजा 30
असम 9, 10, 34-35, 68, 160, 329
अहिल्यादेवी 19
आइन्स्टीन 344-45
आइसलैंड 87
ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी 91
आणविक अस्त्र 222
आंध्र 60
आंबेडकर 163
आंबेडकर-स्मृति 163
आर.एस.एस. 186
आर्य 13, 20, 47, 48
आर्यसमाज 58, 193-94
इंग्लिश 34, 51, 53, 77, 82, 84-85, 90-91, 204, 408 (देखें अंग्रेजी)
इंग्लैंड 54, 56, 62, 64, 70, 77, 271, 273,

इंद्र 190, 358, 361-62, 364
इमरसन 48
इस्लाम 116, 136-37, 169, 194, 259, 268, 269, 401 (देखें मुसलमान)
ईरान 12
ईशुपिता 137
ईसप की कहानियां 54
ईसा, ईसामसीह 6, 12, 31, 162, 258, 278, 310, 370-71
ईसाई, ईसाईधर्म 31, 35, 37, 115-16, 136, 139, 159, 161-62, 169-70, 182, 258, 259, 268-69, 336, 384
उड़िया 73, 88, 95-97
उड़ीसा 19, 35
उत्तरध्रुव 47, 110
उत्तरप्रदेश 35
उपनिषद 7, 25, 26, 28, 40, 41, 45, 47, 48, 54, 137, 143, 146, 167, 194-95, 288, 298, 319-20, 331-32, 335, 355-63, 365, 382, 386
उमा (पार्वती) 29
उमा हैमवती 362
उरुलीकांचन 366
उर्दू 56, 59, 75, 77, 84, 85, 92, 96, 100
उर्मिला (लक्ष्मणपत्नी) 314
ऋतुसंहार 45
ऋषभ 9
ऋषिकेश 292 (देखें हृषीकेश)
ऋषिपत्नी 361
एकनाथ 19, 162, 248, 278
एटमबम 125, 219, 223, 283, 384
एण्ड्रूज 11
ए बी सी ट्रँगल 130
एशिया 81, 88, 302
एशिया मायनर 110
80, 83, 85-86, 88, 95-97
कन्याकुमारी 9, 10, 12, 16, 21, 29, 59, 105
कपिल 375
कबीर 19, 21, 34, 82, 87, 248, 302, 393
कम्युनिस्ट 186, 200
कर्नाटक 17, 18, 33, 59, 60, 86
कलकत्ता 205, 227
कलिंग 33
कलिंगड़ा 33
कलियुग 162
कश्मीर 21, 34, 35, 59, 101-132, 284, 384
कश्मीरी जबान 109
कश्मीरी पंडित 122
कश्यप ऋषि 116
काकासाहब (कालेलकर) 287
कांग्रेस 186, 188, 200
काठियावाड़ 58
कांट 32
कानड़ा 33
कामरूप 384
कामाख्या मंदिर 189
कारंत (लेखक) 88
कालड़ी 393
कालनेमि असुर 356
कालिदास 14, 47
कालीकमलीवाले 135
कावेरी 17
काश-मेरु 110
काशी 5, 16, 19, 21, 89, 297, 385
काश्मीरपुरवासिनी शारदा 112
कास्पियन 116
किशोरलालभाई 373-74
कुबेर 249
कुंभकोणम् 43
कुंभमेला 38, 372

कृष्ण, श्रीकृष्ण 8, 10, 23, 31, 37, 38, 49, 137, 139, 162, 195, 236, 272, 297, 319, 351, 370, 376, 385, 389
कृष्णकथा 25
कृष्णार्पण 28
केतु 204
केनोपनिषद 362
केरल 16, 60, 61, 79, 80, 86, 106, 117, 384, 405
केसरी (अखबार) 56, 78
कैथोलिक 158
कैलास 9, 132
कोणार्क 349
कोशानंद 92
क्लाइव 119
क्विट इंडिया 272
क्वेकर 294
खादी परिवार 213
गंगा 16-17, 21, 24, 59, 113, 141, 274, 351, 389
गंगासागर 393
गंगोत्री 351
गजेंद्रमोक्ष 324
गणपति 190
गणितानंद 92
गांधारदेश 331
गांधी, गांधीजी, बापू 7, 23, 25, 31, 35, 40, 52, 56, 58, 60, 64, 78, 80, 90, 139, 173–75, 179, 181, 183–85, 191, 211, 219, 221, 223, 240, 243, 245, 265, 267-68, 272, 278, 285, 287, 298, 307, 318, 365–377, 381-82, 391, 396
गांधी आश्रम 366
गांधी जयंती 211
गांधी निधि 375
गांधी-विचार 370, 396
गांधी शताब्दी 376
गाय 23
गायकवाड संपतराव 403
गायत्रीमंत्र 328
गीता 7, 11, 21, 25, 26, 37, 40–42, 45, 47, 49-50, 66, 85, 135–38, 150, 171, 182, 196-97, 222, 243, 245, 248, 251, 258, 263, 285, 287, 297, 301, 306, 331, 335, 338, 363, 375, 379, 386, 391, 398-99
गीताई 379
गीताजयंती 186, 188
गीता-प्रचार 374
गीता-प्रवचन 78, 85, 378
गीता-रहस्य 11, 83
गीर्वाण-लघुकोश 100
गुजरात 9, 18, 35, 85, 269, 373
गुजराती 60, 63, 75, 76, 78, 79, 83–85, 86, 90, 92, 95, 96, 99, 181
गुरुग्रंथ 408
गुरु नक्षत्र 265
गुरुवाणी 26
गुलबर्गा 68
गुलमर्ग 112–14
गृत्समद 8
गेटे 47
गोखलेजी 78
गोडसे 374
गोदावरी 17, 86
गोलमेज परिषद 369
गौडपाद की कारिकाएं 137
गौतम 9, 17, 25, 31
ग्रामदान 103, 105-6, 121, 142-43, 157, 170, 236, 243, 262, 332, 352, 378, 389

ग्रीक 12, 45, 48, 51, 91
ग्रीन 32
घटोत्कची माया 237
चरखा जयंती 211
चर्मवाद्य 358
चीन 6, 13, 14, 33, 53, 56, 66, 87, 123-24, 131, 188
चीनी 12, 53, 70, 78, 81, 84, 87-88, 135, 137
चैतन्य महाप्रभु 19, 218, 248, 278, 302, 304, 3 93
छांदोग्य उपनिषद 178
जगन्नाथ 393
जगन्नाथपुरी 19
जड़भरत 324
जंबुद्वीप 123
जम्मू 115, 129-30
जय जगत् 129, 142, 190–92, 262, 267, 283,329
जर्मन 47-48, 51, 53, 70, 82, 91, 352
जर्मनी 33,44,47,48,64-65, 404
जागतिक राजनीति 66
जापान 6,13,30,53,129
जापानी 53,70,81,84,87
जावा 14
जीसस (देखें ईसा) 310
जैन 8,18,34,92,136,170, 259
जोग प्रपात 29
ज्ञानदेव, ज्ञानेश्वर 10,17,34,72, 75, 77,138, 149-50,194, 211-12, 278, 291, 330, 374, 393, 399
ज्ञानदेव चिंतनिका 268
ज्ञानेश्वरी 10,78,138,268, 291,330,399
टांगानिका 182
डेमोक्रेटिक नेशनल कॉन्फ्रन्स 122
डोग्रा 108
तंतुवाद्य 358
तमिल 23,34,36,43,54,60,61,63, 64,70, 74–76,79,80,83,85-86, 88,95–98
तमिलनाड 17, 23, 34, 49, 60, 68, 86
तमिलभाई 75
ताओ 135, 137
ताड़का 196
तारा 196
तिब्बत 12, 13, 130, 413
तिरुपति 26
तिरुवाचकम् 20, 21
तिलकजी 6,10, 47, 56, 69, 83, 110, 163,278
तिलक विद्यापीठ, पुणे 86
तुकाराम 8,11,16, 34, 194, 278, 290, 306, 309-10, 355, 390, 401, 412
तुंगभद्रा 17
तुलसी का पौधा 22
तुलसीदासजी 9, 15,19, 21, 25, 31, 34, 58, 72, 94, 167,248, 278, 293, 302, 366, 393, 409, 411
तुलसीरामायण 37, 94, 98, 219
तेलंगाना 33, 68, 111, 399
तेलुगु 34, 43, 54, 60-61, 63, 68, 75, 80, 83, 85-86, 96, 97, 100
तैत्तिरीय आरण्यक 15
तैलंगी 33
त्रिपिटक 81, 92
थोरो 48
दक्षिण अफ्रीका 78, 368
दक्षिण महासागर 16
दत्तात्रेय 136
दयानंद 58

दिनमणी (पत्रिका) 43
दिल्ली 15, 23, 39, 67, 77, 131, 142, 205-6, 227, 237, 240, 369
दुर्गादेवी 189-90
दुर्गा-सप्तशती 190
देवनागरी 89
देहु 11
द्रविड़ 20, 21
द्वारका 269, 297
धम्मपद 162
धर्मचक्रप्रवर्तन 222
धर्मराज युधिष्ठिर 146
धारवाड़ 68
धीरेंद्रभाई 405
धुलिया जेल 173
धृतराष्ट्र 15, 287
नम्मालवार 34
नरसिंह मेहता 9, 10
नवबौद्ध 162-63
नागपुर 404
नागरी लिपि 53, 81–100
नानक 19, 248, 278, 302
नामघर 160
नामदेव 19, 278
नारद 386
नासिक 11, 237
निमाड़ी 73
निवृत्तिनाथ 330
नृसिंह 184
नेपाल 130
नेपाली 83-84, 88, 92
नेपोलियन 185, 217
नेशनल कॉन्फ्रन्सवाला 122
नेहरू पं. 287, 350
पंजाब 35, 107, 132
पंजाबी 36, 92
पठान 108
पंढरपुर 11, 38, 103, 162, 408
पतंजलि 340
परंधाम 410
पलासी 119
पवनार, पवनार आश्रम 92, 236, 238, 316, 382, 387
पाकिस्तान 108, 118-19, 124-25, 129–31, 266, 413
पाणिनि 15, 40, 44, 95
पातंजलयोग 340
पारसी 12, 86, 122, 136, 183, 356
पार्वती, गिरिजा 12, 16
पालघाट 43
पाली 81, 84, 88, 92, 169
पाशुपत (अस्त्र) 190
पिताजी (विनोबाजी के) 46, 361, 379
पिताजी (श्रीअरविंद के) 54
पी एस पी (पार्टी) 188, 200
पीकिंग 227
पीरपंजाल 15, 107-8, 110-11, 120
पुट्टप्पा 88
पुनर्वसु 202
पुराण 41, 76, 110, 356
पूना 365
पेरिस 15, 39
पेरू 13
प्रजा परिषदवाले 122
प्रयाग 297
प्रशांत महासागर 30
प्रह्लाद 184–86
प्राकृत 52, 94

प्लेटो 32
फारसी 53, 55, 59, 69, 77, 92, 96, 169
फिरोजशाह मेहता 122
फिलिस्तीन 370
फ्रान्स 33, 44, 64
फ्रेन्च 6, 13, 45–47, 51, 53, 70, 82, 90-91
बंगलोर 68, 410
बंगाल 19, 34-35, 54, 85, 119, 194, 268, 314, 393
बंगाली, बंगला 54, 55, 60, 69, 73, 74–76, 79, 83–85, 95-96, 100, 119, 402
बंगालीभाई 206
बजाजवाड़ी 403
बड़कोड़ी 34
बड़ौदा 403, 410
बड़ौदा कॉलेज 45
बद्री 297
बद्री-केदार 56
बंबई 158
बर्नार्ड शॉ 90
बर्मा 128, 130
बर्लिन 65
बसवेश्वर 37, 393
बाइबिल 6, 182, 194, 215, 247, 268
बादरायण 15
बापूकुटी 372
बाबा, विनोबा 53, 58, 60, 82, 85–87, 89–92, 110, 113, 202, 267-68, 287, 289–91, 309, 317, 332, 344, 352, 363, 378–414 (देखें विनोबा)
बाबाजी मोघे 330
बारडोली सत्याग्रह 185
बाली राक्षस 196
बिहार 19, 105, 393
बुद्धधर्म 6, 162, 163, 268
बेझवाड़ा 68
बेंद्रे 88
बैलेस्टिक वेपन 219
बोधगया 163
बौद्ध-बौद्धधर्म 81, 92, 108, 115, 116, 120, 126, 136, 169, 259
बौद्धावतारे 162
ब्रह्मदेव 199, 202
ब्रह्मदेश 13
ब्रह्मपुत्र नदी 413
ब्रह्मविद्या 129
ब्रह्मविद्या-मंदिर 154, 298, 303
ब्रह्मसमाज 193-94, 268
ब्रह्मसूत्र 25, 26, 40, 41, 363
ब्राउनिंग 308
ब्राह्मी 82, 89
ब्रिटेन 303
भक्तगाथा 76
भगीरथ 17
भरत (राजा) 10
भरत 14
भरतखंड 41, 381
भरद्वाज ऋषि 357
भागवत 24, 25, 37, 41, 42, 160, 183, 186, 228, 252, 317, 363, 398
भांडारकर डॉ. 194
भारत 3–12, 14–16, 24–39, 42–44, 46, 59, 61–63, 69, 76, 79, 85, 88, 116-17, 151, 163, 169-70, 180, 190, 239, 252, 297, 303, 308, 316, 349, 384, 404, 413
भारतन् कुमारप्पा 98
भारत-राग 32-33

भारतीय 21–39, 44.48, 53, 69–71, 336, 377, 384
भिंड-मुरैना 272
भीमयान 163
भीष्म 321
भूटान 130
भूदान, भूदान-यज्ञ 60, 103, 170, 221, 273, 316, 332, 352, 378, 383–85, 393
भूदान-यात्रा 388
भूमि क्रांति 384
भूमिति 342
भूषण (राजकवि) 68
भोजपुरी 73
मंगल प्रभात 371
मंगोलिया 15
मंडाले जेल 83
मंडी-राजपुरा 107, 113
मथुरा 49, 385
मदुरा 49
मद्रास 52, 60, 69
मधुसूदन 248
मध्यएशिया 13
मध्यप्रदेश 35
मध्यप्रांत 179
मध्व, मध्वाचार्य 21, 61
मनाचे श्लोक 98
मनु 38, 174, 277, 370
मनुस्मृति 38, 185, 363
मंथरा 196
मंदोदरी 196
मराठा 191
मराठी 10, 49, 53, 54, 58, 60, 63, 69, 73, 74–79, 83–85, 87–89, 92, 94–100, 138, 181, 288-89, 291, 304, 379, 384, 402
मर्क 184
मलबार 75, 106, 169
मलयालम् 34, 41, 43, 55, 60, 61, 74–76, 79, 80, 83, 85, 96–98
मसूरी 29
महमूद गजनी 107
महादेवभाई 330
महानदी 212
महाभारत 14, 24, 25, 41, 45, 252, 288, 304, 306, 363
महायान 163
महाराष्ट्र 12, 17, 34, 35, 69, 78, 85, 87, 179, 193-94, 291, 373
महाराष्ट्रीय 69
महावीर 9, 21, 32, 36, 203, 223, 367, 393
महिषासुर 190
मां (विनोबाजी की) 47, 294, 378-79, 391
माउंटबैटन 69
मांसाहार परित्याग 18
माणिक्कवाचकर 19
माधवदेव 9, 10, 278, 329
मारवाड़ी 73, 95
मारवाड़ी विद्यालय 178
मारीच 185
मार्क्स 161, 188
मालव 33
मालवी 73
मालवीय 33
मिस्टिसिजम 27
मिस्र 5
मीराबाई 301
मुगल, मुसलमान, मुस्लिम 12, 37, 43, 73, 77, 107-8, 115, 119-20, 126, 139, 159, 169-70, 183-84, 187-88, 191, 258, 325, 374, 384

मेघदूत 45
मेदिनीपुर 19
मेरी (ईसा की मां) 12
मेरु 110
मेव 187
मेवाड़ी 73
मेवात 186
मैक्समूलर 47
मैत्रेयी 332
मैथिली 73
मैथिलीशरणजी (कवि) 202
मोड़ी लिपि 97, 99
मोरोपंत 388
यंग इंडिया 330
यमुना 24, 59
ययाति 108
यवन 12
यहूदी 12
याज्ञवल्क्य 15, (जागबलिक) 58, 332
यास्काचार्य 5, 178
युगोस्लाविया 53
यूनान 5, 6, 7
यूरोप 6, 7, 17, 22-23, 26, 33, 42, 62, 64, 76, 82, 117, 162, 356
यूरोपियन 53, 76
योगशास्त्र 404
योगसूत्र 26, 41, 338, 340, 397
रवींद्रनाथ 6, 13-14, 15, 26, 32, 58, 72, 100, 115, 171, 210, 248, 269, 298, 314, 381, 384
रशियन 70
राजस्थान 35, 301
राजा राममोहन 7, 269
राणाप्रताप 301
रानडे 6, 7, 194
336, 351, 370, 376
रामकथा 25
रामकृष्ण परमहंस 6, 31, 34, 35, 269, 393
रामकृष्णहरि 162, 218
रामचरितमानस 409
रामजन्म 202
रामदास गांधी 374
रामदास समर्थ 77, 98, 162, 278, 349, 400
रामनाम 170, 185, 285, 293, 343, 366, 390
रामानंद 21
रामानुज 19, 21, 31, 34, 35, 52, 61, 158-59, 278, 393
रामानुज – गीताभाष्य 159
रामायण 10, 14, 21, 24, 25, 41, 45, 58, 60, 76, 196, 252, 306
रामायण वाल्मीकि 42, 185
रामावतार 384
रामेश्वर (म्) 5, 16, 21, 56, 385
रायचुर 68
रायशुमारी (पार्टीवाले) 122, 124
रावण 196
राष्ट्रसंघ 227
राहू 204
रूस 33, 56, 64, 66, 118, 124, 131, 142, 157, 188, 191
रूसी 33
रोम 5, 6
रोमन 91
लक्ष्मण 15, 314
लक्ष्मी 65, 228, 249
लंका 13, 128
लद्दाख 115, 130
लंदन 39, 65, 158, 240, 291, 369
लंदन टाइम्स 90
लल्ला 109

लेनिन 161
लैटिन 42, 45, 48, 51, 53, 82
लोकनागरी लिपि 93–100
लोरेन 112, 114
वट-सावित्री 36
वर्धा 178-79, 370, 400-1
वर्धा आश्रम 407
वलसाड 410
वल्लभस्वामी 407
वल्लभाचार्य 19, 61, 249, 269, 292
वसिष्ठ 321
वाल्मीकि 15, 21, 185, 314
वाशिंग्टन 227
विटमन 48
विठोबा 408
विठ्ठलबाबा 390
विनोबा 365, 367, 374 (देखें बाबा)
विवेकानंद 6, 34, 40, 45, 62, 278
विश्वमानव 24, 37
विश्वामित्र 321, 356, 357
विष्णु 139, 190, 193, 228, 249, 355-56, 375
विष्णुसहस्रनाम 151, 363
विस्मृता उर्मिला (लेख) 314
वेद, ऋग्वेद 5, 8–11, 13, 15, 16, 24–26, 40, 41, 43, 47–49, 123, 135–39, 164, 167, 194, 200, 265, 300, 355–63, 364, 382, 386, 403
वेदांत 24, 45, 62, 116, 161, 163, 169, 268, 297, 344
वेलूर जेल 34, 60
वैदिक, वैदिक ऋषि 5, 8, 9, 21, 25, 136-37, 287, 356
वैदिकधर्म 10, 163, 362
वैद्यनाथधाम 19
वैष्णव, वैष्णवधर्म 25, 34, 76, 137, 268
शंकरदेव 9, 10, 19, 278, 329
शंकर संप्रदाय 34, 159
शंकराचार्य 16, 19, 21, 31, 34, 35, 41, 52, 61, 106, 117, 142, 159, 161, 222, 264, 269, 272, 274, 278, 293, 310, 325, 365, 367, 374, 380, 393, 398, 400
शाकुंतल 47
शांकरभाष्य 272
शांकर विचार 269
शांतिनिकेतन 13
शांतिसेना 103, 142, 214, 227, 405
शास्त्रीय मराठी व्याकरण 78
शिमोगा 410
शिया 122
शिव-तांडव 199
शिवाजी 68, 69, 163
शिवाबावनी (काव्य) 68
शुक्र नक्षत्र 265
शूर्पणखा 196
शेक्सपीयर 291
शैव 25, 76, 137–38
शोपेनहावर 32, 47
श्रमण 25, 367
श्रीअरविंद 6, 7, 54, 78, 278, 324
श्रीनगर 16, 106, 117, 120
श्वेतकेतु 327, 363
षंड 184
संविधान की 70 वीं कलम 66
संस्कृत 21, 25, 34, 36, 40–52, 57–62, 72–79, 81–85, 88–92, 94, 98–100, 111, 120, 123, 137, 139, 167, 169, 178, 183-84, 196, 244, 289, 294, 301, 303, 346, 357–59, 361, 363
संजय 15
सत्य के प्रयोग 318, 397

सरस्वतीदेवी 112
सर्व-सेवा-संघ 221
सर्वोदय 126, 211–13, 215, 293, 393
सर्वोदय दिन 211
सर्वोदय परिवार 213
सर्वोदयपात्र 103, 195, 214, 405
सर्वोदय समाज 213
सर्वोदय सम्मेलन 373, 394
सॉक्रेटिस, सुकरात 32, 181, 244
सांख्य विचार 268
सांख्यसूत्र 41
साबरमती 382
साम्ययोग 215-16
सायणभाष्य 47
सावित्री 195
सिक्ख 115-16, 120, 122, 126, 136, 138, 169, 183, 408
सिक्खधर्म 136
सिंधी 95-96
सिमला 29
सीज फायर लाईन 117-18
सीता 15, 195
सीलोन 130 (देखें लंका)
सुदर्शन चक्र 190
सुत्री 122
सुबाहु 185
सुमात्रा 14
सुरगांव 404
सुरसा राक्षसी 219
सुशीरवाद्य 358
सूरदास 150, 289
सूरे बकर 113
सूर्यनारायण 230, 245, 250, 253, 273, 304, 356-57, 376, 388, 402
सेंट टॉमस 12
सौराष्ट्र 33
स्वामीनारायण 269
हनुमान 219
हरि 162, 272, 283
हरिजन (पत्रिका) 381
हरिद्वार 135
हरिनाम 218
हरिपाठ 378
हरिश्चंद्र 321
हिंद स्वराज 365-66
हिंदी 34, 35, 43, 52–85, 88–90, 92, 95–98, 183, 222, 373, 384, 408
हिंदीकोश 73
हिंदुस्तान 1–39, 41-42, 47, 48, 53–57, 61, 63, 64, 68, 71, 72, 75, 77, 79, 81–85, 92, 93, 96, 106–8, 110, 115–19, 122–25, 128, 130-31, 159, 165-66, 175, 177, 183, 187, 208, 212, 221-22, 243, 257, 262, 266, 269, 273, 282, 303, 336-37, 356, 369, 372, 406, 408
हिंदू, हिंदूधर्म 10, 35, 37, 51, 73, 77, 107, 108, 115-16, 119-20, 122, 126, 135-36, 139, 147, 158-59, 162-63, 169-70, 183-84, 186, 188, 191, 194, 261, 363, 374, 384
हिंदू-मुस्लिम एकता 183-84
हिंदू संगठन 373-74
हिमाचल 35, 52
हिमालय 4, 10, 16, 21, 41, 117, 132, 291, 310
हिमालयपुत्री 16
हिरण्यकशिपु 184-85
हिरोशिमा 384
हीनयान 163
हृषीकेश 135 (देखें ऋषिकेश)

संदर्भ-सूचि

पृष्ठ	पॅरा	संदर्भ
		भारतीय संस्कृति
3.	1	5.5.56 तिरुपति
	2	1.2.58 धारवाड़
	3	5.5.56 तिरुपति
4.	1	5.5.56 तिरुपति
	2	7.9.57 मड़िकेरी
	3-4	13.3.55
5.	1	5.12.76
	2	15.4.58 खारेपाटण
	3	23.4.52 जौनपुर
6	पूर्ण	25.2.58
7.	1-2	25.2.58
	3	5.3.66 जमशेदपुर
8.	1-2	सत्याग्रहदर्शन – दूसरी खोज
	3	29.1.50
9.	1	सत्याग्रहदर्शन – दूसरी खोज
	2	8.4.79+11.3.58
	3	5.10.61 जांजी
10.	1	सर्वो अक्तू 49.143 (पुणे 21.8.49)
	2-3	2.8.60 इंदौर
11.	1	2.8.60 इंदौर
	2–4	17.12.59 सिरसा
	5	13.3.58
12.	1–3	16.12.59 सिरसा
	4	20.9.59
	5	1.3.55 (उड़ीसा)
13.	1	सर्वो जन 50.324
	2	1.3.55
	3–5	30.12.54

पृष्ठ	पॅरा	संदर्भ
	7	भूय 11.5.70
15.	1-2	भूय 11.5.70
	3	1.2.58 धारवाड़
16.	1	2.2.59 वल्लभनगर
	2-3	मधुकर 49
	4	14.8.59
	5	2.4.58 साबडांग
17.	1	2.4.58 साबडांग
	2	15.5.58+20.9.59 जम्मू
	3	22.3.58 निपाणी
	4	1.2.58 धारवाड़
18.	1	1.2.58 धारवाड़
	2	23.12.49+भूगं 8.43
	3	5.10.61
19.	1-2	5.10.61
	3	20.9.56 मेकपालेयम्
	4	साम्ययोग साप्ताहिक
20.	1	साम्ययोग साप्ताहिक
	2	17.1.57
	3-4	27.12.54
	5	17.2.57 तिरुप्पुकुड
21.	1	5.10.53 भागलपुर
	2	गीताई चिंतनिका
	3	14.3.59 सीकर
22.	1	14.3.59 सीकर
	2	विप्र 2.35
	3	15.5.48 अजमेर
	4	14.11.56
23.	1	5.5.48 अजमेर
	2–4	6.8.58 भांबुवाड़ी
24.	1	6.8.58 भांबुवाड़ी

25.	1	25.6.56 पुदुपट्टु
	2	विप्र 20.4.64 पवनार
	3	8.9.65 काशी + 7.5.59
26.	1–3	5.5.56 तिरुपति
27.	1	5.5.56 तिरुपति
	2	9.5.55+24.3.55 + 15.3.55
28.	1-2	5.5.56 तिरुपति
29.	1-2	23.2.58 जोग
	3–5	15.4.57
	6	30.7.58
30.	1	25.2.57 नत्तम्
	2	14.3.59 सीकर + 30.12.54
31.	1	21.4.53 पकरीबरावां
	2	3.9.65 इलाहाबाद
	3	13.9.57 आनेचौकुर
	4	भूय 11.5.70
32.	1	22.8.56 भावानी
	2	14.2.58
	3	1.2.58
33.	1	14.2.58
	2-3	16.3.65 पवनार
34.	1	16.3.65 पवनार
	2	1.6.57 (सेवक मार्च 57.108)
35.	1–4	1.6.57 (सेवक मार्च 57.108)
	5	16.1.57 त्रिची
36.	1	24.4.58 हातखंबा
	2	1.2.58 धारवाड़
37	पूर्ण	1.2.58 धारवाड़
38.	1	मै 77.253
	2	मै 76.265
	3	27.4.60 इंदौर
	4	3.6.58 पंढरपुर
39.	1	9.7.58 गेवराई
	2	7.5.59
	3–5	15.4.63
41.	1	15.4.63
	2	शिक्षाविचार
	3	20.4.40 दिल्ली
42.	1	26.8.57 मंगलोर
	2	11.5.58 जयसिंहपुर
	3	8.3.58 इल्याळ
	4	खंड 2.325
	5	8.3.58
43.	1	9.4.57 तिरुनवेली
	2	14.6.57
	3	14.3.59 सीकर
44.	1	14.3.59 + 10.1.59
	2	शिक्षाविचार
	3	13.9.71 उषा डायरी
45.	1	मै मार्च 69.110
	2–5	शिक्षाविचार
46.	1	14.3.59 सीकर
	2	15.12.60 काशी
47.	1-2	15.12.60 काशी
	3	17.7.59 गुलमर्ग
48.	1	17.7.59 गुलमर्ग
	2	शिक्षाविचार
	3	14.3.58 बेलगांव
	4	15.12.60 काशी
49.	1	19.9.57
	2	27.1.59 ऋषभदेव
	3	11.3.58 नंदगढ़
	4	21.8.49 पुणे
50.	1	5.2.61 पूर्णिया
	2	21.8.49 पुणे
51	पूर्ण	15.6.63 कलकत्ता
52	पूर्ण	जन 1942 मद्रास
53	पूर्ण	आकल22+ शिक्षाशिक्षक

	3-4	26.2.49
55	पूर्ण	26.2.49
56.	1	27.1.58 हुबळी
	2-3	12.2.58 गोकर्ण + 18.7.57 नीलेश्वर
57.	1	मवि2.132 + 19.10.57 तुमकुर
	2	7.12.67 पूसारोड़
58.	1-2	7.12.67 पूसारोड़
	3	भाषा का प्रश्न 35+80
59.	1	11.10.57 बिड़की
	2–4	17.3.65 पवनार
60.	1-2	1.1.58
	3-4	19.10.57 तुमकुर
	5	भाषा का प्रश्न
61.	1	भाषा का प्रश्न
	2	
	3	1.8.58 शिमोगा
62.	1	12.2.58 गोकर्ण
	2	भाषा का प्रश्न 38,30+ 27.1.58 हुबली + 19.10.57
	3-4	28.1.58 हुबली
	5	शांतियात्रा 46+ भाषा का प्रश्न 30
63.	1	भाषा का प्रश्न 45+ 9.11.57 अरसीकेरे
	2	9.11.57
	3	3.3.65 पवनार
64.	1-2	27.1.58 हुबली
	3-4	
65.	1	1.10.49 विजयवाड़ा
	2	14.2.58 कुमठा
66.	1-2	14.2.58 कुमठा
	3-4	1965 पवनार

68.	1	
	2–4	1956
	5	सेवक 52.53
	6	8.9.50
69.	1	8.9.50
	2	11.12.50 (सेवक)
	3	भूय 17.8.56
70.	1–3	सेवक दिसं 50.558
	4	1.2.58
71.	1-2	सेवक दिसं 50.558
	3-4	महाराष्ट्र धर्म साप्ताहिक
72.	1	महाराष्ट्र धर्म साप्ताहिक
	2	19.4.60
73	पूर्ण	19.4.60
74.	1-2	5.9.71 उषा डायरी
	3	सर्वो सितं 52.परि32
	4-5	सेवक 1952.196–202
75-76	पूर्ण	सेवक 1952.196–202
77.	1	2.6.61
	2-3	19.6.63 कलकत्ता
	4	29.10.58 बड़ौदा
78.	1	27.7.58 भानसहिवरे
	2-3	17.3.65 पवनार
79-80	पूर्ण	27.6.57 मलप्पुरम्
81-82		
83.	1	
	2	27.6.57 मलप्पुरम्
	3	सेवक 49.125
84-85		
86.	1–3	
	4	सर्वो नवं 49.226
87		
88.	1	
	2–7	मै 74.192
89.	1-2	मै 74.547

	2	सर्वो दिसं 49.314
93 से 99		लोकनागरी लिपि
100.	1-2	लोकनागरी लिपि
	3	सर्वो 55.440 (4.2.55)

कश्मीर का प्रश्न

103.	1	1.6.58 पंढरपुर
	2	28.2.59 अजमेर
	3	21.5.59 पठानकोट
	4	22.5.59 लखनपुर
	5	भूमिपुत्र 16.4.59
104.	1	भूमिपुत्र 16.4.59
	2–5	22.5.59 लखनपुर
	6	2.6.59 मानसर
105.	1-2	22.5.59 लखनपुर
	3-4	26.5.59 सबार
	5	20.7.59 बाबारेषि
106.	1	22.8.59 बेरीनाग
	2–4	29.5.59 मांडली
	5-6	20.9.59 कठुवा
107.	1	20.9.59 कठुवा
	2	15.7.59 गुलमर्ग
	3-4	26.7.59 हिंदवारा
	5–7	मै सितं 1994 कुसुमब. लेख
	8	2.8.59 श्रीनगर +
		14.7.59 गोरबन
108.	1	14.7.59 गोरबन
	2-3	25.8.59 रामसू
109.	1	25.8.59 रामसू
	2	22.7.59 पट्टण
	3	30.6.59 पूंच
	4-5	25.8.59 रामसू
110.	1-2	25.8.59 रामसू
	3-4	15.7.59
	2-3	10.8.59 मार्तण्ड
	4-5	6.8.59 श्रीनगर
113.	1	6.8.59 श्रीनगर
	2-3	26.7.59
114.	1	26.7.59
	2-3	15.7.59 गुलमर्ग
	4-5	25.6.59 थानामंडी
115.	1–4	10.6.59 जम्मू
116.	1-2	10.6.59 जम्मू
	3	31.5.59 रामकोट
117.	1	15.7.59 गुलमर्ग
	2	14.8.59 पहलगांव
	3	17.6.59 सुंदरबनी
	4	21.6.59 नारियां
	5	20.6.59 नौशेरा
118.	1–5	17.7.59
	6	1.7.59 पूंच
119.	1	1.7.59 पूंच
	2-3	23.6.59 रजौरी
	4	4.9.59 गढ़ी
120.	1-2	4.9.59 गढ़ी
	3	20.9.59 कठुवा
	4-5	22.8.59 बेरीनाग
121.	1–4	22.8.59 बेरीनाग
	5	28.6.59 सूरतकोट
	6	20.9.59 कठुवा
122.	1	23.9.59 पठानकोट
	2-3	2.8.59 श्रीनगर
123.	1	14.8.59 पहलगांव
	2–4	6.8.59 श्रीनगर
124.	1-2	6.8.59 श्रीनगर
	3	20.7.59 बाबारेषि
	4	21.7.59 मागाम
125.	1-2	25.6.59 थानामंडी
	3	14.6.59 गंधारवान

127.	1	1.6.59 बिलासपुर
	2	30.5.59 गुजरु नगरौटा
	3	2.9.59 उधमपुर
	4	31.7.59 सिंगपुर
	5	14.8.59 पहलगांव
128.	1	14.8.59 पहलगांव
	2–4	6.8.59 श्रीनगर
129.	1	6.8.59 श्रीनगर
	2-3	30.5.59 गुजरु नगरौटा
	4	सितं 65 इलाहाबाद
130.	1-2	सितं 65 इलाहाबाद
	3-4	20.9.59 कठुवा
	5	23.7.59 दिलना
131.	1-2	23.7.59 दिलना
	3	14.6.59 गंधारवान
132.	1	21.9.59 सुजानपुर
	2	23.9.59 पठानकोट
	3-4	2.8.59 श्रीनगर

नाममालादि विविध

135–37	पूर्ण	सर्वोदय जून 1952
138.	1–6	सर्वोदय
	7–12	महादेवी पत्र 15.11.64
139.	1–7	महादेवी पत्र 15.11.64
	8–10	4.6.64 ठाणेगांव
140.	1	4.6.64 ठाणेगांव
	2–4	20.5.64 आष्टी
	5	सर्वो जन 50.962
141.	1	सर्वो जन 50.962
	2	30.3.60
	3	20.2.66
142	पूर्ण	20.2.66
143.	1–3	20.2.66
	4-5	23.11.66 मुजफ्फरपुर
144.	1–3	23.11.66 मुजफ्फरपुर

147.	1-2	भूय 10.10.58 मीरा डायरी
	3	भूय 5.9.58
148	पूर्ण	भूय 5.9.58
149.	1	27.9.66 वैनी
	2	8.3.67 वैनी
150.	1-2	29.9.63
151.	1	29.9.63
	2-3	6.1.64 भाठागांव (दुर्ग)
152.	1	6.1.64 भाठागांव (दुर्ग)
	2	11.9.58
153	पूर्ण	11.9.58
154.	1–6	रामरस बरसे 61
	7–9	रामरस बरसे 16
155.	1-2	रामरस बरसे 16
	3-4	18.3.42 कापडणें
156.	1-2	2.5.64 सोनेगांव आबाजी
157	पूर्ण	भूय 14.3.58
158.	1-2	भूय 14.3.58
	3	मै 73.619
159	पूर्ण	मै 73.619–22
160.	1-2	31.5.64 किन्हाळा
	3	ग्रासेवृ जुला1940
	4	18.3.42 कापडणें
161	पूर्ण	18.3.42 कापडणें
162-63	पूर्ण	10.6.64
164.	1	मधर्म 20.7.25
	2-3	भूय 1.4.58
165	पूर्ण	भूय 1.4.58
166.	1	भूय 1.4.58
	2	8.10.58 ओरी (भरूच)
167	पूर्ण	8.10.58 ओरी (भरूच)
168	पूर्ण	मै 1990.175
169.	1	भूय 10.4.64
170.	1	भूय 10.4.64
	2–4	24.1.63 पथर्रा

172	पूर्ण	31.8.60 कस्तूरबाग्राम
173-74	पूर्ण	21-22.3.34 नालवाडी
175-77	पूर्ण	31.10.63
178.	1	4.3.47 पवनार
	2-4	3.9.1924
	5	मधर्म 3.8.25
179.	1-2	मधर्म 7.12.25
	3	मधर्म 12.11.24
180	पूर्ण	मधर्म 12.11.24
181	पूर्ण	1945
182	पूर्ण	मधर्म 20.9.26
183	पूर्ण	मधर्म प्रासंगिक185
184-85	पूर्ण	मधर्म 22.2.26
186.	1	मधर्म 22.2.26
	2-4	सर्वो सितं 49.115
	5	सर्वो अग49.39
187.	1	सर्वो अग49.39
	2-3	27.7.60
188	पूर्ण	27.7.60
189.	1-2	19.10.61 बरुआ पोखरी
190.	1-3	19.10.61 बरुआ पोखरी
	4	6.7.58
191	पूर्ण	6.7.58
192.	1	6.7.58
	2-4	13.4.62 दामोदरधाम
193.	1-3	13.4.62 दामोदरधाम
	4	23.6.63 कलकत्ता
194	पूर्ण	23.6.63 कलकत्ता

विचार-कणिका

195.	1	भूय 8.8.58
	2	भूय 3.1.58
	3	18.9.66 वैनी
	4-6	भूय 3.1.58
196.	1	भूय 6.12.57
197.	1	पत्र कनुभाई 15.7.60
	2-3	पत्र मदालसा 15.7.55
	4	पत्र केलकर 2.10.55
	5	भूय 18.7.58
198.	1	भूय 29.12.58
	2	20.12.58 अमदाबाद
	3	17.10.58 उदेपुर
	4	18.9.63 सुकिंदागढ़
199.	1-2	19.6.58 लातूर
	3	29.12.58
	4	6.10.61 जानी
200.	1	5.6.66 रानीपतरा
	2	20.7.64
	3	भूय 11.10.57
	4	20.9.66 वैनी
201.	1-2	3.3.60 जालंधर +
		27.4.64 वाटखेड
	3	29.11.58
202.	1-2	भूय 6.12.57
	3	सर्वो फर 52.1277
	4	16.1.58
203.	1	पत्र कृष्णचंद्रजी 14.12.58
	2	29.12.58 सिद्धपुर
	3	1.6.58 पंढरपुर
204.	1	सर्वो सितं 52. परि4
	2	सर्वो मार्च 52.1347
	3	29.9.63 तालचेर
205.	1	29.9.63 तालचेर
	2	17.12.59 छोटा उदेपुर
	3	24.1.63 निरोल
206	1	27.1.63 कटवा
	2	13.11.61 बरहाट
	3	15.7.66 बिहपुर
	4-5	8.9.63 भद्रक
207.	1	8.9.63 भद्रक

208.	1	18.10.63 राउरकेला
	2	1.2.61 बलिया
	3	6.10.61 जांजी
	4	25.2.62
	5	भूय 24.8.56
	6	7.1.58 हंसभावी
	7	10.11.58 सोनगढ़
209.	1	27.7.60 इंदौर
	2	27.7.58 भानसहिवरे
	3-4	2.2.64 बिलासपुर
210	पूर्ण	2.2.64 बिलासपुर
211.	1	28.12.60 कुद्रा
	2–4	7.1.49 धुलिया
212.	1	18.4.58 ओणी
	2	23.3.49 औरंगाबाद
	3	28.9.63 तालचेर
	4	13.1.49 धुलिया
213.	1	14.11.66 मुजफ्फरपुर
	2	4.1.49 धुलिया
	3	31.5.58 पंढरपुर
214.	1	भूय 9.6.69
	2	31.12.49 पवनार
	3	भूय 28.2.58
	4	भूय 25.7.58
	5	7.3.62
215.	1	19.9.58
	2	भूय 23.9.55
	3	16.5.63 सोरिसा
	4	
216.	1	10.8.60 इंदौर
	2	10.10.58 मांगरोळ
217.	1	9.8.58 चालीसगांव
	2	प्रेप 184/45
	3	पत्र द्वारको 11.5.52
218.	1	2.11.58 बोरसद

219.	1–3	30.3.63 भालरा
	4	11.1.62 ठकुवाखाना
	5	13.11.62 भृंगोल
220.	1–3	13.11.62 भृंगोल
	4	1.11.58 आणंद
221.	1	1.11.58 आणंद
	2	8.8.58 चालीसगांव
	3	भूय 18.7.58 निर्मला डायरी
	4	6.10.61 जांजी
	5	भूदानयज्ञवार्ता 11.8.55
222.	1-2	7.8.64 पवनार
	3	9.12.62 जियागंज
	4	22.11.62 विरामपुर
223.	1	21.11.68 रामानुजगंज
	2	24.7.60 इंदौर
	3	8.10.49 वर्धा
224.	1	8.10.49 वर्धा
	2	23.3.49 औरंगाबाद
225.	1	4.1.49 धुलिया
	2	4.12.62 रघुनाथगंज
	3	10.11.62 पीपला
	4	28.4.70 गोपुरी
226.	1	28.5.58 पंढरपुर
	2-3	15.10.63 चारीपोष
227.	1	मवि 3
	2	प्रेप 9/60
	3	भूदानयज्ञवार्ता 11.8.55
	4	24.8.60 इंदौर
228.	1	सर्वो अग 49.53
	2	7.3.62
	3	भूय 15.7.55
	4	26.7.60 इंदौर
229.	1	पत्र द्वारको नवं 52
	2	रामरस 36
	3	पत्र गोविंदराव 7.12.51

	2	21.11.58 राजकोट
	3	8.3.57
231.	1	8.3.57
	2	22.12.58 कोबा
	3	26.7.58 चिलखनवाडी
232.	1	भूय 23.9.55
	2	25.8.60 इंदौर
	3	भूय 13.11.56
	4	भूय 7.12.56
233.	1-2	भूय 9.11.56
	3-4	भूय 28.12.56
234.	1	31.8.60 कस्तूरबाग्राम
	2	24.3.64 महादुला
	3	भूदानयज्ञवार्ता 11.8.55
	4	भूय 15.8.58
	5	10.9.66 पूसारोड़
	6	सर्वो अग 49.53
235.	1	सर्वो सितं 52. परि2
	2	2.7.66 बिहपुर
	3	सर्वो सितं52. परि14
	4	19.10.50 सागताला
	5	भूय 9.11.56
	6	भूय 21.12.56
236.	1	7.7.58 औरंगाबाद
	2	भूय 5.8.58
	3	5.11.65
	4	भूय 13.12.57
	5	मै अक्तू 70 आश्रमवृत्त
237.	1	भूय 26.9.55
	2	15.10.71 उषा डायरी
	3	सर्वो मार्च 52.1325
238.	1	17.10.58
	2	1.1.64
	3	पत्र पंढरी 28.5.59
239.	1	11.2.62 घेयारी
	2	18.10.63 राउरकेला
240.	1	मैं 73.1246
	2-3	15.8.60 इंदौर
	4	14.9.59
	5-6	16.5.49
241.	1	6.6.66 रानीपतरा
	2	22.12.63 रायपुर
	3	18.10.63 राउरकेला
	4	15.9.71 उषा डायरी
242.	1	20.8.60 इंदौर
	2	15.11.58 बावळा
	3	8.5.65 गोपुरी
	4	27.2.58 वनवासी
243.	1	27.2.58 वनवासी
	2-3	9.12.58 धांगध्रा
	4	22.10.58 औरवाड़
244.	1	15.7.66 बिहपुर
	2	11.11.61 बरहाट
	3	23.5.49 तिरुपुर
	4	प्रेप 65/7
	5	12.1.49 धुलिया
245.	1	23.3.49 औरंगाबाद
	2	22.5.49
	3	30.1.49 दिल्ली
	4	7.3.49
246.	1	भूय 1.3.57
	2	23.11.66 मुजफ्फरपुर
	3	मै 67.99
	4	16.8.60 इंदौर
247.	1	19.4.58 वाकेड़
	2	भूय 12.8.55
	3	पत्र गौतम 22.6.59
	4	भूय 17.1.58
248.	1	भूय 17.1.58
	2	17.7.58 औरंगाबाद
	3	9.8.60 इंदौर
249.	1	9.11.58 वगतेज

	2–4	मै 1990.395
	5	भूय 5.4.57
251.	1	21.5.63
	2	15.10.58 रंगपुर
	3-4	मै 90.263
252.	1	21.2.58 हलगेरी
	2	25.2.63 फूलिया
	3	1.3.63 अकालपोस
253.	1	1.3.63
	2-3	15.10.71 उषा डायरी
	4	5.10.58 शुक्लतीर्थ
254.	1	2.12.66 मधुबनी
	2	9.12.65 विक्रमगंज
	3	24.7.60 इंदौर
	4	28.7.60 इंदौर
255.	1	भूय29.3.57 मीरा डायरी
	2	8.5.61 गोमरी
256.	1	6.3.68 भागलपुर
	2	भूय 23.9.55
	3	1.2.61 बलिया
	4	28.2.63 नोअरागोअरा
257.	1–3	5.1.63 तारापीठ
258.	1	4.8.58
	2	भूय 3.6.58
	3	7.2.64 फास्टरपुर
	4	30.12.49 पवनार
259.	1	भूय 6.4.56
	2	18.7.64
	3	11.12.58 वढवाणसिटी
260.	1	11.12.58 वढवाणसिटी
	2-3	4.6.64 ठाणेगांव
	4	19.1.58
261.	1	28.9.60
	2	23.4.58 रत्नागिरी
	3	सर्वो जन50.362
262.	1	31.8.60 कस्तूरबाग्राम
	4	2.3.63 वैद्यपुर
263.	1	2.3.63 वैद्यपुर
	2	24.2.62 दिग्नगर
	3	4.6.64 ठाणेगांव
	4-5	15.8.67
264.	1	भूय3.5.57 मीरा डायरी
	2	1.11.58 आणंद
265.	1	भूय 14.4.69
	2	पत्र द्वारको 16.6.56
	3	27.7.60 इंदौर
	4	मै 73.622
	5	सर्वो जन 50.367
266.	1	सर्वो सितं 49.117
	2–6	
267.	1–4	
268.	1	
	2	भूय 10.5.57
	3	3.1.63 बसौजा
269.	1	1.6.58 पंढरपुर
	2	मै 90.96
	3	12.12.62 सादी गांछी
270.	1	23.8.58 पिंपळनेर
	2	भूय 24.8.56
	3	सर्वो 2.11.51
	4	प्रेप 28/175
	5	पत्र मनमोहन 8.4.56
271.	1	19.1.58
	2-3	11.11.58 सणोसरा
	4	भूय 9.6.69
272.	1	8.5.65 गोपुरी
	2	2.4.65 पवनार
	3	13.9.66
	4	7.12.67 पूसारोड़
	5	मई 1966
273.	1	25.2.65 पवनार
	2	15.9.58 तरावद

	5	25.8.60 इंदौर
	6	3.10.68
274.	1	22.10.58
	2-3	27.3.67 वैनी
	4	भूय 9.6.69
275.	1	5.1.63 तारापीठ
	2-3	रामरस 10-11
276.	1	रामरस 22
	2–4	रामरस 58-59
277.	1	रामरस 60
	2	रामरस 62
	3	रामरस 66
	4	रामरस 72
	5	रामरस 42
278.	1	रामरस 107
	2	16.10.68 (कालिंदीताई नोटस्)
	3	8.5.62 कुमरीकटा
	4	भूय 4.11.68

अमृत-बिंदु

279.	1	पत्र कृष्णदासजी 18.12.59
	2	प्रेप 29/182
	3	प्रेप 187/67
	4	पत्र रामेश्वरजी 20.1.60
	5	पत्र अंबादास 4.1.52
	6	पत्र वेंकटरमण 27.4.55
	7	सर्वो सितं 52.परि10
	8	पत्र डॉ. जोशी 2.1.57
	9	पत्र पंढरी 14.11.59
	10	पत्र सुशीला 8.2.58
280.	1-2	पत्र गौतम 16.7.57
	3	पत्र द्वारको 3.1.59
	4	मैं 67.159
	5	भूय 27.12.58 बालम

	9	पत्र सरस्वतीप्रसाद 9.4.56
	10	प्रेप 31/198
	11	प्रेप 42/277
281.	1	पत्र बाबा लक्ष्मणदासजी 13.4.62
	2	पत्र बाबाजी 17.4.62
	3	पत्र पारसबाबू 9.2.58
	4	पत्र लालबिहारी 27.6.55
	5	भूय 8.11.57
	6	पत्र श्रीमन्जी 7.10.52
	7	पत्र सुखराम 13.8.53
	8	पत्र जयप्रकाशजी 20.10.52
	9	मैं 67.371
	10	प्रेप 74/76
	11	प्रेप 127/9
	12	प्रेप 158/66
282.	1	पत्र हरिश्चंद्र 12.7.61
	2	पत्र द्वारको 5.10.61
	3	पत्र विमला 5.12.53
	4	प्रेप 6/31
	5	पत्र झवेरभाई 27.11.56
	6	प्रेप 8/53
	7	पत्र रामभाऊ 25.7.56
	8	प्रेप 23/141
	9	प्रेप 29/184
	10	पत्र गिरधर 1.11.55
	11	16.12.60 काशी
283.	1	29.12.58 सिद्धपुर
	2	14.11.61 बरहाट
	3	मैं सितं 69
	4	मैं 67.104
	5	भूय 19.9.58
	6	भूय 7.11.58
	7	भूय 11.10.57
	8-9	भूय 6.12.57

	2	प्रेप 95/1
	3	विप्र 18.7.64
	4	31.5.64 किन्हाळा
	5	पत्र चारुबाबू 15.5.66
	6	5.6.66 रानीपतरा
	7	13.9.71 उषा डायरी
	8	पत्र महेश 18.7.59
	9	20.12.62 कान्दी
	10	भूय 23.9.55
285.	1	प्रेप 172/23
	2	पत्र मनोहरजी 4.1.52
	3	पत्र सतीशप्रकाश 5.11.55
	4	पत्र दिवाकर 29.10.57
	5	पत्र गोविंदन् 9.12.51
	6	प्रेप प्रबोध से
	7	पत्र सुखराम 17.1.72
	8	प्रेप 65/5
	9	27.12.63 रायपुर
	10	पत्र रामभाऊ 14.1.59
	11	पत्र शिवानंदजी 23.4.24
	12	प्रेप 4/21
286.	1	प्रेप 36/232
	2	प्रेप 38/250
	3	प्रेप 56/43
	4	पत्र रविशंकर 18.1.52
	5	पत्र एली 30.9.62
	6	पत्र सद्रेजी 9.1.63
	7	पत्र दीपचंदजी 1.7.63
	8	पत्र दिवाकर 21.6.60
	9	पत्र गौतम 14.2.60
	10	पत्र सत्यनारायण 28.1.54
287.	1	मै 77.426
	2	मै 71.1151
	3	मै 78.184
	4	मै 72.1231
	5	मै 67.355
	8	मै 81.786
	9	मै 67.356
	10	मै 79.55
288.	1	मै 67.479
	2	मै 78.468
	3	मै 78.970
	4	मै 77.430
	5	मै 81.808
	6	मै 79.291+78.705
	7	मै 69.682
	8	मै 81.677
	9	मै 71.1151
	10	मै 74.1054
289.	1	मै 77.95
	2	मै 71.864
	3	मै 70.821
	4	मै 70.288
	5	मै 76.107,349
	6	मै 71.1061
	7	मै 77.783
	8	मै 79.771
	9	मै 73.199
	10	मै 72.937
290.	1	मै 70.496
	2	मै 74.976
	3	मै 73.400
	4	मै 68.88
	5	मै 77.855
	6	मै 71.549
	7	मै 74.1054
	8	मै 76.87
291.	1	मै 67.345
	2	मै 80.254
	3	मै 74.706
	4	मै 77.494
	5	मै [illegible]

	8	मै 74.352
	9	मै 70.351
	10	मै 78.740
	11	मै 77.853
292.	1	मै 76.870
	2	मै 77.593
	3	मै 79.193
	4	27.10.58 सावली
	5	मै 80.7
	6	मै 77.782
	7	मै 79.836
	8	मै 77.2
	9	मै 70.352
	10	मै 71.795
293.	1	मै 76.483
	2	मै 67.250
	3	मै 74.888
	4	भूय 5.8.58
	5	विप्र 12.8.58
	6	सर्वो सितं 52परि15
	7	सर्वो सितं 52.परि19
	8	पत्र मुन्नालालजी 27.2.51
294.	1	पत्र यमुनाताई 1.2.51
	2	पत्र मीरा 26.1.60
	3	पत्र मीरा 20.4.60
	4	प्रेप 110/70
	5	प्रेप 111/73
	6	18.9.58 चिंचपाड़ा
	7	भूय 31.3.69
295.	1	पत्र प्रभाकर 9.11.60
	2	पत्र गोविंदन् 3.9.60
	3	भूय 10.6.55
	4	भूय 12.8.55
	5	पत्र रमाकांत 20.9.59
	6	पत्र वत्सला 19.3.59
	2	पत्र प्रमोद 5.9.56
	3	पत्र शांताबाई 13.7.55
	4	पत्र साधुजी 1.11.55
	5	26.12.58
	6	22.2.58 जोग
	7	विप्र 15.8.58
297.	1	पत्र कृष्णचंद्रजी 14.12.58
	2	पत्र ज्ञानदेव 9.1.58
	3	22.11.58 राजकोट
	4	सर्वो मार्च 52.1327
	5	भूय 25.11.55
	6	मवि 3.13
	7	साधना 24.5.56
298.	1	पत्र द्वारको 23.8.59
	2	10.2.66 जमशेदपुर
	3	विप्र 20.2.66
	4	विप्र 8.12.67
	5	18.9.67 वैनी
	6	21.8.61 खसौल
	7	मै 67.11
	8	विप्र 16.7.64
299.	1	भूय 26.9.58
	2	भूय 5.10.56
	3	15.10.58 रंगपुर
	4	21.12.58 सिद्धपुर
	5	6.10.58 राजपारड़ी
	6	11.7.60 शाजापुर
	7	11.9.71 उषा डायरी
	8	पत्र दिवाकर 3.11.61
	9	18.9.58 चिंचपाड़ा
300.	1	14.3.63 कलानवग्राम
	2	20.10.58 देवगढ़बारिया
	3	15.10.71 उषा डायरी
	4	सर्वो जुला 52.परि27
	5	पत्र बाबाजी 8.9.60

	9	मै 72.396
301.	1	मै 67.98
	2	मै 71.1152
	3	प्रेप 34/222
	4	प्रेप 73/67
	5	12.1.65
	6-7	5.2.66
	8	1.9.65 रींवा
	9	23.8.68
	10	30.12.49 पवनार
	11	भूय 31.3.69
302.	1	19.3.65
	2	20.11.65
	3	मै 13.277
	4	मै 10.400
	5	5.3.65
	6	भूय 24.8.56
	7	भूय 23.9.55
	8	पत्र हरिश्चंद्र 3.11.61
	9	मै सितं 80 (18.12.58)
303.	1	8.11.58 भावनगर
	2	1.12.66 मुजफ्फरपुर
	3	14.4.68 रानीपतरा
	4	23.11.63 भैंसा
	5	रामरस 115
	6	रामरस 119
	7	रामरस 124
	8	रामरस 125
	9	रामरस 126
304.	1	रामरस 89
	2	23.1.51 जगन्नाथ
	3	मै 71.783
	4	भूपु 8.6
	5	भूपु 8.10
	6	भूपु 8.16

प्रश्नोत्तर

305.	1	7.8.70 पवनार
	2	पत्र प्रेमाबाई 24.9.60
	3	3.11.65 बलिया
	4	24.11.54
	5	28.3.70
306.	1	4.5.70 गोपुरी
	2	भूय 3.1.72
	3	20.5.70 गोपुरी
307.	1-2	20.5.70 गोपुरी
	3	19.8.67 वैनी
	4	भूय 14.11.56
	5	पत्र देशराज 19.1.51
308.	1	मै 66.684
	2	मै 73.198
	3	मै 74.442
	4	मै 72.496
	5	मै 73.301
309.	1	मै 73.301
	2	मै 77.1122
	3	मै 77.165
	4	मै 71.366
	5	मै 69.374
	6	मै 72.1230
	7	मै 76.500
310.	1	मै 77.64
	2	मै 79.756
	3	मै 70.208
	4	मै 73.1143
	5	मै 73.198
	6	मै 69.219
	7	मै 80.271
	8	मै 81.864
	9	मै 77.952

	4	मै 74.442
	5	मै 66.1103
	6	22.1.64 देवरबीजा
	7	भूपु वर्ष 5, अंक19, पृष्ठ5
312.	1	भूपु वर्ष5, अंक19, पृष्ठ5
	2-3	भूय 15.10.57 + 7.10.66
	4–6	भूय 7.10.66
313	पूर्ण	भूय 7.10.66
314.	1–3	सर्वो सितं 52.29-30
	4–6	मै 65.172
315.	1	मै 65.172
	2	रामरस 57
	3-4	रामरस 70
	5-6	रामरस 115-16
	7-8	रामरस 120-21
316.	1	रामरस 121
	2-3	रामरस 124
	4	रामरस 126
	5	मै 76.596
	6	मै 77.177
	7	मै 71.489
	8	मै 78.546
317.	1	मै 71.681
	2	मै 71.728
	3–5	मै जून 96.151-52
318–20	पूर्ण	मै जून 96.152–54
321–23	पूर्ण	मै जून 96.155–159
324–32	पूर्ण	मै जून 96.163–170
333–38	पूर्ण	मै जून 96.170–178
339	पूर्ण	मै जून 96.181–83
340.	1-2	मै जून 96.181–83
	3–6	मै जून 96.189-90
341	पूर्ण	मै जून 96.189-90
342.	1	मै जून 96.189-90
	2–5	मै जून 96.195
344.	1	मै जून 96.199
	2-3	मै जून 96.201–3
345.	1–3	मै जून 96.201–3
	4	मै जून 96.205
346.	1	मै जून 96.206
	2–4	मै जून 96.209-10
347.	1–4	मै जून 96.209-10
	5-6	तत्त्वबोध 98-99
348	1-2	तत्त्वबोध 98-99
	3-4	तत्त्वबोध 42
349.	1	तत्त्वबोध 48
	2	तत्त्वबोध 60
	3	13.11.58 मालपरा
350.	1	तत्त्वबोध 93
	2-3	मै जून 96.200
	4	सर्वो सितं 52.परि13
351.	1	13.11.58 मालपरा
	2	मै 11.351
	3	सर्वो जुला 52.परि31-32
352.	1	तत्त्वबोध 78
	2-3	मै जून 96.200
	4	भूपु 9.10

पूर्ति

355.	1–4	खंड 13.6
	5	8.3.62
356.	1-2	10.4.62 नलबाड़ी
	3	खंड 4.408
	4-5	28.7.60 इंदौर
357.	1	खंड 18.329
	2	खंड 12.367
	3	खंड 4.335
	4	6.4.64 सेवाग्राम
358	पूर्ण	19.4.63 गोघाट
359.	1	खंड 13.94

	5	खंड 18.319
	6	खंड 9.226
	7	खंड 17.137
360.	1	खंड 17.278
	2	मै 68.135
	3	17.12.60
	4	भूय 11.1.57
361.	1-2	24.10.67 वैनी
	3	20.3.64 तुमसर
	4	मै 68.183
	5	सर्वो सितं 53.65
	6	सर्वो अक्तू 52
	7	भूय 22.3.57
362.	1–3	खंड 4.389–91
	4	भूय 9.6.69
	5	17.12.60
	6	17.11.65
363.	1	खंड 4.404
	2	1.1.64 रायपुर
	3	भूय 5.1.55
364.	1	11.9.69 रांची
	2	3.8.80 कुसुम डायरी
	3	12.2.80 कुसुम डायरी
	4	18.4.80 कुसुम डायरी
	5	वेदामृत 21
	6	वेदामृत 34
	7	12.5.60
365.	1	पत्र भाऊ 8.7.61
	2	पत्र गोपालकाका 4.2.34
	3	8.8.58 चालीसगांव
366.	1	9.8.58 चालीसगांव
	2	सर्वो सितं 50.170
	3	16.9.71 उषा डायरी
	4	24.11.54
367.	1	1.10.58 सियालज
	2	8.12.54
369.	1	1.10.58 सियालज
	2	8.4.60 बागपत
	3	1.12.61 बलिया
	4	विप्र 7.1.61 (बोधगया)
370.	1	7.10.49 सेवाग्राम
	2	9.9.49 वर्धा
	3	11.10.61 बारुवनी
	4	30.1.64 बिलहा
	5	19.7.64 पवनार
371.	1	23.6.66
	2	9.5.65
	3	18.6.67 वैनी
	4	20.2.66 जमशेदपुर
	5	14.3.63 कलानवग्राम
372.	1	14.3.63 कलानवग्राम
	2	18.7.53 हजारीबाग
	3	मै 85.523
	4	मै 81.803
	5	भूय 17.10.58
	6	16.7.64
373.	1	14.3.63
	2	14.11.61 बरहाट
	3	24.9.58 व्यारा
	4	सर्वो फर 52.1278
374.	1	20.8.66 वैनी
375.	1	15.8.49 सेवाग्राम
	2-3	2.10.66
376.	1-2	2.10.66
	3	7.1.69 राजगीर
	4-5	12.9.66 वैनी
377	पूर्ण	12.9.66 वैनी
378.	1	भूय 31.1.58
	2	26.7.60 इंदौर
	3	नंदुरबार 1934

	2	भूय 23.9.55
	3	11.12.58 सुरेंद्रनगर
	4	25.5.63 राजनगर
381.	1	25.5.63 राजनगर
	2	भूय 10.10.58
	3	21.12.58 अमदाबाद
	4	1966
	5	21.12.58 साबरमती
	6	27.9.58 बारडोली
382.	1	24.7.60 इंदौर
	2	27.10.63 करमडीह
	3	3.6.66 रानीपतरा
383.	1	3.3.64
	2	सर्वो फर 52.1273
	3	13.7.53
	4	10.5.65 गोपुरी
	5	भूदानयज्ञ वार्ता 11.8.55
384.	1–3	12.5.63 कलकत्ता
385.	1-2	15.9.71 उषा डायरी
	3	सर्वो जुला 52.परि14
	4	सर्वो फर 52.1271
	5-6	9.11.63 अताबिरा
	7	1.2.64 बिलासपुर
386.	1	1.2.64 बिलासपुर
	2	सर्वो मार्च 52.1331
	3-4	3.3.64
387.	1	3.3.64
	2-3	18.4.62 धमधमा
388.	1-2	21.12.58 अमदाबाद
	3	5.9.58 घाटली
	4	भूय 1.8.58 पदयात्रा डायरी
	5	भूय 23.9.55
389.	1	25.9.58 वेड़छी
	2	पत्र सत्यमभाई 25.4.62
	3	भूय 27.12.58
390.	1	23.12.58 कलोल
	2	4.6.63 पाथरप्रतिमा
	3	29.10.58 बड़ौदा
391.	1	25.3.65 पवनार
	2	2.8.69 रांची
	3	29.12.58 सिद्धपुर
392.	1-2	13.7.58 जामखेड
	3	सर्वो अग 52.परि 5
	4	22.9.58 सोनगढ़
393.	1	अग 1960 इंदौर
	2	भूय 21.2.58
	3	भूय 18.4.58
	4	26.5.63 रुद्रनगर
394.	1	पत्र द्वारको 11.5.52
	2	9.9.64 पवनार
	3	25.7.60 इंदौर
	4	पत्र मित्तलजी 30.5.60
	5	8.11.58 भावनगर
395.	1	भूय9.11.56 निर्मला डायरी
	2	सर्वो नवं 49.227
	3-4	16.1.58
396	पूर्ण	16.1.58
397.	1–3	16.1.58
	4-5	18.9.58 नवापुर
398.	1	5.10.58 शुक्लतीर्थ
	2	7.7.58 बीड़
	3	विचिं 52.160
	4	भूय8.3.57 पदयात्रा डायरी
399.	1	27.5.58 गारेगांव
	2	23.12.58 कलोल
	3	6.5.58 मीरा डायरी
400	पूर्ण	19.7.45 गोपुरी
401.	1	19.7.45 गोपुरी
	2	18.4.63 पुखुरियापथ
	3-4	16.9.71 उषा डायरी

	4	16.1.58 इनगळ
403.	1	मै 11.792
	2	13.11.58 मालपारा
	3-4	विचिं 52.152
404.	1	23.11.49 पवनार
	2	20.8.60 इंदौर
	3	20.10.61 नजीरा
	4	16.2.68 मुंगेर
405.	1	3.4.67 वैनी
	2	11.8.58+2.10.58
	3	25.3.65 पवनार
406.	1	भूय 22.2.54
	2-3	11.9.58
407.	1	20.12.58 अमदाबाद
	2-3	8.12.67 पूसारोड़
	4	18.7.65 पवनार
408.	1	30.5.58 पंढरपुर
	2	29.5.58 पंढरपुर
	3	पत्र पारसबाबू 5.9.59
	4	31.8.58 नंदुरबार
409.	1	पत्र निर्मला 15.3.61
	2	पत्र रविशंकर 15.5.59
	3	3.3.64 आमगांव
	4	पत्र द्वारको 18.3.52
	5	विप्र 9.9.64
	6	पत्र लोचनदासजी 17.3.57
410.	1	पत्र अनसूया 1.4.59
	2	9.8.58 चालीसगांव
	3	11.9.64 पवनार
	4	2.8.49
	5	2.10.58 धामरोद
411.	1	2.10.58 धामरोद
	2	भूय 13.12.57
	3	सर्वो जुला 52.परि 13
	4	26.5.63 रुद्रनगर
412.	1-2	15.3.67 वैनी
	3–5	11.9.61
413.	1	भूय 24.2.67
	2	मवि
	3	24.8.60 इंदौर
	4	11.11.63 संबलपुर
	5	30.10.68
414.	1	11.9.61 हेनसुवापुखुरी

शुद्धिपत्र

खंड. पृष्ठ. लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
1.प्रास्ता 5. अंतिम	**त्वदीय**	**त्वदीयं**
1. प्रास्ता 9.1	प्रथमावृत्ति की	ऋग्वेदसारः के प्रथमावृत्ति की
1.6.3	दवस्य नाम	देवस्य नाम
1.92.10	आरोहन्नुतरां	आरोहन्नुत्तरां
1.93.4	गणांना त्वा	गणानां त्वा
1.95.2	विश्वामानुषः	विश्वमानुषः
1.96.14	श्रद्धा सूर्यस्य	श्रद्धां सूर्यस्य
1.96.14	श्रद्धापयेहः	श्रद्धापयेह
1.96.16	भुवना संच	भुवना सं च
1.100.18	रस न आयेगा	रस नहीं आयेगा
1.102.17	10558	10552
1.111.14	ज्याति	ज्योति
1.116. 22	जाकी रही	जिन्ह कें रही
1.162.18	इन उग्र ऋषि ने	उग्र ऋषि ने
1.187.17	सिर्फ दो जगह	सिर्फ दो-तीन जगह
1.189.17	ॐ भुर् भुवः	ॐ भूर् भुवः
1.189.22	'अवेम वोहु'	'अशेम वोहु'
1.190.17,20,21,25,30	भुर् भुवः	भूर् भुवः
1.202.20	**वाळ्वरे**	**वाळ्वारे**
1.227.1	तद् धामं	तद् धाम
1.227.19	यजन करता है।	यजन करता है। और वह स्वर्गोपम हो गया। यानी उसका जीवन स्वर्गमय है।
1.232.18	हम नेत्रों शुभ ही	हम नेत्रों से शुभ ही
1.261.11	तो मैं कैसे	तो मैं घी कैसे
1.272.16	माता छोड्या	मातु छोड़ि
1.297.4	**पब्बट्ठो व**	**पब्बतट्ठो व**
1.301.25	(10.8.3)	(10.18.3)
1.330.अंतिम	–पॅरा हो गया है–	–पॅरा नहीं चाहिए, चालू (रनिंग) है–
1.346.18	ॐकार के सूर में	ॐकार के सुर में

1.425.2.17	310	309
1.425.2.18	307	306
1.426.1.15	113.187	113.286
1.427.1.23	विश्वतचक्षुरुत	विश्वतश्चक्षुरुत
1.427.1 नीचे से 6	10.32.2	10.23.2
1.427.2.22	308	307
1.427.2 नीचे से 3	स्वस्तिपंथामनु	स्वस्ति पंथामनु
1.431.2.13	308	307
1.431.2.15	307	306
1.431.2 नीचे से 2	307	306
1.434.23	3 मै 71.850	3 मै जन 71.850
1.442.2.15	टेंनीसन	'टेनीसन' शब्द ज्ञानेश्वरी के बाद चाहिए
1.444.1 नीचे से 2	व्यास ... 310	व्यास ... 309
1.445.1.13		के बाद जोड़ना एष देवो विश्वकर्मा श्वे 51 पृ. 340
1.446.1.13	यो वै धर्मः	यो वै स धर्मः
1.446.1 अंतिम	सच्च त्यच्चाभवात्	सच्च त्यच्चाभवत्
2.प्रास्ता 6.17	ऐस प्रमुख	ऐसे प्रमुख
2.79. नीचे से 5	मुदमाप देवाः	मुदमाप देवः
2.163.6	लोग ते हैं	लोग कहते हैं
2.163.6	के रा	के द्वारा
2.165.20	पोषण करनेवाला के	पोषण करनेवाले के
2.224.4	यः (नीचे के लाईन में आया है)	यः (ऊपर की लाईन में चाहिए)
2.251.21	दांत लोक	दान्त लोक
2.285 नीचे से 8	(अष्टा. बृ. 80)	(अष्टा. बृ. 60)
2.313.12	**एकमेकां करूं साह्य**	**एक एका साह्य करूं**
2.323.2. अंतिम	सूत्र चुनाव	सूत्र-चुनाव
2.376 नीचे से 3	परिणाम	परिमाण
2.377. नीचे से 3	का मूंह	का मुंह
2.387 नीचे से 3 प्रथम	**अव्यहार्यम्**	**अव्यवहार्यम्**
2.411. नीचे से 3	**यो वे भूमा**	**यो वै भूमा**
2.413.20	वह शांस्त्रीय	वह शास्त्रीय
2.416.4	**गयम**	**गमय**
2.422. अंतिम	**काय जनांसवें**	**काय या जनाशीं**

2.478.21	(ब्रसू 1.2.28)	(ब्रसू 1.2.24)
2.480.6	**विचित्र अति समझी**	**बिचित्र हरि! समुझि**
2.492.26	**दृष्टार्था हि विद्या**	**दृष्टार्था च विद्या**
2.494 नीचे से 6 (हेडिंग)	सूत्र चुनाव	सूत्र-चुनाव
2.527.2 नीचे से 10	बृ 80	बृ 60
2.528.2.7	श्वे 51	श्वे 50
2.529.2 नीचे से 3	ए एको	य एको
2.530.1.20	श्वे 28	श्वे 27
2.530.1 नीचे से 7		वृक्ष इव स्तब्धः – 'विश्वस्यैकं परि' के बाद चाहिए
2.533.1.21	80 आकाशे	60 आकाशे
2.535.1.10	असंमजसमिव	असमंजसमिव
2.535.1.12	4.1.4	4.1.1
2.535.1.14	उत्कमिष्यन् एवं	उत्क्रमिष्यत् एवं
2.535.1.16	परपक्षनिराकरेण	परपक्षनिराकरणेन
2.535.2.4	दृष्टार्था हि	दृष्टार्था च
2.535.2.10	रचनानुपतेश्च	रचनानुपत्तेश्च
3.100 नीचे से 7	परामात्मा	परमात्मा
3.258 नीचे से 8,9	श्रम-संजात वारिणा	श्रमसंजात-वारिणा
3.275.10-11	विचार-प्रचार	विचार-प्रवाह (?)
3.318.1	संगीत-शात्र	संगीत-शास्त्र
3.464.1.11	454	455
3.467.1.9	नमोः नमः स्तेनानां	नमो नमः स्तेनानां
3.469.2.11	शास्त्रीय-संयमेन	शास्त्रीय संयमेन
4.प्रा 13.6	**येथ प्रियासी भेटे**	**तेथ प्रियाची परमसीमा तो भेटे**
4.54.18	आपुल्याचा जिह्वाळा	आपुल्याचा कळवळा
4.125.12	निमित्रमात्रं	निमित्तमात्रं
4.129.11	अगले पांच	अगले तीन
4.146 नीचे से 2	करते	कहते
4.247. नीचे से 9	जदगुरू	जगद्‌गुरु
4.265 नीचे से 3	अर्थ हैं	अर्थ है
4.334.13 (हेडिंग)	**सोलहंवां**	**सोलहवां**
4.501.2.11	आपुल्याचा जिह्वाळा	आपुल्याचा कळवळा
4.502.2 नीचे से 1	द्विशरं	द्विःशरं
4.504.1.6	येथ प्रियासि	तेथ प्रियाची

5.155.6	199	198
5.155.7	201	200
5.155.8	204	203
5.155.9	206	205
5.155.10	211	210
5.199.14	बीचे में	बीच में
5.224.3	काम-कौतुकम्	काम कृत कौतुक (बाल 85)
5.256.13	श्वास श्वास... श्वास	सांस सांस... सांस
5.306.16	दोन्हीं सामर्थ्यै	दोनी सामर्थ्यै
5.489.9	प्राणेय देवमुनयः	प्रायेण देवमुनयः
5.496.10-11	तरुतल.. किये आप	तरुतर ... किए आपु
5.496.15	कृष्ण से	कृष्ण सो
5.497.9	भावी तद्	भावि तद् (?)
5.506.2.3	43	432
5.506.2.8	40	403
5.506.2.9	47	472
5.506.2.13	46	468
5.506.2.15	45	459
5.506.2.16	40	401
5.506.2.17	43	433
5.506.2.20	47	475
5.506.2.23	39	396
5.506.2.29	43	433
5.506.2.30	46	460
5.508.2.6	47	478
5.508.2.9	44	444
5.508.2.12	47	476
5.508.2.15	46	466
5.508.2.22	42	421
5.508.2.23	42	421
5.508.2.24	38	381
5.508.2.26	46	462
5.508.2.27	46	463
5.508.2.28	47	470
5.508.2.29	38	380
5.508.2.30	46	467
6.117.20	वर्डस्वर्थ	वर्ड्स्वर्थ
6.167.9	भजन्तु देवान्	भजन्तु देवताः (?)
6.173.19	नहि वरघाताय	न हि वरघाताय
6.183.19	आत्मास्थिति	आत्मस्थिति

6.416.2.2		कुंदः के बाद कुमुदः 63.87 चाहिए
6.416.2.23	दमः 91	दमः 92
6.414.2.24	दमनः 22	दमनः 21
6.431.1.19	तुलसीदासजी	नानक
6.431.2.1	ऋसा 10.13.8	ऋसा 10.13.9
6.432.1.14	मनु 4.70	मनु 4.71
6.432.2.3	धम्मपद 9.6	धम्मपद 9.1
6.433.1.7	मनु 2.59	मनु 2.49
6.434.1.4	शांतै अनन्यमतिभिः	शांतैः अनन्यमनिभिः
6.434.1.7	शिणवील म्हातारा	शिणवील म्हणती म्हातारा
6.434.1.8	शैशवेऽभ्यस्तवृत्तीनां	शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां
6.434.1.17	संतसंगत	सतसंगत
7.311.12	होत	होता
7.344.13	स्वतंत्रा	स्वतंत्रता
7.397.9	निस्वप्न	निःस्वप्न
7.400.14 (हेडिंग)	(2)	(3)
7.402.21 (हेडिंग)	(3)	(4)
7.411.17	**संकल्प उन्मूलय**	**संकल्पं उन्मूलय**
7.436.10	**बुद्धासी ही**	**बुद्धीसी ही**
7.472.2 अंतिम	ज्ञाने 13.440	ज्ञाने 13.441
8.189.14	**विथ दाय**	**विथ दाइन**
8.225.15	**नामनिर्घोषितः**	**नामभिर्घोषितः**
8.227. नीचे से 6	**विध्येनमिह**	**विद्ध्येनमिह**
8.236.8	**पचंविधं**	**पंचविधं**
8.419.2 नीचे से 3	खातिमुन	खातिमुन्
8.422.1.2		अर्जुन, अरबस्तान के बाद चाहिए
8.428.2.3	219	219 पत्र अच्युतभाई 4.7.59
9.163 नीचे से 2	अरण्य 30	अरण्य 31
9.167.15	गय	गयी।
9.203.9	(ज्ञाने 13.440)	(ज्ञाने 13.441)
9.332.1	गंगासागर	सागर (?)
9.333 नीचे से 11	1.70	1.71
9.498.1.13	1.70	1.71
9.498.2.15	अयो 5	अयो 51
9.499.1.16	अरण्य 30	अरण्य 31
9.503.2.4	ज्ञाने 13.440	ज्ञाने 13.441
10.95.2	जीवनस्वरूप	जीवस्वरूप